है॥ [illegible]मंगलाचरणं॥ नाराय
स्कृत्य नरं चैव नरोत्मं॥ देवीसरस्वतीं
ततोजयमुदीरयेत्॥ कवित्त॥ सनमुष
जाकेबिघनबिमुषहोतनामहीकेलेतस
मसुधरतहैं॥ रिद्धिसिद्धि दोऊजाकेरह
हैसाथि फरसाहथ्यारहाथदुषकौ
हैं॥ गवरिकेनंद सदा आनंदके कंदसु
वनकेदेव यह अरज करतहैं॥ दीजिये
येसुधिलीजियेसुमुषमेरीकरुणानिधा
न आपुकोधरतहै॥ १॥ दोहा॥ गणपति
सरोजकोध्यानहियेमंधिधारि॥ बरनौं
सारकीभाषामतिअनुसारि॥ २॥ अ
[illegible]॥ दोहा॥ रघुकुलसूरजबंसमेंगो
तविख्यात॥ एकएकतेंसब अधिकसर
दरसात॥ ३॥ [illegible]॥ कूंतलभयो हमीरतो
तनाहरजानौ॥ डूंगरसीह्नैराजलनय
निकम गकार स्योमतिव नौपांचोजांनितासुगो
ठलभी वनतेंअ कसरिस्यंघउवनजाको
नगदि धिहकरेतो स्यंघताकोतनयजिहिं

[illegible] ॥ [illegible] ॥
युरभोलेतः॥ [illegible] नामभारथसारसंग्रहिता
[illegible] ॥ महाभारतंगन्धा[illegible] ॥ नाराय
णंनमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमं॥ देवीसरस्वतं
व्यासंततोजयमुदीरयेत॥ कवित्त॥ सनमुष
होतजाकेबिघनबिमुषहोतनामहीकेलेतस
बकामसुधरतहैं॥ रिद्धिसिद्धि दोऊजाकेरह
तसदाहैसाथिफरसाहथ्यारहाथदुषकों
हरतहैं॥ गवरिकेनंदसदाआनंदके कंदसु
नौंदेवनकेदेवयह॥ अरजकरतहैं॥ दीजियै
सुबुधिसुधिलीजियेसुमुषमेरीकरुणानिधा
नध्यानआपकोधरतहैं॥ १॥ दोहा॥ गणपति
चरणसरोजकोध्यानहियेमंधिधारि॥ बरनौं
भारथसारकीभाषामतिअनुसारि॥ २॥ अ
[illegible] ॥ दोहा॥ रघुकुलसूरजबंसमैंगो
गा चत विष्यात॥ एकएकतेंसब अधिकसूर
वीरसरसात॥ ३॥ [illegible] कूतलभयो हमीरतो
सुतनाहरजानौ॥ डूंगरसीह्तो राजलनय
[illegible]मांनिकम[illegible] होमति नौपांचोजांनितासुगो
[illegible]बीठलन[illegible] चनतैं[illegible] सरिस्यंघसुवनजाको
जानग[illegible] मधहूकरै[illegible] स्यंघताकोतनयजिहिं

दिल्लीपति राव किय रणधीर बीर संमुख्यै
दुजन दान हरिभक्ति लिपप ष्यास वैया सोम
हि सेस धरै भिसि द्रोस प्रष्यो प्रभु नै निज ना
म की कीनी सो हरिनाहरी हरि रूप बराह
है मारि तत छन छीनी सो पुनि वान है चलि
रै पजाय धान है मागि कै लीनी सो महिराव
श्री संभु सुजान गुनी दुज दीनन दान कै दीनी
दपट पवन पूत रूपट पगे सके
सो चितते चलाकी मैं सरस चलि जात है फेर
त फुहारे की फुही पै छहराइ रहै षुरा पषुरीत
पै नैनकरत सरसात है गुन गहै चंगननट
त चपल चारु नट जर बाफन सो सेव सु नगात
हैं जैसे बाजीदेनराव गोगावत संभु नान
मघवान देषि देषि ललचात है ५ चार
स घत्ता को तन यस रबार रणधीर दाता
ताहै महा कबि कोविद की भीर ६ श्री
पै जो मजी मैं लियैं दछिनी फिरंगी जंगी
से दसु गल सम हसर सा दो है निन्हे देषि के
ते करकायर के चापेरा १२ तेवे महा
नो दमन छायो है जह १ कामारि
गन षपाये त हो तुपव नोपती रौके

मां नि बेद हो॥ तातें तो हू कों हो॥ ण हांक हे गे सो
ता हू नमांनें गो॥ तो कों एक दुष्य होयगो जो तू
मलो चाहे तो हमारो बचन मांनियो॥ तो कों दु
षा देषें गे तब हमकं हू दुष्य होयगो॥ तातें यह
लें हों कहि बेकों श्राये हें एक उतपात होयगो॥ त
ब राजा जनमेजय बोल्यो॥ श्रापकी श्राग्या होय
गी सो ही करोंगो॥ परंतु कहा उतपात होयगो
श्ररु केसें वाकी सांति होयगी सो॥ श्राप कहि
ये॥ जब बेद ब्यास बोले॥ हे पुत्र जनमेजय न
बल ब्यकर तेरो सरीर बिगडि जायगो॥ ब्रह्म
ही ना के मीत्र यह वृत्तांत होयगो॥ तातें मैं सा
वधांन करों हों परंतु तू न मानेंगो॥ उत्तर दिसा
तें एक श्रस्व श्रावेंगो॥ ताकों तू षरीद मति क
रियो॥ श्ररु जो षरीद मी करें तो वाके ऊपर सवा
री मति करियो॥ जो सवारी हू करें तो बनमें सि
कार कों मति जाइयो॥ श्ररु सिकार हू कों जाय
तो वा बनमें एक सुंदर नारी नजर श्रावें ता कों
श्रंगीकार मति करियो॥ कदाचित श्रंगीकार हू क
रे तो वाकों कह्यो मति करियो॥ श्ररु जो कह्यो हू क
रे तो वाके बचन तें श्रस्वमेध जग्य तो मति करियो
जो श्रस्वमेध हू करे तो ब्राह्मनन की वरणी तो म

तिकरियौ अरु बालकन की बरणौ हू करै
क्रोध तै कदाचित हू निति करियौ परंतु हे रा
जन ये इतनी बात मैं कही है सो सब ही होय
अरु तू करैगो तापीछै तौकौं घोर दुष्ष होयगौ
पर ऐसै ही भवितव्य है तातै तू मेरे वचन
मानैगो पीछै तू मो कौं याद करैगो तब मैं तेरौ
संकट मिटाऊंगो ऐसैं कहि करि वेदव्यास आ
पके आश्रम कौं गये तब राजा जनमेजय
वेदव्यास कौ वचननौ निश्चय न मैं विचारि चैन
न करयौ यह कितनेक दिन तौ बात राजा या
दि राषी॥ तापीछै बिस्मरण होइ गयो ऐसैं र
हतै कोई एक सनैनै घोड़ान कौ ब्यौपारी आयौ
सो सुणि राजा घोड़ान के देषिबे कौं गयो तिन
मैं दोषरहित सर्वगुणसहित एक अश्व देष्यौ
ताकौ राजा षरीद्यौ अरु अश्वसाला मैं आप
सन्मुष बंधायो वाकौं देषि देषि बहुत प्रसन्न
होय ऐसैं रहतै कितेक दिन पीछै वाकी गति
वेग देषिबे कौं धनुष बाण धारि सवार होइ
न कौं चल्यौ तहां एक वराह कौं देषि वाके उपर
बाण प्रहार कर्यौ ताकै लागत ही वाके उदरतै
एक सुंदरी निकसी तासौं राजा पूछत भयौ है

सुंदरी तूकोंण है॥ देवांगना है के अपछरा है अ
थवा किन्नरी है के रिषकन्या है तेरोसो रूप मैं
ने और को देष्यो नही॥ तब कन्या बोली॥ हे राजें
द्र मैं राजरिषा की पुत्री हों॥ पिता की आग्यातें प
ति की बांछा करि मैं तेरे देसमे आई हों॥ तब
राजा बोल्यो॥ तिहारे पिता की कहा आग्या है क
हो॥ जब कुमारी बोली जंबूदीपके मध्य हस्ति
नापुर को राजा जनमेजय तेरो पति होइगो॥ ता
तें तो सों पूछो हों वह जनमेजय तूही है कहा॥ त
ब राजा बोल्यो॥ जनमेजय मैं ही हों॥ तू तेरे पिता
की आग्यातें मेरी भार्या हो॥ कन्या बोली॥ हे न
राजन दोइ बरदांन कि दियें मैं तुम्हे बरूं जब राजा
बोल्यो कोनसे दोइ बर हैं सो कहो मैं निश्चै दोंगो
तब कुमारी बोली मोकों पटराणी करो अरु मे
सहित अश्वमेधजज्ञ करो॥ जब राजा अंगीका
र करि गांधर्वबिबाह करि अश्वपे चढि पपुर
को आय महलनमें प्रबेस कस्यो॥ फेरि और
राणीन को त्याग करि वाही को पटराणी थापि
वाके संग विहार करन भये॥ तब कितने क दि
न पीछे वह महाराणी बोली॥ मैं पटराणी तो
भई पें अब अश्वमेध भी करो॥ तब राजा वाके ब

चनतै अश्वमेधकौ आरंभकरतभयो सबही
बेदपाठीब्राह्मणनकौंदेसांतरतैबुलाइवर
णीकरी आचार्यादिकसबही अपनेकर्मकर
तभये ऐसैंकर्महोतैंराणी अश्वकोउपस्थ हा
थमैंलेस्पर्सकरतभई जबउपस्थकौफलतौ
बधतौदेषिबरणीकेबालकब्राह्मणहँसे
तबउनकेदांतनिकसेदेषिराजाक्रोधकरिष
ड्गलेअठारह ब्राह्मणनकेमूंडकाटिअग्निकुंड
मेंडारिदिये जबअग्निकौंधूमसौंप्रज्वलितहो
यमंडपआदिहस्तनापुरकौंदग्धकर्‍यौ त
बराजापछितायोमैंजाणेंहूभूलिकरिकहा
कुकर्मकर्‍यौ पुन्यतौगयोब्रह्महत्यालगी पा
कौंनजाणियेंकहाफलहोइगो ऐसैंचिंता
करीरतैंहीराजाकेगजचर्महोइगलितको
ढभयो होठनासाकानभौंहहाथपावनष
केससबहीअंगगलिबेलगे सरीरमैंदुर्गंध
होइगई तबराजा अतिब्याकुलहोइबेदव्या
सकौंसुमरणकियो जबबेदव्यासआयेरा
जाकीदसादेषिबोले [illegible]
कायाआदि[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] हेजनमेजयतेंपापिष्टहैदुराचा

रीहै॥ तेरोमुषदेषणेंयोग्यनही॥ मैंतोसोंपह
लेहीकह्योहो सोतैंमेरोबचनमान्यौनही॥ त
बराजाबोल्यो॥ हेब्यासदेवमैंदुर्बुद्धीपापिष्ट
होंगुरुनकोबचनमांन्योनही॥ औरक्रोधक
रिब्राह्मणहमारो॥ मेरेअपराधनकौंतोकहां
ताईकहौं॥ परंतुअबआपमेरोउद्धारकरो॥ ज
बब्यासबोले॥ नीलकेरंगेअठारहबस्त्रनकों
अंतरपटकरिमहाभारथसुणि॥ अठारहप
र्वनकेसुणेसें अठारहहत्याजायगी॥ जोस
त्यमांनेगोतोजोमेरीकहासत्यनमानैंगोतो
नजाइगी॥ एकएकपर्वसुणैंसोंएकएकब
स्त्रनिर्मलहोइ॥ जोयहहीप्रमांणजांणियो॥ ऐ
सेंमांनिबेदव्यासकेमुषसोंराजाभारथसुण
तभयो॥ तबकथाकोप्रारंभकरिबेदव्यासनेंय
हहूकही॥ हेजनमेजयमहाराजकुरक्षेत्रकेजु
द्धमैंभीमसेननैंहाथी॥ जोफेंकेसोआकासमें
अद्यापभ्रमैंहै॥ यहसुणिराजाजनमेजयसोंस
धुन्योमनमेंआईनही॥ जबबेदब्यासआकास
मेंअन्नकोंरोकी॥ तबवेकीतनेकहाथीगिरेति
नसेंहस्तनापुरचूर्णह्वैवो॥ सोदेषिराजाबेदव्या
सकेपावनमेंगिस्यो॥ औरकहीमेंअपराधीहों

७ सोमेरौअपराधक्षमाकरौजबव्यासकह
जोतेरीओरहत्यातौनासहोइगी॥अरएक
हत्यानासजबहोइगीतबमेरीसंगबडिक
श्रमकौंचलैगो॥सोराजाभारथसुणेपांकू बै
दव्यासकेसंगबडिकाश्रमकौंगयो॥ब्रा
ह्मणनकेआगेव्यासराजासहितबैठिनिवेद
नकस्यो॥हेब्राह्मणहोमेराबीनतीसुणो॥यह
सोमवंसीपरीक्षतकोपुत्रराजाजनमेजयहै
सोयाकीएकहत्याबाकीरहीहैताहितुमनि
वारणकरो॥ऐसेंव्यासकेबचनसुणिउनब्रा
ह्मणननेंवहहत्यानिललिमरअंगीकारकरि
तप्रबलसौतो॥ आपमैंसोनासकरी॥तोहए
कब्रह्ममैंकोकछुकलीलच्छिकमिथ्यानही॥ते
वेदव्यासफेरिराजाकोहस्तिनापुरल्यायसिं
घासनपैबैठायराज्याबसेषकस्यो॥अरुकही
तैरोहाथीघोडारत्नद्रव्यधनधान्यपूर्वसंचि
तहैजोहैसोदानकरि॥ओरभारथकोपाठक
रिभोजनकरैगोजबयहअवसेसह[illegible]छूटै
गी॥ऐसेकहिवेदव्यासतोगये॥सोसुणि[illegible]राजा
जनमेजयदसदिनमेंपाठहोइतबभोज[illegible]नक
रतनयोयाप्रकारराजाकोकष्टजोग[illegible]
दु[illegible]करबे

दब्यासमुनिभारथकोसारकाढि समुच्चयकरि
बेशंपायनमुनि सिस्पहेतिनकोंदे केराजापास
भेजे। तबबेशंपायनकोंराजा आवतदेषिउठिहा
थजोड़िअर्घपाद्यनसोंसतकारकरि आसणपे
बेठायफेरिपूछतभये। मेंआजधन्यभयोकृतकृ
त्यभयो॥ आपकेआगमनकोकारण कहिये॥
तबबेशंपायनबोले॥ तेरेनित्यपाठकरिबेके
निमित्यभारथसारसंग्रह बेदब्यासनेपठायोहे
सोयाकोसुणिनित्यपाठकरो तुम्हारे सर्बपापमि
टेगेयहनिह्चेजाणो॥ तबराजाबोल्यो॥ मेंएका
ग्रचित्तहोइसुणोंगो॥ आदिमध्यअंतपर्यंत भार
थसारकेअठारहपर्बहें सोकहो॥ जबबेशंपाइ
नबोले॥ भारथकेश्लोककेएकचरणश्रवणतें
नँबदाकेदरसणतें॥ बिष्णुकेसुमरणतें॥ सर्ब
पातकनष्टहोतहें॥ तबराजाबोल्यो॥ हमारेपुर्ब
पुरषापांडवकेसेउतपन्नभये॥ अरुपांचनके
द्रोपदीएकहीभार्याभईयाकोकारणकहिये॥
तिश्रीभारथसारसंग्रहेआदिपर्बणि दुतीयो
ध्यायः॥ २॥ बेशंपायनउवाच॥ कोईएकसमे
मेंश्रीमहादेवपार्बतीकेलाससिषरमेंरत्नसिंघा
सनपेबेठिबिनोदकरतभये॥ तासमेंपांचब्र

मनसहितकामधेनआई॥ तबवाकौदेषिपा
र्वतीहसिकैशिवसौबोली॥ अहोदेवयाकौदे
षो सबदेवयाकोदंडौतकरैंऐसीयहकामधे
नुयांचग्रमननकौसंगलियेफिरतीलजावै
नहीहै॥ ऐसैंईस्वगुणकेकामधेनुपार्वतीकौं
सापदियो॥ हेपार्वतीतूंमेरीहासकरैहैसोमनु
ष्यदेहधारितूंपांचभर्तानकेसंगबिचरैगी॥ य
हमेरोवचनसत्यहोइगो॥ तबपार्वतीसाप
सुदुष्यतहोइमहादेवसौबोली॥ हेनाथयासाप
कौसुद्धहोइबेकौउपायकरौ॥ तबमहादेवम
नमैंबिचारकरिनंदीगणसहितब्रह्मापासगये
ब्रह्मामहादेवकौंआयेदेषिसतकारकरिच्या
रोमुषकरिकेस्तुतिकरी॥ औरएकमुषमैसौष
रकैसीअवाजनिकली॥ तबमहादेवब्रह्माकौं
दुष्टजांणिवाकौपंचमसिरकाट्यो॥ सोवहसिर
हस्तमैलग्योगिर्योनही॥ तबमहादेवब्रह्महत्
त्याकेभयकरिकैकैलासकौंआये॥ पार्वतीहर
हीतेंपतिकेहस्तमैंब्रह्माकेसिरकौंरुधिरचुच
वतोदेषिकहीइहांमतिआवो॥ तबपार्वतीहूअ
नादरकह्योजांणिमहादेवतीर्थजात्राकरनेंग
ये॥ ऐसैंफिरतेंएकब्राह्मणकेघरमैंगायदुहवे

आईहीतहांब्राह्मणबछाको चूंषतबीचहांमेंषें
चिबाधिदियो॥जबवाबछडानेसींगकीदेवाको
परकदियो॥तबबछाको ब्रह्महत्यालगी॥जबब
छाब्राह्मणीसोंबोल्यो॥ब्रह्महत्याकोदोसकहिबे
मेंआवेनहीं॥बालकहत्याएकजुगदहे॥स्त्रीह
त्यातीनजुगदहे॥गायहत्यापांचजुगताईदहे॥ब्र
ह्महत्याकल्पांतपर्यंतदहे पीछैरोरानर्ककोंपहुं
चावे॥सोयहदारुण ब्रह्महत्यामोकोंलगी॥तातेंसु
दरक्षेत्रमेंजाययाकेधोबेकोजतनकरोंगो॥ऐ
सेंउनकोसंबादमहादेवसुणतभये॥जबब्रह्म
हत्याब्राह्मणसोंनिकसिबछाकेसनमुषदोडी.ता
कोंदेषिबछूभग्यो॥वाकेपाछूहत्यालगी॥सोबछा
दोडिबाराणसीकोंगयो॥वहांमनकर्णिकामेंपडि
प्राणछोडिरुद्रलोककोंगयो॥महादेवभीवाबछ
ाकेपाछूपाछूगये॥तहांसिरहाथसोंछूटिगंगा
मेंगिरयो॥तबमहादेवहूकासीमेंप्रवेसकर्‍यो॥ह
त्याबाहररही॥फेरिमहादेवजबकासीसोंबा
हरनिकसेंजबह्महत्यासाथआवतदेषेंतासोंफे
रिनेमकरिकासीहीमेंबासकरतभये॥ऐसेंरहतें
कितेकदिनपीछेंत्रिपुरनामादैत्यप्रगटहोइत्रै
ल्योकपीडितकियो॥जबसबदेवता.

पासगये जबब्रंमाकहीयह असुर महादेवही
सोंमरेगो सोसुणिदेवतामहादेवकोंनरलासक
रिवेकोंपार्वतीपासजायपूछोमहादेवकहांगये
पार्वतीबोलीमनुष्यलोकमेंतीर्थजात्राकरिवेकों
गयेहैं सोतुमहू तलासकरो जबविष्णुसहितस
बदेवकासीमेंआयशिवकोंदेषिप्रणामकरिचा
रोतरफठाडेरहे तबशिवबोलेहेदेवताहोंतुमर
कोंणकाजकोंआये सोसुणिदेवबोले त्रिपुरासु
रतीनोंलोकजीते तातैंतुमके तलासचलौ अत
वाकोंमारो ऐसेंसुणिशिवसबसमाचारविष्णु
सोंकहिकहामेरी ब्रह्महत्यामिटेतौचलौं ऐसेंपा
यनबोले शिवकोंसुद्धकरिवेकोंविष्णुहत्याकेपा
सजायबोले हेहत्यातूशिवकेसरीरकोंछोडि औ
रजोबरमांगैसोहीहोयगो तबहत्याबोली अठा
रहअछोहणीसेनाकोरुधिरपानकरावोतोत्रिपु
रसारवेताईमहादेवकेसरीरकोंपीडाकरौंनहीं
विष्णुबोले द्वापरजुगकेअंतमेंचंद्रवंसमेंअवत
रलेतैसेमनवांछितरुधिरपानकराऊंगो ऐसैंवि
ष्णुकेबचनतैहत्याशिवकोंछोडि तबशिवदेवमंडल
सहितकेलासमेंआयसामग्रीबणायत्रिपुरकै
विधुंसकसो

[illegible] ॥ ३ [illegible] ॥ तापीके दे
वता आप आपके स्थान गये विष्णु वैकुंठ गये
ब्रह्मा महादेवसे बोले। हे रुद्र तुम हत्या नाश
को उपाय करो तब कल्याण होयगो॥ तब ब्रह्मा
महादेव विष्णुके पास गये। महादेव बोले। हे नारा
यण देव मैं मदतातें दारुण कर्म करो। अब या
पापतें शुद्ध होयवेकूं प्रायश्चित्त बतावो तब भ
गवान बोले॥ हे महादेव तुम संन्यासीको रूप धा
रि बारह वर्ष पर्यंत पृथिवीमें तीर्थ यात्रा करो
ब्रह्माके शिरकूं हाथमें राखो भिक्षा भोजन करो
ऐसे करतें गौतमी गंगा पहुंचोगे तब शुद्ध होवो
गे जहां श्री नृसिंह विराजै है वहां पवित्र तुम होवो
गे॥ वा हत्याकूं वांछित रुधिर पान पापरूप मेंकूं
राक्षस गो॥ विष्णुकी आज्ञातें रुद्र तैसे ही करत भ
ये। गोदावरीमें स्नान करतेंही ब्रह्माको शिर हस्त
तें छूटि पड्यो। शिव शुद्ध होय कपालेश्वर नाम शिवलिं
ग स्थापन करत भये। कुंभराशिमें शनैश्चर सिं
ह राशिमें वृहस्पति ऐसे योगमें जो गोदावरी स्ना
न करै सो सर्व पापनसों मुक्त होय। ऐसें गोदाव
री स्नानतें शिव कूं शुद्ध देषि विष्णु बोले हे महाद
व तुम पांच देह धरिकै पृथ्वीमें क्षत्रिय वंशमें

अवतारलेहयवासकरो पार्वतीभीद्रुपदराजा
कीकन्याहोवो ऐसौविष्णुकेबचनअंगीकार
करिमहादेवहुनिजस्थानआये जितनेंमहा
देवकेजोसआवेतापहलेंअलागंगाकगौरीकें
भीयहकथाकहिकहीमहादेवगोदावरीकोसे
वनकरेहैं तुह्मारोअनादरकरिदियोतोहतु
मक्षमाकरोहो परंतुऐसेपतिसूंक्षमाकरणोयो
ग्यनहीं ऐसेंउपदेशकरिउनदोऊनकेहृदयमें
रोषकरवाय दियोमहादेवमंदिरमेंआवतेही
गंगागौरीशिवसूंकलहकरतभयी तबमहादे
वहूरोषकरपूर्णहोतभये धृतकीआहुतिनक
रिजैसेंअग्निप्रज्वलितहोयतैसेंप्रचंडहोयकरि
गंगासूंतौयहबोलेतुमतौपृथ्वीमेंशांतनुराजा
कीभार्याहोवोगी पार्वतीसूंकहीतुमद्रुपदके
कन्याहोवोगी ऐसेंसुणक्रोधछोडिपार्वतीमहा
देवतेंबीनतीकरतभई जहातुमवसोतहांहो
मेंवसूंताहीमेंमोकूंसुषहोयतातेंमनुष्यलोक
मेंतुमहूअवतारधारोयहभीयोग्यहै महादेवबो
लेहमहूपंचमूर्त्तिधारिकेंतुह्मारेभर्त्ताहोयम
नुष्यलोकमेंविहारकरैंगे गंगासूंकहीतुम
हूमेरोअंशशांतनुराजाहैजहांमानुषीरूपधारिह

स्तिनापुरमैं जायवा की सेवा करो॥ शिवके वच
नतैं गंगा दिव्यमानुषीरूप धारि गंगातीर आई॥ ता
समयमैं चंद्रवंशी शांतनु राजाहु विहारके निमित्त आ
ये॥ ताहा सुंदरीनारीकूं देषिताके रूपकरि मोहित
शांतनु राजा पूछत भये तुम कोण हो कोणकारणतें
यहां आई हो सो कहो॥ गंगा बोली॥ मैं गंगा हूं शिवके
शापतैं पृथ्वीमैं आई हूं उत्तम वरकी बांछा है॥ शां
तनु बोले मैं सकलराजानकरि पूजित शांतनु
नाम राजा हूं मोही कूं तुम वरो॥ गंगा बोली॥ म
हाराज तुमकूं वरूंगी परंतु मैं मेरी इछातें जो
करूं सोही करूं॥ ताकाप्रकरतें जब रोकोगे
तब ही न रहूंगी॥ शांतनु राजा कहे मा फक करार
करि निज मंदिर लेगये विवाह करत भये ताके
संग विहार करते करते सात पुत्र भये परंतु जो
पुत्र भयो ताहाकूं गंगाप्रवाहमैं वहाय दियो ऐ
सें सात पुत्र वहाये॥ तहां ताई तो शांतनु नमारा
घी अष्टमपुत्रकूं वहातें मने करा तब ही गंगा अं
तर्ध्यान होय कैलास गई पुत्रकू शांतनु पालन क
स्यो॥ गांगेय नाम कस्यो वह ही भीष्मनाम करि
विष्यात भये॥ शांतनु वहोत वर्षपर्यंत भार्या र
हित रहे॥ पीछे हरिदास कैवर्त की कन्या म

स्योदरीसोंमेंआ नकहं ऐसेसेभीअक
रिवाके॥ प्रसन्नकरिपिताकोविवाहकरा
ऐसेंसुणिजनमेजयपूछतभये॥ हरि
केवर्तकीपुत्रीसेंतनराजाहोइकैसेंब्याह
हमेरोसंदेहनिवारणकरो॥ वैशंपायनव
सुधन्वानामराजादेसांतरगयो॥ वाकीनाय
सुसीलाघरमैंरजस्वलाभई॥ तबमित्रदास
कोस्वामीकेपासपठाई॥ सोसिकराकोरूप
धारीराजाकेपासगई॥ जबराजाहनामैंब
जंघालवाकोदियो॥ सोलेकैवहआवैहीत
हामार्गमेंएकऔरसिकरीआई॥ जहांदोजन
कैजुद्धभयो॥ तबवहदोनायमुनामैंछूटिप
स्यो॥ नाहिमांसकोमस्योमछी॥ निगलगई॥
सोवह॥ अद्रिकानामअप्सराही॥ परंतुऐसा
केशापतेमछीभईहो सोवीर्यनिगलगई॥ ता
केप्रसूतिभई सोअतिरूपवतीकन्याभई ता
पीछेवहमछीतोअपनेलोकगई॥ वाकन्या
कोधीवरपालतभयो॥ होइ वाकेनामधरेग
न्धकाली॥१॥ सत्यवती॥२॥ तापीछेवहहरिदा
सधीवरवाकन्याकोपालबडीकरिएकनव
गबणाइहई॥ सोधर्मकेअर्थआवेगयेनको

पारउतारनरहे॥ ऐसेंकोईक समेंमेंसिष्यन
सहितपरासरमुनिआये॥ वाकन्यासोंकही ह
मकोंपारउतार॥ तबवहमुनिकोंनावमेंबैठाइ
पारउतारतभई॥ तहांमध्यानसमेंजमुनाकेबी
चिवालरुणीकोंनावमेंइकलीदेषिमुनिबोले
तोमेंसंतानउपजावैंगे॥ जबवहलोसबजन
चारोंतर्फसोंदेषेहें॥ अरुमेंकन्याहों॥ तबमुनि
बोले कोऊहूनदेषेंगो॥ अरुतप्रसूतिभयेंहू
कन्याहीरहैगी॥ ऐसेंकहिचारोंतर्फअंधका
रकरिअंगसंगसोंमछुगंधाहीताकोंजोजनगं
धाकरिगर्भधारणकरायमुनिगये॥ तबवहहूज
मुनाकेद्वीपमेंबदरबेरागपारंगत ऐसोपुत्रजनें
तभई॥ द्वीपमेंजनमेंताते द्वैपाइनकहाये॥ सो
वेदपाइनबोलेजबविपदामेंतमोकोंयादिक
रैगीतबहीमेंआऊंगो॥ ऐसेंकहिबनमेंतप
करिबेकोंगये॥ मुनिकेप्रतापतेंवहपुत्रजनं
मेपीछूहूपहलैंहीतैसीहीकन्याहोइगई॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]॥ पुत्रप्रसूतभयेंपीछूहूकन्या
हीरही॥ ऐसीजोजनगंधाताहिराजासोंतन
[illegible] कैतनसोंजाचनाकरी॥ त

तबहरिदासबोले॥ यामेंपुत्रहोइसोहीराज्यक
रे॥ यहकरारकरोतोकन्यादेउ॥ जबसंतन
भीष्मकोजेष्टपुत्रजानिवाकोबचनसुणिपुर
कोंआये॥ पैसत्यवतीकेरूपकोसुमरणक
रतरातकोंनींदनआई॥ प्रातहीमंत्रीनसोंस
बवृत्तांतजाणिभीष्महरिदासपासजायपिता
केनिमित्यकन्याजाचतभये॥ तबहरिदासबो
ल्योकन्यातोकोंतोदेउ॥ तुम्हारेपिताकोंन
देउ॥ तुमजेष्टपुत्रहोसोतुम्हारोपुत्रतोरा
ज्यपावे॥ अबराजाके अबपुत्रहोइसोराज्य
पावैनहीं याकारणते॥ तबभीष्मकहीमेंराज्य
हूकरोंनहीं औरव्याहहूकरोंनहीं ऐसीप्रत्या
ग्योकरिपिताकोबिवाहकरायो॥ जबपिताहू
प्रसन्नहोइभीष्मकोंसुइच्छामृत्युकोवरदा
नदियो॥ तापीछेवाजोजनगंधामें दोइपुत्र
प्रगटभये॥ एककोनामचित्र॥ दूसरोबिचित्र
नाम॥ ऐसेपुत्रभये॥ पीछेसंतनधरलोकग
ये॥ तबभीष्मसत्यवतीकोंमातृभक्तिकरिसे
वतभये॥ चित्रबिचित्रकोंतरुणदेखिकासी
केराजाकीतीनकन्या॥ अंबा१ अंबिका२
अंबालिका३॥ ऐसीतीनकन्याहीतिनकोंस्व

पंबरतें बलक रिलैं आये। सो उनदोऊ भ्रातां
नसों व्याह करतभये॥ तब अंबा बोली। मेरो म
नसाल्वराजामें आसक्त है। जबवाकों साल्व
पास नेजि अंबिका अंबालिकाको व्याह चित्रवि
चित्रसों कियो। अंबा साल्वपास गई। ताहिदे
षिसाल्व कही भीष्म तोहि जीतिलेगयो सो तू
वाही की भार्या है में तो व्याह करों नहीं। तब वह
भीष्मपास आई। कही मेरो चित्रविचित्रसों व्या
करो के तुम करो। जब भीष्म कही तेरो चित्त श्रा
रमें आसक्त है सो हमारे काम की नहीं। तब व
ह कन्या दोऊ तर्फ सों भ्रष्ट भई। जो मुनिनके पा
स जाय सन्यास धारण कीजा चताकरी। तहां मु
निनमंडली में होत्रवाहन नाम राजऋषि याको नाना
हो सो याको दुष्य देषि बोल्यो। हे पुत्री महेन्द्र पर्वत
में परसुराम है सो वे भीष्म के गुरु है तिनपास
जा उनको वचन भीष्म मानि तोहि अंगीकार
करेंगे। ऐसें वार्ता होत परसुराम के सिष्य
अकृतव्रण बोले। भ नोनपरसुरामजी याको
वेगसो उनसों सबही निदिभ्रतांतकहैंगे। चे
में कहिवाको वहां हैं तपी। जब प्रभात हो पर
सुराम आये। तब उनसों सब वृतांत

स्यो ॥ सो मुनि परसुराम कही भीष्म मेरो सिष
है सो मेरौ वचन मानैंगो ॥ तेरो मनोरथ सिद्ध
करिबे कौं कुरक्षेत्र चलैंगे ॥ ऐसैं कहि अंबा कौं
संग ले कुरक्षेत्र गये ॥ वहां भीष्म गुरु कौं आये दे
षि विधिवत पूजन कियो ॥ तब परसुराम क
ही या अंबा सों बिवाह करो ॥ जब भीष्म नटगये
तब परसुराम क्रोध करि जुद्ध कौं तयार भये
जब शांतनाई गुर सों जुद्ध करबो धर्म है जांणि
भीष्म हू सनमुख आये ॥ तहां दोऊन कौं अतिघो
र जुद्ध भयो ॥ परसुराम के अस्त्र प्रहार करि भी
ष्म अचेत जब मूर्छित होइ ॥ तबही गंगा गुप्त आई
आपके जल सों अभिषेक करि सचेत करे तब
भीष्म फेरि जुद्ध कौं संनद्ध होइ होइ जुद्ध करत भ
॥ ऐसैं तेईस दिन लौं जुद्ध भयौ ॥ तापीछे दोऊ
मास्त्र जुद्ध करिबे कौं तयार भये सो देषि देव
आइ दोऊन की स्तुति करि जुद्ध निवारण क
री ॥ ऐसैं हू आपकौ मनोरथ सिद्ध न भयो ॥
ग ॥ अंबा भीष्म के मारिबे कौं तप करत भई
मुना तीर वाको उग्र तप देषि महादेव
बोले वर मांगि ॥ जब अंबा बोली मैं भीष्म
री ॥ तब महादेव कही तेरी इच्छा जनमां

तरमैंसफलहोइगी॥ऐसेंकहि अंतरध्यानभे
येसोसुणि॥अंबाहू अग्निमैंप्रबेसकियो॥द्रुपद
राजाहूपुत्रकेनिमित्ततपकरतहोताहूकों॥
महादेवबरदांनदियोजोतेरै प्रथमपुत्रीहो
ईकछुकदिनमैंवहहीपुत्रव्है जाइगो॥ताब
रदांनतैंअंबाद्रुपदराजाकेपुत्रीभई॥सोद्रु
पदहूपुत्रपुत्रभयोकहि पुत्रकोसोसबउ
त्सवकरयो॥ताकोंदसार्णदेसकेराजाहिरन्य
बर्माकीपुत्रीसोंब्याहकरायो॥तबयाकुल
कोंराजांजांणिसेनालेद्रुपदकोनगरघेरयो॥
तबवहकन्याभागिबनमैंजायरुदनकरत
भई॥सोवहांस्थूणाकर्णनामजक्षसबब्रत
तजांणि॥दुःखनिवारणपर्यंतआपकोपुरुषार्थ
देतभयो॥तबयहकन्यापुरषहोयमातापि
तासोंमिलिहिरन्यबर्माकोंपुरसार्थजताइ
परबसांतकरयो॥तापीछैं वहजक्षस्त्रीहोइआ
पकेभवनमैंरहे हो॥वहांकुबेरआयेसोस
मीपहूआयेजांणिदानेंसतकारनकरयो॥त
बकुबेरहूबत्तांतजांणिवाकोंशापदियोजब
[illegible] जीवैगो तबताई वहपुरसहीरहै

गो तू स्त्री ही रहैगो ॥ ऐसे कहि कुबेर आपके
धाम गये ॥ वह जक्ष फेरि आपको पुरुषार्थ ले
स को गहो ॥ वह कन्या भीष्म के मारिबे कौं भ
य सिषंडी भयो ॥ ताणी कैं चित्र बिचित्र तरुण भ
ये सो स्त्रीन के भोग बिलास में रहै ॥ भीष्मपि
तामह माता की सेवा में रहैं ॥ सो उनको सेवा में
रहत देषि चित्र बिचित्र मन में बिचारत भये ॥
जो यह भीष्म राज्य कौं सत्यवती पालत है है
सो या पापी को बध करैंगो ॥ ऐसें मन में धारि
षड्ग लै उनकी चेष्टा देषिबे कौं राज्य कौं गुप्त रहैं
तहां उनको सब चेष्टा देषी सो भीष्म कौं सोषु
ख्वत सेवा करत देष्यौ ॥ सत्यवती कौ मातास
लरहतें देषि अपमान भये लज्जित होइ आप ये
कौं धिक्कारत भये ॥ भीष्म सों बोले जो माता
कौं वा जेष्ट भ्राता कौं निरादर अव विचारैं ता
कौ कहा प्रायश्चित ॥ तब भीष्म बोले जो माता
कौं वा जेष्ट भ्राता कौ बध विचारैं ता कौ ह
जार ब्रह्महत्या को पाप लगै ॥ सो वह समीप्र
ज्वालीधनज्वाले में प्रवेश करि दाह करै त
ब सुद्ध होइ ॥ ऐसें सुनि बन में जाय दो कवा

सौविधिसौंनेरै तबनीभृतुए दहोतदुस्सह
रतनये जबलसवतीवाक्यनितैं नौमसौं
बहुतकहीपैंसतव्यानेंगहेनयसौंविवाहवा
ह्मनकरतनये तबसलवती पूछ्योहेल
कैसैंहै जबनीअबेदेव धवनदेवाम
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

केवेदव्यास सुतो गये तीनूं तीनोंनकेपुत्र
भये अंबिकाके प्रथम बडोपुत्र भयो ताको
नाम धृतराष्ट्र हुवो अंबालिकाके भयो ताको
नाम पांडु दासी के भयो ताको नाम बिदुर इन
तीन्योनको भीष्म बहुत सनेह करि पाले फेर
बडे भये जब उनको ब्याह करिबेको बिचारो
ताही समै सुणी गांधार देसको राजा सुबल
ताकी पुत्री गांधारी सो महादेवको पूजन क
रि सौ पुत्र होबेको बरदान पायो है तब भीष्म
जायवाको देस भनरलदे गांधारीको ल्याय
धृतराष्ट्रको ब्याह कर्यो श्रीकृष्णको पिताम
ह सूर ताकी पुत्री पृथा ताको कुंतभोज राजा
को धर्मपुत्री करिबेको दीनी बाने कुं
तीनाम करि पालन कर्यो एक दुर्वासा ऋ
षीकी सेवा मैं राषी तासों दुर्वास प्रसन्न होइ
मंत्र दैकै कही या मंत्रको पढि जा देवताको
स्मरण करैगी सोही आवैगो एकतामैं
वाकरैगो ऐसे कहि दुर्वासा तो गये कुं
तीमैं आय मंत्र पढि सूर्य देवको सुमर
ण कीयो सूर्य आये तिनै देखि कुंती

कहीहेमहाराजआपपधारोमोकन्याकोअ
पराधक्षमाकरोमैंतोमंत्रकीपरतायनेबेको
यहपढ्योहो॥तबसूर्यबोलेहमारोआयबो
व्रथाहोइनहीं॥तोमैंएकपुत्रप्रगटकरैंगेअरु
तेरोकन्यापणहूनमिटैगो॥ऐसेंकरिवाकेगर्भ
राषिगये॥ताप्राछेंकवचकुंडलसहितसूर्यसम
जाकोतेज॥ऐसोएकपुत्रभयो॥ताकोंकुंतीअप
वादभयतेंसंदूषमेंधरिगंगामेंबहाइदियो॥आ
पकन्याहीरही॥सोराधासहितअधिरथसूतअ
पुत्रगंगामेंस्नानकरतहो॥तहांवानेंसंदूककों
देषीजबलेकेंवाकोंषोलीतामेंपुत्रदेष्यो॥तबवा
कोकर्णनामधरिपुत्रकरिराष्यो॥वाकुंतीसोंरा
जापंडुकोविवाहभयो॥दूसरीमद्रदेसकेराजा
कीकन्यामाद्रीताकोंब्याही॥देवकराजाकीदा
सीकीपुत्रीपारसवीकन्याविदुरकोंब्याही॥ता
मेंसतपुत्रभये॥इतिश्रीभारतसारसंग्रहेआदिप
र्वणिपंचमोध्यायः॥ ॥वैशंपायनउवाच॥ताप्राछेंधृ
तराष्ट्रतोअंधविदुरदासीपुत्रऐसेंविचारभीष्म
पितामहपांडुकोंराज्यदेतभये॥तबपांडुधनुष
विद्यामेंनिपुनभये॥सोपत्नीनसहितबनमेंसि

कारकौंगये॥ राजावहांजायअनेकजीवनकौंमा
रिबडोहर्षपावतभये॥ ऐसेंसिकारकरतेंवहदि
नएकहूंनभयोतामैंपापसंचयनहोय॥ सोएक
दिनाकिंमदनामामुनिदिनमेंबिहारकरयोचा
होसोस्त्रीसहितमृगरूपधारिबनमेंविहारकर
तरहे॥ ताकैंपांडुनेंबांणमारयो॥ तबवानेंशापदि
योजबतूंस्त्रीसंगकरैगो॥ तबहीमरैगो॥ यारी
तिकेशापसेंपांडुहूंबहुतसंतापपायो॥ तापीछैरा
ज्यभीष्मकोंसोंपिपांडुदोऊस्त्रीसहितगंधमाद
नपर्बतकोंगयो॥ वहांरिषनकीसंगतितेंसंतो
षपायसततंश्रृंगपर्बतमेंतपकरतभये॥ तहांकुं
तीसोंकहीतुमदेवतासोंवारिषिसोंसंतानपै
दाकरे॥ तबकुंतीदुर्बासाकेदियेमंत्रसोंधर्म
कोंबुलाइपुत्रउत्पन्नकरयो॥ १ तासमैंमेंआका
सबाणीभईजोयहयुधिष्ठिरनामामूर्त्तिवानधर्म
हीहै॥ यहश्रतातसुणिकैंगर्भवतीगांधारीपेटकों
कूटिकेतंवाएकजननतभई॥ सोवेदव्यासकीआ
ग्यासोंवातुंबमेंतेसत्तमरूपसतपुत्रएककन्या
निकसे॥ तिनकोंजुदेजुदेघृतकुंभनमैंराषिपा
लनकरे॥ सोदुर्योधनआदिसतपुत्रभये॥ दुस्सला

नामकन्याभई॥ जासमैदुर्योधनभयो वाहीसमैं फेरकुंतीपवनतैं भीमकौउतपन्नकस्यो॥ताके जन्मसमैदेवबाणीभई॥यहभ्रा ताकौमक्कदस ह ज्ञारहाथीनकोबलधारैगो॥वा भीमपुत्रकौगो दमैंलियैकुंतीव्याघ्रभयैतैउठीतबवहगोदमैं तैगिस्योसोकितनेक पर्वतचूर्णभयेतातैसत्यही भीमनामभयौ॥ तापीछैकुंतीइंद्रकौंबुलाइअर्जु ननामापुत्रकौप्रगटकस्यो॥वाकेजन्मसमैइंद्रा दिकदेवताआइपुष्पनकीब्रष्टिकरी॥अरुदेवबा णीभईजोयहबालकबैरीनकेनासकरिबेवालोइं द्रसमहोइगो॥ ऐसैंतीनपुत्रदेषिपांडुकुंतीसोंबो लातेरेअनुग्रहतैंमाद्रीहूपुत्रवतीहोइ॥तबकुंतीव हमंत्रजपिमाद्रीसौंकह्योकोईदेवकोसुमरणक रो॥जबमाद्रीअश्वनीकुमारनकोसुमरणकस्यो ताकरिदोइपुत्रउतपन्नभये॥तासमैंदेवबाणी भईयेनकुलसहदेवनामांअतिसुंदरबैरीनकौ नासकर्ताहोहिगे॥ ऐसेंपांचपुत्रनकीबाललीला देषिपांडुकैंबडोआनंदभयो॥तबकोइकसमैमें॥ वसंतरितकरिबनकीसोभादेषिपांडुकामातुरहो

पायौ॥ पतिकौं पंचतत्त्व प्राप्त देषि माद्री कुंतीसों बो
ली॥ इनपुत्रनकौ तौ पालन तुमकरौ मोमें स्वामी
कौ प्रेम अधिक है सो मो बिना परलोक हूमैं सुष न
पावैंगे तातैं सहगमन करौंगी॥ ऐसें कहि पति के सं
ग अग्निप्रवेस कियो॥ तापाछैं सतश्रृंगबासी मुनि
पांचौ पुत्रन सहित तेरवें दिन कुंती कौं भीष्म के पा
स ल्याय पांडु कौ सब ब्रत्तांत कह्यो सो सुणि अंतः
पुरसहित भीष्म रुदन करयो पाछैं उनकौ प्रेतकार्य
सर्व कराये॥ तापीछैं भीष्म धृतराष्ट्र के तौ सतपु
त्र पांडु के पांच ऐसें एकसौ पांच पुत्रनकौं समा
न जांणि पालन करत भये॥

तापाछैं तहां पूर्वं तप करतें सरद्वान मुनिकौं बी
र्य उर्वसीकौं देषि सरनके गुछ मैं गिरयो॥ ताकै
दोइ बिभाग भये सो एक तौ कन्या॥ दूसरो कुमार
सो शांतनु राजा शिकारकौं बनमैं गये है॥ तहां उ
नकौं देषि कृपा करिकैं लै आये॥ तातैं कन्याकौं
नाम तौ कृपी॥ अर पुत्रकौ नाम कृप धरयो॥ वे कृ
प सरद्वान मुनितैं बाणबिद्या मैं पारंगत भये जा
णि भीष्म कौरव पांडवनकैं उनपै बाणबिद्या पढाय

बेकों अर्पण करे तिनपास सब प्रकार की धनुष
बिद्यासीषे अरु बालक्रीडाहू करें॥ तामें सबही में
समान प्रीति रहै नहूं भोज्य सामिलही करें॥ चोपड
हू षेलैं मल्लबिद्याहू सीषें॥ जलक्रीडा करें तामें भी
मसत्तनपें चढें बालक तिनकों अदहलाय हला
पपटके तहां कितने कें मरफूटिजाय काहू को हा
थ पांउ टूटिजाय ताको बडो कोलाहल होत भयो॥ ऐ
से देषि दुर्योधन दुष पाय भीमके मारिबेको उपाव
कह्यो गंगातट तामैं प्रमाण कोटी नाम एकक्री
डास्थान बणायो॥ तहां सबही क्रीडा करें भोजन क
रें॥ ऐसें करतैं एक दिन भीमकों विषके मोदक
षवाये॥ तहां भीमकों घोर निद्रा आई जाणि दुर्योध
न आपके सारथी पासलतान सों बधाय गंगामें
पटकाय दियो॥ पडतें ही प्रथ्वी बिदीर्ण भई सो वह
नागलोककों गयो॥ तहां अनेक नाग रुधिरपान
करिबेकों वाकों डसत भये॥ तिनकें डसबेतें याको
सरीर निर्बिस होय॥ चेतन्य भयो॥ तहां आर्यकना
म नागराज याके नानाको मित्र हो सो दोहित्र जा
णि अम्रतपान कराय वहां राष्यो॥ इहां कौरव
भीमकों मयो जाणि हर्षित भये॥ भीष्म

६ धिष्टर दुषी भये ॥ तहां कितनेक दिन भोग भो
गइ नागराज जा मार्ग तैं आयो हो ताही मार्ग
होइ गंगा तीर पै चायो सो पुर मैं आयो भीम
ताकौं देषि जो पहलैं सुष पायो हो सो तो दुषी
भये दुषी हे सो सुषी भये ॥ ऐसें आपुस मैं ईर्षा
करते परसपर सस्त्रन को अधिक ॥ अधिक अ
भ्यास करत भये ॥ इति श्रीमहाभारते [illegible]
[illegible]
भरद्वाज मुनि को वीर्य घृताची अपसरा के दरस
न तैं ॥ चलित भयो ताहि द्रोना मैं राष्यो तहां पुत्र उ
त्पन्न भयो जातैं द्रोण कहायो ॥ वे भरद्वाज मुनि
तैं वेद वेदांग सस्त्र अस्त्र विद्या सीषत भये ॥ भर
द्वाज मुनि कौ शिव ब्रह्मास्त्र दियो हो सो हू इनकौं
दियो ॥ कृप की भगनी कृपी तासौं ब्याह भयो ॥ ता
कृपी मैं उच्चैश्रवा के सी तरै गर्जना पुत्र पैदा भ
यो तातैं वाकौ नाम अश्वस्थामा धस्यो ॥ ता पी
छैं द्रोण द्रव्य की बांछा करि परसुराम पास गये
ता समै परसुराम सर्व सुदान कर चुके हे तब
इनकौं रहस्य सहित धनुर्वेद दियो ॥ अरु बाल्या
अवस्था मैं राजा प्रसत कौ बेटा द्रुपद भरद्वाज पा

सधन्तुविद्पढतभयो॥तहांहीद्रोणद्रुपदमित्र
भये॥जबद्रु॥पदयहप्रतग्याकरी॥मैंराजाहोहुं
गो।तबतुमकों॥आधोराज्यदेउंगो॥द्रोणाचा
र्यकितनेकदिनपीछैंद्रुपदकोंराजाभयो।सुणि
हूतपकरतरहे॥विचार्योकेराजासत्यप्रत
ग्यावांनहै॥जासौंजाइहौंजबवहमारौ आधोरा
ज्यलैवैगो॥तहांकृष्ण स्यामावालकोसौए
कदिनऋषिनकेजग्यमैंजायवहधपियौतारी
केमातासौंआयकेविहठकरिदूधमांग्यौ।
तबमाताजबतिओइनदेविदूधकेवोमल
करिपायो।जबइनकौपतौहूथनहीं अ
रु बहुतहृदनकस्यो तोहुतोद्रोणाचार्यवि
चारकियोजोआजताईकर्पोतव्रतकरितदि
वाहकरतहे।पैअवबालकतेदैइधवाके
रुदनकरयो सोहृधगायबिनाहोइन्हीं तातें
द्रुपदपासजाय आधोराज्यलैणो जैसौंवि
चारकोद्रुपदपासआयै।द्रुपदकेवेकहीं
राजामैंकहौदुर्भाग्योपरिचौवितेव आयौहै
जबद्रुपदआयहनतौनराजाहै दिदेके
[illegible] कैकहैहै द्रव्य

लकही चोर पहरे में गछालाधारे दंडलेमेनि
चुकसा है ऐसें सुणि राजा को क्रोध तो आयो
परंतु ब्राह्मण जांणि क्रोध कौं रोकि कैं बुलाइ अ
र्घ पाद्य करि आसन पै बैठाय पूजन करि भोज
न की प्रार्थना करी सो सुणि द्रोणाचार्य कही मैं
तेरो प्राचीन मित्र हों सो आधो राज्य देणो कह्यो
हो सो देगो जब भोजन करैंगे तब राजा क्रोध
करि भ्रकुटी चढाय कह्यो ऐसी बालकपणे
की बातन में कहा है तासों भोजन करि कछु क
रिनका देणो होइ तो रहो नहीं तो नमस्कार है
पधारो जब द्रोणाचार्य बोले राजा न तो म लि
गयो परंतु जो मैं साचो द्रोण हो तो तो कौ मित्र
ता को फल दिखाऊंगो ऐसें कहि वहां तें चले सो
हस्तनापुर के वन में आये उहां कौरव पांडव
बालक्रीडा करत हे सो उनकी गेंद कूप मैं गिरी
ताहि निकासन सके तब द्रोणाचार्य इसीका
स्त्र के इसीकन सों वेधि वाको निकासि बालक
न कौं दीनी तब बालक प्रसन्न होइ यह वृत्तां
त भीष्म सों जाय निवेदन कस्यो सो सुणि भी
ष्म उनकौं सर्वसुरूप जांणि उनके पास आइ क

ही आपपधारेमहाराज्य आपही कोहे इनबालकनकों अस्त्रसस्त्र विद्यापढावो॥ ऐसेंकहि सतकारकरिपुरमेंलेजाइसर्वसामग्रीकरि सहितसुंदरभवनमेंराषे॥ तापीछेसुभमहूर्तमेंबालकनकोपढाइबेकोआरंभकस्यो॥ द्रोणाचार्यधनुर्बिद्यापढावतसुणिसर्वदेसदेसनके राजपुत्रहूपढिबेकोआये॥ तिनमेंकर्णहूआयो औरधृतराष्ट्रकेबेस्यकीबिवाहतकन्यामेंयोपुयुत्सनामांपुत्रसोहूआ

यो॥ उनसबीबालकनमोकर्ण॥ ऐसेसो भयोजैसेंनक्षत्रनमेंचंद्रमा॥ औरअर्जुनउनमेंतेजकरिसूर्यवतसोभितभयो॥ तहांसबदिनहीमेंअभ्यासकरै॥ अर्जुनरात्रसमें अंधाकारहूमेंअभ्यासकरैजासोंसबदबेधीभयोतासोंगुरअतिप्रसन्नहोतभये॥ अरु आपकीसर्वबिद्याकोभारधरबेलाइकअर्जुनकेअश्वस्थामाहीकोंमानतभये॥ भीमदुर्योधनयेदोऊगदायुद्धमेंनिपुनभये॥ षड्गजुद्धमेंनकुल॥ अश्वजुद्धमेंयुधिष्टरसहदेव॥ औरहूनानाप्रकारकेजुद्धनमेंनिपुनभये॥

२०) छेएकलव्यनांमाभीलद्रोणाचार्यकेपासबा
णविद्यासीषवेकोंआयो॥ताहिभीलजांणि
द्रोणनटिगये॥ तबवहबनमेंजायमृत्तका
यद्रोणाचार्यकीप्रतिमांबणायबांणविद्यासी
षबेलग्यो॥सोअभ्यासकरतेकरतेबांणविद्यामें
पारंगतभयो॥एकसमैंद्रोणाचार्यकेसिष्यबन
मैंगये॥तिनकोदेषिस्वानभुस्यो॥तबभीलनें
वाकोमुषबांणनसोंतरकसकेसीतरेभरिदियो
जबयहसुफाईलाघवतादेषिवेसबआश्चर्य
मांनिवासोंपूछ्यो यहबांणविद्याकोंणपास
सीष्यो॥तूकोंणहै॥ जबवहबोल्यो॥भीलनको
राजाहिरण्यधन्वामेरोपिताहै॥एकलव्यमेरो
नांमहै॥द्रोणाचार्यपासयहधनुषविद्यासीष्यो
है॥यहसबसुणिद्रोणाचार्यपासआयबात
निबेदनकिये॥तबद्रोणाचार्यअर्जुनकोंउदा
सदेषिवाभीलपासआयगुरदक्षणामेंदक्षिण
अंगूठालियो॥ जबअर्जुनद्रोणाचार्यकीसे
वामेंबहुतरहतभयो॥एकदिनवृक्षपैकृत्रि
मभासपक्षीबणायसर्वहीबाकेगलेकोनी
साणबणायबाणमारे॥सोकोईसोंबिध्यो १८

नहीं॥ तब वाकों अर्जुन बेधि सब सों शघि
कता पाई॥ तापीछें कोई दिन द्रोणाचार्य गं
गास्नान करें हे॥ तहां ग्राह चरण पकडि
षीचे॥ जब अर्जुन बाणन करि ग्राह कें स
रीर कों तिल तिल प्रमाण छिन्न भिन्न करि
छुडाये सो देषि गुर प्रसन्न होइ बोले हे अ
र्जुन तेरी बरोबर और धनुर्धर नहीं॥ ऐसें
कहि ब्रह्मास्त्र हू दियो॥ या प्रकार सों अर्जुन
सबै सिष्यन मैं के पापात्र अधिक भयो॥ इति
श्री भारतसारचंद्रिकायां आदिपर्वणि अष्टमो ऽध्या
य॥ ८॥ वैशंपायन उवाच ऐसें सर्व बालकन
कों सब विद्यान मैं पारंगत जानि उनकी प
रीक्षा लेवे कों बिदुर पुर के बाहर रंगभूमि र
चना करत भये॥ तहां चारों तरफ कें चे ऊंचे
मंच धरे॥ तिन पें धृतराष्ट्र भीष्मपितामह बि
दुर कों आदि सर्व राजा यथा योग्य बैठे॥ ब्रा
ह्मण वैस्य हू अपने योग्य स्थान मैं बैठे॥ ता
पाछें पुत्र सहित द्रोणाचार्य उज्ज्वल वेस धा
रें आय देव नृपि पूजन सहित ब्राह्मणन पें पु
करत भये॥ तहां वीणा मृदंगादिक पटह [illegible]

सर्बबाजाबजतभये॥ ऐसैंसोभिनरंगभूमि
मेंसर्बहीराजकुमारशस्त्रअस्त्रकवचधार
णकरिआपधरतीसोंहाथलगायद्रोणाचा
र्यकोंप्रणामकरिसबहीयुधिष्टिरादिकआ
पआपकीबिद्यादिषावतभये॥ भीमदुर्योध
नदोऊगदाजुद्धदिषावतदिषावतअंतःकर्ण
कोबैरसुमरणकरिमहाघोरजुद्धकरतभये
तबद्रोणाचार्यउनकोबैरजुद्धजाणिअश्व
स्थामाकोंभेज्योसोपिताकीआज्ञातैंपर्बत
वतजायदोऊनकेबीचठाढोभयो॥ उनकोयु
द्धनिवारणकस्यो॥ तापीछैंद्रोणाचार्यकी
आज्ञातैंअर्जुनआपकाअस्त्रबिद्यादिषा
वतभयो॥ सोकभूकतौपर्बताकारदीसैक
भैकतेजमई॥ कभैकआकासमैंकभूकपा
तालमैंऐसैंकरतभयो॥ ताहिदेषिसर्बरा
जाप्रतिअर्जुननामांनिचित्रलिषेसेहोइ
रहे॥ ऐसैंअर्जुनकीबिद्यादेषिसर्बहीस
राहिस्तुतिकरतहै॥ ताहीसमैरंगभूमिके
बाहरएकसबद्भयो॥ वाकोंसुणिसर्बहीरा
जादिकचकितहोइबिचारकरतभये॥ वह

वज्रपातहीहै वा मेकंपहै वा अंतरिक्षही ग-
र्जनाकरैहै॥ अथवाप्रलेकरनकौंसमुद्रही
गर्जनाकरैहै॥ ऐसेविचारकरतहीपर्वतसम
नजाकोदेहसरीरमईकवचकुंडलधारेकंन
ठोकतकर्नआयो॥वाकौसूर्यसमाननेत्रदे
षिसबहीमारगदियो॥तबवहकर्नरंगभूमि
मैंआइ द्रोणाचार्यकृपाचार्यकौंप्रणामकरि
जैसेंअर्जुनविद्यादिषाईहीतैसेंहीवहहूदि
षावतभयो॥जबवाकौंअर्जुनकेतुल्यजाणि
दुर्योधनमित्रताकरिचंपापुरीकौराज्यदियो
तबअर्जुनबोलेअरेयासूतपुत्रकौंचंपापुर
कौराज्यक्योंदियो॥ऐसेंकहिभीमअर्जुन
धनुषबाणधारतभये॥तबदुर्योधनकर्णदू
धनुषबाणधारे इतनेहीमैंसूर्यअस्तभयो॥
जबसबहीराजाकौरवपांडवउठिउठिअप
नेस्थानकौंगये कौरवनमैंदुर्योधनमुख्यभ
यो॥पांडवनमैंयुधिष्ठिरमुख्यभयो।
चार्यसबहीकौंसामिलकरिकहीतुमहमकौं
गुरदक्षणादेहु॥तबसबहीबोलेआ
हीदे॥तबद्रोणाचार्यबोलेपांचालराजाद्रुपद

सर्बबाजाबजतभये॥ ऐसैंसोभितरंगभूमि
मेंसर्बहीराजकुमारशस्त्रअस्त्रकवचधार
णकरिआपधरतीसोंहाथलगायद्रोणाचा
र्यकोप्रणामकरिसर्बहीयुधिष्ठिरादिकआ
पआपकीबिद्यादिषावतभये॥ भीमदुर्योध
नदोऊगदायुद्धदिषावतदिषावतअंतःकर्ण
कोबैरसुमरणकरिमहाघोरजुद्धकरतभये
तबद्रोणाचार्यउनकोबैरयुद्धजाणिअश्व
त्थामाकोभेज्योसोपिताकीआग्यातेंपर्बत
वतजायदोऊनकेबीचठाढोभयो॥ उनकोयु
द्धनिवारणकर्यो॥ तापाछेंद्रोणाचार्यकी॥
आग्यातेंअर्जुनआपकीअस्त्रबिद्यादिषा
वतभये॥ सोकभूकतौपर्बताकारदीसेंक
भूकतेजमई॥ कभूकआकासमेंकभूकपा
तालमेंऐसेंकरतभये॥ ताहिदेषिसर्बरा
जाअतिअर्जुनतामांनिचित्रलिषेसेहोइ
रहे॥ ऐसेंअर्जुनकीबिद्यादेषिसर्बहीस
राहिस्तुतिकरतरहे॥ ताहीसमेंरंगभूमिके
बाहरएकसबदभयो॥ वाकोसुणिसर्बहीरा
जादिकचकितहोइबिचारकरतभयेवह

भयोतहांह वोमकूपहे वा अंतरिक्षही ग
र्जनाकरेहे॥ अथवाप्रलैकरनकोसमुद्रही
गर्जनाकरेहे॥ असेविचारकरतहीपर्वतसम
नजाकोदेहसरीरमैंकवचकुंडलधारेकर्न
ठोकतकर्नआयो॥ वाकोसूर्यसमानतेजदे
षिसबहीमारगदियो॥ तबवहकर्नरंगभूमि
मेंआइ द्रोणाचार्यकृपाचार्यकोप्रणामकरि
जैसेंअर्जुनविद्यादिषाईही तैसेंही वहहू दि
षावतभयो॥ तबवाकोअर्जुनकेतुल्यजाणि
दुर्योधनमित्रताकरिचंपापुरीकोराज्यदियो
तबअर्जुनबोलेअरेयासूतपुत्रकोचंपापुरी
कोराज्यक्योंदियो॥ असेंकहिभीमअर्जुन
धनुषबाणधारतभये॥ तबदुर्योधनकर्णहू
धनुषबाणधारे इतनेहीमेंसूर्यअस्तभयो॥
तबसबहीराजाकौरवपांडवउठिउठिअप
नेस्थानकोगये॥ कौरवनमेंदुर्योधनमुष्यभ
यो॥ पांडवनमेंयुधिष्ठिरमुष्यभयो॥ तबद्रोणा
चार्यसबहीकोंमामिलकरिकहीतुमहमको
गुरदक्षिणादेउ॥ तबसबहीबोलेआपकहोसो
हीदें॥ तबद्रोणाचार्यबोलेपांचालराजाद्रुपद

३७ कौंकौंपकड़िगलेमैंधनुषाघालिइहांलेआवो
जबसबहीजायपुरघेस्यो॥ तहांकौरपहले
गयेहेतिनकौंतोमारिचलाइदिये॥ तापीछै
अर्जुनबाणनसौंमारिवाकीसबसेनाभजा
यगलेमैंधनुषडारिपकड़िल्यायद्रोणाचार्य
केहवालेकियौ॥ तबद्रोणाचार्यहूबालकन
कौसाहसदेषिहंसिकैद्रुपदसौंविरोधछो
डिबचनबोले॥ हेद्रुपदतूहमारोबालपणे
कौमित्रहैसोआधौराज्यदेबेकौंकहिराज्य
मदकरितूनमूंहे॥ इबचननमास्योताकौयह
फलपायो॥ सोअबतूमेरोमित्रहैअरुमेरेपि
ताकेमित्रकौपुत्रहैतातैंपहलेबचनकहे
तिनकौपालनकरि॥ आधौराज्यमेरोहै॥ आधौ
तोकौद्यौहैसोतूपालनकरि॥ ऐसेकहिद्रुप
दराजाकौसीषदीनी॥ तापीछैद्रोणाचार्यकैतौ
फेरिबैरकीबासनारहीनहीं॥ अरुद्रुपदगुप्त
बैरकौंयादिराषिअर्धराज्यकरतभयो॥ द्रुप
दकेयुद्धमैंभीमअर्जुनकौअधिकदेषेअरु
प्रजाकौहितहूइनसौंजाणिदुर्योधनधृतरा
ष्टसौंबोल्यो॥ हेमहाराजतुम्हारेकुलकौतौ

कथ्याहू नहीरहतदीसैहै॥एकतौपांडवप्रब
लहैसरैप्रजाहू इनकौचाहैतातैंवार्णावत
पुरकौराज्यदेइनकौकूलतैंदूरनिकासौ॥औ
सैपुत्रकह्योसोधृतराष्ट्रअंगीकारकरतभ
यो॥तबदुर्योधनपुरोचनसौंबोलेतुमजायवा
र्णावतमैंमहलबणावोसोमूजराललाषवां
सकासमण घृतइनसामग्रीकौबणावोऊप
रगुप्तकरिबेकौसुंदरचित्रबिचित्रकरिमोकौ
जरूरषबरिकरो॥तबपुरोचनवाहीमाफिक
तयारकरिषबरिकरी॥जबदुर्योधनधृतरा
ष्ट्रसौंकहाईपांडवनकौवार्णावतपुरकौरा
ज्यकरिबेकौपठाये॥सोपांडवहूधृतराष्ट्रद्रोणा
चार्यभीष्मपितामहकृपाचार्यइनकौप्रणाम
करिप्रस्थानकरतभये॥तहांमार्गमैंबिदुरमि
लेसोम्लेछभाषाकरिपुरोचनकौकपटयुधि
ष्ठिरसौंसबजताइदियोसुरंगषोदिबेकौए
कबेलदारसंगदियो॥तापाछैंपांडवहूकुंती
सहितदसवेंदिनवार्णावतपुरपहुंचे॥तहां
पुरोचनसनमुखआइसनमानकरिलाष्यागृह
मैंप्रबेसकरायो॥तबपांडवहूपुरोचनकौ॥

७ तौ अ आए नाहिं षाई ॥ अरु आप सावधान होइ वहां
बसे ॥ बेलदार पास सुरंग षुदावत रहे ॥ तब पुरो
चन हू अग्नि लगाइबेकौ उनके पास ही बास कर
त भयो ॥ तहां पांडव अनेक भिक्षुकनकों अन्नदान
करत रहे ॥ ऐसैं एक बरस बितीत भयो ॥ पुरोच
नकौ अग्नि लगाबेकौ अवकास पायो नहीं ॥ एक दि
ना पांचपुत्र सहित निसादी भिक्षुकी आई ॥ वा
कौं पांडव अन्नदान दियो सो मन बांछित भोज
न करि पुत्रन सहित नशा होइ वहां सोइ रही ॥ ता
रात्रमैं भीमसेन पुरोचन के चारो तर्फ ल ला
ष्यायह के अग्नि लगाइ आप कुंती भाईन सहि
त सुरंग होइ निकसि गये अग्नि लाष्यायह कौ द
ग्ध करत मनमें बडो आनंद मान्यो जो धर्मात्मा पां
डव तो बचे अरु अधर्मी पुरोचन कौ जलाऊं
हूं ऐसे बिचारि चटचटा तसब्द करत संपूर्न
लाष्या ग्रह कौं भस्म करत भयो ॥ तासमें पुरबासी
आप पंचपुत्र भीलनी कू जली देषि कुंती पांड
व जले जांनि हाहाकार करत भये ॥ दुर्योधन कौ
मित्र पुरोचन ताकौं पांडवन कौ दग्ध करता
जांनि जले हू के मस्तक कौं लातन करि कूटत भ

ये॥ पांडवनके निकसि गये पीछू वाघ निकने
सुरंगके द्वारकों रज भस्मकरिकें दाबिदियो॥
पांडव जल गये सुणि धृतराष्ट्र दुर्योधनकों उ
पालंभदेकरि रुदन करत भये॥ हे दुर्योधन
तोकों निस्कंटक राज करणो है सो अबहु वो
ओर तो सबही के दुःख भयो एक दुर्योधन वि
दुरपे अग्यान ग्यान करिकें हर्षित भये॥ ताप
छे धृतराष्ट्र उनको मृतकार्य सर्वही करावत
भयो॥ वे पांडवहू लाष्यागृहतें निकसि दक्षि
ण दिसाकों रात्रदिन सावधान होइकें गवनक
रत भये॥ ऐसें चलत चलत गंगाजीकों उतरि
गहनबनमें रात्रिकों बटके नीचे बास किये॥
तहां रात्रमें सर्वकों त्रषा लगी तब भीमसों कहे
जल बिना तो हमारे प्राण जात हैं॥ जब भीमसे
रसनको सब सुणि उहां जाय सरोवरमें स्नान
करि जलपान करि अंजुली भरि जलको ल्याव
त भयो॥ सो उन सबको निद्राके बस सोवत दे
षि रुदन कियो आप सुषसय्यानपे सोवत हैं सो
पृथवीमें ऐसें सोवें॥ तासों देवको हू धि
क्कार है॥ अरु मेरे पराक्रमहूको धिक्कार है॥ इ
... इनकों

१ मांसल्पायबेकौं हिडंबा बहन कौं भेजी ॥ सो वह आ
य भीमकौं सरूप देषि मोहित होइ गांधर्ब बिबा
ह करि वासौं आयबे कौं सब ब्रत्तांत कहि भीम
हीं के पास रही उहां हिडिंबा कौं न आई जो एहि
डिंब ह क्रोध करि आयो तब भीम वासौं जुद्ध क
रि मार्यो ॥ ता पीछे माता भ्राता की आग्या पाइ
वा हिडिंबा कौं भार्या करि नदी पर्बत बन वा दिव्य
स्थानन में दिन दिन में बिहार करि रात्र कौं भा
ईन के पास आवे ॥ ऐसें बिहार करतें करतें भी
म के वा भार्या में दोइ पुत्र घटोत्कच बर्बरीक
नामां भये ॥ ता पीछें हिडिंबा तसी बन कौं ग
ई ॥ वे पुत्र हू भीमसैं बोले कोम पड़ै याद क
रैंगे तब हौं आवैंगे ऐसें कहि माताके संग
बन कौं गये ॥ इती श्री भारतसार चंद्रिकायां आदि
पर्बणि नवमोध्याय: ॥ ९ ॥ वैसंपायन उवाच ॥ ता
पीछें वे पांडव जटा बलकल धार ब्रह्मचारी
को सुरूप करि मातासहित बन में बिचरत
भये ॥ ऐसें फिरतें कोईक समें बन में रात्र कौ
सब थाकि गये ॥ जब भीमसेन माता कौं तो पीठि
पै धरी दोइ भाईन कौं दोऊ कंधान पै धरे ॥ न
कुल सहदेव कौं गोदीन में लेके चलत भयो ॥ त

वमार्गमें बेद ब्यासयाकों पर्वतसमां नआव
तदेषिबोले॥ तुमसर्ब हीएकचक्रापुरीमेंजा
यबासकरौ॥ तबव्यासजीकी आग्यातेचक्रा
पुरीमेंएकब्राह्मणकेघरजायसबहीवसे औ
सेबलवानहू वहांदिनदिनमें भिक्षाकरिअ
न्नल्यावेंतामें सोदेवअतिथअभ्यागतकों
दियेंपीछेबचेतामेंसो आधौतोभीमकोंदे
आधौरहैसोसबषाय। वानगरीकेबाहरए
कबकदैत्यवनमेरहै॥ ताकेभयतेंवे पुरबासी
एक आदमी औरभक्षभोज्यसामग्री नित्यघ
रघरतेंपहुचावे॥ असेहोतेहोतेंयेरहेहेजा
ब्राह्मणकेघरकोवोसरो आयोसोवहब्राह्म
ण स्त्रीपुत्रयेतीनहीहेसोआपुसमेंमहारुद
नकरतभये। उनकोरुदनसुणिकुंतीगईउन
कोसबबृत्तांतसुणिकरुणाकरिकहीतुम्हा
रएकहीपुत्रहैमेरें पांचपुत्रहैसामेंएककों
भेजोंगीतुमभक्षभोज्यतयारकरो॥ जबवाब्रा
ह्मणनेभक्षभोज्यसमग्रील्यायधरीतबभीम
वहसामग्रीलेकेबकासुरकेसंकेतपर्वतकी
सिलापेजायभक्षभोज्यसामग्रीधरिवाकोंबु
लाय॥ आपवासामग्रीकोभोजनकरतभये॥

जबबकासुरश्रापबाकौंभोजनकरतदेषि
पहलीतोमरकीनसोंमारयोपाछूअरजुनसिला
नकरिमारयोतोहूभीमकितेकदिनकोभूषो
हेसोभोजनहीकरिबोकियोअरुवाकेमर
नकौंगिणेनहीं जबआपभोजनकरिचुकेता
तापीछें उठिषभेठोकिमह्लजुद्धकरिवाकोप
टकिमारि नगरीमेंआयब्राह्मणसोंबोले
मेरेइष्टदेवनेंबकासुरकोंमारयोअैसेंतुम
पुरबासीनसोंकहो तापीछूआपआइभा
ईनिसोंकहीएकस्थानरहबेजोगनहींइहां
रहेसोप्रगटहोजाइंगे अैसेंकहिपंचालदे
सकोंगये तहांमार्गमेंफेरिवेदब्यासमिले उ
नकोंदर्सणकरिपांडवआनंदपायप्रणामकर
तभये तबब्यासहूआसीर्वाददेकरबोले अब
तुमद्रुपदराजाकेपुरमेंजावो वाकेंहूयह
पणहेजोमछभेदै ताकोंकन्यादेंउ सोतुम
जायवाकोपणपूर्णकरि वाकीकन्याब्याहो
अैसेंब्यासबाक्यसुणिआनंदितहोइद्रुपदकेपु
रकौंचले सोचलतेंचलतेंअर्धरात्रसमैगंगा
तीरपहुंचे तहांगंध्रबकारकरिमार्गदीस्यान
हीं तबअर्जुनजलतोउल्मुकलेमार्गदिषावता

चल्यो तहां गंगामें अंगारपर्ण गंधर्वराज विहार करे हो सो क्रोधकरि रथपे सवार होइ अर्जुनसों जुद्ध करिबेको मार्ग रोकि ठाढो भयो। जब अर्जुन आग्नेय अस्त्र करि वाके रथको भस्म करि दियो तब वाकी स्त्री कुंभीनसी कुंती युधिष्ठिरके सरण आई जब युधिष्ठिरके कहेसों अर्जुन वाको अभयदान दे गंधर्वराजसों मित्रता करी अरु वाको आग्नेय अस्त्र दियो। तब वाहूने अर्जुनको विश्वदर्सनी विद्या और पांचसै संग्राममें अभेद्य असवार सहित अश्व दिये सो यादि करेंगे जब ही आणि हाजिर होइ। उहांतें चलेसो उतको चक्रतीर्थमें आइ स्नान करि तप करते हुवे धौम्य मुनिकों प्रोहित करे। जाके होम आहुति बल करि सत्रुनकों त्रणवत ही मानत भये ऐसे मार्ग चलतें सो लवें दिन द्रुपदके पुरमें पहुंचे वहां जाय सामां सहित माताकों कुलालके घरमें धरि सुयंबरकों गये। तहां जाय मंत्रमय मच्छ देष्यो रंगभूमिके मध्य मंडप देष्यो और चारों तर्फ राजा मंचनपे हे तिनकों देषि युधिष्ठिर भाईनसों बोल्यो द्रुपद राजा पुरुषार्थ करि सुरगही भूमिमें उतार्यो है कहा। और देषें तो धनुष

ताकासो मिलेहै सर्बबाजाबजैहैं देसदेसनके
राजाब्राह्मणआवैहैं ॥ तासमैंपेहू ब्रह्मचारीको
रूपधारिब्राह्मणमंडलीमैंमंचपर आयबैठे ॥ आ
मंचपरये बैठे सो मंच अतिंतसोभितभयो ॥ जै
सैंपंचरूपधनकरि सुमेरको सिषिरसोहै ॥ अ
रुद्रुपदराजाहू अर्जुनकोंही कन्यादेबो विचारि
मछभेदिबेको पण लियोहो ॥ सोपत्रमई आका
समैंमछबणायो ॥ अरुतेसेंही इढधनुषबाण
हू रंगभूमिकीबेदीपर धरे ॥ तहांद्रोपदीहू वस्त्र
अलंकारधारणकरि बरमालाहाथमैंलैबेदी
पर आई ॥ सर्बराजावाकोंदेषिदेषितोहर्षितहो
इ अरुधनुषकोंदेषि निस्वाससनरै ॥ अरुद्रोपदी
धनुषकोंदेषि बारंबार अर्जुनके भुजदंडनको
चिंतवनकरै ॥ तासमैंमैं ध्रष्टद्युम्नधनुषको
पूजनकरि भुजदंडउठाय सभाकेमध्यबचन
बोल्यो ॥ औराजाद्रोपदीकी बांछाकरैहै सोया
धनुषमैंबाणधरिमछकोंभेदै ॥ ऐसेंबचनसु
णिकितनेकराजातोमौनगही ॥ कितनेकध
नुषउठाइचढायनसके ॥ कितनेकचढाइकैषै
चिनसके ॥ कितनेकषैचिकैबाणसांधिनसके ॥
कितनेकबाणसाधिलक्षिकोंनिश्चयनकरिस

के॥कितनेकपूर्बजसकेनासकोभयमांनिउठे
हीनहीं॥ऐसीदसादेषिब्रह्मचारीभेसतेंभीमस
हित अर्जुनमंचतेंउठि धनुषपासचले॥इनको
सुरूपतेजलीलागतिदेषिकितनेकराजाकोकू
देदबिगये॥श्रीकृष्णजीप्रद्युम्णइनकोंदेषिकें
बिचारकियोएभीमअर्जुनहीहें॥औरराजाहू
बिचारकरतभये॥एसूर्यचंद्रमाहीहें सो
पृथिवीबिचरेंहैं॥अथवाऔरअवतारधारि
कृष्णबलदेवहें॥अथवागणेशस्वामिकार्ति
कहें॥अथवारघुवंशीरामलक्ष्मणहें॥औ
राजानकोंबिचारकरतमें अर्जुनद्रोणाचार्य
[illegible]

ल्लभकरैं॥ अरुहेकौरवमदांधहोतुमवै
धनुषकेदेषतेंहीमदआतुरहोकहो॥ अरुहे
कर्णतूकुंडलनकोंबृथाहलावैहै॥ यहधनु
कुंडलितकोंनकियो॥ यहब्राह्मणधनुषषेंचिम
छुनैंदेसबनकीकीर्त्तिलईहै सोतुमदेषोहो॥ ऐ
सेंभीमकेबचनसुणिसंपूर्णराजांनकोसिरनीचे
भये॥ तबवाहीसमैंअर्जुननैंलीलाहीकरिमछकों
भेदि प्रथ्वीमेंपटक्यो॥ जबसबजनआनंदित
होइतालीबजाई॥ देवदुंदभीबजाई॥ अरुद्रोप
दीमहाराजद्रुपदकेकहेसौं अर्जुनकोंआइब
रमालापहराई॥ तबऐसेंदेषिऔरराजाक्रो
धकरिसबलेकहीद्रुपदराजाकन्यातोब्रह्म
चारीकोंदई॥ औरहमैंबुलाईअनादरकस्यो
तातैंयाकोंमारैंगे॥ तबभीमअर्जुनद्रुपदकोर
जाकोंतयारभये॥ सोअर्जुननैंतोधनुषकोंचिल्ला
ढायो॥ भीमबृक्षकोंउपाडिराजानकोंमारत
यो॥ तबकितनेकेसिरहाथपाउछिन्नभिन्न
गयेसोरुधिरचुचावतभागिगये॥ ऐसेंरा
नकोंभजाइमध्ययुद्धकरिशल्यकोंजीत्यो॥ अ
धनुषकेटंकारकरिकर्णकोंमुषमलिनक
औरकितनेकराजायुद्धकरिबेकोंतयारभ

ये॥ तब उनकौं श्रीकृस्न कही इहां युद्ध करिबौ न्या
पन ही॥ ऐसैं श्रीकृस्नकौ बचन सुणि राजा अप
ने अपने स्थानकौं गये॥ पांडव हू द्रौपदी सहित
कुलालके भवन आये॥ तब उनकौं आये जांणि
माता बोली जो तुम्हैं प्राप्त भई सो पाचौं सम भाग तैं
भोगो॥ जब ये हू माताकौ बचन मांनिवे सेही बिव
हा करिबौ बिचारत भये॥ तापीछै कुंती राजपुत्री
कौं देषि बिचार कियो जो मैं यह कहा कह्यो॥ जब
पांडव मातासौं सब समाचार कहे हे॥ जब ही
श्रीकृस्न बलदेव आई कुंतीकौं समाधांन करि
गये॥ पीछू पांडव गावमैं जाय भिक्षा करि आये
सो भिक्षा सब ही माता पास धरी यह रचना देषि
द्रौपदी मनमैं संताप न पायो॥ सो सतीनके मनकी
बात बिचित्र ही है॥ तापीछै कुंतीके बचनसौं
द्रौपदी वह भिक्षा ल्याये हे तामैं सो पुरोहित लाग
निकासि पीछू भिक्षुकनकौ भाग निकास्यो बाकी र
ह्यो तामैंसौं आधौ भीमकौं दियो॥ आधे के छह भा
ग करे भोजन करि दर्भशय्यामैं दक्षिण दिसाकौं
सिर करि सोये॥ उनके सिरकी तरफ कुंती सोई
पावनकी तरफ द्रौपदी सोई॥ जब ये पांचौं भ्राता
सोवत हैं सब अस्त्र युद्ध ही की बातें करत हैं

सोधृष्टद्युम्नरात्रकेसमैंकुलालकेभवनकेपी-
छिपिकेसबचरित्रइनकौदेषिसुणिप्रभातही
आइराजाद्रुपदसौंसबव्रत्तांतकहिकह्योयेस
त्रीराजपुत्रहीहैसोसुणिराजाकीचिंताहरि
करी।जबद्रुपदइनकौरथपठायबुलाइभोजन
करायपूछीजोतुमकोणहो।।तबयुधिष्टिर
सबकथाआदिसौंकही।।सोसुणिद्रुपदबोल्यो
यहकन्यामैंअर्जुनकौदेवागो।।युधिष्टिरकही
हमपांचनहीकीभार्याहोइगी।।यहसुणिद्रुपद
संदेहसमुद्रमैंबूड्यो।।तबयाकोसंदेहदूरकर
बेकौत्रकालग्यदरसीवेदव्यासआये।।श्लो।।
भारतस्य [illegible] आदिपर्वणि द्रुपदस्य [illegible]
[illegible]।। तहांवेदव्यासआयद्रुपद-
सौंपूजासत्काररपायवाकोसंदेहदूरकरबे
कौपूर्वकथाकहनलगे।।हेराजनसुणोएकस
मैंपार्वतीशिवसहितकामसेनकेसंगपांचब
षमदेषिहैंसो।तबकामधेनुशापदियोतूह
पांचकीभार्याहोइगी।।तबपार्वतीकहीया
शापकोनिवारणकैसेंहोइ।।जबशिवब्रह्मलो
कगयेब्रह्मास्तुतिकरीतामैंपांचवैंमुषसौंष
रकीसीधुनिभई।।तबयासरकौकाट्योजबब्रह्म

हत्या लगी वह सिर शिवके हाथमें आयो। नवशि
वहत्यासों कही कैसे छूटै वानें कही अठार हत्र
तोहणी को रुधिरपान करावो सो सुणि विष्णु
अंगीकार करि कही तुमतो पाचों पांडवणी
पार्वती द्रोपदी होहु। सो यशिव है यह पार्वती
है। असें कहि दिव्यदृष्टिदेके सो ही सरूप इन
को दिषाय संदेह दूर कियो। और सुण द्रोणा चा
र्यतेरो अपमान कर्‍यो जब तैं याजउपयाज
दोऊ ब्राह्मणकों ले गंगातीर यज्ञ कर्‍यो द्रोण
चार्यको बध करै असी संतान होहु। तब वा वेदी
में सो कन्या तो यह द्रोपदी भई कुंडमें सो पुत्र धृष्ट
द्युम्न भयो अग्रिको अवतार। तातें एके कदि
नके क्रमसों इनको बिबाह करिबो जोग्य है
असें कहि बेदब्यास गये पीछे राजा पांडवन
कों पथ्या क्रमसो पांच चको पाचे दिनमें द्रोपदी
ब्याह दई। दुर्योधन धृतराष्ट्र सों आय द्रोपदी वि
बाहको ब्रतांत निबेदन करी कही सेना सहि
त जाय पांडवनको मारो असो मेरो मनोर्थ है
यह पुत्रको बचन सुणि धृतराष्ट्र भीष्म द्रोण
सों मंत्र करत नये। जब भीष्म बोले द्रुपद कहा
तो समर्थ है अरु आप ह पांडव पराक्रमी

नकों बसके है॥ तातें उनकों इहां बुलाइ आधौ राज्य दे अपजस दूर करो॥ ऐसें उनकौ बचन मांनि धृतराष्ट्र पांडवनके बुलाइबेकों बिदुर कों भेजे॥ अब बिदुर उहां जाय द्रुपदकौ समाधांन करि कुंती द्रौपदी सहित पांडवनकौ ल्याइ धृतराष्ट्र के चरणारविंदन में प्रणाम करायौ॥ तब धृतराष्ट्र हू युधिष्ठिरकों आसीर्बाद दे कही पुत्र आपुसमें बिरोध न होइ तातें तुम पांडवप्रस्थमें बास करो॥ ऐसें धृतराष्ट्र की आग्या मांनि युधिष्ठिर हू षांडवप्रस्थमें जाय इंद्रप्रस्थ नांमौ नगर बसाय बास करत भये॥ वहां श्रीकृष्ण हू आय पांडवनकों तेज प्रताप सहित देषि प्रसन्न होइ कछुक दिन बास करि द्वारका कौं गये॥ जब द्वारकामें नारद मुनि कृष्णसों आइ मिले॥ तब कृष्ण सतकार करि नारद मुनिसों बोले॥ पांडव तौ पांच अरु द्रौपदी एक है सो इनके स्त्री निमित्य कलेस न होइ तातें तुम जाय आपुसमें पण करावो॥ सो सुणि नारद मुनि आय पांडवनसों मिलि कथा कही॥ आगें सुंद उपसुंद नामा दोइ राक्षस बनमें महा तप कर्यो॥ जब ब्रह्मा आय कही बर मांगो तब उन

बरमांग्यो जो हमदोऊ भ्राता आपुसही मैंम
रें और केमारे मरेंन्हीं ऐसो बरपाइ देवता
नकौंपीडाबहोतकरी जबदेवता ब्रह्मापा
सजाय उनकोंअंतातकह्यो तबब्रह्मा उरव
सी कोंउनकेपास भेजी सोवाकोरूपदेषिव
डेभ्राताती कहेयह मेरी भार्याहै तेरी माता
है छोटोभाईकहेमेरीभार्यातेरी पुत्रवधू है
ऐसें कहतेंक्रोधवसहोइ दोऊ युद्धकरिम
रे तातेंतुमपांचभ्रातानमें द्रोपदीएकभार्या
है सोपणकरो जोएककेपासयहहोइ तब
दुसरो जायनही अरु जाइतो बारह वर्षती
र्थयात्राकरो ऐसेंकहिनारदमुनिगयेतब
पांडववाही माफिक एक एक दिनरात्रकोप्रत
ग्याकरि द्रोपदीसोबिहारकरतभये ऐसेरहतें
कोई समेंमें ब्राह्मणकी गाइ चोरी तबवहब्रा
ह्मणपुकारतआयोहै कुंतीपुत्रहोमेरीगाइछु
डावो वासमें युधिष्ठिरसहितद्रोपदी जामहल
मैंही ताहीमें अर्जुनकेसस्त्रअस्त्रहै वातरफ
तो ब्राह्मणकीपुकारवातरफपणकरीसोजाइ
पातेकैसेंकरे तबविचारकरतकरतअर्जुनजा
मसस्त्र

तापीके युधिष्टिरव कुंतनिवारणकियो तो
हू अर्जुनब्राह्मणनकोंसंगलेतीर्थयात्राक
रतभयो॥ सोप्रथमहीतोगंगाद्वारजायस्ना
नकरिबेकोप्रवेसकर्‌यो वहांकोरव्यनागकी
पुत्रीउलूपीयाकोंदेषिकामातुरहोइ नाग
लोकमैंलेगई॥ वहांजायकहीमैंतुम्हारी
भार्याहोंहुंगी॥ तवअर्जुनबिचारकियोअति
अनुरागवतीनारीकोसेवनकियेब्रह्मचर्य
भंगहोइनही॥ अरुजोमैंअंगीकारनकरों
तोयहप्राणनराषेगी॥ यहविचारवासोंवि
हारकरतभयो॥ सोएकरात्रहीवासमैवाकों
गर्भवतीजांणिमुनिनसोंमिलिसबव्रतांत
कहतभयो॥ उहांतैंपूर्बदिसाकेतीर्थयात्रा
करतकरतसमुद्रकेकिनारेकिनारेहोइ
मणिपूरपुरकोंगयो॥ वापुरकोराजाचित्रता
कीकन्याचित्रांगदावाकोरूपदेषिअर्जुनका
ममोहितभयो॥ तबचित्रनृपसोंमिलिकन्या
मागी॥ तबराजाबोल्यो हमारोआदिराजा
प्रभंकरहो सोमहादेवकीआराधनकरीज
बमहादेवप्रसन्नहोइवरदियोतिहारेबंस
मैंएककेएकसंतानहोइगी॥ तातेमेरीक

न्याबंसकरिबेवारीहै सोयाकेसंतानह्वेइगोसो
मेरोहै ऐसेकहि राजाअर्जुनकोदई॥तबअर्जु
नतीनबर्षलोंउहांरह्यो॥जबवामेंबभ्रुबाहन
नामापुत्रभयो॥उहांतेदक्षिणदिसाकातीर्थया
त्राकोंगयो॥तहांसोभद्रतीर्थमेंमुनिननेमने
कियेतोहूस्नान कोप्रबेसकियोतबग्राहीनेपां
वपकड्यो॥तबवाकोंपकडिग्राकासमेंफेंकी॥
सोदिब्यनारीहोइबोली॥हमपांचअप्सराहीं॥
सो॥एकतोधर्मा१सौरभेई२सामीरका३बु
दबुदिका४लता५ऐसेनामनकरिपांचस
षीहीसोएकरिषिकेतपभंगकरिबेकोंपांचो
जाइआलिंगनकियो॥तबवानेंश्रापदियोतुम
ग्राहीहो॥जबहमवासोंपूछ्यो॥श्रापसोंमुक्तक
बहोइगी॥तबउनकहीएकनरआइतुमकों
आकासमेंफकेगो॥जबछूटोगी॥तासोंजैसें
मोकोंफेंकिश्रापसोंमुक्तकरीतैसेंहीउनच्यारि
नकोंभीकरो ऐसेंसुणिअर्जुनपंचतीर्थनमेंपं
चग्राहीनकोउद्धार कर्यो॥तादिनसोंअद्यापि
वेपंचनारीतीर्थहीकहावेहै॥उहांतेगोकर्ण
आदितीर्थकरतकरतपश्चिमदिसाप्रभासती
र्थमेंआयो॥ तबश्रीकृष्णमणिजोद्दवनसहित

मिलिबेकौं आये सतकारकरि द्वारकामेंलेगये
तहां चातुर्मास्य बासकस्यो जबकोईसमैमैं
कृष्णकी भगनी सुभद्रा याकोमनमोहितकस्यो
तबअर्जुनएकांतमें श्रीकृष्णसौंबिनतीकरी
असेंसुणि कृष्णकही सुयंबरमैंवाबलात्का
रसौंबिबाहहोइसोजसकोकर्ताहैताते बलकारि
असेंकृष्णकही जबसुभद्राद्वारकातेंबाहरनि
कसी तब अर्जुनहू तीर्थयात्रा करतौही वाकौं
रथमैंचढायइंद्रप्रस्तकौं चल्यो सोसुणिबल
देवनैक्रोधकस्यो तबश्रीकृष्णकही आपक्यों
क्रोधकरौतुम्हारेमनोरथभीष्मपौत्रदुर्योध
नकौदेबेकोहोसोयहहूभीष्मपौत्रहीहैताते
काहेकोक्रोधकरोयाइजसदेणोहोइसोदीजे
असेंकहिबलदेवकौंप्रसन्नकरिदाइजलेश्री
कृष्ण आइ अर्जुनकेसामिलभये तबअर्जुन
श्रीकृष्णसुभद्रासहितइंद्रप्रस्तमें आयो भा
ईनसौंजथायोग्यमिलिप्रीतिसहितकुंती
सौंदंडोतकरी तापीछैविधिवतसुभद्रासौं
बिबाहकस्यो सुभद्राहूप्रथमकुंतीकौंदंडौ
तकरीपीछैद्रौपदीकौंकहीमैंतेरीदासीहौं
तबद्रौपदीकही तूश्रीकृष्णकीभगनीहैसो

मेरी हूं भगनी है॥ वा सुभद्रामें अर्जुन के अनि
मन्यु नामा पुत्र भयो॥ ताको अर्जुन श्रीकृस्न
दोऊ मिलि आपमें बिद्या ही सो सर्ब पढाई तब
अभिमन्यु दोऊन की समान हूं कलो भयो॥ द्रौ
पदीमें पांचन तें पांच पुत्र भये॥ युधिष्ठिर तें प्र
तिबिंध्य॥१॥ भीम तें श्रुतसोम॥२॥ अर्जुन तें श्रु
तिकीर्ति॥३॥ सहदेव तें श्रुतकर्मा॥४॥ नकुल तें
शतानीक॥५॥ इन पांचोन को संसकार धौम्य
प्रोहित कर्‍यो॥ अर्जुन बिद्या पढाई॥ युधिष्ठि
र शिबि देस को राजा गोबाहन ताकी कन्या॥
सुयंबर में ब्याही वाके यौधेय नामा पुत्र भयो
भीम कासिराज की कन्या काली ब्याही वामें स
र्बग नामा पुत्र भयो॥ नकुल चेदिराज की कन्या
करेणुवती ब्याह्यो तामें निरमित्र नामा पुत्र भ
यो॥ सहदेव मद्रपति द्युमत राजा की बिज
या नाम पुत्री सुयंबर में ल्यायो तामें सुहोत्र ना
मा पुत्र भयो सो च्यारों के पुत्र च्यारों ही अपने
अपने नानों को राज्य करत भये॥ ऐसें पांडु
वइंद्रप्रस्थ का प्रजान को पालन करत श्रीकृ
स्न सहित बहुत आनंद सहित बसत भये॥२

१०॥ वैशंपायन उवाच॥ ऐसे रहतें बसंतरितु॥
आयो तब श्रीकृष्ण अर्जुन युधिष्ठिरसों आग्या
पाइ षांडव बन में बिहार करवे कौं गये उहां य
मुना प्रवाह के तीर वन की सोभा देषि बहुत॥
प्रसन्न भये सो कोइक समै सिकार हू करत भ
ये ऐसे रहते रात्र की सोभा देषि वहां हां नि
श करी पीछे प्रातःसमै उठि दंतधावन
स्नानादिक करि प्रातःसंध्या करि ब्राह्मणन कौं
दांन देत भये ऐसे अनेक ब्राह्मण आवें हें दा
न पावें हें ऐसे समै में इतनें आवत एक ब्राह्म
ण कौं देष्यौ सूर्य समान कांति हे जाकी अति बि
साल सरीर हें स्याम चीर धारें हें नेत्र बिसा
ल हें उठी मूछ पीत हें जटा अग्निवर्ण हें ऐसे
वाकौ रूप देषि श्रीकृष्ण अर्जुन संदेह करत भये
कृष्ण वस्त्र पीत कांति धारें हें मेघ की घटा स
हित सुमेरही आवे हे कहा अथवा निज क
न्याकौं धारें समुद्रही आवे हे कहा अथवा धूम
पटल सहित अग्निही आवे हे कहा ऐसे बिचा
रि उठि सन्मुख आय चरणन में प्रणाम करि हाथ
जोरें ठाडे रहे तब वह ब्राह्मण बोल्यो आगे रु
द्र समान तेज जाकौ ऐसो श्वेतकी नाम राजा भ

यो॥ जाके यग्यनमें ब्राह्मणननैं दक्षणा इतनी पाई सो लेतैं लेतैं लेबेकी बांछा रही नहीं ताके तपतैं प्रसन्न होइ शिवआग्याकरी अग्निकों बारह बर्षलों अखंड घृतधाराकरि पूज्यो॥ ऐसें शिवकी आग्या प्रमाण राजा करतभयो॥ तापीछे शिवकों प्रणामकरिबोल्यो अब कहा आग्या है॥ तब शिव कही दुर्बासा ऋषिकों प्रोहितकरि सत बर्ष और यग्य हीकरो जब राजा वैसें ही करत भयो॥ सो वाके सत बर्ष हव्य भोजननें बारह बर्षकी घृत धारातैं अग्नि अजीर्णतें तेजरहित होइ ब्रह्मासों प्रार्थनाकरी। मेरो अजीर्ण कैसें मिटै। तब ब्रह्मा कही षांडुवबन भक्षण किये मिटै। सो वह अग्नि सातबेर वा बनमें लग्यो जब ही वाके रक्षकननैं बुजाइ दियो। सो अब वह अग्नि या बनकों संपूर्ण जंतुन सहित भक्षण करै तब तेजपावै और इंद्रको मित्र तक्षिक हू याकी रक्षा करे है। दानव मानव राक्षस हू याकी रक्षा करे हैं और इंद्र हू यापे नित्य बर्षा करे है। तासों वह अग्नि मैं तुम्हारे पास आयो हो तुम्हारी सहाइ तापकों भस्मकरि द्यो मेरो मि

६० व्हू महा बलवान है पै या सहाइ तामैं तौ व
निर्बल ही है ऐसे सुणि अर्जुन बोल्यो मेरो
भुजबल सहि बेलाइक धनुष नही पा काम
लायक बेग वंत रथ नही ऐसे ही बाण हू न
ही श्रीकृस्न के बाहू बल लायक अस्त्र हू नही
ताते इतनी बस्तु होइ तब तुम्हारो कार्य सिद्ध
होइ ऐसे सुणि अग्नि च्यार स्वेत घोडा कपिध्व
जसहित दिव्य रथ अक्षय बाणन कौं दिये व
र्क सस्त्र नेक कवच गांडीव धनुष ये तौ अ
र्जुन कौं दिये श्रीकृस्न कौं सुदर्शन चक्र आग्ने
य अस्त्र कौमोदकी गदा दई तब अर्जुन अग्नि
कौं प्रणाम करि कवच पहरि धनुष बाण धा
रि रथी भयो चक्र गदा धारि श्रीकृस्न सार
थी भये इनकी सहायता पाय अग्नि हू प्रचंड
ज्वाल मालान करि बिकराल होइ तांडव
नृत्य करत ही षांडव बन भक्षण कौं क्रीडा ही
मानत भयो ॥ इति श्रीमहाभारत सार चंद्रिकायां
आदिपर्वणि द्वादसो ध्याय ॥१२॥ वैसंपायन उवाच ॥
ताउपरांत अग्नि वाकौ भक्षण करिबे कौं धूम
मिस सिषा षोलि ज्वालामय प्रवेस करत भयो
जब वाकी ज्वाला प्रलयानल समान होइकै

री॥तबवा बनके बासी रत्तिक पसुपत्ती दानव मानवरात्तस सर्पादिक सबही हाहाकारकरत भये॥तहा कितनेकतौरग्धभये कितनेकनि कसिभजतहे तिनकौं अर्जुनकौरथचक्राका रफिरतहोतातें अर्जुन बाणनसौंमारिवाही मेंपटकिदिये॥तैसेंही कृष्णहूगदाचक्रनकरि मारिवाहीमेंगिरावत भये॥वहचक्राकारफिर तोहु वोरथवामेंकेनिकसतहु वेजीवनकोंके टबतदीसतभये॥कितनेकअत्तरात्तसपात्र भरिभरि अग्निमें भुजाबेकौंजल डारतहेसोजै सें मध्यमें भोजनकरिबेवालेकौंजलपानकरा वेतैसें वहमानतभये॥वाअग्निकीआतापके मारेंस्पंघहाथीनकीछापाकोआसरोलेतभ ये॥सोवेहाथीजलिजलिगिरे जववेस्पंघहू जलिगये॥ऐसेंहाथीस्पंघजत्तरात्तसदानव सर्पमनुष्यइनकोहाहाकार सबसुणिदेवता प्रलयकोभयमानतभये॥तबइंद्रषांडवबनकी रत्ताकरिबेकौंघटानसहितआपवर्षाकरी॥जब अर्जुनसरपंजरकरि घटानकौंनिवारणकरी॥त बबनकौंदाहदेषि तत्तिकनामासर्पभाजिउत्तरदि साकरषेदकौंगयो॥याकोपुत्रअश्वसेननामासर्प

माताके गर्भमें मुषहोइ घुसिगयो वापुत्र
कै बचायबेकों माता आकासकों उठी तब अ
र्जुनवा पुत्रकी पूंछ सहित बाणसों वाकों सिर
काट्यो पूंछकटेसों अश्वसेन उदरमेंसों निक
स्यो जब पवन उडाय लेगई फेरि अर्जुनबा
णनसों तीनटूककरि वाकी माताको अग्निमें
गिराइ दई इंद्रकों आयो देषि यम वरुण कुबे
रइ सहाइ करिबेकों आये जब अर्जुनके उ
नके युद्ध भयो सो अर्जुन उनके अस्त्र षंडन
करि बिजै पायो तब सब देवता इंद्र के सरण
आये इंद्र हू अर्जुन पे सिलानकी ब्रष्टि करी सो
अर्जुन बाणनसों षंडन करी तब देववाणी भ
ई ये कृष्ण अर्जुन अजेय है सो सुणि इंद्र अपने
धामकों गये तब अग्नि निर्भयता सों षांडव
बनकों भस्म करत भयो तहां मयनामा दान
व अग्निसों पीडित होइ मैं सरणागत हों ऐ
सें कहत निकस्यो जब श्रीकृष्णके कहे सों अ
र्जुन वाकों बचायो एक मंदपाल ब्राह्मण बाल
ब्रह्मचारी सुरगगयो हो सो देवतावासों बोले
संतानबिना सुर्गको अधिकार नहीं तासों सं
तानकरि सुर्ग आवो तब वह षांडवबनमें आ

पश्चाईकापत्नीणीमेच्यारपुत्रपैदाकरे॥सोउन
त्रनकोंहूवाद्यहमैंग्रायेदेषि ब्रास्मणस्तुति
जबश्रग्निवाकेपुत्रनकोंछोड़े॥ श्रेसेंश्रग्नि
ई पुत्र च्यार मयदानव श्रश्वसेनसर्पइन
श्रौरसर्बषांडवबनकों छहदिनमें भस्मक
केयसमानरूपधारिश्रीकृष्णश्रर्जुनकोंश्रा
रिप्रसन्नहोइनिजलोककोंगयो॥दो
हा॥रावबहादरचांदसंघहुकमकियोसुषदाय
भाषाभारथसारकीकरीचेनचितचाय॥१॥इ
श्रीभारतसारचंद्रिकायांश्रादिपर्वणित्रयो
ध्याय॥१३॥ श्रादिपर्वसमाप्त॥ ॥ ॥

॥श्री गणेशाय नमः॥ श्री रामचंद्राय नमः॥ अथ
अभयदानकौ माहात्म्य लिख्यते॥ नारायणं न
मस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमं॥ देवीं सरस्वतीं व्या
सं ततो जयमुदीरयेत्॥१॥ श्रीकृष्ण अर्जुन
मयदानव तीन्यौं आपुसमें प्रियबचन बोलि
करि यमुनातीर आये॥ पांडवदाहकौ षेद मि
टाबेके निमित्त॥ यथाजोग्य बिश्राम करत भ
ये॥ तहां मयदानव श्रीकृष्ण अर्जुननें उपका
र कस्यौ॥ अग्नितें प्राण बचाये॥ तातें पुनर्ज
न्म भयो॥ ऐसो मानि प्रसन्नचित्त होइ॥ श्रीकृ
ष्णके प्रति॥ अर्जुनसों बचन बोल्यो॥ इस जग
तें परोपकारी तो बहोत प्रसिद्ध हैं॥ परंतु भ
यभीतकौ अभयदान देबेवाले बिरले हैं॥ पि
ता बिद्यादाता अभयदाता माता इनकौ प्रत्यु
पकार है ही नहीं॥ तातें बिबेकी इनके चरणा
रबिंदनकौ भक्ति ही करि पापनकौं हरि करै
हैं॥ तुमनें मेरे प्राण बचाये॥ तातें तुमारी क
छु पूजा कस्यो चाहत हौं सो तुम अंगीकार क
रोगे॥ तब श्रीकृष्णनें कही तोकौं जोग्य है॥ ऐसे
सुणि करि मयदानव अंतरध्यान भयो॥ तब
श्रीकृष्ण अर्जुन इंद्रप्रस्थपुर में आये राजा

युधिष्टिरसों सबब्रतांत कहि सीषमांगिश्री कृष्ण द्वारिकाकों गये॥ और केलास पर्वतके उत्तर भागमें मैनाक पर्वत॥ ताके ईसान दिसा में॥ सुबर्णरत्नमय बिंदसर नामा सरोवर है वहां आगे तीन चीजधरी ही तिनके लेबेकों मयदांनवगयो॥ वहांतें एक तौ संष एक गदा एक सभा रचनाकी सामग्री॥ ये तीनों लेकरि मयदानवइंद्रप्रस्तमें आयो॥ जाकी अवाज सों देवगनहू मुर्छितहोइ॥ सोदेवदत्तनामा संष अर्जुनकौं दियो॥ वह संष आगें बरुणको हो॥ अर जाके प्रभावसें देवदानवप्रलयको भ्रमपावें सो गदा भीमसेणकोंदीनी॥ युधिष्टिर महाराजाके निमित्त सभा रचनाकरी॥ सो एकवरस दोयमहीनामें तयार करी॥ वहसभा आगें ब्रसपरबादानवके बेठिबेकीही वहसभा फटिकरत्नमई करी॥ ताकीरषवाली के निमित्त मयदानवकी आग्या सों आठहजार राक्षस रहे॥ जा सभामें देवलोक पाताललोक॥ मनुष्यलोक सबही रचना दीसे॥ जाके फटिक मणिनकोकोट है॥ जिनके रत्नमई पाज असे बावडी सरोवर है॥ तिनके अनेक ज

तिकेसुवर्णमई॥ आदिदेकमलप्रफुल्लितरहेहैं
सुवर्णवर्णमईकत्तमत्तविचरतरहतहैं॥
हरितनकेफलपुष्पनकरिकेसोभायमान
ऐसेअनेककल्पवृक्षनकेबागसमानबागहैं॥र
त्नमईफरसवंध्योहै॥फटिकमईथंभनकरि
मंडित॥दिव्यसभामंडपहै॥मोतीनकीझा
लरीसहितनानाप्रकारकेचंदोवाहैं॥जहां
स्थानस्थानमेंतुंबरकोंआदिलेकरिगंधर्व
घृताचीकोंआदिलेकरिअपसरासमयस
मयमेंगानन्रत्यबादकरतहैं॥ऐसीसभामें
सुभमहूर्त्तविषैधौम्यपुरोहितकोंवावेदव्या
सादिकेमुनिसहितबासुदेवपूजनकरिमहारा
जयुधिष्टिरप्रबेसकर्‍यो॥तातत्सवमेंदेसदे
सांतरकेसबहीराजामुनिहितजनआदि
सबहीआये॥तिनकोंराजायुधिष्टिरभक्ष्मो
ज्यसुगंधवस्त्रअलंकारधनरत्नादिकदेकरि
बहुतसनमानजथाजोगकर्‍यो॥तासमयमें
आकासतेबीणबजावतनारदमुनिआव
तभये॥तिनकोंमहाराजयुधिष्टिरबहुत
सनमानकरिसिंघासनपेबिराजमानकरे
तबनारदमुनिबोले॥महाराजसभातोअति

सेश्री नारदमुनि को वचन सुणि सब पांडवन
विचार कस्यो ॥ कार्य बहुत भारी है सो कोण
कोण करे कहा कार्य करैगे सो कहो तब
अर्जुन बोल्यो ॥ मैं लंकापुरी जायके सुवर्ण
ल्याऊंगो ॥ नकुल कही मंडपमें ल्याऊंगो ॥ स
हदेव कही श्रीकृष्ण कों मैं ल्याऊंगो ॥ भीम क
ही जरासंध कों मारि राजान कों मैं छुडाय
ल्याऊंगो ॥ तब महाराज युधिष्ठिर कही मैं
सतधर्म सुमरणी करि कामधेनु कों बुलाऊं
गो ॥ परंतु हे सहदेव तुम पहलें श्रीकृष्ण कें
ल्यावो तब यज्ञ को आरंभ होयगो ॥ तब सु
न मुहूर्त में सहदेव पश्चिम कों द्वारिका के
सनमुख यात्रा कीनी ॥ जब मार्ग में योगनी
सनमुख आई ॥ श्याम मुख लाल नेत्र त्रिसू
ल धारें ॥ ऐसे भयंकर रूप सों आइ सहदे
व सों बोली ॥ हे सहदेव तू कहां जायहै सो क
हे ॥ तब सहदेव कही राजसूय यज्ञ को बड
भार को महा है ॥ सो ताकी सहाइ कों रवि को कृ
चंद्र कों द्वारिका तें लेबे कों जाऊं ॥ जब योग
नी बोली ॥ मैं यादि सामें बसूं हूं सो तूं आइ है तौ
मो सों युद्ध करि ॥ तब सहदेव कही ॥ मैं युद्ध सों
न अबला है तातें युद्ध कैसें होइ ॥ जब योग

नीकही॥जैसैंभवांनीनिसुंभतैंमहायुद्धक
र्‍यो॥तैसैंमेरोतेरोनीयुद्धहोइगो॥यामेंसंदे
हनहीं॥ऐसैंकहिकेंदोऊयुद्धकरतभये॥प
रस्परविजैकीइछाकरिकै॥तबवीरसहदेव
अर्धचंद्रबांणकरिवाकेवस्त्रनकोंछिन्नभि
न्नकरिडारे॥ऐसैंयोगनीकोंवस्त्रहीनक
रिसहदेवमुषफेरिलियो॥जबयोगनीबो
लीहेवीरतूंमोसोंमुषफेर्‍यो॥सोयुद्धकरिबेको
समर्थनहीं॥तबसहदेवकहीनग्नस्त्रीको
जोदेषैंवेनर्कजाइहैं॥तातैंआपसोंडरिमुषफे
र्‍योहैकाइरतासैंनहीं॥अबनवीनवस्त्र
पहरिआवफेरियुद्धकरोंगे॥तबदोऊफे
रियुद्धकरतभये॥वायुद्धमेंयोगनीकेसरी
रतैंजितनेरुधिरबुंदभूमिमेंगिरेतितनी
हीयोगनीहोतभई॥जैसोहीजिनकोरूपअ
रुतैसोहीपराक्रम॥जबयोगनीबोलीहे
सहदेवमेरेअसंष्यातरूपदेषि॥वस्त्रहीन
वस्त्रसहितएजितनेरूपहैंसोसबमेरे
हीहैं॥पणतेरोमनपरनारीतैंविमुषहै ता
तैंतोसोंप्रसन्नभई॥सोवरमांगि॥तबसहदे
वकही॥जोदेवीतुमप्रसन्नभईहो॥ऐसैंही

हहीवरमांगौहौं॥ योगनीऐसेंहीहोकहि
अपनेस्थानगई॥ सहदेवद्वारिकाकोंगये
तेंहांजायश्रीकृष्णकेद्वारपालसोंवचन
बोले॥ हेजसवंतद्वारपालमेंहस्तना र
सेंआयोहौंसहदेवहौंसोमालिमकरौ॥ ऐ
सेंसुनिद्वारपालजायश्रीकृष्णसोंकहीत
वश्रीकृष्णकहीकहाकार्यआयोहै॥ तबद्वा
रपालजायपूछ्योहेवीरकहोकहाकार्यहै
जासेंतुमइहांआये॥ तबसहदेवकहीजो॥
मेंयुद्धकरिवेकोंइहांआयोहौं॥ यहसुणिकै
कृष्णनकोटिजादवयुद्धकोंआये॥ सहदेव॥
हूयोगनीकेबलतैंउनतेंहीरूपधारिउन
सेंयुद्धकर्‍यो॥ तहांजादवनकेअरुसह
देवकेघोरसंग्रामभयो॥ जहांजादवाकित
नेकछिन्नभिन्नहोइभागे॥ तबश्रीकृष्णआइ
सहदेवसोंबोले॥ मैंतेरपराक्रमतैंप्रसन्न
भयोसोवरमांगि॥ जबसहदेवबोले मैंहू
प्रसन्नभयोतुमहूवरमांगौ॥ ऐसेंसहदेवको
वचनसुणिश्रीकृष्णबोले॥ तुमयहप्रतग्या
करौसोमैंजादवनसोंयुद्धकरौंनही॥ जोति
ससास्त्रकौंपूछेबिनाजात्रानहीकरूं॥ तब
सहदेवबोले॥ हेवासुदेवजोतुमप्रसन्नभये

होतोएकबरदानमोकोंद्यो॥युधिष्टरकोंग्रा
दिद्केह्मपांचभैयाहैं तिनकीमहादुष्षमेंनी
सदासहाइकरोगे॥यह्सुणिश्रीकृष्णअंगीका
रकरतभये॥तबकहीराजसूयजग्यकोविच
रकस्योहै सोसहायकरिबेकोचलिये॥तबक
सवाहीसमेंसहदेवकोसनमानकरिद्वारि
कातेंइंद्रप्रस्तपुरकोचले॥सोक्रमकरिकेमार्ग
चलिइंद्रप्रस्तआययुधिष्टिरादिकसोंमिलेस
बनकोबडोआनंदभयो॥तबयुधिष्टिरश्री
कृष्णकोएकांतमेंलेजायबोलेमेंराजसूयज
ग्यकरिबेकोबिचारकस्योहै॥सोआपकीअनु
ग्रहतें होइगो॥तबश्रीकृष्णहैंसबरातसेंसहा
यकरिबेकोअंगीकारकरतभये॥इतिश्रीनार
[illegible]
[illegible]॥हेमुनेश्रीकृष्णचंद्रतोकहाकरें
युधिष्टिरकहाकस्यो॥नकुलअर्जुनराजसूय
महायग्यमेंकहाकस्यो सोकहो॥तबवैशंपा
नबोले॥कृष्णअर्जुनजग्यकेअर्थधनलेबेक
लंकपुरीगये॥सो समुद्रकेतीरश्रीकृष्णअ
नजायबैठे॥हनुमंतकोसुमरणकस्यो॥त
[illegible]नबचनबोले॥श्री

७० लंकाकौं घेरिजुध कस्यो श्रीरामचंद्रविजैपाई सोसेतुबांध्योजासोसरपंजरहीबांधेबानरपा रकोंगये तबहनुमानबोले बानरबडेपरा क्रमीहैसोउनकेक्दिबेतेसरपंजरत्तिन्ननि न होइजायरहैनही तबअर्जुनबोलेजोमेंस रपंजरबांधौंताकौंकोनछेदनकरै तबहनुम तकही तुमबांधोमेंहीछेदनकरौंगो जबअर्जु नसरपंजरबांध्यो हनुमंतउछलिकेपरेसो मिलतिलछिन्नभिन्नकरिडास्यो तबअर्जुनउ दासभयो जबश्रीकृष्णबोलेफेरिसरपंजरबां धि तबअर्जुनफेरिसरपंजरबांधतभयो श्री कृष्णबाकेनीचेआयकूर्मरूपहोयठाढेभये अर्जुनकही अबवहतोडिये तबहनुमंतवा पैकूदेसोबहुतेरेप्रहारकियेपरंतुनेकऊ चलितभयोनही तबहनुमंतअर्जुनसोंबोले मैंप्रसन्नभयोवरमांगि तबअर्जुनबोले जुध समैंमेरीध्वजामेंतुमआयबिराजो सोहनुमंत तथास्तुकहेफेरिश्रीकृष्णबोलेहमकौंलंका पुरीमैंलेचलो सोहनुमंतश्रीकृष्णअर्जुनकौं लेगयेवहांविभीषणबहुतसनमानकरिपूज नकस्योफेरिकहीआज्ञाकरौ तबश्रीकृष्ण बोलेयुधिष्ठिरमहाराजकेराजसूयजग्यकौंध

नचाहियेहै सोदयो॥ तबबिभीषण असंष्या
तसुबर्णनिवेदकरयो॥ फेरिआपके किंकरन
सौंकही जहांपे आगपाकरौं॥ तहांपहुंचाइदेो
सोश्रीकृष्ण अर्जुनसुबर्णलेकरि इंद्रप्रस्थ
आये युधिष्टिरमहाराजकों अनेकसुबर्णन
केपर्बतनिवेदनकरो॥ युधिष्टिरहू बहुतप्रस
न्नहोइश्रीकृष्णकीस्तुतिकरी॥ अर्जुनकहीमैं
सरपंजरबांध्योसोहनुमतसोंमिट्योनहीं त
बश्रीकृष्णचंद्रबोलेक्षमाकरोमेरोसिरदेषो॥
कृष्णसोंहनुमतकोंबसकरि तुम्हारोकार्यकरयो
है॥ तबराजायुधिष्टिरकही सबपराक्रमश्री
कृष्णहीकोहै और हू जो कार्यहोहिंगेसोइ
नहींसों होहिंगे ऐसेंमनमेंबिचारि॥ श्रीकृ
ष्णकोंएकांतमेंलेगये॥ तहांपेरिबिनतीकरी
हेश्रीकृष्णमेंराजसूयजग्यकरिबेकौंबिचा
रयोहै॥ सोकेसेंबणि आवेआपमंत्रदीजे॥ त
बश्रीकृष्णबोले॥ सबराजानकोंजीतिकरिपृ
थ्वीकोंबसकरि सर्बसामग्रीसंचयकरि॥ महा
जग्यकोआरंभकरो॥ ऐसोकृष्णकोंबचन
सुणिप्रसन्नभये॥ श्रीकृष्णकेअनुग्रहकरि
बलवंत ऐसे भ्रातानकोंदिगबिजयकोंबि
दाकिये सहदेवकों दक्षणदिसाकोंसजयवे

४ सौराजनकौंसाथदेकरि भेजे ॥ नकुलकौंप
श्चिमदिसाकौं भेज्यो ॥ उत्तरकौं अर्जुनकौं
भेज्यो ॥ पूर्वदिसाकौं भीमसेनकौ सहदेवकौ
यमद्रदेसके राजा साथदेकरि भेज्यो ॥ भग
वान श्रीकृष्ण सबनकौं सनेह दृष्टिकरि देषि
आसीर्वाद दियो सो चारौंही चारौं दिसानके
राजानकौं जीति बहुत धनल्याये युधिष्टिर
महाराजकौंनिवेदनकस्यो ॥ एकजरासंध
जीतिबेमें न आयो तब राजाकौं बड़ी चिंता
भई ॥ जब श्रीकृष्ण हरिकामें उधवसों जोम
त्रकस्यो हो सो कह्यो ॥ तब युधिष्टिरकही आ
पही यह उपायकरौ ॥ जब श्रीकृष्ण भीमसेण ॥
अर्जुन एतीन्योंही ब्राह्मणकौ रूपधारि जरा
संधकी राजधानी गिरि ब्रजनामापुरकौं ग
ये ॥ तहां पहले वृषभासुरकौं मारि ॥ वाकेषाल
करि मढी वाके हाड़नकौं ऐसी तीनढाकब
णाई जरासंधद्वारवाजेपै धरी जो कोईकप
टकरि वाके नीचे आवे तब वे आपही सो बा
जे ॥ सो यह बृतांत श्रीकृष्ण जाणि भीमसेणके
हाथ पीकुंकी बुरजफुड़वा पाबिना द्वारही पुर
में प्रवेसकीयो के ॥ जरासंध राजा जामहलमें
नित्य दानकरै हो तहां और ब्राह्मणनके संग

पेभीतीन्योकपटरूपीब्राह्मणहोइगये। सोरा
जा अतिथआवेतिनकोचरणपूजनकरिकरि
दक्षणादेतेरहत। औरतोब्राह्मणदक्षणालेलेक
रिगये। औरएतीन्योबैठहीरहे। जबइनकोजरा
संघपूछ्योसोतुमकोणहो। दीषोतोब्राह्मण।
होपेअमार्गहोइकेसेआये। तबतीन्योहीबो
ले। हमदूरतेंआयेअतिथहैंसोजाणों। हमजो
कामनाकरेंहैंसोदीजेजासोंतुम्हारोकल्याण
हो। राजाहरिश्चंदरंतिदेवशिवि। बलिप्रभृतीमे
गिरस्याकणचुगे। असेसोउञ्छब्राह्मणव्याधिकपो
तइनकोआदिदेकरि अनेकअतिथसतकार
करतेकरतेहीयहअनित्यसरीरताकरिपरमप
दकोंगये। इतनोकहिकेचुपव्हैरहे। तबराजा
जरासंधइनकीआकृतवाणीपरसंचानके
चांनपहुंचेनेमेंदेषिपेअधमक्षत्रीहैं असेंजाणि
केबिचारतभयो। पेयेहैतोकोईक्षत्रीही। परंतु
आपदाकेमारब्राह्मणकोरूपबणायआयेहैं। ता
सों बिचारीकोप्राणपर्यंतभीमांगेतोदेणोहै। असें
सेंउदारताबिचाररिराजाजरासंधुश्रीकृष्णभीम
अर्जुनइनतीन्योसोंबोल्यो। हेब्राह्मणहो तुम्हारी
बांछाहोइसोहीमांगो। मैंतोतुमेमस्तकपर्यंतदे
वेकोंतयारहों। तबश्रीकृष्णबोले। हेराजेन्द्र

मकोंदुंदजुद्धदो हम तत्रीजुद्धकेजाचिकहैं अ
न्नकेजाचक ब्रासणनहीं नवजरासंधुकही
कोंणसेक्षत्रीहो तबअृष्णिसबोले हांनवन
मेंसिरोमणि ग्रैसेकंसकोमारिबेवारोतोमेंकु
स्नहों हि‹डंबकोसिरषंडनकरिबेवारो
यहभीमहे ग्रोरषांडवबनकोदाहकरिइद्र
कोजीतनवारोयहग्रर्जुनहे सोइनतीनोंन
मेंसोतेरीइक्षाहोइताहीसोंदुंदजुद्धकरि ग्रे
सेंसुणिजरासंधुग्रर्द्द हासकरिबोल्यो
इतनोछलकरिजुद्धमाग्यो सोग्रैसेमेंकहा
नहीदेतो तासोंग्रर्जुनतोबालकहेसोजु
द्धलायकनहीतू मेरेग्रागेभाग्योसोभगोरा
सोंकहाजुद्धकरों तासोंभीमसेंमेरेजुद्धलाय
कहेसोयासोंजुद्धकरोंगो ग्रैसेकहिकरि
एकगदाग्रापलीनीएकगदाभीमको क
रिपुरकेबाहररंगभूमिहेतहांजुद्धकरिबेको
गये दोऊहासतेंषहोइजुद्धकरतभयेग्र
त्रतुल्यगदानकेप्रहारकरतभयेपरस्पर
बामदक्षणमंडलकरेंहैं तिनकीगदानको
सबदवज्रपातसमानहोतहे ग्रैसेंजुद्धकरतें
जिनकेंग्रंगनकरिजैसेंग्रापकीसाषाचूर्ण
होइ तेसेंगदाहोतभई तबफेरिमल्लजुद्ध

करतभये॥याप्रकारसोंसत्ताईसदिनलों जुद्धकरतभये॥सोदिनमैंतोजुद्धकरैंरात केसमैंमित्रऐसेमिलेतेसेभोजनसयन करें॥तवसत्ताईसवीरातिभीमश्रीकृष्ण सोंबोले॥जरासंधकोबलअधिकदीसे है सोमैंजीतिनहींसकूं॥जवश्रीकृष्णभी मकोसमाधानकस्यो॥फेरिजरासंधको पटकिएकपावतोदोऊपांवनसोंदाबि ए कपांवदोऊहाथनसोंलेकरिचीरडारो॥ तवअट्ठाईसवेंदिनभीमजुद्धमेंव्याकु लभये॥रातिकीबातयादिरहीनहीं॥तव श्रीकृष्णवाकेसनमुषएकवृक्षकीसाषाले चीरकेदिषाई॥जवभीमकोवहवातयाद आयो॥सोवैसेहीदाबिचीरकेकैकरेत भये॥एकपावएकजांघएकरषणएक कटिएकस्तनएकहाथएककानएकआं षिएकभोंह॥ऐसेंजुदेजुदेदोइटूकसवरेष तभये॥याप्रकारजरासंधमस्योदेषिसवप्र जाहाहाकारकरतभई॥तवश्रीकृष्णअर्जु नभीमसोंमिलिकेसराहतभये॥ताउपरांत नगरमेंआयजरासंधकोपुत्रसहदेवता॥

कोराज संघासन पै बैठाय राज्याभिषेक
स्यो। कैद मैं राजा हे तिनकौं छुडाय गुफा
सों निकसाय बुलाये। बीस हजार आठ
से राजा आये सरीर मैं मैल जमि रह्यो है जी
र्ण मलिन वस्त्र हैं ऐसे सब ही आइ कृष्ण कौं
दरस एक करि प्रणाम करी स्तुति करी। तब श्री
कृष्ण उनकौं स्नानादिक करवाय वस्त्र भूष
ण पहरावत भये। जब वे राजा बरषा के अं
त मैं जैसे तारामंडल सोहै तैसे सोभित भए
एक रथ इंद्र बसु राजा कौं दियो हो। वह रथ अ
त नदी पर्वतन सौं अटकै नहीं। सस्त्रपातन
करि कटै नहीं अषंडता की कांति सर्वरथ
नतें अति ऊंचो जाकी धुजा जय स्थंभ सी दी
से। वह रथ बसु राजा ब्रहद्रथकौं दियो। ब्रहद्र
थ जरासंधु कौं दियो। सो वह अद्भुत रथ कौं
श्री कृष्ण देषि भीम अर्जुन कौं सवार करि आप
सारथी भये। गरुड कौं सुमरण करत ही आये
तब उनकौं धुजा मैं स्थापित किये। जरासंधु
पुत्र कौं नम्रता देषि वाकौं भी रथ पै चढाय लि
राजा छुडाये हे तिन सबन कौं संग लेकरि
इंद्रप्रस्तपुर आये। जहां श्री कृष्ण भीम अर्जुन

हाराजयुधिष्टिरसों मिलिसबराजानकों भीप्र
णामकरावतभये॥ फेरिवहांकोसबब्रतांतक
हतभये॥ जबयेराजासर्बहीप्रणामकरिबीनती
करतभये॥ जरासंधरूपीसमुद्रमेंबूडेहेतिन
हमसर्बहीकोतुमउधारकस्यो॥ सोअबहम
किंकरनकोकहाआग्याहे॥ तबश्रीकृश्नबो
ले॥ एकबेरअपनेअपनेस्थाननमेंजायस्त्रीपु
त्रमंत्रीनकोसमाधानकरो॥ तापीछेसीघ्रही
महाराजयुधिष्टिरकोराजसूयजग्यकीसेवा
मेंसहायतामेंरहो॥ ऐसेंकहिसर्बहीराजान
कोंबिदाकिये॥ तापीछेयुधिष्टिरमहाराजम
गधराजकीबिजयकोसारजोरथ्यसोश्रीकृ
श्नकीभेटकस्यो॥ इतिश्रीसारसुसारचंद्रिका
यांसभापर्वणिद्वितीयोध्याय॥ ॥ताकेउपरां
तवेसंपायनबोले॥ श्रीकृश्ननकुलदारथमेंअ
सवारहोइनागलोककोंगये॥ तहांनागलो
कमेंनागरथ्यकीधुजामेंगरुडकोरथमेंनकु
लकोंदेषिभयभीतहोइ श्रीकृश्नकेसरण
कहीआग्याकरोतामेंहाजिरहें॥ तबश्रीकृश्न
कही महाराजयुधिष्टिरकेजग्यनिमित्यदिव्य
मंडपद्यो॥ जबसर्बनागननेंल्यापसुबर्णमई

मंडपइंद्रप्रस्थपहुंचायादियो साथिश्रीकृस
नकुलआयमंडपकीसोभादिषायकही अब
आपकामधेनकौंबुलावौ तबराजायुधिष्टिर
एकाग्रमनल्यायकामधेनकौंध्यानकस्यौ त
बहीकामधेनआई सोराजाकामधेनकौंदे
षिहाथजोडिप्रार्थनाकरी जबतांई मैंजग
करौं तबतांईतुमइहांरहौमेरीकामनापर
पूर्णकरौ कामधेनहूतैसैंहीअंगीकारकरि
वहांवासकस्यौ तबराजायुधिष्टिरजग
कोप्रारंभकरतभये तहांअठ्यासीहजार
तौरिषिआवे सोउनकीसुभमुहूर्तमैश्रीकृ
स्नकीआग्यासौंबरणीकरी उनमैंमुष्यमुष्य
रिषितोइतनेतिनकीप्रथमबरणीभई बेद
व्यास भरद्वाज सुमंत गौतम असित व
सिष्ट च्यवन केन्व मैत्रेय कस्यप त्रित्र
ति एकत्र विश्वामित्र बामदेव समति जय
मनी क्रत पैल परासर गर्ग वैसंपायन
नारद अथर्बा धौम्य परसुराम बाति
होत्र ब्रहश्रुवा रामशिष्य अैसो अकृतव्रण
औरहू बुलायेआये द्रोणाचार्य भीष्म कृपा
चार्य इनकौंआदिलेकेऔरहू पुत्रनसहित ४१

धृतराष्ट्र॥ बिदुर॥ और सर्बराजा देसदेसां
तरते स्त्रीपुत्रमंत्रीसेनासहित आये॥ और
पृथवीमें ब्राह्मण क्षत्री वैस्य सूद्र जो जगदरस
णकी बांछा करि आये तिन सबही कों महारा
ज युधिष्टिर जथा जोगवसाये॥ तब वे ब्राह्म
ण सुवर्णके हलन करि पृथवी सोधि कुंड म
उपवेदिकार चत भये सुवर्णमई सर्बसामग्री
करी॥ सर्बब्राह्मण राजसूयसभ में अपणे
अपने आसनपर बैठे॥ तब महाराज हूजग
दी त्राले करि आरंभ कस्यो॥ वहां सभामें नार
दादिक मुनि श्रीकृष्णादिक क्षत्रीन करि सभा
बहुतसो भाइ मान भई॥ तहां वेद व्यास ब्रह्म
को कर्म करत भये॥ धौम्य आचार्य कर्म कर
त भये॥ औरमुनिअध्वर्यउद्गाताको कर्मक
रतभये॥ औरहोमपाठ जपपूजनादिक क
र्मकरतभये॥ फेरि विशेषकरि होमकों क
रतभये॥ तासमेमें अर्जुन पांडव बन चगप
श्रीयिको नेरोगपुकस्यो है॥ सो कृष्णादि
कसामग्रीनको पुष्टताके निमित्त...
जनकरत भये॥ ...
लोकपाल॥ ब्रह्मा॥ ...

द्याधरनागमुनिपत्तर्दत्तसर्पपंक्षीकिंन्नर चारण और इनसहिततेतीसकोटिदेव सर्वहीपूजनआहुतिनकरिकेजथाजो ग्यतृप्तभये। अग्निमुषआहुतिनकरिदेव तातृप्तभये। परंतु ऐतिसेब्रमनभये। तातें अनेकप्रकारकेभक्तभोज्यसामग्रीकोदे वताभूदेवहोइहोइकरिभोजनकरिकेतृ प्तभये। जाचिकनकेमनोर्थनहुतेअधि कभूमिरत्नहाथीघोडारथसुवर्णआ दिदेतभये। ऐसेंउत्सवहोतेंहोतें सोमा भिषवकोदिनआयो। तादिनासर्वहीके पूजनमेंप्रथमपूजनकोणकोकरणोऐ सोविचारकरतभये। तहायुधिष्टिरमहारा जनेंभीष्मपितामहसहदेवइनकोंपूछी जोप्रथमपूजनकोनकोकरणो। राजासुर मुनिआदिबडेबडेमहानभावहे। परंतुजा केपूजेतेंकोईद्रोहनमानें। ऐसोबताओ। अ रुजाकेपूजेतेंसर्वहीकोपूजनहोइ। ऐसो पात्रबतावो। तबभीष्मबोले इंद्रादिकदेव पूजेंसर्वलोकनकेगुरु ऐसेंश्रीकृष्णतिन कोंतुमजानोंहो। परंतुबडेनकोबडपनरा 43

षवेकों तुमपूछो हो॥ सो जाके चरणोदक कों शिवसीसपे धरै तापुराणपुरसोत्तमही कों पूजन करो॥ जब सहदेव यह ही कही॥ तब राजायुधिष्टिरश्रीकृष्णकों बुलायरत्नमय ऊंचो सिंघासणपर बैठाय मंडपके बिचिपा द्य अर्घमधुपर्क बस्त्र भूषणादिकसामिग्री नकरि पूजन करत भये॥ तहां सर्वही दिषि देषिनमोनमो जयजय सबकरत भये॥ ऐसे श्रीकृष्णकी महिमागुणानुवादसुणकरक्रो धकरि जलत ह्यांतें शिशुपाल उठचल्यो॥ तब युधिष्टरमहाराजनिवारणकस्यो॥ तबशि सुपाल हाथऊंचो करि बोल्यो॥ द्रुपद ग्रगस्त नारदापरासरादिकमुनिरहितें ग्वाही गो पालकों पूजनकरणो हो तो इनकों बुलाइ ग्र नादरक्यों कस्यो॥ परंतु पुत्रहीनकी गति न ही॥ तातें गंगापुत्र भीष्मगति ही नहीं हो जा तें हे युधिष्टिर तोकों भी ऐसाही बुद्धिदीनी॥ जो कृष्णकों पूजन करि॥ तेरी हूसद्गतिकों नासकस्यो॥ जानें बालकपणें ही मैं तो पूतना कोंमारी॥ ऐसे ही पुन्यात्मा पीछ्सकटतो डि बैलबक्षहाथी घोडासाप गधेनकोमारि

वैवालो ॥ ऐसे को ऐसे उत्सव मैं पूजोपा
अपरोक्ष को ॥ परंतु होण हार की महिमा से
याम्य जु तैसे सुर्गगयो अरु बालक सह देवव
हि सो बड़े बड़े न की बुद्धि भ्रष्ट भई ॥ ऐसे श्र
म पितामह निवारण करि बोले ॥ आगे पांच
तीन ने न च्यारि भुजा जन्म लेते ही भई ॥ अरु रा
सम के सी धुनि करी ॥ तब माता पिता ब्राह्मण
न कों बुलाय पूछो ॥ या को कारण कहा ॥ जब
ब्राह्मण बोले ॥ जाकी गोद मैं बैठे या को एक नेत्र
दूरी ॥ तब या की माता सब राजान की गोद मैं
गिरि गी ता के हाथ या की भुजा
धरो या कूं ॥ जब श्री कृष्ण की गोद मैं धरपो त
बगिरे ॥ सो देखि या की माता शिशुपाल की माता
ने श्री कृष्ण सों बोली ॥ हे कृष्ण मेरे पुत्र कों तु
म कैसें मारोगे ॥ ता तें या कों अभैदान द्यो ॥ ज
ब श्री कृष्ण कही सो अपराध लों तो माफ करेंगे
ता तें अब ए अपराध ही बेलगे हैं ॥ सो सत अप
राध लों आर्बल है ॥ तुम का है कों षेद करो हो
ऐसें सुणि शिशुपाल बोलो ॥ अपात्र की पूजा
करता वे या ते कर वे वाले अरु करा ई वे वा ले वे

सभा० ९
४४

नवीनतीकहिस्यापे॥ ताकौदेखिराजा
कपाइ आसुंनेरे॥ तबकलापसपूछ्योया
कारणकहा॥ राजकही अबतो ब्राम्हण
येसोनीनहीआवेहै॥ कलियुगमेबिना
येहीआवेगे॥ मनुष्यसोमेरेआसू आये॥
तैकहिवाकोपूजनकर्यो॥ तापीछेजगपै
सभामेंकहि श्रीभगवानकर्यो॥ सबको
बिदाकरे॥ सोसबही देवराजामुनिआदि
जगपकोमहिमाकहत आपआपके स्थान
गये॥ श्रीकृस्न दुर्योधनादिकनकौंफेरिहस्ति
पकोपासकितेकदिनराखे॥ ऐसे श्रीकृष्ण
कैअनुग्रहसोराजाजगपकरिबहुत आन
दकोप्राप्तभये॥ [illegible]

ऐसेंयुधिष्ठिरकेराजसूयकोदे
खि जोजोआहेसोसबही आनंदको
पावतभये॥ एकदुर्योधनबिनावाकोबहुत
संतापभयो॥ जनमेजयपूछ्योयाकोकारणक
हा॥ तबवैशंपायनबोले॥ युधिष्ठिरकेराज
सूयमेंसबहीबांधवप्रेमकरि जुदीजुदी
सेवामेंरहे॥ भीमसेणतोरसोई[illegible]

रमैंरहे॥ आमरषरचकौमालिकदुर्योधनभयौ
सहदेवपूजाकौअधिकारीभयो॥ नकुलपू
जनसामग्रीकौअधिकारीभयो॥ आवैजिन
कौसमाधानकरिबेमेंअर्जुनरह्यो॥ श्रीकृष्ण
पांवधोबेमेंरहे॥ कर्णदानदेबेमेंरह्यो॥ पु
रोसबेमेंद्रोपदीरही॥ औरसात्वकीभूरिश्र
वाहारस्यक्यबिदुरबिकर्नसतर्दनकौआदि
देऔरहूअनेककामनाकौकरतभये। यावि
धिजग्यभयो॥ तहइम्मकी आवंददेषिदुर्यो
धनकेदुष्षभयोहीहे॥ इजेऔन्नतस्नानकी
सोभादेषिमहाआतापभयो॥ सोअंतःपुरमें
जायदेषेतोद्रोपदीकीनजरश्रीकृष्णकीमहा
राणीसर्वहीकरेहे ओरबिनतीकरेहे। ऐ
सेंसोभादेषिआतापतेंव्याकुलहोइबाहर
आयो। फेरिमयकीबणाईहुई सभामेंमहा
राजयुधिष्ठिरबिराजेहे॥ तिनकेपाससत्रहो
भायनसहितचल्यो॥ सोद्वारहीतेंद्वारपालन
पैकोपकरतप्रवेसकर्यो॥ आगेफटिकसि
लोनकीफरसफेजलजानिवस्त्रउठाये॥ आ
गें॥ रत्नमई वापिकाकोफरसजाणिबस्त्र
सहितगिरकेभाज्यो॥ सोदेषिदासदासीस

बही हुंसे ॥ फेरि उहां तें आगे चले सो एक भीति
को द्वार जांणि धसि बे लगे सो लिलार हू मैं ल
गी ॥ तब तो भीमसेण अर्जुन सहदेव नकुल
आदि ताली दै कै हंसे कही यह आंधे को आंधो
ही है ॥ इत उत देषै तो भीतिन में उनके प्रतिबिं
ब है सै है सो मानो चित्र हू है सै है ॥ तासों दुर्यो
धन लज्जावंमान होइ ॥ महाराज युधिष्टिर
सौं बिना मिले ही क्रोधसों संतप्त भयो ॥ सो दे
षि महाराज युधिष्टिर सब ही को बहुत नि
वारण कर्यो परंतु श्री कृष्ण को मरजी पा
य बाल वृद्ध आदि दै सर्व ही हसत भये क्रूर के न
ही ॥ ऐसे अनादर करि वहां तै बाहर आइ
सवारी करि हस्तिनापुर गयो ॥ यह वृतांत देषि
युधिष्टिर उदास भये ॥ अरु श्री कृष्ण प्रसन्न
होइ विचारत भये ॥ भूमि भार हरिहो बे को यह
ही बीज बयो ॥ ऐसे युधिष्टिर को जग्य समाप्त
करि श्री कृष्ण द्वारका कों गये ॥ महाराज युधि
ष्टिर हू जग्य समाप्त करि सभा में बैठे हैं तहां ना
रद मुनि आये ॥ राजा सतकार करि आसन पै
बैठाये ॥ तब नारद मुनि कही जग्य के प्रभाव क
रि तुमारो पितानि के तै सुर्ग गयो ॥ आगे हरिस्च

चंरहीजग्यकरिसमरारंभयो॥ इसतेप्रथ्वीप
तिसमरएटत्रहैहै सोतेरोग्रहौमागपरे॥ ग्रैसे
कहतैंहीउल्कापातभयो॥ तवराजाकहीयाको
फलकहौ॥ जबनारदकहीत्राजसौं तेरैं वर
समैतोकों निमित्यकरिसबहीभूमिमें क्षत्री
नकोनासहोइगो॥ सोसुणि महाराजकही जो
कोईहठकरै तबजुद्धहोइहै॥ तातेंजोकोईवा
धवबुलावैगैरणमैंवा जुवामैंतामैंनाऊंगो
जितपास॥ हठकरिनदूंगोनही आजहीसों
यहपणलियोजबकेसैं जुद्ध होइगो॥ सोसु
णिनारदहंसिकरिबोले॥ राजा होणहार तो
मेट्यो मिटैनही॥ ग्रैसैंकहि देवलोकगये॥
राजाहूपिताकोउहारसुणिप्रसन्नहोइ
प्रजाकोंपालनकरनलगे

[illegible]

हाराजतुम्हारेपुत्रकोंस्त्रीजनवैसेंहीस
वतहै। वस्त्रभूषणपहरैहै। तोहू सुस्कहोइ
है ऐसैं वर्षाकालमेंसमुद्रसुस्कहोइ ऐसें
राजासुणिकैं दुर्योधनकोंबुलाइबोले। हेपुत्र
सकलसंपत्तिकरिसहितहै तोहू चंद्रमाकीसी
तरहक्षीणक्योंहोतहै। तेरेमनुपांडवतोहूरहै
बापदादाकीसंपत्तिजोहै सोनिस्चय धनहै। ता
तैं अबतूक्योंचिंताकरतहै। तबदुर्योधन
बोल्यो। छत्रीतौवेहीहै। जोआपणीभुजान
केबलकरिसंपदाजीतैंपाडवनकीसातरेउ
नहींकोस्तुतिहोतहै। औरबापदादानकीसं
पदाकोंबधाइबधाइहर्षपावैयहकर्मवैस्य
नकोहैक्षत्रीनकोनहीं। तातैंक्षत्रीतोपांडवही
हैं। जिननें इंद्रप्रस्थमेंयहसंपदाल्यायपा
कारकोजग्यकस्यो। जाकैं चतुर्भुजश्रीकृष्ण
चारोंभुजानसों चारोंदिसानकोंजीतिया
कारकोसंपदाभेटकरवाई। सोवेमेरेसत्रुत
कीयाप्रकारकोऐस्वर्यपादिकरिसोकोंदाह
तहै। प्रथ्वीमेंउदयाचलअस्ताचलपर्यंतचा
दिसानमेंऐसोराजाकोईहैनहीं। जिन
नकीभेटकरीनहीं। औरभेटजोलेआवत ४६

आईसोसबमैंही लीनी॥परंतुतिनमैंकितनी
कबस्तुआजताईनदेषीनसुणीनपहचाणी
सोइतनीआईजिनकेलेतलेतमैंथकिगयो म
णिरत्नमोतीहाथीघोडाचंदनयेइतनेआये।
सोइनहूकीजातिपहचानेनहीं॥राजायुधिष्टिर
केअवसेषकोंनारदादिकसबतीर्थनकोज
ललाये॥औरवासमैंमैंसर्वहीराजादाससेव
कदासा॥बाल्हीकराजातोंघोडानकोंलियेठा
डोहे॥कांबोजराजरथजोये॥सुनीथराजा
धुजाधारेहे॥बसुदानराजाहाथीलियेहा
जर॥मगधराजमुकटमालालिये॥एकल
व्यभीलराजाउपानलियेठाडो॥काष्पराजाध
नुषलिये॥पांड्यराजकवचलिये॥चेकतान
राजातरकसलिये॥मत्स्यराजाषड्गधारेसा
त्वीकीजारवछत्रलिये॥भीमअर्जुनदोऊत
र्फचंवरकरें॥वासमयमैंसमुद्रआपबला
णकोसंषनजरकर्यो॥वासंषकोंअर्जुननैं
धारणकर्यो॥श्रीकृष्णधौम्यव्यासादिकमु
निमंत्रपठतेवसेषकरतभये॥सर्वहीवार
ननैंमंगलीकसंषनकीधुनिकरी॥सोसु
णिकितनेकराजामूर्छितभये॥तहांमोह

कौम क्षौमाई॥ जब श्री कृष्ण पांडव सात्व
धृष्टद्युम्न आदि सब ही हैं सत भये॥ सो वह
तमो सो भ्र॥ली कैसें जाय॥ श्री कृष्णकी पूजन
सभे सुमनवृष्टि नई॥ सिसुपाल मार्यो ग
योसो पेहू कैसें भूलौं॥ फेर बावडी में गिरे
तब द्रौपदी स्त्री सहित भीमादिक सर्व ही हँ
सो॥ सो इन बातनके संताप करि मेरो मन कहू
भी लागै नहीं॥ तातें अब तो मैं मरण ही कौं उपा
य जीवन वांचि उचित मानौ हौं॥ ऐसो पुत्रको
वचन सुनि धृतराष्ट्र बोले पुत्र पराई संपदा
देखि संताप करैगो वह कायरनको धर्म है॥ तु
हू परक्रम करि इंद्रप्रस्था॥ और कृपाचार्य क
र्ण द्रोण अश्वत्थामा इन चारौं सहित चारो
दिसा जीतिकै सो ही जग्य करि॥ युधिष्ठिर ते
रो बडो भाई है सो याकी कीर्ति है सो तो तेरी
ही है॥ तब दुर्योधन औ[illegible] फेरी बोल्यो
दिसानकौ धन पांडव ले आये॥ और दिग
विजयतें धन कैसें आवै॥ धन बिना राज
सूय कैसें होइ॥ एक राजसूयकौ कर्तौ जी
तै हसरो राजसूय कैसें होइ॥ तातें सब
न सहित जाय पांडवनकौ जी

पदासभासहितसबहालल्यो यहमेरेमन
हे।यहसुणिधतराष्ट्र दुर्मंत्रहैं ग्रैसेबोल
हो।।वाहीसमैसकुनीबोल्यो।।श्रीकृष्णभी
नहै।।वाहीसमैसकुनजाकेरक्षकहै ग्रोर
म ग्रर्जुनसहदेवनकुलजाकेरक्षकहैं ग्रोर
क्रोधसोंसबजगतकोदग्धकरिबेवालार।
जायुधिष्टिरसोकैसेजीतबेमेंग्रावे।।तासों
एक उपायहै राजाकों चोपड़िकोषेलग्रावे
नही।।ग्रोरबुलायकहैबेसोवहनटे हूनही
तासोंछलकरिवाकीसपूर्णसंपदाजीतिलीजे
तुमसभाबणावो।।युधिष्टिरकोबुलाभेजोतु
म्हारीसभासमानहमहूंसभारचीहै सोद
षो।अबवेग्रावेगेतबमेंसर्बकामकरोगो।
ग्रेसेसुणिधतराष्ट्रबोले।।यामंत्रकोधिक्का
रहै।।धर्मात्माकोछलकरिजीतिबोजोग्य
नही।ग्रेसेकामकरिबेसोधर्मजसग्रुंरी
पसर्बहीनष्टहोतहै।।ग्रपजसपापयेबध
तहैं।।तबक्रोधकरिदुर्योधनबोल्यो।।बेरी
कोधर्मग्रधर्मदेषिबोहीनही बलतेबल
नहोयतोछलसोजीतनो ग्रागेंबलिकों

कै कहै सो तुम नहीं मांनोगे तौ मैं मरोंगो
सैं पुत्र कौ हठ देखि पिता कौ दुर्बुद्धि सौं कु
कै नास समझि लीनौ तौ हू धृतराष्ट्र मोह
करि ऐसें ही करौ यह कहत भयौ ॥ तब दुर्यो
धन सभा रच्यौ ॥ इति श्री भारथ भाषायां [illegible]
[illegible] ॥ श्री कृष्णाय नमः [illegible]
तब बिचारी युधिष्टिर कौ सभा समान मेरै
मी सभा म्हि आपा बैपां बांछा करि अनेक
शिल्पकारन कैं बुलाय दुर्योधन राजा युध
मी सभा बराबर सभा वणवाई ॥ अब सभा
तयार हुई दोषिया सभा मैं द्यूत क्रीडा करि पां
डवन कौ सर्वस्व हरण करणोय ह बिचार
विदुर सौं युधिष्टिर ल्यायबे के ताईं इंद्रप्रस्थ पु
र पठायौ तहां विदुर युधिष्टिर सौं सन्मान पू
र्वक मिलकर बोल्यौ ॥ राजा दुर्योधन सभा न
वीन वणवाई है तुम सैं द्यूत क्रीडा करवेकुं
बुलाये हैं ॥ तां कहा इच्छा है ॥ तब युधिष्टिर
विसकरि बोले शकुनि पापात्मा है
है सो कपट के पासान के छल कूं जा
नै है बैरी पुरुस सैं न जीत्यो जाय तो छल करि
जीतणौ यह हू बुद्धिवानै विचारी है सोनी ५८

कही है परंतु मैंहूं बुलायो हू योरणतें वाघ्र
ततें निवृत्त नही होवूहो याते ओपहू पण लि
यो है होणहार है।य सो होवोमेहू चल गो।ओ
सो निश्चय करि ओपदी भीमादिक च्यारूं भाईन
करकें सहित रथनमें सवार होय हूस्तिनापु
र आये॥ तहां भीष्मपितामह द्रोणाचार्य धृ
तराष्ट्र इनसों मिलिकै युधिष्टिर बहुत स
नमान पायो॥ दुर्योधनहू अपमेदकें अ
श्वकी सानाहां पूजन कर्यो॥ वरात्र सव
हीसुषपूर्वक वा भवनमें वासकर्यो॥ प्र
भात दुर्योधन सूतसभा की सोभा वणवा
ई॥ चारो तरफ गजे इनके झुंड गाजे हैं स
र्ववाजा बजे हैं॥ गीतनत्य वादहोत हैं
ऐसी सभामें भीष्मादिकवीरनसों हित
आपहू प्रवेसकर्यो॥ वहां ओरहू राजाज
ेप प्रणामकरि करि बैठे भीष्मादि
है॥ तहां सकुनीदुस्सासनकर्ण
बातोविनोद करि करि दुर्योधनह
नमें तालीदे दे के हसत है॥ भीष्मद्रो
जयद्रथ कर्ण अश्वत्थामा कृपाचार्ज
यादिक वीरमंडली सहित इनकूं

१०७ सभासो भितवा भयंकर देषि पांडवनहू
कौं तहां बुलाये सो आये तिनकौं दुर्योधननि
कर आदर देषि अनादर करि कछु कसन मां
नसो ह कर्यो तब पांडवा सिरनी चे करि नी
ष समीप बैठे जब दुर्योधन सभा में सुवर्ण
मई वेदी तापर बैठि पांडवन कौं निकट बुला
य सुत कौ आरंभ कर्यो सो युधिष्ठिर दुर्यो
धन तो हू त षेलैं तिनकौ सकुनम ध्यस्थ
भयो सो राजा युधिष्ठिर जो जो पण कियो
सब सबनकुं न कुलक रि कहै यह हू जाती
या प्रकार सर्व राजसा मिग्री युधिष्ठिर हारि
गये ता पीछै भीमादिक भाईनकौं हारि आ
पा हू कौं हारि गये तब युधिष्ठिर चारों नर
फ देषत भये सो पण करिबे कौं कछु भी दे
ष्यो नहीं जब दुर्योधन बोल्यो हाल द्रौ
पदी है सो अबके द्रोपदी कौं पण करि बा
जी षेलो ऐसें सुणि विदुर क्रोध करि बोले
एरे अंधके पुत्र अंध यह तेरी बुद्धि कुलना
स करैगी तू तेरी मृत्यु वास्तै सर्प तैसें घनके
ला तमा रिकौं जगावै है ऐसे कहतें कह
तें हां युधिष्ठिर पण कर्यो तब सकुन द्रोपदी

हूकोंजीतीपहककहनभयो॥तबदुर्योधनम्रानि
कामीसूतकौबोल्यो॥द्रोपदीदासीकोइहां
ल्यावो॥जबवहद्रोपदीपासगयो॥सर्बब्रतां
तद्रोपदीसोंकहिकह्यो॥मातातुमहकोसकुन
कर्णसहितदुर्योधनसभामेंबुलावेहे॥मेंतो
सेवकहोंमोसोंकह्यो॥सोकहतहों॥यामेंमेरो
दोसनहीं॥द्रोपदीऐसेंसुणिबिचारकरिबोली
द्रुपदकीबेटीपांडुमहाराजकीपुत्रवधूसो
मेंराजसभामेंकैसेंजाऊं॥वासभामेंभीष्म
द्रोणबिदुर॥अरुमेरेपांचोंपतिहैंकिनहीसों
कहै॥अरुजोहैतोपहपूछोजोराजामोकों
जूपोहारेपहलैहारी॥अथवापीछे॥याकोध
र्मनिर्णयकहाहे॥तबवहबोल्योहेराजपुत्री
सर्बहीहै परंतुचित्रकेलिखेसेहैं॥कोईमेंध
र्मनहीहे॥जहांराजाजोअंध॥सकुनीमंत्री
कर्णबीरतहांधर्मकीचर्चाहीकहा॥जबद्रो
पदीफेरिबोली॥तोहूभीष्मसोंजायकहो॥जो
तुमपरसरामकौंजीतनेवालेजासभामेंहो
इतहांद्रोपदीकीलज्याजाइगीतोगंगाकोल
अरुकदाचितरामप
रत्नी

मैं स्नान किये पावक न जाय ए नहोबेको तोहो
इ परंतु द्रौपदी तो सभा मैं आवै नही तब वैसै
सुणि तब प्रातिकामी आय सभामै यह कही
द्रौपदी ऐसै कहै है ॥ जब दुर्योधन प्रातिका
मी सौ बोल्यो ॥ वाको बलात्कार करिके ल्यावो
जब फेरि प्रातिकामी बोल्यो ॥ हे महाराजकु
मार तुम तौ जाके देवर ॥ भीष्म सुसर पांडव
पति तासौं बलात्कार करिबेकी मेरी तो सा
मर्थ्य नही ॥ यह सुनि दुर्योधन क्रोध करि प्रा
तकामी कों सभा तें बाहर निकसाइ दियो ॥
अरु दुःस्सासन सौं बोल्यो ॥ वा दासी सौं जाय
कहो जो सभा मैं चलि के तूही धर्म पूछि ली
ज्यो ॥ अरु नही आवै तो बलात्कार करि ल्या
वो ॥ तब दुस्सासन गयो ॥ जहां द्रौपदी वाको
आवत देषि भय करि संकुचित भई ॥ अरु क
टी मैं एक वस्त्र रजस्वला हो सो ताको सपर
समति करे ॥ तब दुस्सासन वाको है दासी
हे दासी ऐसे कहि पकरबेको दौर्यो ॥ जब
वह भयभीत होइ अंतहपुर मैं भाजि गई
तब वाके केस पकडि बलात्कार करि स
भा मैं ले आयो ॥ जब द्रौपदी को देषि सबही

जलोककेंपापमांननैयो॥भीष्मद्रोणा
॥चार्यकेतोकुलनासभयकरिमुखेद्या
॥॥औरसबहीसभाजनहाहाकारसबके
रतभयो॥कर्णादिकनकेहर्षभयो॥औसोदु
सोद्रोपदीकोदेषिभीमसेनबोल्यो॥हेयुधि
ष्टिर तुम्हारेजुवाषेलबेकेदोसकरिइनह
थनकोजलाइदेंगो॥तातेंहेसहदेवसी
घ्रहीअग्निल्याव॥तबअर्जुनबोल्यो॥हेभी
मतेरीबुद्धिकहांगई॥महाराजसत्रधर्मरा
जकेआपनकोहारेहे॥तातेंअपनोतोअ
सहाहै॥तासोंतुमहूछमाहीकरो॥औसेअ
र्जुनकेबचनसुणिभीमसेनकोंछमायुत
देषिदुस्सासनद्रोपदीकोंसभामेंल्यायो॥ए
कबस्त्राकंचुकीरहितरजस्वलाऔसेंवह
द्रोपदीसभाबीचिपतिनहीकोंछुवाइष
करिदेषतभई॥तबयुधिष्टिरादिकलज्या
वांनहोइनीचेमुषकरिलीने॥वासमेंदु
स्सासनफेरिबोल्यो॥हेदासीतोकोंभी
लीनीहै॥सोअबइनकोकहादेषैहै द्रौ
धनकोदेषि॥औसे
आदिकगुरजननकों

भा०
५१

मैं श्री कृष्ण की सखी पांडु महाराज की
धृ द्रुपद की बेटी ताकौं पहदु बुद्धा दा
है सो तुम याकौं [illegible] कौ कैयो नहीं धर्म
कै तौ बोलिबौ जोग्य है तब भीष्म बोले
श्री तेरे अनादर तें यह कुल नास होवेगो
ताकहि हम कौं कछु मोह सो नहीं अब तुम
धन सभा के न कौं पूछत भयो यह जीती
कि नहीं तब भयकरि सभा के कोई न बोले
एक धृतराष्ट्र पुत्र विकर्ण बोल्यो है सभा
सद हो तुम कौं कहा डर है धर्म की बात हो
इ सो कहौ राजा यह लै आपौ हार्यो पाछे
याकों हार्यो है ताते यह जीती भई नहीं
या के बचन कौं सब ही सभासद सराहत भे
ये तब दुर्योधन बोल्यो विकर्ण तू जाणै नहीं
यह तौ सर्बस्य पण मैं पहिलै ही जीती अब
पांडवन के सब वस्त्र सब ही लैल्यो पापां
चन की प्यारी असती ताकौं विचित्र वस्त्र
हु लै ल्यो ऐसे कहत ही पांडवनि तौ वस्त्रादि
केउ तारि दुःशासन सो हैं जैसै काल मैं बादल
सौं निकसि सूर्य सो है तैसे सो भितमये ता
समै सभा मैं दुस्सासन सो कह्यो

होइ सो पतिब्रता कै सैं ॥ अरु गवन करना तो कुरराज को पति करि सनाथ क्यों न्हा ह ऐसे कर्ण के बोलत ही दुर्योधन द्रोपदी को म जंघा दिखाय बोल्यो ॥ इहां बैठि ॥ यह सुन भीम क्रोध करि बोल्यो ॥ अरे दुर्योधन तेरी ही जंघा को गदा प्रहार करि भंजन करहुंगो अरु तेरे सकल भ्रातान को हौं ही मारोगो ॥ ऐसें कहते भीम को कोप सहित देखि बिदुर धृतराष्ट्र सों कही ॥ तेरे सब कुल को नास होत है ॥ हा कियो चाहै तो द्रोपदी को समाधान करि तब धृतराष्ट्र दुर्योधन सों बोल्यो ॥ बड़े भ्राता की भार्या माता समान है ॥ ह पतिब्रता हो ता कों रे दुर्बुद्धी क्यों दुष्ख देत है ॥ ऐसे दुर्योधन को कहि द्रोपदी सों बोल्यो ॥ हे पुत्री तू निजते अकरि अखिल जगत भस्म करिबे को समर्थ है ॥ तौ हू क्रोध करत है ॥ तातै मैं प्रसन्न भयो तू बर मांगि ॥ द्रोपदी बोली ॥ राजसूय यज्ञ मैं जाके सकल राजा किंकर भये सो राजा किंकर न होय ॥ यह धृतराष्ट्र अंगीकृत करि कही ॥ और बर मांगि ॥ फेरि द्रोपदी कही एस के पांडव सस्त्र अस्त्र बाहन सहित बं…

रूद्र होयनिजस्थानजाय॥यह द्धृतराष्ट्र
अंगीकृतकियो॥तबसभासद बोले॥आपति
समुद्रमेंडूबतपांडवनकौंद्रौपदीनौकाभई॥
यहसुनतसकोपभीमगदागहिकेउठिबोल्यो॥
हमारें स्त्रीनौकाकहा॥याबिपत्यसागरकोंभु
जबलकरितरें हैं सोतुमदेषो॥ऐसेंकहिं
तपीसतसबनकेमारिबेकोंगदागहिसनमु
षद्दोड्यो॥याकोंश्रवनदेषिदुर्योधनकर्णदु
स्सासनसकुनादिकंपितभये॥युधिष्टिरभी
मकीबांहगहिनिवारणकियो॥तबधृतरा
ष्ट्रयुधिष्टिरसोंबोले॥हेपुत्रदुर्योधनतेरो
कनिष्टभ्रातपुत्रसमानहै॥याकोअपराधक्ष
माकरो॥तुमतुम्हारेअस्त्रसस्त्रधारिपुरीमें
जायराज्यकरो॥ तबआज्ञाप्रमाणयुधि
ष्टिरभ्रातानसहितस्यंदनसवारहोयनि
जपुरकोंचले॥जबदुर्योधनधृतराष्ट्रसों
कही॥पांडवक्रोधकरिमलिनहोयजातहैं
सोअपनेकुलकोनासकरेंगे॥मेंइनसोंयु
द्धमेंतोजीतोंनही॥तातेंएकबाजीफेरिबलि
प्रतज्ञाकरौ॥जोहारै सोजटाबल्कलधा
द्वादसबरसलौंबनबासकरै॥एकबर्ष

शांतरहो ॥ बा[..]मेंप्रगटहोयतौफेरिबै
बनबासकरै ॥ ऐसैंउनकौबनबासव
द्वादसबर्षलौंमैंसमर्थहोहूंगो ॥ यातैंग्र
दीजै ॥ लोभलैंथ्यंतराहू ग्याहोदई ॥ तबक
ज्ञाय ॥ मार्गहीमेंयुधिष्टिरसोंकहीतुमेर
बुलावैहै ॥ युधिष्टिरप्रतज्ञाकेबसतैंफेरि
आयेथ ॥ नराहू सोपहलीमंत्राकियोहोसो
हीपनकरिसकुनकौमधपष्पकारिवहप
नजीत्यो ॥ तबराजबैभवहुयोधनकोस्प
धर्मपुत्रआग ॥ धर्मधारिबनकौचलनश्रि
वसमानसोभितभये ॥ तिनकेसंगद्रोप
दीकौजातोदेषिदुस्यासनबोल्यो ॥ अबतो
इनदरद्रीनकौतजिकौरवैइकौभजिबो
योग्यहै ॥ तबभीमकही ॥ याबचनकोफल
चौदहेबर्षपावैगो ॥ जबफेरिदुस्यासन
बोल्यो ॥ यागऊकौदेषौ ॥ ऐसैंसुणिकर्णस
कुन्यादिअनेकराजाहसे ॥ तबअर्जुनकर्ण
मारिबेकीप्रतज्ञाकरी ॥ नकुलसकुनीके
मारिबेकीप्रतज्ञाकरी ॥ सहदेवअपरदा
जानकेमारिबेकीप्रतज्ञाकरी ॥ कुंतीकोपा
डवनकेसंगबनगवनकरतदेषिबिदुर

हठकरिनिजभवनमेंराषी॥बनकौचलत
युधिष्टिरबिचारकियो॥जोकौरवमेरी
कोपदृष्टितेंदग्धहोयगे॥इनकेनासको
कारणमैंहीहों॥यातेमुषकोंढांकिनिक
से॥भीमभुजापसारिकेयहजनाईजो
इनभुजानसोंसबनकोंनासकरोंगो॥अ
र्जुनमारगमेंरजउठावतचलियहज
नाईजोबाणनकीवृष्टिकरिइनकोंनिपा
तकरोंगो॥सहदेवमुषस्यामकरियहवि
चारिचल्यो॥सकुनकोंमारैंमुषउज्जल
होय॥नकुलरजलिप्तसरीरकरियहबिच
रिचल्यो॥जोइनसकलराजनकोंमारैंज
बनिर्मलहोऊं॥द्रोपदीकेसषोलिअश्रुपा
तकरतीयहबिचारिचली॥जोऐसेही
सकलकौरवनकीभार्यापुरप्रवेसकरें
गी॥अरुनैरितदिसाकीवोरधौम्यमुनि
दर्भसहितकरउच्चकरियमसूक्तगानक
रतयहबिचारिचले॥जोकितेकदिनपी
छैं कौरवनकीभार्यामैंगानकरोंहोतैसे
रुदनकरे॥ऐसेंशापदेतनिकसे॥तबअने
कउतपातभये॥जबनारदआय कौरव

कोभविस्यनासस्तुणायो।तातैंत्रसिनदुर्यो
धनारिद्रोणाचार्यकेसरणगये।तबद्रोण
हूसबकोअभयदेयकैंमंगलसमाधानक
रतेभये।श्लोक।भाषाभारथसारयहसभाप
र्वसुषदाय।रावबांदस्यंघकेहुकमाकि।
योचैनचितलायक।इतिश्रीभारथसारभू
मिकाभेसनापर्वलिषत्रमोध्यायः६।

॥श्रीगणेशाय नमः॥ नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमं॥ देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जय मुदीरयेत्॥ अथ वनपर्व की कथा लिष्यते॥ वैशंपायन उवाच॥ तापी के पांडव गंगातीर गये तहां इंद्रसेन को आदि लेके चोदह सेवक रथ सहित सेवा में आये। अरु धृतराष्ट्र आदि दे सर्व जो मन्त्री तो वाको बचन ही सों सतकार करि फेरि दियो॥ अरु पुरवासी साथ चले तिनह कों पाछे फेरि उत्तर दिसा कों गये॥ उहां ब्राह्मण संग थ गये सो राजा के पास संपति नही अरु ब्राह्मण मंडली बहुत यह देषि धौम्य राजा को सूर्य स्तोत्र दियो॥ ता करि युधिष्ठिर सूर्य की स्तुति करी अरु सूर्य प्रसन्न हो इ बटलोही अक्षय सामग्री दे चढ़ा ली ऐसी चूरी दई॥ अरु यह कहो जहां ताई द्रोपदी भोजन न करेगी॥ तहां तांई वांछित सामग्री देगी॥ द्रोपदी भोजन किये पाछें फेरि दिन फेर देगी॥ उहां ते द्वारवती तीर वासक रि कुरक्षेत्र आयकाम्यक बन आ ये। उहां बकासुर को भाई किर्मीर नाम असुर मार्ग रोकि युद्ध को आयो [illegible]

भग्नरि धमको कपडें चायो तापीके धतरा
ष्ट्रसों बिदुरकह्यो पांडुके पुत्रकोंनिका
सोनहीं तौतुम्हारेबंसकोनासहोइगो ये
संसुनि दुर्योधन बिदुरको अनादरकरि
निकासे जबबिदुरहू पांडवनपासगा
ये सोसुनि बिदुरके बियोगसों धतराष्ट्र
दुःषितहोइ संजयकों भेज्या जबसंजय
जाय बिदुरकोंल्याये तापाछें इकलेपांड
वहीं तिनकोंमारिबो बिचारि दुर्योधनका
र्णकों सेनासहितभेजिबेकोंतयारकियो
जबबेदब्यास आय कह्यो अनीतरूपा
कीबनमैं कोउबेहो ऐसेकहि निवारण
कियो तापाछें मैत्रेयमुनि आय दुर्योध
नसों भीमसेनके कीमीरकोंमारयोसोवृ
त्तांतकह्यो औरदुर्योधनसोंकह्यो तुमहुं
नसों बिरोधमतिकरो तबदुर्योधनमैत्र
यमुनिकी जंघापैहाथपटकिके बरजे
जबमैत्रेयशापदियो तेरी जंघा भीमकी
गदाकरि षंडितहोइगी ऐसेंशापदेय
गये अरुपांडवनिकोंद्वैतबन आयेसु
णि उनके संबंधी मित्र आदिकराजामिलि

वेकोंआयो॥युधिष्टिरकोंसबहीलेसमा
धांनकयो॥वनबासमेंकलेसअधिक
जांणिकैपदीकेपांचोंपुत्रनकोंलेधृष्ट
द्युम्न आपकेपुरकोंगयो॥अरुश्रीकृष्ण
हू अभिमन्यसहितसुभद्रकोंलेपद्वारि
काकोंगये॥तबअर्जुनयुधिष्टिरसोंबो
ल्यो॥हेमहाराजमोकोंआग्याकरोतोवै
रिनकेजीतिबेकोंतपकरिबेकोंजाऊंऐ
सेंसुणियुधिष्टिरवेदव्यासकोंसुमरण
कियो॥सोमुनिआयअर्जुनकोंप्रति
स्मृतनामविद्यादई॥अरुकहीइंद्रकी
लपर्वतमेंजायवैजपकरोइंद्रकोआ
राधनकरोतासोंसबअस्त्रजांमहोइ
गो॥उहांअस्त्रसस्त्रकवचधारिबेसं
चयसोंतपकरोतहांतपकरतेंकोइं
द्रजीवआवैवाकोमार्गमतिदेऐ
सेंकहिवेदव्यासतोअंतर्ध्यांनभ
ये॥अर्जुनइंद्रकीलमेंजायवैसेंहीतप
करतभयो॥तहांपार्वतीइंतपस्यादेखि
वाकेवापीइंद्रसोंजायकहीकोऊतुम्हा
रेपर्वतमेंतपकरेहै सोनजा

पहीकोस्थानलेबेकौंतपे है कह्या ऐसें इ
इसुणिगंधर्व अप्सराबसंत कामदेवइनके
या कौतपभंगकरिबेकोपठाये सो उहां आप
सबहीवाकौतपभंगकरिबेकोयत्नकरो
पे एकहूकौपराक्रम सफलन भयो तब
इंद्रपास आय इंद्रसें अरजकरी तब
सोसुणि इंद्र प्रसन्नहो इंद्र ब्राह्मणकोरूप
धारि अर्जुनकेपास आयो तहां इंद्रबोले
हे वीरकवचधनुषधारितपकरतहै तो
तेंकोई काम नाहै सो कामभोग मिलेतव
तोसुख है पीछै अंतमें दुःख देतहै तासें
कामनां छोडि मोक्षकेनिमित्ततपकरो
जब अर्जुन बोल्यो बिनासमझे बोलता बृ
हस्पतिहूकोबचननिसफलजाय मैंतो ना
श्रेपजसैरूपीकौरवोसमुक्त्रानके नेत्र
नके जलसो धोयो चाहत हूं सुदुर्योध
नने हमारो सरबस्व हरणकियो है ता
सोवाकोमारियुधिष्ठिरकोराज्यदेउंगो
अथवा पर्बत हीमें देहत्यागकरोंगो ऐ
सोबचनसुणि इंद्र निजरूपधारणकरि
पुत्रअर्जुनसो मिलि शिवकी आराधना ५५

बताई तब अर्जुन शिव की आराधन करी सो तीन दिन उपरान्त एक दिन फलाहार करै ऐसे एक मास बितीत कर्यो अरु छह दिन पीछू फलाहार करै ऐसे दूसरो मास बितीत कर्यो तीसर महीना में पंद्रह दिन पीछू शुष्क पत्र आहार करि बितीत कर्यो चतुर्थ मास में समाधि लगाइ एक पांव सों ठाढो रह्यो याके तप के प्रभाव सों मुनि वही सो बैरी जीव है सो सब निर्बैर होत भये यह प्रभाव देखि दिक्पाल व्याकुल होइ शिव सों निवेदन करत भये तब याके तप सों प्रसन्न होइ शिव परवार सहित किरात रूप धारि आये अरु मूकदानव को सूकर रूप करि वाके सनमुख भेज्यो तब वाको आवत ही अर्जुन बाण करि मार्यो अरु वाही के शिवके तर्क समें प्रवेस कर्यो अर्जुन को बाण प्रथ्वी में पड़्यो हो ताके लेबे को गयो जब उतसों एक किरात बड़ो धनुष धारे आइ कही यह बाण हमारे धणी को है अर्जुन कही मेरो है ऐसें आपुस में बिवाद भयो जब वोने जाय शिव सों कही

पकेगणानेकेबानरूपधारेहेतिनकोमेज्यो
सोआइअर्जुनसोंयुद्धकियो॥जबअर्जुन
केबाणनसोमहाघोरसंग्रामकरिसेनाको
भेजाइदीनी॥सोसेनाजाइशिवसोपुकार
करी॥तबशिवयुद्धकरिवेकोआये॥तहांदो
ऊनकेअनेकमस्त्रशस्त्रनकरियुद्धभयो
जबअर्जुनकेअस्त्रयुद्धतेगणानकोव्याकु
लदेखिशिवसबअस्त्रशस्त्रनकोभक्षणक
रिगये॥तबअर्जुनकेवलधनुषकोप्रहार
कियो॥जबशिवधनुषतर्कसहूकोअंतर
ध्यानकरयो॥तापीछेपानिवजकोप्रहारक
रयोवाहूकोंअंतर्ध्यानकरयो॥फेरि ... पा
षाणनसोयुद्धकरयोसोहूनष्टभयो॥जबअ
र्जुनमल्लयुद्धकरिवेकोतयारभयो॥तबकी
तनेककालमल्लयुद्धकरिकेअर्जुनपांवप
कडिशिवमस्तकमेपटकिवेकोतयारीकरी
जबशिवप्रसन्नहोयपाशुपतास्त्रदियोपी
छेअंतर्ध्यानभयेसोदेवतानकेनगारे
बजेसुमनबरषिगईसबदेवताआयआसी
र्बाददियो॥कुवेरसंमोहनास्त्रदियोबरु
णपाशास्त्रदियो॥यमदंडास्त्रदियो॥इन्द्र 5

इंद्रमातलिसारथीकूंरथमेंबैठायविद्या
पढायवेकोंनिजलोकलेगयो॥उहांअस्त्र
विद्यापढायअर्धसिंघासणपैबैठायसर्व
सुषदेइलोककेदिषावतपांचवरसलों
राष्यो॥औसेंसुषभोगतएकसमैंइंद्रसब
अप्सराकैनृत्यअर्जुनकोंदिषावतभयो॥
जबअर्जुनउर्वसीकेरूपकोंएकाग्रचित्तक
रिदेषतभयो॥तहांनृत्यहुवेपीछें॥अप्सरा
अपनेस्थानगई॥अर्जुनअपनेस्थानग
यो॥तबइंद्रउर्वसीकोंबुलायआग्याकरी
तुमजायअर्जुनकोंरमावो॥औसेंसुणिउ
र्वसीश्रृंगारकरिअर्जुनपासगई॥जबअ
र्जुनवाकोंआईदेषिसन्मुषजायचर्णन
मेंप्रणामकर्‍यो॥तबवानेंकहीतुमनृत्य-
समैमेंमोकोंलहदृष्टिकरिदेषतेतातेंवि
हारकरिवेकोंमैंआईहीसोप्रणामक्योंकरी
जबअर्जुनकहीमैंतोताकोंपुरुवंसकी
आदिजननीजांनिमात्रभावकरिदेषीही
तासोंअबजैसेंआईहोतैसेंहीजावो॥उ
र्वसीकहीहमस्वर्गलोककीअप्सराहैंसो
सोआवैनाहीयों ... कर ...

करो तब अर्जुनने कही पहलें जननी भाव
करि पीछे कामिनी भाव कैसें करो ऐसें क
हि प्रणाम करि कियो जब उर्वसी वाकों क
ही तूं नपुंसक हो ऐसें शाप दयो अपने स्थान
गई तब अर्जुन इंद्र के पास आइ वह ब्रतांत
सबै निवेदन कस्यो जब इंद्र कही है तो य
ह शाप परंतु तुम अग्यातबास बर्ष एक क
रोगे तब हाय ह गुण है इगो ऐसें अर्जुन को
समाधान करि अस्त्राभ्यास करावत भये
[illegible]
[illegible]
[illegible] अर्जु
नकों तप करिबे गये पीछें पांडव हैं तब बन
में बसत भये उहां दुर्योधन ने दुर्बासा की बहु
त सेवा करी जब दुर्बासा प्रसन्न होइ कही
तुम बर मांगो तब दुर्योधन कही द्रौपदी भो
जन करि चुकै ता पीछें आप दस सहजार
शिष्यन सहित युधिष्ठिर के भोजन करिबे
कों जावो या बात कों अंगीकार करि द्वाद
सी के दिन सब पारणा करी चुके जब युधि
ष्ठिर के दुर्बासा शिष्यन सहित जाय आ

पभये॥तबयुधिष्टिरअर्घपाद्यानसोंपूज
नकरिभोजनकोंप्रार्थनाकरी॥जबमुनि
कहीहमसध्यानसंध्याकरिआवतहैं।ऐ
संकहिगये।तबयुधिष्टिरद्रोपदीसोंकही
सामग्रीकहांहै।दुर्वासादसहजारऋषिय
नसहितसंध्याकरिभोजनकोंआवेंगे।त
बद्रोपदीकहीमेंभोजनकरिचुकीटोकणी
घालीहै।ऐसेंसुणिपांडुवनविचारीमुनि
आयभोजनकियेविनाशापदेंदग्धकरेंगे
तासोंआपनहीकाष्टमेंबैठिदग्धहोइऐसे
विचारिकाष्टमगायो।तबद्रोपदीपर्णकुटी
मेंजायसुमरणकरिध्यानकियो।जब
श्रीकृष्णपीतांबरपहरेंचतुर्भुजस्वरूपधा
आयबोले।मेंद्वारकाकोंचल्यो।आयोभूखो
होंसोमोकोंभोजनदे।द्रोपदीकहीहेप्रभु
मेरेभोजनकियेंपहलीतोयहटोकणीअ
न्नयसामग्रीदेतहै।सोमेंभोजनकरिचुकी
औंधघालीहै।जबकृष्णबोलेंदेखेंवाको
ल्यावो।सोटोकणीमगायवाकेकिनारेंए
कसाकपत्रनिकस्यो।ताहिहाथमेंलेवो
पाकरिविस्वात्माभगवान

सैंकहिभ्रष्टाकियो ॥ तबतीनलोकत्रसभये
मुनिनकेउदरश्राफरगये ॥ तउहांयुधिष्टि
रकौष्टभ्रबेसकौतयारीकरेहे ॥ तिनसोक
हीसामग्रीतयारहे भोजनकरिवेकौंमुनि
कौबुलाबौ ॥ तबराजाकीश्राग्यासोंभीमबु
लाबेकौंगयो ॥ तहांभीमकोसबरसुणिमुनि
नस्यतःमैंपभयो जोभोजनकौरुचिनहीं
पाकव्यर्थजायगो तासौंराजानजाणिपैंके
सैशापदे ॥ श्रागेश्रंबरीपकेश्रपराधकरि
दुरवपायोहे श्रैसेबिचारिउहांतेभजिगये
जबश्रीकृष्णयुधिष्टिरकौसमाधानकरि
द्वारिकागये ॥ श्रीकृष्णकौगयेपीछेंराजा
युधिष्टिरश्रापनिकौबिचारकरिपेदयुक्त
भयो ॥ तबब्यासमैंश्रहद्रष्ट्व विश्राये
राजाउनकौश्रर्घपाद्यनसोंपूजनकरिबे
हायहाथजोडिबीनतीकरी ॥ श्रापदर्सन
देमोकौंकृतार्थकस्यो परंतुएकमोकौ
संदेहहे ॥ मोबराबरदुष्टश्रौरराजाको
नभयोनहोइगो ॥ जुवामेंधनराजगमेरो
गयोमेंपासानकीबिद्याजाणोंनहींउन
कपटकेपासानकरिमोकौंजीतिद्याखे

नबासदियै॥सभामैमेरीराणीकोंल्यायकें सग्रहणकरि दुर्बचनसुणाये॥अबहमारोप्रा णअर्जुनगयोहैवाकेबिरहकरिरात्रकोंनि द्रानहींआवैहै॥तासोंयहबिचारमैंदीसैहैजो मोसोंदुषीऔरपुर्शनहोइगो॥असैसुणिव्रह दृश्वबोले॥हेराजाएकाग्रचित्तहोइसर्वभ्रा तासुणो॥तुमतेंहूमहादुषीएकप्रथ्वीपति राजाभयो॥ताकोंआष्यानकहौंहौंसोसुणो॥ निषधदेसनकोराजावीरसैनभयो॥वाकोपु त्रनलभयो॥वाकोपुस्करनामराजाजीत्यो॥ सोभार्यासहितबनमेंदुषितभयो॥वाकेसंग अश्वरथवाधबभ्रातासोकोईनहीरह्यो॥तुम्हा रेसंगभ्रातभार्याअश्वरथद्विजारोमुनिहै॥ता तेंसोचकरिबेकोंयोग्यनहीं॥तबयुधिष्ठिर बोले॥वानलकोचरित्रमोकोंविस्तारकरिक हो॥तबब्रह्दश्वमुनिबोले॥वहनलराजास कलगुणसंपन्नरूपमैंअश्वनीकुमारसम देवनमैंइंद्रजैसेंराजानमैंवहभयो॥तेजकरि सूर्यसमान॥ब्रह्मन्यवेदवेत्तासूरअस्त्रअभ्या समैंरुचिवानअनेकअक्षोहणीपति॥सत्यवा दीनारीनकोंमनोहरजितेंद्रिय॥

मैंमनुष्यऐसौभयो तैसैंहीबिदर्भदेस
मैंभीमराजाभयो ताकेसंतानननभई जबसं
नकेयातैंजतनकरतभयो कोईसमैंमेंदमन
नामब्रह्मरिषिआये उनकौंसेवाकरिप्रसन्न
करेतबमुनिएककन्यातीनपुत्रदिये कन्या
कौनामदमयंतीपुत्रनकेनामदम दांत द
मन दमयंतीरूपतेंअगुणइनकरिकेबिख्या
तभई याकौंपालनदासीआलिसखीसेवतभई
उनसबनकैमध्यइंद्राणीज्योंसोभितभई जा
केरूपसमानदेवलोकनागलोकजहलो
कनरलोकमेंहूंऐसीस्त्रीपैदानहीं नलरू
पकरिकामतुल्यहै सोदमयंतीकेगुणसु
णिवामेंआसक्तभयो तैसेंहीदमयंतीहूवा
केगुणसुणिआसक्तभई नलकौंकामवेग
बहोतभयो तबमनकेआनंदकौंदेवेकौंबा
गमेंगयो उहांसरोवरमेंसुवर्णपहंसदे
खे तिनमेंसोएककौंपकड्यो तबहंसबोल्योमो
कौंमारेमतिमैंतेरोकल्याणकरौंगो दम
यंतीकेपासतेरीऐसीमहिमाकहौं जोतो
वाईश्वरकौंदेहीनहै जबनलवाकौं
छोड़्यो तबजूथसहितवहहंस

नपुरदमयंतीकेबागमेउतरे॥ दमयंती
हसनकोअद्भुतरूपदेषिपकडिबेकोदोडी
बवेहसबिषरिगये तबएकएकसषीएक
कहंसकोदोडी॥ जाहंसकोदमयंतीदोडीसो
कांतमेमनुष्यभाषासोंबोल्यो॥ हेदमयंती॥
मधदेसनमेनलनामराजारूपकरिअश्वनी
कुमारतुल्यहैत वाकीभार्याहोइतौ तेरोजन्म
रूपयोबनसफलहै॥ हमदेवदानवजक्षनाग
मनुष्यसबदेषेपरंतुवाकेरूपतुल्यऔर
हे नही॥ तैसेंही तू हूनारीनमेउत्तमहे॥ता
सुणिदमयंतीहंसिकरिहंससोंकह्योमेंतो
अंगीकारकरोपैनलहूकौतूऐसेंकहि।
जबहंसअंगीकारकरि तैसेंहीनलकेपा
सआयकहे॥ इतिश्रीभारतसारेचांदुकाण
बनपर्वणिनलोपाख्यानबर्ननद्वितीयोध्या
य॥२॥ ब्रहदश्ववाच॥ दमयंतीहंसबच
नसुणिनलकेसेंमिलेयाचिंताकरिअसहे
गई॥ स्वासनाषतहेऊर्धदृष्टिकरिदेषत
भई उन्मत्तकेसीदसाभई॥ कामकरिपांडु
होइ॥ भक्तभोज्यनिद्राकरेनही॥ दिनरात्र

हाहाकार करि रुदन करै ऐसी दसा देषि
श्रीराजा सों कही। जब राजा सुणि दमयंतीपा
स श्राय देषी जो बन मैं काम रोग ही है पह
विचार च्यारो दिसान के राजांन कों सुयंबर के
निमित्त बुलाये तब दमयंती को स्वयंबर सु
णि सर्व ही राजा। श्रस्त्र सस्त्र बस्त्र भूषण धा
रि सेना सहित हर्ष सों श्राये। श्रोर राजा श्राये
तिनकों भीम राजा हूं सनमांन करि राषे
तासमै मैं नारद पर्वत मुनि इंद्रलोक गये इं
द्र सनमांन कुसलप्रस्न करि बोले श्रागे
जो युद्ध मैं देह त्याग न करि मेरे लोक श्रा
वते तिनको सनमांन करि मैं संपति को स
फल मानतहो। सो श्रब कहा भयो पै कहू
छत्री श्रतिथ श्रावै नहीं सो छत्री बीर नही
युद्ध ही करै नहीं। याको कारण क
हो। तब नारद बोले। विदर्भ राज भीम की पु
त्री दमयंती सर्व गुण संपन्न है। वा मैं सब न
कौ मन श्रनुरक्त है तातै कोऊ ही राजा युद्ध
करै नहीं। सो श्रब वाको स्वयंबर है तहां स
ही जाइहै। श्रेसे हम सुनत हां ही जाइंगे
ऐसे कहत ही इंद्र के पास यम श्रग्नि बरु
न श्राये सो नारद को बचन सुनि

यंतीकी चाह करि स्वयंवरकौं आवत भये। न
लराजाहू योग्यसामग्री करि कुंदनपुरकौं
आवत है॥ ताकौं लोकपाल देषि बिमानन
कौं आकासमें राषि प्रथ्वीमें आय नलसों बो
लत भये॥ हे नल तू सत्यबादी है॥ हम तेरे जा
चक हैं सो हमारी मनसा पूर्ण करि॥ जाच
कैक नाम सुणतही नल हूं रोमांचित होइ क
ही तुम कोण हौ कहा जाचे तहौ॥ इंद्र बोल्यो॥
[illegible] मैं इंद्र हौं। यह यम हौ। यह अग्नि है य
ह वरुण है सो सबही दमयंती कों बरिबेकी का
मना करि जात हैं सो तुम हमारी वा के पास दू
तता करौ॥ नल बोल्यो मैं जा कों बरबेकों जा
ऊं तासों दूतता कैसें करौं॥ यह तो माफ करो
जब देवता बोले पहलें अंगीकार करि अब
नटै है॥ यामें तेरो धर्म जाइगो॥ तब नल बो
ल्यो राजकुमारी के पास राजभवनमें मेरो प्र
बेस कैसें होइगो॥ इंद्र बोल्यो॥ अदृश्यसिध
ता कों देत हौं॥ तासों राजभवनमें प्रवेस करो
पीछे जहां दमयंती होइ तहां दूतता करो।
ऐसें उनको बचन सुणि दूतता अंगीकार
करि कुंदनपुर गयो॥ तहां रथ बाहर राषि

हा हाकार करि रुदन करै ऐसी दसा देषिस
षी राजासौं कही ॥ जब राजा सुणि दमयंती पा
स आय देषी जोबन मैं काम रोग ही है यह
बिचार च्यारो दिसानके राजांनकौं सुयंबरके
निमित्त बुलाये तब दमयंतीकौ स्वयंबर
णि सर्बही राजा अस्त्र सस्त्र बस्त्र भूषण धा
रि सैनासहित हर्षसौं आये ॥ औ राजा आये
तिनकौ भीमराजा हू सनमांन करि राषे
ता समैं मैं नारद पर्बत मुनि इंद्र लोक गये ॥ इं
द्र सनमांन कुसल प्रस न करि बोले आगे
संग्राम मैं देह त्यागन करि मेरे लोक आ
वते तिनकौ सनमांन करि मैं संपत्तिकौ स
फल मानतहौं सो अब कहा भयो ये कहू
क्षत्रिय आवै नहीं सो क्षत्री बीर नहीं
अथवा युद्ध ही करै नहीं याकौ कारण
हो ॥ तब नारद बोले बिदर्भराज भीमकी पु
त्री दमयंती सर्बगुण संपन्न है वामैं सबन
कौ मन अनुरक्त है तातै कोऊ ही राजा युद्ध
करै नहीं सो अब वाकौ स्वयंबर है तहां स
बही जाइ है ॥ अरु हम हू उहांही जाइंगे ॥
ऐसै कहत ही इंद्र कै पास यम अग्नि बरु
ण आये सो नार[illegible]

पतीकीचाहकरिस्वयंवरकौआवतभये॥न
लराजाहूयोग्यसामग्रीकरिकुंदनपुरकौ ऽ
आवतहै॥ताकौलोकपालदेषिबिमानन ऽ
कौआकासमेंराषिप्रथ्वीमेंआयनलसौंबो
लतभये॥हेनलतुमसत्यवादीहो॥हमतेरेजा
चकहैंसोहमारीमनसापूर्णकरि॥जाच
कनामसुणतहीनलहूरोमांचितहोइक
हीतुमकोणहो॥कहाजाचतहौ॥इंद्रबोल्यौ॥
इंद्रयेतोमेंइंद्रहों॥यहजमहे॥यहअग्निहै॥य
हवरुणहैसोसबहीदमयंतीकोवरिबेकौआ
मनाकरिजातहैंसोतुमहमारीवाकेपासदू
तताकरो॥नलबोल्योमेंजाकोवरबेकौजा
ऊंतासौंदूतताकैसेंकरौं॥यहतौमाफकरो॥
जबदेवताबोलियहलैंअंगीकारकरिअब
नटेहो॥यामैंतेरोधर्मजाइगो॥तबनलबो ऽ
ल्योराजकुमारीकेपासराजभवनमेंमेरोप्र
वेसकैसेंहोइगो॥इंद्रबोल्यो॥अदृस्यस्थि
तकारतहों॥तासोंराजभवनमेंप्रवेसकरो
पीछेंजहांदमयंतीहोइतहांदूतताकरो॥
ऐसेंउनकोबचनसुणिदूतताअंगीकार
करिकुंदनपुरगये॥तहांरथबाहरराषि

ग्रह स्य हो इ नगर सो मादेषि तदमयंती पास
गयो उहां दमयंती को सषीन की मंडली मैं
प्रकास मान देषी या को रूप देषते ही या के
काम दीपन भयो तो हू धर्म राषिबे को काम
के बेग को रा बि दर्सन दियो जब या को रूप दे
षि सषी मंडली सहित दमयंती उठी अरु आप
पुस मैं या को स्तुति कर त भई ऐसो रूप को
तौ धर्म कहूं देष्यो नहीं ता सों यह देव है कि
गंधर्व है कि गंधर्व है ऐसो विचार कर तेही
दमयंती हंसि करि बोली हमनो हर दर्सन
ते ही काम बधावत ऐसे तुम इहां के से आवे
द्वार पालन ने लष्यो नहीं अरु मेरो पिता को भ
य मानो नहीं या को कारण कहा जब नल बो
ल्यो है कल्याणी मो को देवदूत न लजा ए उन
की कृपा तें राजभवन मैं आवत काहू ने ल
नहीं अरु इंद्र वरुण अग्नि यम ये च्यारो देव
को बरो चाहत है सो एक को बरि अपवा स
ही को बरि ऐसे सुणि दमयंती बोली
तो हंसन के बचन सुणि यह देह तुम्हारे
र्पण करी है सो तुम अंगी कार न करोगे
विष करि अथवा अग्नि करि फांसी करि

थवा जलकरि देहत्याग करौंगी॥ तब नल बो
ल्यो लोकपाल मिलतैं नर की वांछा क्या करे है
जिनकी चरणरज तुल्य हूं मैं नहीं॥ तासों उनमें
प्रेम करि॥ उनके द्रोह तें मृत्यु होइ तासों उनही
कों बरि॥ अरु मेरी उनसौं रक्षा करि॥ जिनके दि
व्य वस्त्र भूषन विचित्र निर्मल माला जरा खे
द रहित उनके संग दिव्य भोग भोगि॥ जो सक
ल पृथ्वी कों दग्ध करे॥ ऐसे अग्नि कों को
ण न बरे॥ जाके दंड भय तें सर्व जीव धर्म में
चले॥ ऐसे यम कों कोण न बरे॥ जो सकल
दैत्य दानवन कों मर्दन करै बज्र जाके हस्त
ऐसे इंद्र कों कोण न बरे॥ जो सर्व लोकन
कों पति ऐसे बरुण कों कोण न बरे॥ अरु
इनसौं द्रोह करि कोन बचे॥ ऐसे नल वच
न सुणि दमयंती नेत्रन्हमें अश्रुपात करि बो
ली मैं तो सब देवन कों नमस्कार करि तुम
ही कों बरौंगी यह सत्य जाणो॥ जब नल फेरि
बोल्यो॥ मैं देवतांनसों दूत बण्यो आंगी करि
ता कों कैसे बरों यामें धर्म जाय॥ तब ऐसे
सुणि दमयंती बोली मैं एक उपाय बिचार्यो
है जामें तुम्हारो दोष नहीं॥ उन लोकपा

म्रइस्यहोइनगरसो नारे चितदमयंतीपास
गयो उहांदमयंतीकोसषीनकीमंडलीमें
प्रकासमानदेषी याकोरूपदेषतैंहीयाकै
कामोदीपनभयो तोहूधर्मराषिवेकोकाम
केवेगकोंरोकिदर्सनदियो जबयाकोरूपदे
षिसषीमंडलीसहितदमयंती उठी अरुआप
ुसमेंयाकीस्तुतिकरनलगी ऐसोरूपको
तिधारिककहूंदेष्योनहीं नासोंयहदेवहैकि
नहैकिगंधर्वहै ऐसोविचारकरतेही
दमयंतीहंसिकरिबोली हेमनोहरदर्सन
तेहांकामकुंआवत ऐसेनुमइहांकैसेंआवे
द्वारपालननेलषेनहीं अरुमेरीपिताकोभ
यमान्योनहीयाकोकारणकहा जबनलबो
ल्यो हैकन्यापीमाकोदेवदूतनलजाणि उन
कीकृपातेराजभवनमें आवतकाहूनेलषे
नहीं अरुइंद्रवरुण अग्नियमयेचारोदेव
कोवर्योचाहहै सोएककोवरि अपवासं
हीकोवरि ऐसैसुणिदमयंतीबोली
तोहंसनकोवचनसुणियहदेहतुम्हारे
र्पणकरीहे सोतुमअंगीकारनकरोगे
विषकरिअथवा अग्निकरिफांसीकरि

यवा जलकरि देहत्यागकरोंगी॥ तबनलबो
ल्यो। लोकपालमिलतैंनरकौंवांछाकैयाकरैहैं
जिनकी चरणरजतुल्य हूमैंनहीं॥ तासौं उनमैं
प्रेमकरि। उनकै द्रोहतैं मत्यैहोइ तासौं उनही
कौं बरि। अरु मेरी उनसौं रक्षाकरि। जिनकै दि
व्यवस्त्र भूषन विचित्र निर्मलमाला जरास्वे
दरहित उनकै संग दिव्यभोगभोगि॥ जोसक
लप्रथवीकौदुःखकरै। ऐसे अग्निकौं को
ण नबरै॥ जाकै दंडभयतैं सर्वजीव धर्ममैं
चलै॥ ऐसे यमकौं कौण नबरै॥ जोसकल
दैत्यदांनवनकौंमर्दनकरै बज्र जाकै हस्त
ऐसे इंद्रकौं कौण नबरै। जो सर्व रत्नांकरन
कौंपति ऐसे बरुणकौं कौण नबरै। अरु
इनसौं द्रोहकरि कौंन बचै॥ ऐसैं नलबच
नसुणि दमयंती नेत्रनसौं अश्रुपातकरिबो
ली मैं तौ सब देवनकौं नमस्कारकरि तुम
हीकौं वरौंगी यह सत्यजाणौ॥ जबनलफेरि
बोल्यौ। मैं देवतांनसौं दूतता अंगीकारकरि
तौकौं कैसें बरौं यामैं धर्मजाय। तब ऐसैं
सुणि दमयंती बोली मैं एक उपाय विचार्यो
है जामैं तुम्हारो दोस नहीं। उन लोकपा

नसहित तुम स्वयंबर में आवो तहां मैं ग
न कों प्रसन्न करि तुम कों बरोंगी ॥ ऐसे सुणि
लोकपालन के पास जाय सब ब्रतांत कह्यो ॥ इ
ति श्री भारत भाषा वचनिकायां वनपर्वणि न
लोपाख्याने ध्याय ॥ ५४ ॥ बृहदश्व उवाच ॥ ताउपरां
त राजा भीम सुभ मुहूर्त में सब राजान कों बु
लाये सो रंगभूमि में सब राजा मंचन पै बै
ठे ॥ तहां लोकपालन सहित नल हू एक मंच
पै बैठे ॥ जब लोकपालन बिचारी जो नल कै
भ्रम सौं दमयंती हमें माला परावैगी सो नल
कौ सो रूप वे हू धारत भये ॥ तब भीम राजा के
ध्यान करि कै सो सरस्वती वहां आय सातो द्वी
पन के राजान कों बर्नन करत भई ॥ सो सुणि
दमयंती सब ही कों प्रणाम करि जहां नल है
तहां आई ॥ तहां सरस्वती एक एक कौ बर्नन
ऐसो कह्यो जो पांचों ही कौ बर्नन होत गयो ज
ब दमयंती संदेहाकारि मन मौं बिचारत भई ॥ अ
देवन के चिन्ह वृद्धन के मुख सौं न सुने तैं भिन्न सु
ने है सो एक हू दीसै नहीं ॥ तातैं यह बिचारि दे
वतानके शरण आय उनकी बिनती करत भई
मैं हंसन के बचनन सु करि जा कों पति निश्च

कह्योहे यहसत्यहेतोहे देवताहोमेकोवह
हीबताबो जोमेनलसेवनकोइष्टब्रतधा
र्योहेतोतुमहू निजरूपधारो ॥ जासोंमेंपुन्य
श्लोकराजाकोंजाणो ॥ ऐसें दमयंती केदीन
बचनसुणिलोकपालनिजरूपधारतभये ॥
जबदमयंतीउनके अंगनमेंपसीनानदेष्यो
नेत्रनमेंपलकनदेषे ॥ पुष्पमालानकोंमलि
ननदेषी ॥ वस्त्रनमेंरजनदेषी ॥ चरणनकों
प्रथिवीकोंपरस करतनदेषे ॥ सरीरकाछा
यानदेषी ॥ इनचिह्ननतें ॥ बिपरीतचिह्नन
लमेंदेषिबरमालापहराई ॥ सोदेषिऔरराज
जाननेतोहाहाकार सबकह्यो ॥ अरुदेवरि
षिननेसाधुसाधुकह्यो ॥ जबनलहूदमयंती
सोंबोल्यो ॥ तेनेलोकपालनकेसमीपमोकों
बर्‍यो ॥ तासोंमेंहूजीऊंगोतबताईतेरोबस
बर्तीहीरहूंगो ॥ यापीछें दोऊनहीलोकपा
लनकीस्तुतिकरी ॥ सोसुणिप्रसन्नहोइलो
कपालनहूं आठबरदिये ॥ यग्यमेंतोतोकों
प्रतक्षदरसेण अरुमेरेलोकमेंअषंडगति
येदोइबरतोइंद्रदिये ॥ अरुअग्निकहीजहां
तेरीबांछाहोइतहांहीप्रगटहोउं अरुन

हमेरे लोककों आवे ऐसे दोइ बर दिये अरु
तेरे [illegible] तें अन्न मधुर होइ धर्ममें नेष्टा हो
इ ये दोइ बर यम दिये बरुण कही मरुदेसहु
में जोतू चाहे तो जलको समुद्र होइ और तेरी
पुष्पमाला सुगंध सहित सदा प्रफुल्लित रहै
ऐसे दोइ बर बरुण दिये ऐसे चारो आठ बर
दिये अपने स्थान गये तापाछें भीमराजाहू
और राजानकों सीष दे बिधि वत नलकों बि
बाह कर्यो जब नल हू आपकी इत्यादि माधापि
कउहां रहि तापाछें अपने नगरकों आयो
दमयंती करि [illegible] लेहु ऐसे बिहार कर्यो
जैसे निज लोकमें इंद्र इंद्राणी बिहार करें ध
र्मकरि प्रजा पालन कर्यो अश्वमेधादिक य
ग्य करे ऐसे अनेक बिहारनकों करत राज्य
भोग भोगत भये इति श्री भारतसार बाइ
काया बन पर्वणि नलोपाख्यानचतुर्थो अ
ध्याय ॥ अथ पंचमोध्याय ॥ राजा नल दमयंती
को ब्याह भये पाछें लोकपाल आपके लोकन
कों चले जात मारगमें द्वापर सहित कलियु
गकों देष्यो तब इंद्र बोल्यो हे कलियुग तू द्वा
पर सहित कहां जात है जब कलियुग कही

भीमराजाकेस्वयंबरहेसोउहांजायदमयं
तीकोबरोगोमेरोमनवामेंबसेहे॥तबइंद्रहं
सिकरिबोले॥वहस्वयंबरतोहोइगयो॥हमार
देषतनलकोदमयंतीबर्यो॥ऐसेंसुणिकलिक्रो
धकरिबोल्यो॥देवनकोतजिनरनलकोबर्यो॥
तेवाकोरडदेबोजोग्यहे॥ऐसेंकलिकोबचन
सुणिदेवबोले॥हमारीआग्यासोंनलकोदम
यंतीबर्योहे॥सर्वगुणसंयुक्तऐसेनलसों
कोनप्रसन्ननहोइ॥जोसकलधर्मजाणे॥स
र्बब्रतनकोकरता॥च्यारोंबेदइतिहाससं
हितपढे॥जाकेयग्यनसोंदेवतानित्यतृप्तहें॥
अहिंसानिरत॥सत्यबादी॥द्रढब्रत॥सत्यधृति
दान॥तपशौचदमसम इतनेगुणजामेंनित्य
बसें॥जोनलकोश्रापदेसोआत्माकोश्रा
पदे॥जोमारेसोआत्माकोमारे॥ऐसेंनलसों
जोद्रोहकरेसोनरकनमेंडूबे॥ऐसेंकहिदे
वताआपकेलोककोगये॥जबकलिद्वाप
रसोंबोल्यो॥कोपकोदाबिनसकोंहोसोन
लमेंबसिराज्यसोंभ्रष्टकरिवाकोदमयंती
सोंबियोगकरोंगो॥
रिसहाइनाकरि॥इतिश्रीभारतसारवंद्रि

हमेरे लोककौं आवे ऐसे दोइ बरदिये अरु ते सपरसतें अन्नमधुर होइ धर्ममेंनेष्टा होइ ये दोइ बर यमदिये बरुणकहीं मरुदेसहू मेंजो तू चाहै तौ जलको समुद्र होइ औरतेरी पुष्पमाला सुगंध साहित सदा प्रफुल्लित रहे ऐसें दोइ बर बरुणदिये ऐसे चारो आठ बर देय अपने स्थान गये तापीछें भीमराजाहू और राजानकौं सीख दे बिधिवत नलको बिबाहकर्यो जब नलहू आपकीइ आमापि कउहां रहि तापीछें अपनें नगर कौं आयो दमयंती संग लेंहू ऐसें बिहार कर्यो जैसें निज लोकमें इंद्र इंद्राणी बिहारकरे धर्मकरि प्रजापालन कर्यो अश्वमेधादिक यग्यकरे ऐसें अनेक बिहार करत राज्य भोग भोगतभये इति श्री भारतसार चंद्रिकायां बनपर्वणि नलोपाख्यान चतुर्थोध्याय ॥४॥ ब्रहदश्वउवाच राजानल दमयंती कोब्याह भये पीछें लोकपाल आपके लोकन कोंचले जात मारगमें द्वापर साहित कलियुगकौं देख्यो तब इंद्र बोल्यो हे कलियुग तुं द्वापर साहित कहां जात है जब कलियुग कही

नसुणिनलहूमहासोचमैंमग्नभयो॥हृदयबि
दीर्णसो भयो॥कछु बोल्योनही॥पुष्करकोस
र्बस्वकोस्वामीदेषि उदासहोय भूषणबस्त्र
छोडि एकबस्त्र हीसो पुरकेबाहर निकस्यो
ऐसे स्वामीको देषि दमयंती हूएक बस्त्रापे
हूसे निकसी॥जबनलदमयंतीसहितनग
रकेबाहर बागमैंतीनदिनरहे॥तबपुष्क
रनगरमैंयहदुहाईफिरी जोकोईनलकोस
तकारकरेगोसोराजसोमृत्यदंडपावेगो
ऐसेपुष्करकोबचनसुणिनलराजाक्यास
त्कारयोग्यहोतोभीकाहूनेसतकार कियो
नही॥तबबागमैंनलराजातीनरात्रजल
पानही कियोतासोंक्षुधातुरहोइफलचु
णतहीगवनकियो॥वाकेपीछेदमयंती
हूचली॥ऐसेंबहुतदिनकोभयोनलएक
दिनसुबर्णपंषकेपक्षीदेषे॥तबबिचार
कियाइनकोमासतोषाइगेअरुपंषनसो
धनहोइगो॥यहजाणिउनकोबस्त्रसोंढकि
दिये॥जबवेपक्षीबस्त्रलेआकासकोंगये
तबनलकोदिगंबरभूमिमैंअधोमुखदेषि
वेपक्षीबोले॥हे दुर्बुद्धी हमपासाहैंतेरे

बसकीबातनही॥ऐसेंकहिगये॥दमयंती
फेरिध्याइसोंकहीबाह्र्लेयसारथीकोबु
लावोतबवहआये॥तासोंदमयंतीबोली
हेबाह्र्लेयमहाराजकीतोसोंसदाप्रीतिहेपे
अबइनकीदुर्बुद्धिभईहेसोतुमसहायताक
रो॥ज्योंज्योंहारेहेंत्योंत्योंप्रेम धेहे काहू
कोकह्योमानेनहीतासोंमेंकहोजेसेक
रि॥नलकेप्यारेघोडाहेंतिनकोरथमेंजो
इ इंद्रसेनपुत्र अरुइंद्रसेनाकन्याइनदो
ऊनकोंचढाइबिदर्भदेसनमेंजाइभीमरा
जापासपहुंचावो॥जबसारथीदमयंती
कोबचनसुणिमंत्रीनसोंमसलतिकरि
वैसेंहीकरतभयो भीमराजाकोपुत्रक
न्यारथघोडानिबेदनकरिसीषमांगिअजो
ध्यामेंआयरितुपर्णराजाकेसारथीह्वैर
तभयो॥इतिश्रीभारथ्यसारस्वंडिकायांवन
पर्वणिनलोपाख्यानेषष्ठोध्याय॥६॥बृहदश्व
उवाच॥बाह्र्लेयगयेपाछेंनलराजाकोराज
धनहाथीघोडासर्बस्वजीतिपुष्करकही
अबतुम्हारेंपासतोकछुहेनहीतासोंए
कबारदमयंतीकौ[illegible]ऐसेंबच

सहीकह्यो॥ मैंहूतोकोंनहींछोड़ूं। चाहत
हो सरीरकोत्यागकरौंपरंतुतुमारोत्या
गकरोंनही॥ तातेंतुमसंदेहक्योंकरोहो॥द
मयंतीबोली॥ हेमहाराजतुमछोड़ौनही
चाहोतोबिदर्भदेसकोमार्गक्योंबतावोहो
मैंयेहजानतहोजोतुममोकोंछोड़ौंगे न
हींपरंतुदुषातनरकहानकरो। बिदर्भबिद
र्भदेसकोमार्गबतावतहो॥ तातेंसंदेहआ
वतहे॥ जोतुम्हारोयहहीमनोर्थहोइयह
मातापितापासजाय॥ तोआपहूचलोतोमैं
हूचलों॥ उहांबिदर्भराजआपकोसत्कारकरै
गो॥ तातेंवाकेसत्कारकरिआपनसुष
सोंबसेंगे॥ इतीश्रीभारतसारचंद्रिकायां
अनपर्वणिनलोपाख्यानसप्तमोध्याय॥७॥
॥ नलोउवाच॥ जेसैराज्यतेरापिताकोहैसै
मेरोउहै॥ परंतुआपत्यसहितउहांनहीं
जाऊं॥ जहांसमृद्धिसहितजायहर्षबधावे
तहांआपत्यसहितजायसोककैसेंब
धावे॥ ऐसेंकहिदमयंतीकोंधीरजनेसु
न्हापीछेर

वस्त्रदेषिदुषीहोइवस्त्रलेबेकोंआयेहैंऐ
सेंसुणिउनकोंपासाजाणिआपकोंनग्न
देषिनलदमयंतीसोंबोल्यो हेसुंदरीजि
नकेकोपसोंमेरोराज्यभ्रष्टभयोप्रजासत
कारकस्योनहीं आहारमिलेनहींक्षुधातु
रहोंसोवेपासापक्षीहोइमेरोएकवस्त्रहो
सोहरेंहैं यहतेरेस्वामीकीदसाहेसोदे
षि ऐसेंयहमार्गदक्षणदिसाकोहोयह
उज्जैनकोंहै यहरिक्षुवंतपर्वतकोंहेय
हसमुद्रगामिनीपयोष्णीनदीकोहै यहरि
षिनकेआश्रमन्याहांसमहलस्मुक्षकोंहैय
हमार्गविदर्भदेसकोंहै यहमार्गअजोध्या
कोंहै ऐसेंनलकहिदुष्यकरिव्याकुलभ
यो जबस्वामीकेदुष्यतेदुषितहोइदमयं
तीबोली मेरोहृदयकांपेहै राज्यइभ्रष्टव
स्त्रहीनक्षुधातुर ऐसेस्वामीकोंनिर्जनव
नमेंतजिकहांजाऊं मेंक्षुधात्रसापीडि
तहोइतुम्हारीसेवाकरोंगी सर्वदुष्यनकी
औषधिनार्यासमानऔरहैनहीं ऐसेंसुणि
नलबोलेहेसुंदरीदुष्यतनरकेदुष्यहरकोर
बेकोंभार्यासमानऔरमित्रनहींयहतेंस

न्पही कह्यो॥ मेंह तौकोंनहीछोड्यो चाहत हौं सरीरकौत्यागकरौंपरंतुतुमारोत्या गकरौंनही॥ तातेंतुमसंदेहक्योंकरौहो॥ द मयंतीबोली॥ हेमहाराजतुमछोड्योनही चाहोतौबिदर्भदेसकोमार्गक्योंबतावौहो॥ मेंहयेहजानतहोंजोतुममोकोछोड्योंने हीपरंतुदुषातनरककहानकरौ॥ बेरबेरबिदर्भ देसकौमार्गबतावतहौ॥ तातेंसंदेहआ वतहे॥ जोतुम्हारोयहहीमनोरथहेतौयह मातपितापासजाये॥ तौआपहूचलौतौमें हूचलों॥ उहांबिदर्भराजआपकोसत्कारकरेगो॥ तातेंवाकेसत्कारकरिआपनसुष सोंबसेंगे॥ इतीश्रीभारतसारचंद्रिकायां वनपर्वणिनलोपाख्यानसप्तमोध्याय॥७॥ ॥नलोउवाच॥ जेसेराज्यतेरपिताकोतैसे मेराउहे॥ परंतुआपत्समहितउहांनही जाऊं॥ जहांसमृद्धिसहितजायेहर्षबधावे तहांआपत्सहितजायसोककैसेंब धावे॥ ऐसेंकहिदमयंतीकोंचारअनेक बातनकरिसमाधानकरयो॥ तापीछेंराजा रुएकबस्त्रहोताही॥ सोअंगनकोंढांपिभये

तुधातुर होइ इत उत बिच [illegible] गष
ताकों देषत भये ॥ वास मांमें दमयंती सहि
त नल जमी में बैठ्यो ॥ तापीछें एक बस्त्र होवा
ही कों बा हिर्दोऊ धरती में सोइगये दमयंती
तो निद्रा बस होइ सोई ॥ ः नल को ब्याकु
लता करि निद्रा आई नहीं ॥ जब राजा नल
राज्य भ्रंस मित्र वियोग बन बास इनकों बि
चारत चिंता करत भयो ॥ अब कहा कियें मे
रो भलो होइ सो कछू नी कर तब मदासि नहि
ताते के तो मरों मरण तें कल्याण होइ अ
थवा दमयंती के त्याग करि कल्याण होइ ॥
यह प्रेम करि जब लों संग रहैगी तब लों
दुख ही पावेगी ॥ मो बिना माता पिता पास
जाय तो कदाचित सुष हू पावे यह पति
ब्रता तेज करि युक्त है ॥ तासों मार्ग में पा
कों कोऊ कछू कहि हू सकेगो नहीं ॥ ऐ
सें कलियुग नें वोकी मति फेरी ताते दमयं
ती को त्याग वो निहचे कियो ॥ तब आपके
वस्त्र ही नहीं ॥ अरु वाके एक वस्त्र तामें सें
आधो लेबे कों कारिबे कों बिचार कियो ॥
सो कैसें बस्त्र कारें यह तो जागे नहीं अरु व

प्रकटि जाय॥ ऐसें बिचारि सभामें इतउत बि
चरत एक षड्ग बिना म्यान को देख्यो॥ वा षड्ग
करि आधो बस्त्र काटि स्वासनो बिसूतीही
दमयंती को छोडि भाज्यो॥ जब आगें जायद
मयंती पाछें आई॥ तब फेरि उलट्यो आय द
मयंती को देषि रुदन करत भयो॥ जो मेरी
प्यारी को सूर्य पवन हू पहलें देषी नहीं॥ सो स
ना के मध्य अनाथ ली धरती में सोवत है॥ ए
क बस्त्र सो हू कट्यो वोढें सूती है सो जागेगी
जब तो॥ यह देसा देषि उन्मत्त के सी तरें पा
की होइगी॥ यह पतिब्रता मो बिना सर्व व्या
घ्न सहित ऐसे घोर बन मैं कैसें बिचरेगी
हे प्यारी धर्म तो तेरी रक्षा करै है॥ अब आ
दित्य बारह॥ ८ बसु आठ॥ रुद्र ग्यारह॥
अश्वनी कुमार दोय॥ उणंचास मरुत प
तेरी रक्षा करो॥ ऐसें कहि कलियुग नें हरी है
मति जाकी सो नल फेरि उहांतें चल्यो॥ ऐसैं
बेर बेर आवै है जाय है॥ सो कलियुग तो म
ति को फेरि ले जात है॥ अरु दमयंती को प्र
मषैं चिल्लावत है॥ ता तें राजा को चित्त हि
ला समान होइ झूलत है॥ परंतु बलवान

लिकौंपैचौनलसून्यबनमैंसूतीहुईनारी
कौंतजिदुष्यतहोइकरुणाकरतजातभये
॥ इतिश्रीभारतसारवृत्तिकायांवनपर्वणिनलो
पाख्यानेअष्टमोध्यायः॥ ८ ॥ अथदमयंतीजागबो॥ न
लगयेपीछैंदमयंतीकौपेरमिट्योजबजागी
निर्जनबनमैंभर्तारकौंनदेष्योजबहामहा
राजतुमकहांगये॥ऐसेंपुकारिरुदनकरत
भई॥फिरिहामहाराजहास्वामीहानाथतु
ममोकौबनमैंइकलीछांडिकहांगये॥मैंइ
कलीनिर्जनबनमैंडरीहौं॥तुमसत्यवादी
धर्मात्माहोइमोकौइकलाबनमैंकैसेंछो
डिगये॥तुम्हारीजजीहुईमैंमहूर्तमात्रहजी
वतहौं॥सोअकालमैंमनुष्यनकोमरनहीं
यहसत्यहीहै॥तातैंअवहायपूरोभयो
सोहेस्वामीमैंदुषीहौं॥बिरपनकीवोटछो
डिररवणह्यो॥मैंमेरेआपाकोसोचनहीं
करतहौंपरंतुतुमइकलेकैसेंरहोगेयहसो
चतहौं॥भूषप्यासश्रमहोनकेनीचेमोबिना
कैसेंरहोगे॥ऐसेंसोचकरिदुष्यकेमारे
सोबारंबारगिरेहेउठेहेस्वासभरेहेनि
श्चिंतहोइहेरुदनकरतबोली॥जाकेपा

पतें महाराजनलदुष्यवपावेहैं॥तापापीकों
हमारे दुष्यसों भी अधिक दुष्यहै॥ अैसें बि
लापकर तीदमयंती भर्त्तारकोंहेरतभई॥ तहांब
नमें भ्रमतीकोंमहा अजगरग्रसतभयो॥ अजा
रकी गिलीदमयंतीनलकोंसुमरणकरतीबिला
पकरतभई॥हे महाराजतुमसेंनाथपापअ
नाथलो॥ अजगरकेमुषमें गिरीहोंतामें
रोतोंसोचनहींपेमोबिनादुष्यमेंतुम्हारी
सेवाकोंनकरेगो॥ अैसें बिलापसुणएक
सिकारीबनमेंफिरहोताने अजगरकोंस
स्त्रसोंमुषचीरिदमयंतीकोंनिकासी॥ला
नकरायभोजनदेयाकोंबूतातनपूछ्या॥या
नेंसबबृतांतकह्योसोसुणिरूपदेषिका
मातुरभयो॥ तबतरदमयंतीबोलीमेंमन
तेंनलकोंतजिअन्यकोंचिंतवननहींका
रीयहसत्यहोइतोंव्याधिमरो॥ अैसेंक
तहीवहव्याधिमुवो॥ इतिश्रीभारतसार
[illegible]
[illegible] वाच॥ अैसेंसिकारीकोंमारि
दमयंतीमहाबनमेंगई॥ तहांनानाप्रका
रकेबनचरभयंकरजीवजंतुअनेकतिन
कोंदेषतदारुणबनमेंबिचरतभर्त्तारकों

लिकोंषैचोनलस्तन बनमैंमूतीहुईनापी कोंतजिदुष्पतहोइ करुणाकरतजातभयो ॥ इतिश्री भारतनलोररचंद्रिकायांवनपर्वणिनलो पाख्याने अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ अथदमयंतीवर्ननं ॥ न लगयेपीछैदमयंतीकोपररमियोजबजागी निर्जन बनमेंभर्तारकोंनदेष्योजबहामहा राजतुमकहांगये ॥ ऐसेंपुकारिरुदनकरत भई ॥ फिरिहामहाराजहास्वामीहानाथतु ममोकोंबनमेंइकलीछांडिकहांगयेमेंइ कलानिर्जनबनमेंडरोहो तुमसत्यबादी धर्मात्माहोइमोकोंइकलीबनमेंकैसेंछो डिगये ॥ तुम्हारीजजीहुईमेंमहूर्तमात्रहजी वतहों ॥ सोअकालमेंमनुष्यनकोंमरननहीं यहसत्यहीहै ॥ तातेंअबहांयपूरोभयो सोहेस्वामीमेंदुषीहों बिरधनकोवोटको डरसगयो ॥ मेंमेरेआपाकोंसोचनहीं करतहोंपरंतुतुमइकलेकैसेंरहोगेयहसो चकरहौ ॥ भूषप्यासश्रमहोनकेनीचेमोबिना कैसेंरहोगे ॥ ऐसेंसोचकरिदुष्यकेमार सोंवारंबारगिरहेउठेहैं स्वासभरेहैन श्वासिनहोइहै रुदनकरतबोली ॥ जाकेपा

पतेंमहाराजनलदुष्यवेपावैहें॥तापापीकों
हमारेदुष्यसोंभीअधिकदुष्यहो॥असेंबि
लापकरतीदमयंतीभर्त्तारकोंहेरतभई॥तहांब
नमेंभ्रमतीकोंमहाअजगरग्रसतभयो॥अजगा
रकीगिलीदमयंतीनलकोंसुमरणकरतीबिला
पकरतभई॥हेमहाराजतुमसेनाथपायअ
नाथलों॥अजगरकेमुषमेंगिरीहोंसोम
रोतोसोचनहींजेमोबिनादुष्यमेंतुम्हारी
सेवाकोनकरेगो॥असेंबिलापसुणिएक
सिकारीबनमेंफिरहोतानेंअजगरकोंस
स्त्रसोंमुषचीरिदमयंतीकोंनिकासीला
नकरायभोजनदेयाकोंबूझतांतपूछ्यो॥या
नेंसबबृतांतकह्योसोसुणिरूपदेषिका
मातुरभयो॥तबदमयंतीबोलीजेमन
तेंनलकोंतजिअन्यकोंचिंतवननहींक
रोंयहसत्यहोइतोब्याघ्रमरो॥असेंकह
तहीवहव्याघ्रमुवो॥इतिश्रीभारतसार
वनपर्वणिनलोपाख्यानेनलबनोआय॥ ११॥
बृहदश्वउवाच॥ असेंसिकारीकोंमारि
दमयंतीमहाबनमेंगई॥तहांनानाप्रका
रकेबनचरभयंकरजीवजंतुहतेतिन
कोंदेषतदारुणबनमेंबिचरतभर्त्तारकों

चिंतवनकरतसिलापरबैठिबिलापक
रतभई॥ हेनिषाददेसनकेराजामोकोंपाव
नमेंछोडितुमकहांजावोगे॥ अश्वमेधादि
कयज्ञपुनमेंमोकोंसाथराषी॥ अबपावन
मेंमोबिनाकैसेंजावोगे॥ अंगसहितवेद
नकोंपढिबोतोएकतरफ॥ अरुसत्यएकत
रफसोतुममोकोंकहींमेंतैरोत्यागनक
रोसो॥ अबत्यागकरिकौनगतिकोंजावो
गे॥ औसेंकहतप्रलापउनमादकेबसहोइ
लताब्रछनसोंपूछतफिरतहैजोकहूंमहा
राजनलकोंतुमदेषेहोइतौमोकोंबता
वो॥ याप्रकारतानदिनलौंभ्रमतभ्रमत
चौथेदिवसमुनिनकेआश्रममेंगई॥ वहां
मुनिनकेदरसएककैसेकितनेकउपवा
करैहैं॥ कितेकपवनासनकरैहैं॥ कितेक
ब्रक्षकेपत्रासनकरैहैं॥ कितेकमासोप
वासकरैहैं॥ कोईपं॥ चाग्नितपैहैं॥ कोई
जलबासकरैहैं॥ औसेंअनेकतपस्वीनक
युक्तआश्रमदेषिदमयंतीबहोतप्रसन्न
तहांजाइउनकोंप्रणांमकरी॥ जबमुनि
आसीर्वाददेकरिपूछतभये॥ हेसुंदरी

नबर्षाकेसेकहेगा॥तपावनकीदेवतहे
अथवादेवांग्राहे॥केपर्वतदेवताहे॥यों
पूछ्यो॥तबदमयंती बोली॥जोतुमकह्यासो
तोमें नहीमानुषीहों॥बिदर्भदेसनको
राजाभीममेरोपिताहे॥निषददेसनको
राजा नलसर्बगुणनसंयुक्तमेरोपतिहे
वाकोकोईदुष्टननेंकपटकेपासानकरि
जीतिसर्बसुहस्यो॥जबमेंवामहाराजस
हितबनमें आईही॥सोकोईदेवसंयोगक
रिमेरोउनसोंबियोगभयो॥तातेंउनकोहे
रतहेरतइहांआईहों॥सोतुमनेवाकोदे
ख्योहोइतोबतावो॥अरजोवहनमिल्यो
तोमेंहूदेहत्यागनकरिंयादुष्यतेंछूटोंगी
ऐसेंयाकोबचनसुणि करुणासहितमु
निबोले॥हमहमारेतपोबलकरिजांणें
तहें॥तूवासोंमिलेगी॥सर्बराज्यभोगन
करिसंयुक्तस्यघासनपरबैठेवाकों
॥ऐसेंकहि आश्रमसहिततप
अंतर्धानभये॥तबदमयंतीहूबिच
भई॥यहमेंप्रतक्षदेख्यो॥अथवा
ऐसेंबिचारकरिबिल

तनदीपर्वतमेंहै रतहे रतएकबडोसाप
देष्यो॥ हाथ्यीघोडारथ्यनकरिसहित सोन
दीकोउतरेहोतोमेंयहहू मिलिकरिजलमें
प्रवेसकरतभई॥ जबपाकोसाथ्यकेमनु
ष्यननेदेषीउन्मत्तकेसोरूपअधबस्त्र
कोलपेटेमलिनहोइरही॥ रजकरीकेसह
मलिनहोइरहे॥ ऐसीकोदेषिकितेकभयपा
तहांहूभगे॥ कितेकचिंताकरतभये॥ किते
कहंसतभये॥ कितेकपुकारतभये॥ कि
कितेकदयाकरतभये॥ कितेकदयाकर
तभये॥ कितेकपूछतभये हेकल्याणीतुं
एहे॥ कोणकीहे कोएकोहेरेहे॥ देवाग
है के बनदेवताहै के पर्वतदेवताहै॥ जा
सोहमसबतेरेसरणहै॥ ऐसीकृपाक
तातेंयहसाथ्यकुसलक्षेमसोपारउते
जबदमयंतीबोलीमेंविदर्भराजकीपु
होनलकीभार्याहोंसोवाकोंहेरतहों
मकहूदेष्योहोइतोबतावो॥ तबसु
मावासाथ्यकोसिरदारबोल्यो मैंयाक
हाथ्यीचीनाव्याघ्ररीछमृगतो॥ अन
भूमानषमात्रदेष्योनहीं॥ एकतहीं

वदिषीहे ।। नलकों देष्योनहीं सोअबयहम
हा घोरवनहे तामेंमरिहों भेइ तामायत्नह
मसोंप्रसन्नहोउ अैसी कृपाकरि ।। जवफेरि
दमयंती बोली ।। यहसाथकहांजाइगो ।। त
बसाथकोनायकाबोल्यो ।। चेतिराजसु
बाहुकी नगरीकोंजाइगो ।। इतिश्रीभार
तसारचंद्रिकायांवनपर्वणिनलोपाख्या
नदसमोध्यायः ।। १० ।। अथएकादसोध्यायः ।। दम
यंतीवासाथकेनायककोबचनसुणिसा
थकेसंगआपहूचलतभई ।। अैसेंचल
तेंकितनेकदिनपीछे घोरवनमेंएकत
लावकमलनकरिसोहितदेष्यो ।। उहांवा
साथकेनाथकीआग्यातेपश्चिमतीरसव
हीसाथमुकामकरतभयो ।। तहांपरश्र
मकरिसबहीसोईगये ।। जबअर्धरात्रके
समैहाथीनकोसमूहआयो ।। सोवासरो
वरकेमार्गमेंसाथसोवैहो अरुवेहाथी
सरोवरकोंजातहे ताकरिउनकोषूदत
भये तबवेहाथीनकेभयकेमारेपुका
रतपर्वतपैब्रह्मनमेंजातभये ।। कोऊक
हेमेरोरथहुतो ।। कोऊकहेमनुष

पापकारभयभीतहोइहाहाकारकरतभये
तबदमयंतीजागिपहकोलाहलदेषिभ
यभीतहोइभगी॥ सोकोईकचेस्थानपैसोर
चनादेषतभई॥ सोकेतकतोमरिगये॥ अ
रुकेतेकबचेसोसामिलहोइबोले॥ पह
कोणपापकौफलआयो॥ मणिभद्रगणेको
पूजननकस्यो॥ अथवापहरानकुवेरअ
थवागणपतिकोंपूजेनही॥ अथवाबिपरी
तिसकुननकोफलभयो॥ अथवायहहीबि
परीतिभये॥ औरकितनेकदुषीबोलेयह
नारीजोसाथआईहीताने यहकस्यो॥ ताते
वहराक्षसीकेपिसाची॥ केडाकणीहो॥ ताते
अबवाकोदेषेतोत्रणकाष्टपाषाणकरि
मारे॥ केरजमेपूरिदे॥ याआपकीमारण
वालीहै॥ ऐसेउनकीबातेंसुणिदमयंती
भाजतभई॥ सोसूनबनमेंजायबिलापक
रतभई॥ रे पोमेरेऊपरकोणबिधाताको
कोपहै जोसुषकोतोलेसहूमिलेनहीहै
दुष्षनकीपरंपरा।आवतेहै॥ भलोंकि
राज्यभ्रंस॥ २ [illegible] राजप॥ पतिपुत्र
कन्यातैंबियोग॥ अनाथताबनवाससो

बनहूजनरहि त॥तातैं असो या जन्ममैं वै
पूर्वजन्म मैं कोण पाप कस्यो है जो साथ
मिल्यो सोहू हाथीन के समूह करि मस्यो॥
सो दैव कस्यो बिना मनुष्यन को सुषदुष॥
होन हीं॥ मैं स्वयंबरमैं इंद्रादिक लोकपाल
नकों अनादर कियो ताही को फल आयो
है कहा॥ असैं बिलाप करत साथमैं तैं बचे
जे ब्रांमण तिनकैं संग होइ चलत चलत दि
तनेक दिनमैं चेदि राज सुबाहु के नगर कों
पहुची सो संध्या समैं प्रवेस कियो॥ न्हाया
आधे बस्त्रसों लिपटी महारूपवान देषि
लहि माही जाणि पुरबासी संग चले॥ जब
उनपुरबासीन के समूह वीचि आवत
अपनैं वही राजमाता या को देषत भई॥ त
ब धाइ सों आग्या करी या कों मेरे पास ल्यावो॥
तब धाइ आइ मैंहल लेगई॥ जब राजमा
ता पासि पूछ्यो॥ तू दुषी है दिव्य रूप कों धा
रै है बस्त्र आभूषण बिना है तेरी अद्भुत
सो नाही॥ सहाय बिना है तौहू निर्भय है॥
तातें तू कोण की है कोण है सो ॥ असैं
सुणि दमयंती बोली॥ ।

दमूलफूल आहारकरौंहौं जहांसांझहोइ
तहांवासकरौंहौं मेरौभर्त्ता असंष्यगुणवा
नहै ताकीसाषकछुपाऔरहौंहौं सोदेव
बसतेअमृतमैंसर्बसुहारिबनमैंगए वा
केसमाधानकौंमैंहूबनमैंगई वहांपंछी
वाकोएकबस्त्रहौसोलेगए जबमैंवा
कोदुषदेषरात्रमैंसोईनेहा असेंरहतेको
इसमैमैंसोइगई तबवेमेरोआधोबस्त्र
काटिलेगए सोमैंउनकोंहेरतहूंतइहांआ
ई वाके वियोग मैंदुषीहौंयोंकहतहीपा
केनेत्रनमैंअश्रुआए सोदेषिराजमाता
याकोदुषितजाणिसमाधानकरतबोलीहे
कल्याणी अबतसुषपूर्बकइहांहीरहि
तेरोदुषीहूरहोइगो अरुमेरेचाकरहेसो
तेरेभर्त्तारकोंहूहेरैंगे अथवावहहीफिर
तफिरतइहांआजायगो असेसुणिदम
यंतीबोली इहांमैंक रकै बसोंगी
जूंठणिषाऊंगीनहीपावद्याबोंगीनहीअ
रपुरससोंबोलोंगीनही कदाचितकोई
जोरकरैतौवाकोंप्राणदंडदेणोगीभ
र्त्ताकेतलासनिमित्यब्राम्हणनकोंदेषो

गी॥ ऐसैं करतें मैं बसंगी॥ जब राजमाता
बोली जैसें तैं कह्यो तैसें ही करोंगी॥ तथन
है॥ ऐसैं यासों कहि सुनंदानाम आपकी
पुत्री ही तासों बोली॥ हे पुत्री यह देवरूपणी
मेरें धरी है॥ तेरी अवस्था समान है तातें तू
याकों तेरी सखी करि संग राषि॥ तब सुनंदा
वाकों संग लेआपके महलमें आप॥ वाको
स्नानकराय वस्त्रभूषण पहराय पास राष
तभई॥ दमयंती हू सुषसों उहां वास कर
तभई॥ इति श्री भारतेसारचंद्रिकायां दनचली
ऐन लोपाख्याने एकादसमोऽध्यायः ११॥ अथ द
...॥ नलराजा हू दमयंतीकों छो
डि बनबनमें फिरतें एकठौर दावानलव
नकों भस्म करत देष्यो॥ वा अग्निके मध्य
कोई कोबारंबार यह सब्द सुण्यो॥ सो हे न
लराजा इहां आवत् डरे मति ऐसें वासों
कही॥ तब नल अग्निमें प्रबेस करत भयो
है कुंडलाकार सूतो नागराजाकों देष्यो
हे नाग हाथजोडि नलसों बोल्यो॥ हे रा
जा मोकों कर्कोटक नामा नाग जाणि॥ मैं
नारदमुनिको अपराध कर्यो है॥ सो ३

नशापदियोजोतू स्थावरहोइरहो जबन
लराजातोको और ठौर लेजायगो तब
शापसेंमुक्त होइगो ताते एकपैड हूंच
लिसकोंनहीहो सोतुममेरीरक्षाकरो
मेंहू तेरोकल्याणकारीमित्रहोऊंगो मो
समोनऔरहूरे कसर्पकोमतिजाणो मेंहू
अबलघुहोइजाऊंगो सोतूंमोकोंलेके
अग्निरहितठौरमेंचलि ऐसेकहिवह
नागइअंगुष्टप्रमाणभयो जबनलरा
जावाको उठायअग्निरहितदेसमेंजाय
धरिवेलग्यो तबवह बोल्यो हेराजाय
बतूं तेरपेंडगिणतगिणतचलिमेंतेरो
कल्याणकरूंगो जबपेंडगिणतचलते
नलकोंदसवेंपेंडपेडस्यो सोडसतही
राजाकोरूपहोसोबिरूपहोइगयो त
बराजाआपकोबिरूपदेषिनागको
निजरूपधारीदेषिउदासभयो जब
नागसमाधानकरतहीबोल्यो मेंत
कोंजगतनजाणोंयावास्तेबिरूप
स्योहे अरुजोमेंतोकोंराज्यभ्रष्ट
मेरेसरीरमेंबसेहे सोमेरीबिषज

लाकरिजलतहारहेगो॥जबतोकोको
डेगो तबसुषपावेगो॥यहउस्योहे सोवा
तेरीरक्षाकरीहे मेरीविष
लाहतोकोपीडाकरेगीनही॥अबमेरे
प्रतुयहतेतोकोंसकुवारेही वाग्रसरि
इनतेंभयनहोइगो॥संग्राममेंजयपावे
॥अबतूंसवाहुकनामासूतहो॥अैसें
रितुपर्णनामाराजापासअजोध्या
जावे॥वहतोसों अश्वविद्यालेकेअन्न
विद्यादेके तेरोमित्रहोइगो॥जबतूं अन्न
जाणेगो तबही तेरो कल्याणहोइ
॥इस्त्रीपुत्रकन्याराज्यइनकोप्राप्तहोइ
सोजबतूंनिजरूपचाहे॥तबमेरो
वस्त्रदेतहोताकोंवोरे
तबहीनिजरूपपावेगो॥अैसेंकहिके
इवस्त्रनलराजाकोंदेकनागराज
अंतर्धानभयो॥इतिश्रीभारतसारचंद्रि
कायांवनपर्वणिनलोपाख्यानेद्वादशमो
अ॥ १२॥ ॥अथ॥ नागराजकेअंतर्धा
नभयेपीछेनलराजदसवेंदिनऋतुप
नगरीमेंप्रवेसकियो॥वहांज

नशापदियोजोतस्थावरहोइरहो।जबन
लराजातेकों।औरठोरलेजायगो।तब
शापसोंमुक्तहोइगो।तातेएकपेंडहूच
लिसकोंनहीहों।सोतुममेरीरक्षाकरो।
मेंहूंतेरोकल्याणकारीमित्रहोऊंगो।मो
समोनऔरहरेकसर्पकोंमतिजाणें।मेंहूं
अबलघुहोइजाऊंगो।सोतूंमोकोंलेकें
अग्निरहितठौरमेंचलि।ऐसेंकहिवह
नागेंद्रअंगुष्टप्रमाणभयो।जबनलरा
जावाकोंउठायअग्निरहितदेसमेंजाय
धरिबेलग्यो।तबवहबोल्यो।हेराजाप
बत।तेरेपेंडगिणतगिणतचालिमेंतेरो
कल्याणकरूंगो।जबपेंडगिणतचलत
नलकोंदसवेंपेंडडस्यो।सोइसतें
राजाकोंरूपहोसोविरूपहोइगयो।
नराजाआपकोंविरूपदेषिनागकें
निजरूपधारीदेषिउदासभयो।ज
नागसमाधानकरतहीबोल्यो।
कोंजगतनजाणेंयावास्तेविरूप
ल्योहै।अरुजोमेंतोकोंराज्यभ्रष्ट
तेरेसरीरमेंबसेहैसोमेरीविष

समैं निस्पृहो पयह श्लोक कहत भयो।
नुसा क्षुत्पिपासार्ता श्रान्ता शेते तपस्विन
स्मरंती तस्य मंदस्य कवासा द्य पतिष्ठति।
अर्थ वह भूष प्यास करि दुषित श्रमित है
पवा मंद कौ सुमरत कहां बसत है। कैण
की सेवा करत है। ऐसैं कहत बाहुक सौं
जीवन बोल्यो। हे बाहुक तू कौण नारी
कौ सोचत है। अरु वह नारी कौण कौ भा
र्या है। जब नल राजा बोल्यो। कोऊ एक
मंद भागी कौ नारी बहुत प्यारी भई अरु
वह हू वाकौं प्यारो भयो। सो कोऊ दैव वस
कारि उनकै बियोग भयो। तातैं वाके वियो
ग सौं दुषित होइ रात्र मैं वाकौं सुमरण क
रत एक श्लोक गावै है। वह नारी वाकै सं
ग निर्जन बन मैं आइ ताकौं वा मंद भागनि
छोडी सो वाकौ जीवन कठिन है। एक
तौ अबला दूसरे मार्ग जाणै नहीं भूष प्या
सकरि पीडित। सो महादारुण निर्जन ब
न मैं छोडी ऐसैं नलराजा दमयंती कौ सु
मरत ऋतुपर्ण राजा की नगर मैं अश्वपाल
बास करत भयो।

राजासों मिलिकें बोल्यो ॥ हे राजन मैं बा
हुक नामां सूत हौं ॥ सो अश्वनके चलाबेमें
मेरी समान और पृथ्वीमें है नहीं ॥ नीतिसा
स्त्रनके कठिन ॥ प्रश्नकों मैं जाणुंहौं ॥ अ
रकोऊ न जाणौं ॥ अैसो अन्नसंसकार हूं जा
णौंहौं ॥ जितने संसारमें सिल्प है सो हूं जा
णौंहौं ॥ और औ कार्ज काहू सों न होइ सो हू
करौंगो ॥ तातें आप मेरो भरणपोसण क
रो ॥ जब ऋतुपर्ण बोले ॥ हे बाहुक तूं रहं
बसि तेरो कल्याण होइगो जो तूं मेरे सर्व का
र्ज करैगो तो ॥ मोको अश्व सीघ्र चलिबे
में बहुत रुचि है ॥ तातें तूं अैसो काम करि
जो मेरे घोडा सीघ्र चलें तो को सब अश्वन
को मालिक कियो ॥ और सो महोर को तेरो
रोजीना है सो याहूतें कछु कसिवाय द्यूं
गो ॥ अर बार्ष्णेय वो जीवल ये दोऊ तेरे आ
गें काम करिबेकों रहेंगे ॥ इन सहित हे बा
हुक सुषपूर्वक बसो ॥ अैसें ऋतुपर्ण राजा
की आग्यातें बाहुक नाम धारि बार्ष्णेयका
वन सहित नलराजा बसत भयो ॥ वहां रा
त्रि बारंबार दमयंतीकों सुमरण करत सं

समानिस्पृहोपययह श्लोक कहतभयो॥ध
नुसा क्षुत्पिपासा तीश्रान्ता शेते तपस्विनी
स्मरंती तस्य मंदस्य कंवासाद्यपतिष्ठति॥
अर्थ वह भूष प्यासकरि दुषित श्रमितहै
पवा मंदकोसुमरतक हांवसतहे कैोण
कीसेवाकरतहै॥ऐसें कहतबाहुक सो
जीवनबोल्यो॥हे बाहुक तूकोणनारी
कोसोचतहै॥अरु वह नारीकोणकीभा
र्याहै॥जबनलराजाबोल्यो॥कोऊएक
मंदभागीकोनारी बहुतप्यारी भई अरु
वह हू वाकोप्यारो भयो॥सोकोऊदैवबस
कारि उनके बियोगभयो॥तातें वाकेबियो
गसों दुषितहोइ रात्रमेंवाकोसुमरणक
रत एकश्लोक गावैहै॥वह नारीवाकेसं
ग निर्जनबनमेंआईताको वा मंदभागीनें
छांडी सो वाकोजीव अनकठिनहे॥एक
अबला दूसरे मार्गजाणें नहीं भूषप्या
सकरि पीडित॥सोमहादारुण निर्जनब
नमेंछांडी॥ऐसैं नलराजा दमयंतीकोसु
मरत ऋतुपर्णराजाकीनगरीमें आपात
करतभयो॥ [illegible]
[illegible]

नलराजाराम

...हस्वयंवर... ॥ नलराजाराम
...दमयंती सहित बन में गयो । पहिलुं
...रि दमयंती सहित बन में गयो । पहतु
...भीमराजा उनके हेरिबेकों ब्राह्मण
...कों बुलाय यह कही । तुम नल दमयंती
...कों हेरो जो कोई नल दमयंती दोऊ में सों
...काहू कों हेरि ल्यावैगो ताकों भूषण ब
...एक हजार नगरु हूं द्यूंगो ॥ त्र
...गाम देऊंगो ॥ ह जार नगरु हूं द्यूंगो
...राजा उनकों कही निहचें हु करि आवेगो
...ताकों हूं सैकड़ा नगरु देऊंगो ॥ ऐसें कहि
...ब्राह्मणन कों षरची दे चारों दिसांन कों
...बिदा किये ॥ तिनमें सुदेव नामों ब्राह्मण
...चंदेरी जाके पुर मकों गयो ॥ वहां पुन्याह
...वाचन समें सुबाहु राजा पाहु कों बुलो
...यो सो अंतःपुर में जाय उहां दमयंती कों
...देषी ॥ जल ... अनेक चिन्हन करि वाकूं प
...हचांनि कें निदान सब सों दमयंती सों बो
...ल्यो ॥ हे दमयंती मैं सुदेव नामा ब्राह्मण तेरे
...भ्राता कों मित्र हों । भीमराजा के हुकम तें तो
...कों हेरिबे कों इहां आयो हों ॥ अरु तेरो पि
...ता माता भ्राता पुत्र कन्या ये सब ही नीके हैं
...ता परंतु तेरो चिंता तें सब ही उदास हैं ॥ अरु
...एक तेरा चिंता तें सब ही उदास हैं ॥ अरु
...पाक तेरी चिंता तें सबही उदास हैं ॥ अरु
...तेरे हेरिबे कों सैकड़न ब्राह्मण प्र थ

मैंबिचरै है॥ ऐसें सुणि सुदेवकों पर:चां[illegible]
दमयंती और हू समाचार पूछे॥ तब सुदेव
सब समंचार कहे सो सुणि दमयंती रुद
न करत भई॥ तब सुनि दावाकों रुदन करं
ती देखि एक सखी कों राजमाता पास पठाई
कर तेतद नकरै है सो आप चलो॥ ऐसें सुणि
राजमाता आप ब्राह्मणसों पूछ्यो यह कोण
है कोणकी है यह दसा वैसें भई॥ ऐसें सुणि
सुदेव सब ही ब्रतांत कहत भयो॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] रजनीमतकी पुत्री दमयंती है। [illegible]
के पुत्र नलताकी नारी है। [illegible]
[illegible] मेरा [illegible] वन [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] धर्मपाई [illegible]
[illegible] प्रभात [illegible]
[illegible]
[illegible] चली [illegible]
[illegible]

र कर्यो ॥ तब वाकौ पिहू चिह्न ऐसें दीस्या
जैसें बा लहर नये चंद्रमा दीसै ॥ वा चिह्न
कौं देषि राजमाता ॥ अरु सुनि दमयंती
मिलि रुदन करत भई ॥ फेरि राजमाता बोली
हे दमयंती तू मेरी बहण की बेटी है ॥ सो पा
चिन्ह करि निहचै जाणी ॥ और तेरी माता
अरु मैं ए दोऊ दसार्ण देस के राजा सुदामा
की बेटी हैं ॥ तेरी माता कौं तौ भीम राजा व्याही
है ॥ मोकौं बीरबाहु क राजा व्याही है ॥ तेरो
जन्म मेरे पिता के घर में भयो है ॥ उहां देषी
ही ॥ तासौं अब जैसौ तेरे पिता कौ घर तैसौ
ही यह है ॥ मेरी संपदा है सो सब तेरी ही
जाणि ॥ तब दमयंती प्रणाम करि बोली
मैं तो इहां बिना जाणे हूं सुषसौं रही ॥ पर
तु अब तो मोकौं पिता के पास जाबेकी
आग्या ही दीजे ॥ मेरे पुत्र कन्या हू उहां ब
सत है ॥ उन के देषबेकी लालसा है ॥ तातें
सवारी दीजे ॥ तब राजमाता हू पुत्र सौं
सलाह करि सुंदर सवारी दे रु सावाले
सेना संग दे तब भई ॥ तब दमयंती बिदा
होय सीघ्र ही बिदर्भ देस नकौं गई ॥ तहां ११

याकों आईसुणि बंधुजन सर्बही सनमुष आयमहलमें लेगये॥ तबदमयंती हू माता पिता पुत्र कन्या बांधव सषीजन सेर्बसो मिलि हर्षित भई॥ देव ब्राह्मणन को पूज न करते भई॥ पीछु राजा सुदेव ब्राह्मणको गाव द्रब्य हजार नगेऊरे करि प्रसन्न कियो दमयंती हू पिताके घर में सुषपूर्बक बास करि माता सों बोली॥ इति श्री भारतसार बंद्रिका यां बनपर्बणि नलोपाख्याने पंचद सोध्यायः॥ १५॥ दमयंती उवाच॥ हे माता मोको जिवायो चाहो तो महाराजन लको ल्याइबे को उपाय करो॥ असें सुणि माता अश्रु धारा छोडत उत्तर दियो नही॥ तब दमयंती को अरु वाकी माता को यह दसा देषि सब अंतःपुर हाहाकार करि रुदन करत भयो॥ तब भीमराज सों महाराणी बोली हे महाराज दमयंती नल ज्याको दुमासोक हो॥ नलको ल्याबेके निमित्य हे तनको भेजो यो सुणि राजा बसबर्ती ब्राह्मणन को आग्या करी जो तुमन लके ल्यायबे को यत्न करो॥ असें कहि घरची देय बिदा किये तब

ब्राह्मणदमयंतीसों बोले हमनलके हेरि बेकों जात हैं तब दमयंती उनसों बोली सबदेसनमें राजसभानमें यह श्लोक प टो ॥ क्व नु त्वं कितवच्छित्वा वस्त्रार्धं प्रस्थितो मम ॥ उत्सृज्य विपने सुप्तामनुरक्तां प्रियां प्रि य ॥ १ ॥ अर्थ हे जुवारी बनमें मेरो आधो वस्त्र काटि सूती कों छांडि तू कहां गयो तेरे बिर हतें वह बालातप है ताकों वापर करुण करि प्रत्युत्तर कहौ भर्त्ता कों पत्नी को भरण रक्षण करणों तेरे देह कहीं कैसें गये दया परमधर्म है यह तो हीतें सुण्यो हो सो तें कैसे छांड्यो ऐसे बोलतें तुम कों जो उत्तर दे सो सुणि इहां आवो वह संपातिवान हो अ पवाद रहित होवा की चेष्टा देषियो सब नगर गांव पुर हेरत हेरत वा श्लोक को उत्तर काहू नैं दियो नहीं तब आइ दमयंती सों कहत भ ये ॥ इति श्री भारतसार चंद्रिकायां वन पर्वणि न लोपाख्याने षोडशो ध्यायः ॥ १६ ॥ ब्रहदश्व उ वाच ॥ ऐसें बहुत कालतें पर्नाद नामा ब्राह्म ण आय दमयंती सों बोल्यो हे दमयंती नल कों हे [illegible] अयोध्या नगरी में राजा ऋतु

पर्णलाकेपासगयो॥जहांवाकोंश्लोकसु
यो॥जबवहऊनबोल्यो॥ओरसभाकेऊन
बोले॥तबवाराजासोंबिदाहोइ अश्वशाल
मेंगयो॥उहांकोअधिकारीराजाकोंसतव
हुकदेष्यो॥सोरूपकरिमहाकुरूपभुजाहृस्व
टी॥घोडानकोंसीघ्रचलाबेमेंमहाचतुर
भोजनसामग्रीकरिबेमेंकुसलो॥वाकों
हश्लोकसुणायो॥जबहसुणिस्वासनां
बिकदनकरिमोकोंकुसलपूछिबोल्यो॥
पतिव्रताहोइसोआपदाहमेंआपाकीर
क्षाकरे॥नर्त्तीयागकरेतौहक्रोधकरेनहीं
राजनस्थलसाहीनदुषीपत्तीनतेंजाकेब
बहरे॥औसोहपतिआदरकरेवाअनादर
करैतौहपतिब्रताक्रोधकरेनहीं॥औसेंवा
केमुषतेसुणिमैंइहांआयो॥अबतुम्हारी
इछाआवैसोकरो॥औसेंसुणिदमयंतीए
कांतमेंमातासोंबोली॥यहपर्णादब्राह्म
णसमाचारल्यायोहै॥तासोंअबतोमेंतु
मसुंकहींसोकरो॥येसमाचारमहाराज
सोंकहोमतियाहीमेंमेरोकल्याणहै॥औ
रुसुदेवब्राह्मणमोकोंतुमसोंमिलाईजै
सेंहीमंगलमहूर्तमेंनलराजा...

वो पर्णाद ब्राह्मण बेद पायो है सो बिश्राम करो पहर्दमयंतीको बचन माताअंगीकार कर्‌यो तब दमयंती प्रसन्न होइ पर्णादकों धन दे बोली हे ब्राह्मण महाराज नल आवें गे जब तोकों और बहुत धन दे प्रसन्न करोंगी तैमेरी तैमेरो बडो उपगार कर्‌यो प्राणराख्‍ये ऐसें सुणि पर्णाद ब्राह्मण आसीर्वाद दे आपके घर गयो तापीछे दमयंती सुदेव ब्राह्मणकों बुलाय माताके पास ही बोली हे सुदेव अयोध्यानगरीको राजा ऋतुपर्ण ताके पास राहगी रसो होइ जायके ऐसें कहो दमयंतीको फेरि स्वयंबर है गो जहां सब ही देसके राजा वा राजपुत्र जाइंगे सो सुयंबर कालि सूर्योदय समें होइगो दमयंती दुतिय भर्त्ता बरेगी नल राजाकी खबर ह जी वत है वा नहीं जीवत है तासों जब ऐसें सुदेव ब्राह्मण दमयंतीके कहे सों अयोध्यानगरीमें ऋतुपर्ण राजापास जाय सर्ब बार्ता सुयंबरकी कही इति श्री भारतसार चंद्रिकायां बन पर्वणि नलोपाख्यान समाप्ते दमयंत्या सप्तमो ध्यायः ॥७॥

[illegible] ऋतुपर्ण राजा सुदेवके

वचनसुणिबाहुकसोंबोल्यो॥ कुंदिनपुर
दमयंतीकोसुयंवरहै॥ सोउहांतैलेचलैतौ
कदिनमेंगयोचाहतहौ॥ ऐसैंसुनहीनलके
लग्यो॥ दमयंतीऐसेंहूकरै॥ अथवादुष्षकेलि
माकुलकहानकरै॥ अथवामेरेमिलिबेको
उपायहीहै॥ तातैंपतिव्रतादमयंतीअन्य
भर्त्ताचाहैयहतौ॥ ऐसंभवहीहै॥ मैंकुरूपा
भावचंचलहैमेरोदोसहूदारुणहैजानैक
दाचितऐसैहूकरै पमेरेसोकतैसनेहछो
डिपुत्रवतीहै सो ऐसोकरैतोनहीं॥ तातैं
सत्यहैवामिथ्याहै॥ यहतौनिश्चैउहांगयें
हीहोयगो॥ ऋतुपर्णकोकाममेरेअर्थक
रैगो॥ ऐसैंबाहुकनिश्चैकरिहाथजोडि
ऋतुपर्णराजासोंबोल्यो॥ हेनरिंदएकदिन
हीमेंकुंदिनपुरलेचलौगो॥ यहसत्यहीजा
नो॥ ऐसैंकहिऋतुपर्णकी॥ आग्यातैंअश्व
सालामेंजायघोड़ानकीपरिछाकरिबेल
॥ सोसरीरकरिकैसचलिबेमेंसमर्थतेज
वसीलकुलयुक्तहीनलक्षणनकरिरहि
तपुष्टयोपरा॥ लंबीमोटी॥ दसआवर्त्तनके

रि सुद्ध सिंधुदेसके पवनसमांनबेग ऐसे
च्यारि घोडानकौं निश्चेकरे राजा ऋतुपर्ण
उनकौं देषि बोल्यो अरे बाहुक यह हमहारी
हंसी करिबेही कौं पेमरेसे अश्व निकासे हैं
ये अश्व उतनो दीर्घमारगकैसे चलैंगे तबबा
हुक बोल्यो ये अश्व निश्चै करि कुंदिनपुर
एकदिनहीमें पहुंचेंगे आप और अश्वनकौ
आग्रहा करो तो उनकौं जोतो तब ऋतुपर्ण
बोल्यो तूंही अश्वनकी परिक्षा जाणिबेवा
लो है याते जो सीघ्र पहुंचे सोही जोवो जब
उनही च्यारो घोडानकौं रथमें जोये तब ऋ
तुपर्ण हंसी घ्रहीसवार नयो जब घोडागाडी
रे कि प्रथ्वीमें बैठिगये त ... नलराजा उनपे
हाथफेरितेज धरि वारस्नेय आपको सारथी
हो बाहुककौ धरिरासिप चढतनयो तापीछे
बाहुक आपकी अश्वविद्याके प्रभावकरि
रथकौं चलायो सो अब आकासमार्ग होई
घोडा राजाकौं मोहितकरतही चले ऐसे
ध्यानाय हुघोडानकौं पवन ... गसम चलतेर
षि चकि तनयो वारस्नेय हु रथकौ घोषसु
णि बाहुककौ रासिप कडि सारथ्यकर्मकौ
देषि बिचारतनयो यह मातलिनांमाइंद्रकौ

मार थी है ॥ अथवा ॥ अथा अश्वसास्त्र करता सालिहोत्र ही है ॥ अथवा यह नल ही यह है बाहुक कों ग्यांन नल समान देषत हों उमर हू नल के तुल्य ही है परंतु नल तो नही ॥ अरु बि द्या तो नल की सी है ॥ ऐसें वार्ष्णेय बिचार में यो अरु ऋतुपर्ण हू बिचास्यो जो मनुष्य की बिस कों पार वार नही ॥ पारी तिसों बिचारत जात है सो पर्वत नदी ऊपर होइ पवन गति ज्यों र थ जात राजा को दुपट्टा गिस्यो ॥ जब राजा क ही रथ थांभि दुपट्टा गिस्यो है ॥ तब नल कही दुपट्टा तो एक जोजन पीछें रह्यो ॥ सो सुणि राजा मौन गही ॥ तहां तें आगें चलतें फल स हित एक बहेडा को रूंष देष्यो ॥ जब राजा ब ल्यो या ब्रक्ष में जितने फल पत्र है सो सब की संष्या में जानत हों ॥ अरु अक्षविद्या हू जानत हो ॥ तब नल बोल्यो ॥ कितने पत्र फल है ॥ जब ऋ तुपर्ण बोल्यो एक लाष दस हजार तो पत्र है अरु दस हजार फल है ॥ नल रथ कों थांभि कही हे महाराज में गिणत हों ॥ घोडा न की रा सि वार्ष्णेय पकडेगो ॥ जब राजा कही बिल बं को समै नही ॥ तब बाहुक कही में स ... रि ही के चलोंगो ॥ अरु आप कों री वह ...

मेंसी घरहीकुंदिनपुरपहुंचाइद्योंगो ऐसेंकहि
वाबृत्तकेपत्रपुसऋतुपर्णकेकहेमांपेक
गिणिरथपेचढिबाहुकबोल्यो हेमहाराज
यहतुम्हारीत्र्प्रति श्रेद्भुतविद्यारेषी जबऋ
तुपर्णबोल्यो मेंजैसेंगणितविद्याजाणोहों
तैसेंही श्रक्षविद्याहुजाणोहे तबबाहुकबो
ल्यो यहश्रक्षहृदयविद्यातोमोकोंद्यो श्रक
श्रश्वहृदयविद्यामोपेहेसोत्र्पावल्यो जब
ऋतुपर्णश्रश्वविद्याकेलोभतेंबोल्यो यह
श्रक्षविद्यामेरेपाससोल्यो श्रश्वहृदयमेरें
धरोहरतोमेरहो ऐसेंकहिऋतुपर्णनलकों
श्रक्षविद्यादीनी श्रक्षविद्यानलकेहृदयमें
श्रावतहीकलिवाकेसरीरतेंनिकस्यो सो
कर्कोटकके बिषकरिकलिकोंमुषजरतन
यो जबकलिनलके सरीरमेंतेंबाहरश्राय
यो तबकलिके सरीरतेंकर्कोटककोविष
श्ररुदमयंतीकोशापाग्निपेबाहरनिकसत
भये जबकलिनिजरूपसोंनलकोंदीस्यो
तबनलक्रोधकरिशापदेबेलग्यो जबक
लिहाथजोडिपांवनमेंपडिबोल्यो मेंदम
यतीकेशापाग्निकरिकर्कोटककेबिषाग्निक
रितेरेसरीरमेंजलतहीरह्यो सोन्पवतार्घ

निकसितेरे सरण आयो हों॥ जो
पृ॥ गीतोमें तो को वरद्यो
कीर्तन करेंगे तिनको
कद्य चिंतन होइगो॥ ऐसेसु
कोक्रोधसांत्पभयो॥ कलि
तहांइ बहेडेमें धसिगयो॥ नल
लिके संबादकोइ सर नें लष्यानही॥
तापीकूं नलतापरहितहोइरथपे
इ बिदर्भदेसनकोंगयो क
बेतं बहेडे को ब्रह्मभंग
तभयो॥ नलइर गयोज
लिहृ॰ गयो॰
॰ तोसर्बतापहरनई॥ एक
ताहारही॥ इतिश्रीभारतसारके॰
बनपर्बणि नलोपाख्यान अष्टादशोध्या
य॥ १८॥ बृहदश्वउवाच॥ जबऋतुप
राजा आयो यहषबर भीमराजकी
कोनगीतेंऋतुपर्णकुंडिनपुरमें
स्यो॥ प्रवेसस मे मेरथको
नलके घोडाननें सुण्पो॥ सो सुणि
भयो॥ दमयंतीहू नलकेसो
षोष सुणि आश्चर्यमान तभई॥

रत्नकेमोरहा पीघोड़ाएसवहीवारण
कोघोषमेघगर्जनासमांनसुणिहर्षित
होइबोलतभये जबदमयंतीबोली यह
रथघोषमेरेमनकोंहर्षितकरहै तातें
जानतहोंनलराजाआयो आजनलकों
नदेषोंतोमेरोप्राणनरहैगो ऐसें
बिचारिराजानलकेदेषिबेकोंमहलकौ
ऊंचौएककरोषाहो तामेंलगई वामेंतें
बीचकीड्योढीमें रथ्यैदेख्यो । वार्ष्णेय
बाहुकसहित राजा ऋतुपर्णकोंदेष्यो
वार्ष्णेयबाहुकदोऊरथतेंउतरिघोड़ा
नकोंछोड़ि रथकों उहांथापितकियो
जबराजाऋतुपर्णरथतैंउतरि भीम
राजपासगयो भीमराजा उठकर
षआवभगतकरिलेजाय औसतका
रकस्यो दमयंतीकोस्वयंबरसुणि
आयोहैसोतोजाण्योनहीं अरवासों
पूछ्यो आपकौं आवनकैसेहुवो तब
ऋतुपर्णकहीं ओरकोऊराजावाराज
पुत्रवास्वयंबरकी रचनाब्राह्मणन
कोधुनिककदेषीसुणीनहीं जब
मनमेंबिचारकरिलियो...

णामकरिबेहीकोंआयो॥नबराजाभीमहू
हसिकरिमनमेंबिचारतभयो॥जोमोजो
जनतेंहूसिवाइकेवलप्रणामहीकरिबे
कोंआवैपहतोअसंभवहै॥तातेंकछुयें
रहीकारणहैसोपाछूंषबरीपडेगी॥ऐ
सेंबिचारिभीमराजाबोल्या॥आपकोंमार्ग
कोश्रमहुवाहोइगोंतातेंबिस्रामकीजे॥ऐ
सेउनकोंकहिसेवकनकोंभेजिदिब्यभ
वनबताई॥भक्तभोज्यसामग्रीभेजत
भयो॥जहाराजाऋतुपर्णहूवार्ष्णेयस
हितबासकरतभयो॥बाहूकरथपेंस
वारहोइअश्वसालामेंगयो॥उहांसास्त्री
क्तिसोंघोडानकीपरचर्याकरिरथपेंबे
ठतभयो॥झरोषामेंसोंदमयंतीऋतुप
र्णवार्ष्णेयबाहूककोंदेषिबिचारतभई॥
यहरथकीधुनिकोंणनेंकरी॥धुनितोम
हाराजनलकीसीहैपरंतुनजरआवै
नही॥ऐसेंबिचारिनलकेहेरिबेकोंइ
तीभेजतभई॥तासोंदमयंतीबोली॥हेके
सनीतूजायक रूपऔंछी
भुजानकोरथहां वा णहै
कोदेषिमेरेमनकोंआनंदहोत

जान नही तौ न होइ तातैं जो श्लोक बातौ
पर्नादकह्‌है सोही तू हू जाइ कै कहि वह
जो कहै सो सुणि आउ ... पर्नादकही
ही सोई जाइ कै केसनी बाहुक सों कहत
भई दमयंती हू तु हा तें बैठी देषत भई
केसनी कहौ है नरेंद्र तुम कहा सौं कब के
चले हौ कै ब आये तब बाहुक बोल्यौ
दमयंती कौ दूसरौ स्वयंबर है रितुप
र्ण अयोध्या नाथ सत जोजन अश्व सहि
त रथ पै चढि एक दिन मैं इहा आये है मैं
इन कौ सारथी हौ जब केसनी बोली तुम
तौ सारथी अरु वेह थी परि तीसरौ कौण
है तब बाहुक बोल्यौ नल कौ बार्ष्णेय
नामा सारथी है नल गयो ता पीछे सो
यह अयोध्या नाथ पास रहै है मैं हू अ
श्व विद्या मैं निपुण हौ तातें राजा सार
थि कर्म मैं अरु भोजन कर्म मैं राष्यो है ये
से सुणि केसनी बोली वार्ष्णेय जाणे है
जो नल राजा कहा गयौ तब बाहुक क
ही वा पापिष्ठ के पुत्र कन्यान कौं इहां
धरि रितुपर्ण के जाय रह्यौ ता पीछे या
कौ षबरि नही वह कुरूप भयौ गुप्त बि

चरै है तासौं नलकौं कोऊ पुरसजाणौं नहीं
तातैं वह आपही आपकौं जाणैं है अथवा वे
की अतिबहरुना है सो कोऊ चिह्न करि
पहचाणै है ॥ नल आपके चिह्न का हूसौं
कहे है नहीं ॥ जब केसनी बोली ॥ जो वह
ब्राह्मण पहली अयोध्या गयो है सो स्त्रीनें
बचन बेरबेर पढ्यो ताको तै उत्तर कहा
दियो ॥ वह दमयंती सुण्या चाहै है ॥ जब बा
हरुक बोल्यो ॥ असे केसनी का बचन सु
णि नलके अश्रु चले तब अश्रुनकौं
रोकि धीर्ज धरि बोल्यो ॥ कुलस्त्री
बिपदाहू मैं आपा की रक्षा करै है प
ति बिपदा मैं त्याग करै तो हू रोस करै न
हीं और जीवका को उपाय करतै पंछी
ननें बस्त्र हरण कियो ताहू बुद्धि पेरा
करणौं योग्य नहीं ॥ तब केसनी दमय
ती के पास जाय सब समचार कहे ॥
श्री भारत भाषा चुड़िका यां बनपर्वणि
पाख्यान एकोनविंसतमस्तरंग: ॥ २०॥
असे केसनी के
बृहदश्व उवाच ॥
सुणि दमयंती बोली ॥ हे केस
नी बाहुक की परीक्षा करि ॥

मतिपासरहिकेंवाकेचरित्रदेषि औरत
पाकसामग्रीतोसपूर्णलेजायवाकोंदेएक
अग्निजलमतिपहुंचावे जबवहपाकक
रे सोसंपूर्णचेष्टादेषिमोसोंकहियो ऐसे
सुणिकेसनीवाकेपासजायपाकचेष्टादी
दमयंतीसोंआपकहतभई हेदमयंती
आचारवाकोऐसोदेष्यो जोऔरमनुष्य
मैनही नीचेद्वारमेंप्रवेश करतमस्तकनु
वावेनही संकीर्णमार्गमैंजाय जबमार्ग
आपहीचोडोहोइजाय रितुपर्णराजाको
भोजनसामग्रीअनेकप्रकारकीकरीतामे
मांसधोइबेकोरीतोघटमेंधरिदीनोसो
वाकीतरफबाहुकदेष्यातबहीवहजल
सोभरिगयो वामांसकोंधोइचूलेपैच
ढायो अग्निदेषीनही जबघासकोमूठी
लेसूर्यसनमुषकरतहीजलिउठ्यो और
हआश्चर्यदेष्योजोअग्निसोंजलैनही अरु
जेलवाकीइच्छामाफिकबहतहै वाके
हाथकेमर्दितपुष्पमेंअतिसुगंधहोइ
ऐसेआश्चर्यरूपचेष्टादेषितुम्हारे पास
आई जबदम- तीकेसनीकेपासऐसी
चेष्टासुणिनलहीमाननभई तबफेरि

दमयंती बोली हे केसनी बाहुककों राष्यो
मां सवाके बिना जाणें तू ले आव ॥ जब वह
जाय बाहुक और कामकरबेलग्यो तब ग
रमहा मांस ले दमयंती पास आई ॥ वाकों
भक्षण करि दमयंती नलकों ही राष्योमां
सहे ऐसें स्वाद सों पहचांणि वाकों नल
निश्चेमानत भई ॥ तापीछे हाथमुष धोइ
इंद्रसेनपुत्र इंद्रसेनापुत्री कों केसनी के
साथ वाके पास भेजत भई ॥ जब बाहुक
हू उनकों देरसों देषि के दौड़ि छाती सों ल
गाइ आनंद के अश्रुनापतेभयो ॥ फेरि धी
रज धरि केसनी सों बोल्यो ये दोऊ बालक
मेरे पुत्रकन्या समान हे सो इनकों तू ले
जा ॥ अरु बेरबेर तू आवेहे ॥ जासों और
न केसंकाहोतहे तासों हम अभ्यागत
हे तुम सुद्धिमाफिकजावो ॥ इतिश्री
भारतसारचंद्रिकायांवनपर्वणि नलो
पाख्यानवर्णनंविंसोध्याय ॥ २० ॥ बृहद
श्व उवाच ॥ याप्रकारसों केसनी नल
की
सों कही ॥ जब दमयंती केसनी कों मा

हूजो बाहुककोंनलसंकाकरीपरतांकरी
सोश्रोर तोनलकीसंपूर्णबाततमिलीएक
रूपहीकीश्रासंकाहै सोमेसांतातजा
एपोबाहुकतहो तासोंमहाराजपाबातको
जाणेहे नही सोश्रापकहि केपरवानगीदि
वावो श्रेसेदमयंतीसोंसुणिकेसनीम
हाराणीसोंमालूमकरी जबमहाराणी
हूभीमसोंसबबृतांतकहिपरवानगी
लीनी तबमातापिताकीश्रागपासोंदमय
तीश्रापकेपासबाहुककोंबुलायो उहां
श्रापनलहूसोकदुष्बनकरिनेत्रनसों
श्रांसूकाडतेभयो जबदमयंतीहूनलकी
दसादेषिदुष्वतभई श्ररुमलिनबस्त्रधा
रेकेसनकीजटाहोइरही श्रंगनमेंमेल
लगिरह्योहे श्रेसे रूपसोंनलसों
बोली हेबाहुक तुम श्रेसो धरमश्रि
नरहू कोईदेष्यो जोनिर्जनबनमेंपरश्रम
करिसेतनिर्परराधभार्याकोइकलीछोडि
जाय श्रेसोमहाराजनलबिनातोश्रोर
नहोइगो मेंदेवतानकोंतजिवाकोंब
रयो फेरिपतिब्रतापुत्रवतीता
कोंडी पाणिग्रहणसमे श्रग्निश्रा

हेमहाराजमोमैंदोससंकाकरिबोपोगपन
हीमें वतानकोंछोडितुमकोंबरेहैं॥उ
म्हारेहरिबेकोंब्राम्हणच्यारोंदिसानमें
गये॥ सोसबठौरमेरेकहेबचनपढतभ
ये॥ तिनमेंपरणादनामोब्राम्हणअयो
ध्यानगरीमेंतुमकोंसुणाये॥ तबतुम
उत्तरदियोसोमोसोंआपकह्यो॥जब
मेंतुम्हारेबुलायबेकोंश्रेसेंउपायक
स्यो॥ तुमबिनाएकदिनमेंअयोध्यासें
इहाआवे यहबिस्त्राआरमेंहेनही॥प
तेरूपबरकेछलकरितुमकोंइह
बुलाये॥ अबमेंतुम्हारेचरणनकों
प्रणामकरतहों॥ अपराधकेछमन
हतेनहीकह्योहै॥ यहपवनसबैस
हीबिचरेहै सूर्यचंद्रमाहतेसेंह
है॥ जोमेंमनहैसोपापकेस्योहोइतो
मोदेवताहीमेरोप्राणनासकेरो॥ते
कहतहीपवनअंतरिछमेंबोल्यो॥ह
लयानेकछूहूअपराधकस्योनहीं
नबरसलोहैमयाकीरछाकरी
स्वयंबरकोउपायनेरोमिलिबेके
कस्योहै॥ अबयहदमयंतीनिद

है तासों निस्संक बिहार करो ऐसें पवनके कहतें ही आकाससों पुष्पनकी बृष्टि भई देवतानके नगारे बजे त्रिबिधि पवन चल्यो यह अद्भुत ता देषि नल दमयंती में संका छोडत भयो तापीछें नल नागराज कों सुमरण करि वह दिव्य वस्त्र धरि निजरूपकों प्राप्त भयो दमयंती हू दिव्य रूप नलकों देषि हर्षतें उच्छलकरि आलिंगन करत भई नलहू पुत्र कन्या हेतिनकों आसी बाद दियो फेरि मलीन अंगन करि सहित ऐसी दमयंती सों मिलि सोककों छोड़त भयो तब दमयंती की मा ताने यह बृतांत भीमराजा कों कह्यो जब भीम हू बोल्यो स्नान अलंकार कराय प्रभात राजा नल कों देषोंगो नल दमयंती दोऊ रात्रकों उहां बसे परस्पर आपके सब बृत्तांत कहे ऐसें दोऊ चतुर्थ वर्षमें मिलि आनंद पावत भये ॥ इति श्री नारद चंद्रिका यां वनपर्वणि नलोपाख्यानदौलतरामभाषा ॥ ४२ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ ताराज्ञ नल सुषपूर्बक बास करि

प्रभात होइ स्नान करि वस्त्र अलंकार धारण
करि दमयंती सहित सुसर पास जाय प्र
णाम करत भयो तब भीमराजा हू पुत्र व
त्सल मान करत भयो अरु नगर में न
ल को आयो सुणि बड़ो हर्ष भयो मारग कूं
सुगंध जल करि छिड़कत भये नगर को
धुजा पताकान करि सोभित कियो देव
मंदिरन में द्वार द्वार में अति उत्सव करत भ
ये यह प्रतीत सुणि बाहुक नल ही सो सम
झो तासों मिल्यो जब रितुपर्ण हू प्रसन्न भयो
ता पीछे नल हू रितुपर्ण कों बुलाय बहोत स
माधान कर्यो जब रितुपर्ण बोल्यो हे न
ल महाराज आपके पुत्रन सों मिले पहं
बड़ो आनंद भयो और मो हू सों तुम्हारो
कछू अपराध तो नही बण्यो तुम आपा
त बासर हे तामें मैं अगपान सों जो क
छू अपराध हू भयो होइ तो ताहि क्षमा करो
तब नल बोल्यो हे महाराज तुम मेरो
सु लघु हू अपराध कर्यो नही और जो कोई
अजाण तासों होइ तौ क्षमा ही है तुम्हारे
घर में आपने घर समान सुख सों बास क 87

सोहै॥ यह अश्वविद्यातुम्हारी धरोरहैसो
लीजै॥ असैंकहिरितुपर्णकोअश्वविद्यादी
नी॥ जबरितुपर्णहू नलकौ अक्षहृदय वि
द्यादैके औरसारथीलेआपकेपुरकौग
यो॥ तापीछैंनलहू कितनेकदिन कुंदिनपुर
मेंबासकरतभयो॥ इतिश्रीभारतसारवेदव्या
सोबनपर्वणिनलोपाख्यानत्रिंसतमोध्या
य॥ २३॥ ब्रह्दश्व उवाच॥ जापीछैंनल
राजाहू एकमासबासकरि भीमसों
आग्यामांगिसकुटमपरवारसहितपुर
कौ आवतभयो॥ एकदिब्यरथसोलह
हाथीपचासघोड़ाछहसैपयादइतनो
हीसकुटमसेनासौं पृथ्वीकौकंपावतपु
रमेंप्रवेसकरिपुष्करपासआयाणच
कजापराजानलकह्यौ हेपुष्करमेरेपा
सबहुतद्रब्यल्यायोहौं अरदमयंतीहै॥
सोमेरोद्रब्यदमयंतीतेरोराज॥ असै ए
कबाजीफेरिहूखेलेंगे॥ अरुजोयहद्यू
तनरुचैहतौ प्राण॥ द्यूतखेलै॥ असैंन
लकोबचनसुणिपुष्करपहलीजीत्यो
होसोहीजांणिबोल्यो॥ हे नलतुमदम
यंतीसहितजीयेअरुद्रब्यपैदाकर्योसो

बडीषुसीभई ॥ अबदमयंतीकौपापनष्ट
भयौ जासोंअबपांथनसहितदमयंती
मेरीसेवाकरैगी जैसैंइंद्रकीअपछराहै
याहीवास्तेंमैंहूतोकौनित्यपादिकरैहौ
[illegible]तसोंत्रभ्रमयोनही सोअबदमय
तीकौजीतिकैतिकैलेहूंगो ऐसेंब
चनसुणिनलषड्गसोंवाकौसिरकाटिबे
कीइच्छाकरिबोल्यो द्यूतकरपांछैबि
जेपायबोलैगोसोदेवेंगे ऐसेंकहि
कहिनलपुष्करसोंसरबश्वकीएक
बाजीकरिजीते तापीछैंहंसिकरिबो
लेयह सबराज्यमेरोहै तासों अरअध
मतदमयंतीकौंदेषिबेलायकहूनही
अबतपरवारसहितदमयंतीकौदास
है यहलैजीत्यो सोयहकापतैंकै[illegible]
नही केवलकलिकौ [illegible] कत्यौहैपेतजा
णेनही जासोंपरायोदासतोकौनही
लगावतहौ तासोंतूजोचेहेतोकौप्रा
णहूदेतहों अरुतेरे असंकोराज्यहूतो
कौदेतहों अरतेरेमेंप्रीतिहूघटेगीन
हीं तूमेरोभ्राताहै तासों ऐसैंनलस
माधानकरिपुष्करकौनिजनगरमावै ८८

कोंसीषदीनी॥ जबपुष्करनलकेपावनमें प्रणामकरिहाथजोडिबोल्यो॥ हेपुन्यश्लोक तेराअक्षयकीर्तिहो॥ सैंकडनवर्सनता ईजीवो॥ मेरे अपराधनोगिएनहीं॥ अरु प्राणसहितराज्यदियो॥ असैंनलकीस्तु तिकरिपुष्करएकमासउहांरहिपीछेंआ पकेपुरकोंगयो॥ तापीछेंनलहूआपके राज्यस्यंघासणपैवैठिपुरवासीनकोंस माधानकर्यो॥ जबपुरवासीसबबोले हे महाराज आज हमसबकों आनंदभयोहै जैसेंदेवताइंद्रकीसेवाकरें तैसेंतुम्हा रीसेवाकरेंगे॥ इतिश्रीभारतसारचंद्रिका यांबनपर्वणिनलोपाख्यानचत्वाविंस तिमोध्याय॥ २४॥ अहरुष्वउवाच॥ नल राजाबापुरमेंउत्सवकरिसेनाभेजिदम यंतीकोंबुलाई॥ जबभीमराजाहूसत्कार करिदमयंतीकोंभेजी पुत्रपुत्रीसहित दमयंतीआई॥ ताहिनलराजादेषिजैसेंइं द्रनंदनबनमेंइंद्राणीसहितविहारकरेंतै सेंकरतभयो॥ जंबूद्वीपकेसबराजानमें प्रसिद्धभयो॥ अनेकयज्ञिपूर्नद स

हितकरे॥ यातें हे महाराज युधिष्ठिर तुम हू
तैसें ही थोडे ही दिन पीछें पृथ्वीकरोगे॥ नल
द्यूत करि भार्यासहित एकाकी दुःख पायो
फेरि ऐसें पुनः पायो तुम तो द्रोपदी राणी
भीमादिक भ्रातान करिके तथा वेदवे
दांगपारंगत ब्राह्मणन सों तब वनमें ध
र्म सेवन करो हो॥ तासों तुम कों कहा
दुःख लेन है॥ यह कलिनासन इतिहास
सुणि धीरज धरो पुरुषार्थ अस्थिर जाणि
दैवके दोसतें विवेकी विपत्ति संपति
में दुःख सुख नहीं पावत हैं॥ यह नलचरि
त्र जो कहेंगे वा सुणेंगे तिनकों अलक्ष्
मी सपर्श न करैगी॥ अर्थ सिध्य होइगे पु
ज्यताकों प्राप्त होइगे॥ पुत्रपौत्रपसुवृ
द्धि होइगी॥ मनुष्यन में श्रेष्ठ नैरोग्य सु
खी होइगे॥ और हे महाराज युधिष्ठिर तु
म कों यह भय है जो दुर्योधन फेरि द्यूत
कों बुलावैगो॥ सो तौ भय कों मैं नास
करत हो॥ मैं अक्षहृदय जाणत हो सो
तुम कों द्योंगो॥ वैशंपायन उवाच॥ ऐसें
सुणि राजा युधिष्ठिर अक्षहृदय सीखवो। ८०

सोपह श्री नृपरूपमोकौ रूपाकरि दीनी जो॥ जबब्रह श्री नृपरूपदेके आपनौ पर्ससोनकौगयो॥ तबराजा हू अर्जुनकेत पस्याके समाचार सुणि भ्राताके बियो गकरि चिंताकरतभयो॥ इति श्री भारतम हचंद्रिकायांवनपर्वणि नलोपाख्यानसंपू र्णवर्णननाम पंचविंसतमो ध्यायः॥ २५॥ ॥ श्लोक॥ कर्कोटकस्य नागस्य दमयंत्यान लस्य च॥ ऋतुपर्णस्य राजर्षेः कीर्तनं क लिनासनं॥ वैशंपायनउवाच॥ युधिष्ठि रको चिंतायुत जांणि वेदव्यास आय रकै चिंतायुत कांरकस्यो॥ तबवे जबमाहाराजसतकारपाय आसन दव्यासराजासों सतकारपाय आसन पैवैठि बोले॥ हे महाराज तुम्हारे दुख्यवे अंतहोइगो॥ चिंतामतिकरो जैसे तुमदु खपायो हैं॥ तैसे आगे हरिश्चंद्र हू दुखपायो हो सो सुणो॥ त्रेतायुगमें अयोध्यामें सूर्यवंसी हरिश्चंद्रराजा राजकरतहे॥ ता कोदानधर्मदेखि इंद्र भयभीत होइ वि ष्णुके पास जाय विनती करतभयो॥ श्री रू नारायणअंतरतपंडमेरे रि ...

मेरीपिमेरीकृद्पकोपतहै ऐसेसुणिवि
श्वबोले तूतेरेलोककोजामेंवाकोभ्रष्ट
करेगो ऐसेइन्द्रसोंकहिविश्वामित्रको
सुमरणकस्यो जबआयेजोविश्वामित्र
तिनसोंबोले तुमहरिश्चन्द्रकेराज्यतें
भ्रष्टकरो निरपराधकोंपीडाकरतमेरे
बचननतेंतुमकोंदोसलगेगोनहीं ऐसें
नारायणकीआग्यापायविश्वामित्रहरि
श्चन्द्रपासआये तबराजसोंआसनमानपा
य आसनपेबैठे जबराजाबोल्यो मोकों
आग्याकीजेजोआपआग्याकरोगेसो
ही करोंगो तबविश्वामित्रबोले औरा
जातुमसत्यबादीहो तौमोकोंसर्बराज्यद
ऐसेंसुणिहरिश्चन्द्रसर्बराज्यदियो त
बराज्यकोंदानलेकेविश्वामित्रबोले
दक्षिणाहीनसंध्यातिलहीनतर्पणदक्षिणा
हीनदानयेनिस्फलहोतहैं तातेंदक्षिणा
दीजे जबराजानेतीनभारसुवर्णसंकल्प
कोरिजलमुनिकेहाथमेंदियो तबमुनि
बोले यहसबभागराज्यतोमेरोहैजासोंऔ
र धनल्यायकेदे जबराजाबचनबं
ड्योल्यो बाराणसीमेंमोकोपत्रसौंस ९०

तलेचलौतहां बेचिकेद्रव्य आवेसोलै। त
बविश्वामित्रकासीमैलेआयतीन्हो नतेजु
देजुदेबेचे रोहितपुत्रकोतो एकब्राह्मण
केबेच्यो। राणीकोएकब्राह्मणकोदासी
दे।नदियो। राजाकोचंडालकेबेच्यो। जब
चंडालमुरदानकेवस्त्रलेबेकोराष्यो। तब
कोईसमेमैराजाकोपुत्ररोहितब्राह्मणन
केबालकनसहितपुष्पलेबेकोबनमें
गयो। तहांवारोहितकोसर्पनेकाट्यो। ता
सोवहमर्यो। जबबालकननैब्राह्मणसे
सोकह्यो। तबब्राह्मणदुषितहोइ बनमें
गयो। राणीहू तहां आई सो मरे पुत्रको
आपकी आधीसाडीसोंढकिसमसान
मेंदग्धकरिबेकोल्याई। जबतहांचंडाल
कोराष्योहरजारहेहो। तानेआइकहीक
कोवस्त्रमोकोंदेयोदग्धकीजो। तब
राणीवहवस्त्रवाकोदेइ सागदियो। ता
पीछेफेरिराणीब्राह्मणकेघरलेवोक
रतरही। तहांरहतेकोईसमेमैंजलभरि
बेकोगंगागई। वेहांकासीराजकीराणी
हूस्नानकरिबेकोगईही। सोवानेस्नान

सभेमें कंठाभर्ण घाल्यो है ताकौं एक का
गभन्दी के भभसो वाकौं लैंडग्रो सो पाद
बहालीजलभरिबेकौं गई ही ताके मस्तक पै
धर्यो बहराणी स्नानकरि आईराजासों
कह्यो मेरो कंठाभर्ण चोर्यो गयो जबराजा
डौंडीपिटाई जानें राणीको कंठ चोर्यो है सो
मार्यो जाइगो यह सुणि पुरवासी राजा
सों कहत भये एक कंठाभर्ण देवदासी कै
सिरपर देख्यो है तबराजा कही आछोहे पु
रसमे ही वाने चुरायो है ताकौं बिनाबूझे मा
रिबेमें बिलंब मतिकरो ऐसें राजाकी
आग्या सुणि चाकर वा देवदासीकौं गंगा
तीर लेजाय चांडालकौं मारिबेकी आग्या
दीनी तब चांडाल वा आपके रापे चाकर
सौं कही तू मारि तब राजा हरिश्चन्द्र
जलमें डूबकादिबेकौं उठ्यो तब राणी राजा
कौ देखि बिलाप कर्यो हे राजा तू मेरो
नाथ कबलीपति हरिश्चन्द्र है सो माही कौं
केसें मारेगो औरनातो नमानेतो अबला
जाति अवध्य है याकौ तो देखो तब रा
जा बोल्यो मैं तो चांडालको दास हों वाकी ८१

च स्यहै हुस्तो करो। असै कहि कै नारायन स्वं
कौ तुम रूप करि बोल्यो। हे नारायण तुमन्त्र
न्मैं मोको विस्वामित्र गुरु मिलो सो
र तुम्हारी भक्ति सो। योंकहि के पज को महा
स्वरूप जितने ही मैं विष्णु वैकुंठनाथ चतुर्भु
ज रूप धारि राजा को हाथ आइ पकड्यो और
बोले हे राजा साहस मति करो मैं तेरे सत्व तें
संतुष्ट भयो यह तेरो पुत्र हू आयो है और
विस्वामित्र हू आयो है और तू जो बरचा
हे सो ही मांगि। तब हरिश्चन्द्र बोले जो
स्वामी तुम प्रसन्न हो तो यह बर द्यो जो मैं न
गर पुत्र स्त्री सहित बैकुंठ बास पावो जहां
सो फेरि संसार बंधन को पावे नहीं। असे
कहत ही विस्वामित्र बोले हे राजन मैं दक्षि
णा सहित सर्व सुदान पायो तातें तू हू पु
त्र बांधव सहित राज भोग पीछे नगरी
सहित बैकुंठ वास करेगो। असे कै
पे नारायण देव अंतरधान भये
हरिश्चन्द्र अयोध्या में आय राज्य करि
नगरी सहित बैकुंठ को गयो। तासों
युधिष्ठिर तुम भी सांचमति

१०
२
पीछैतुमहूवैसैंही तुपमोगोगे ऐसेंको
ह्याँसेंहू आपके आश्रमकौंगये [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥२॥ [illegible]
[illegible] नाथजीकैंकौ कुछक्रममेंराजायुधि
ष्ठिरकेपासआयकेदेवमुनिआये तब
उनकौंपूजनकरिकैंयुधिष्ठिरबोले तुम
कौंसमर्थकेन्यानेऔबुद्धिनैं हे बापलैकौ
णनेंभयो आपदेषोलोकहो तब मा
र्कंडे बोले एकसमैमेंआपके आश्रममें
सिष्यनकौंपढावतहो तासमैमेंबड़ोपव
नचल्यो ताकरियामेंसबमलहटउगये
तापीछैंकिंवालमें पृथ्वी आपमेंस
लधारभरिकरीतासौं आरोलमुद्रा
कहोइगये तबसबपृथ्वीजलमेंडूबि
गई तबमैंहूजलमेंगोतापातपाते
एकदिनापरबदकौ भ्रतदेष्यो वाके
जेंछ्वाकेपातमेंएकबालककौंदेष्यो
कैबालकेसंगउदरमेंगयो तबवा
केभितरनानादेषी केरमैंदीपायजी [illegible]

रषी॥ तबवामें प्रवेसकरिबेकी मनसाक
री जबही स्वांसकरी बाहिर आयौ॥ तबमैं
उनकौ बिष्नु जांणि स्तुतिकरत भयो॥ श्लो
क॥ करारविंदेन पदारविंदमुषारविंदेन
निवेशयंतं॥ वटस्यपत्रस्यपुटेशयानं॥ बा
लंमुकंदंमनसास्मरामि॥ १ ॥ कंठेसुमाल
तिलकादिभालंसौदर्पकोत्पाजितमेघ
जालं॥ रिपोःकरालंजलजामरालंबाल
मुकुंदंमनसास्मरामि॥ २॥ गोपालबालं
भुवनैकपालंसंसारमायामतिमोहजा
लं॥ पशोबिसालंशिशुपालकालं॥ शिशु
 ... बालंमुकंदंमनसास्मरामि॥ ३॥
ऐसैंमें स्तुतिकरीजबवेंहीनारायण
होइनाभिकमलतेंब्रह्माकौप्रगटकर्‍यौ
तबवह ब्रह्मा नानाप्रकारकी सृष्टिपै
दाकरत भयौ॥ ऐसैंहरिकी कृपातें अने
कबेर सृष्टिकी प्रलैउतपतिदेषी॥ तासैंतु
मभीहरिकों भजौ॥ ऐसैंकहि रामचरि
त्र श्रवणकराय अंतरधान भये॥ इति श्री
भारतसार चंद्रिकायांवनपर्वणि सप्तविं
शतितमोध्याय॥ २७॥ वैशंपायनउवाच॥
ताकेपीछेंकोइकसमैंलोमसमुनिइंद्रके
है

...स्थापि इइसोंसत्कारपायअर्जुन
३ सोंमिले अबअर्जुनसमंचारकहिप्राण
नाकरी आपइन्द्र[illegible]मेजायराजायुधिष्ठि
रलोककहौमे इहां अस्त्राभ्यासकरौहौसो
पांचबर्षरहि फेरिकैलासयात्रामेतुम्हा
रपासआऊंगो जौलौंतुमऔरतीर्थ
यात्राकरौ ऐसेसमंचारलैलोमसमुनि
अर्जुनकेबिरहकरिव्याकुलयुधिष्ठिर
ताकेपासकाम्यकबनमेंआये वा
सोंसत्कारपाय अर्जुनजोसमंचारक
हेहेसोइइकीलमेंतपकस्यो ताकोः
आदिलैसर्बसमंचारकहियुधिष्ठिरसों
फेरियहांअबहमतीर्थयात्राकोचलो
तबलोमसमुनिकीआग्यापासोंब्रह्मन
हांतेनकोंउलटफेरिधौम्यनारदपर्वत
लोमससहितपूर्बदिसाकोतीर्थयात्रा
करिबेकोचले तहां नैमषारन्यप्रयाग
काशीहोइगयाकोगये चातुर्मास्यग
यामेबासकरिगये महानदमध्ववणक
ा उहांतेगंगासागरजायदक्षिण
...चले तहां अकृतव्रणके आश्रम
आयतउनकीआग्यापाय...

मेंपरसुरामुकेदरसणकरे॥उनकोआ
शीर्वादपायगोदावरीस्नानकरिद्रवड
देसमेंजाय अगस्ततीर्थमेंस्नानकरिना
रीतीर्थआये॥उहांअर्जुनकोप्रभावद
सुणिपश्चिमदिसामेंप्रभासतीर्थआये
तहांबलदेवश्रीकृष्णआययुधिष्टिरको
सत्कारकस्यो॥जबद्वादसदिनउहांबा
सकस्यो॥उहांतेविदर्भदेसमेंजायपयोष्णी
स्नानकरिआस्रमनकोपूजनकरिदान
देतदेतउत्तरदिसाकेतीर्थकरतकरतसु
बाहुपुरकोआये॥इतिश्रीभारतसारचंद्रि
कायांबनपर्वणितीर्थयात्रावर्णनंनामअ
ष्टबिंसतमोध्याय॥२८॥ वैशंपायनउवाच
तापीकेअर्जुनकीतपस्याइंद्रलोकग
वनकोसबवृत्तांतवेदव्याससोंसुणि
धृतराष्ट्रदुष्यतभये॥तापीकपांडव
सुबाहुपुरमेंरथादिकसबराखिमयुधि
ष्टिरपावननहींहिमालयपेचढे॥पत्य
रनकोपावनसोंचूर्णकरतमार्गसु
धारतआगभीमचल्यो॥तापीछयुधि
ष्टिरादिकसर्वचलतभये॥ऐसैचल
तगंधमादिनपर्वतकोगये॥तहांपर्वत

की नंदा कैसे न्हाल्हु राधा कुजनमे हो
पृथ्वी मृत्युलोक विंगिरी ताकोन कुलउथ
र्ड़ तब भीम के सुमरण करि घटो कच
पुत्र सहित आयो तब परवार रा
जा सत नपै तौ ब्राह्मण चढे द्रोपदी सहित
याउ बन को घटोत्कच चढावत भयो गै
से चलते भीम समुद्र ने मार्ग बनाकर ब
द्रिकाश्रम को लेगये उहां गंगा स्नान
किये आपी श्री विदुरसरोवर के कमल
न को सिंगार करि द्रोपदी यातिसो मित
होइ के तासकी सिला न पैस व बैठत
भये उहा इस सरोवर तै बहत आयो
येक कमल ताको देषि द्रोपदी भीम सों
बोली ऐसे कमल मो को ल्याय
देउ तब भीम पवन के सनमुष चल्यो सो
गंध मादन पै चढत सब के नाद सौ गं
ध बांध कैन रयु सब न को मोहित करत
होत भयो श्वकरू पाकी गर्जना तै पसु पंछी
याकर हो इ भजत भये तहा सुवर्णके
दली बन में बसत हनुमन्त तह गर्जना
को सब्दु सुनि विचारत भये येह कोण
है जब उहि दिसको आय को आवा जो

णियाकेउपकारकरिबेकोसंकीर्णमा
र्गमेंसोइरहे।तहांभीमहूषेदमिटायबे
कोसुर्बणकदलीबनकेसरोवरमेंस्ना
नपानकरतभये॥तापीछेंउनमत्तग
जराजज्योंचलतमार्गमेंसोयेहनुमं
तकोंदेषिबोल्या॥हेबानरमेरेमार्गसें
सरकिजा॥नहीतोतेरेसरीरकेटूकटू
करोंगो॥तबवेहनुमानविषोलिकछु
नउठायमंदनेरबाणीसोंबोले
आकारतोउत्तमकोसोहे।परं
आचरणनीचकोसोहे।जोअवथागर्जे
करिजीवनकोबिषादकरेहे।मेरी
कौबिषाकोंनिशकरिकौनकरिबे
योहै॥सोतेंअवाजगाइकहासु
तकियो॥यहरेवमनिहेतमनुष्य
नातेंजा॥तेरोकहाकामहे।मेंसुषपू
र्वकनिद्राकरोंगो॥येसबजीवसुषसें
गंगजवनीमनिजनामकुलमांको
ःधिकेजावो॥ऐसेंसुणभीमक
ही।जोसर्बदेहधारीनमंषमोत्माविं
राजजेहै।सोजीवतकोउलो

वउनकही जो उ[?] घन ही तौ पूछ्यौ कौ उण
पमार्ग करि कै जावौ ॥ जब जाम कमर
बांधि पूछ्यौ उठाय बैकौं अनेक जत्न क
रे पे तिलमात्र सरकी नहीं ॥ तब लज्जित
होइ चौंस्यौ दिसा नकौं देषि करी जामे
कौं कोऊ देष्यो तौ नहीं ॥ ऐसें याकौं ल
ज्जित देषि हनुमंत कही ॥ मैं तेरा बड़ा भ्र
ता हौं ॥ श्रीरामचंद्र कौ किंकर हों ते
रे देषिबे की उत्कंठा करि आयौ हों ता
तें ह भीम ल ज्जा मति करे ॥ ऐसें सुणि प
में आनंदित हो इहाथ जोडि भीम बोल्यो
मैं मा या करि तुम्हारो लघुरूप देषि प्र
सन्न भयौ ॥ पर तुजा रूप करि समुद्र उ
ल्लंघन कर्यो ताके देषिबे की लालसा
है ॥ ऐसें सुणि हनुमंत वह[?] साल रू
प दिषायौ ॥ जब भीमभय भीत हो इच
र्णन मे प्रणाम करि स्तुति करी ॥ तब हनु
मंत भीम कौं भय जुक्त स्तुति करत जा
णि वैसो ही लघुरूप करि सिर संघि मिल
त भये ॥ जब फेरि भीम बोले हे कपि बीर
राम चंद्र की सेना में तुम कहा तैं कौ कर्यो

रूअधिकदीर्घरूपहो॥ तबहनुमंतकही
रामचंद्रजूकीसेनामेंहे॥ अरुरावणकी
हूसेनामेंहे॥ ऐसेंसुणिभीमसंदेहकस्यो
सोजांणिकेंहनुमंतकहीतेरेंसंदेहहेतातें
मेरीसाथचलोमेंबताऊं तबसंगचलतें
चलतेंएकसरोवरदेषिभीमकही॥ आप
करौतौमेंस्नानकरौ॥ तबहनुमंतकही
करो॥ सोभीमस्नानकरतहींइंवतहाह
कारकस्यो॥ ताहिदेषिहनुमंतपूछवाके
कमरसोंलपेटिनिकास्यो॥ जबभीमकह
मेंतो ऐसोसरोवरदेष्योनहीं॥ तबहनु
मंतकहीरावणकोभ्रातकुंभकर्णहोंता
को॥ रामचंद्रबाणतेंकाट्यो जाकोरूंड
हे॥ सोवर्षाकेजलसोंभस्योहे॥ सोतोहि
दिषावतहों॥ ऐसेंकहिपांवकेअंगूठा
सोंपकडिटटोकरिदीनो॥ सोदेषिभीम
सिरकेंपायचकितभयो॥ तबहनुमंतक
ही वासमेंकेपराक्रमकोपारावारनहीं
अबकेसमेंतूहूपराक्रमीहेजोधीर्ज
छोड्योनहीं॥ अरुतबतसत्रुनसोंजुद्धक
तेंगर्जनाकरेगो जबतेरीगर्जनामेंमे

०१ री हू गर्जना मिलैगी ॥ अरु अर्जुन तुह्यक
रैगो जब वाकी धुजा में बैठि बैरीनको ॥
निस्तेज करैगो ॥ ऐसे कहि अंतरध्यान
भये ॥ तापीछे भामहू ह ८८८ मिलनको
हर्ष अरु बियोगको दुष्य तासहित आगे
जाइ सौगंधिक बनकौ देष्यो ॥ तहां सुब
र्णपद्मनी देषी उहांके कमल लेबेलगे
तब जक्ष राक्षस याके रोकिबेको सिलो
नकी वर्षा करी ॥ सो गदाप्रहार करि सि
लोनको षंड ८८ ऐ उनको भगाय दिये
फेरि शंष बजाय गर्जना करी ता करि गं
धर्वनको हू भजाये ॥ तब वा बनको पाल
क मणिमान गंधर्व आयो ताहि जीति सौ
गंधिक सुवर्ण कमल ल्याय द्रोपदी ॥
कों दिये ॥ उन पुष्पन करि द्रोपदी श्रृंगा
र करि बहुत प्रसन्न भई ॥ फेरि युधिष्ठि
र परिवार सहित घटोत्कच पै चढि नर
नारायण आश्रममें जाय आरि वर्ष
पूर्ण करि ॥ उहां तें व्रषपर्वा के आश्रममें
जाय गंधमादन कों आये ॥ उहां एक
जटासुर राक्षस ब्रह्मचारी को रूप धारि ए

इनकेसाथवसतभयो॥जबघटोत्कचस
हितभीमसिकारकौंगयो॥तबमायाक
रिइनकेसस्त्रहरणकरितीन्योंभ्रातांन
कोंहरिलेगयो॥तहांमार्गमेंराजायुधि
ष्टिरतोवाकीगतिरोकी॥नकुलसहदे
वमृवानकेप्रहारकरिब्याकुलकस्यो
द्रोपदीकोलाहलकस्योसोसुणिभीम
आइवाकोप्रमलोकपहुंचायो॥ऐसेंकरि
फेरिगंधमादनमेंआपवसे॥इतिश्रीभा
रतसारचंद्रिकायां॥आरन्यपर्वणिएकोनत्रं
सतिमोध्याय॥ २९॥वैशंपायनउवाच॥
तापीकेपंचमवर्षलग्योजबकैलासदेषि
बेकोंगये॥उहांमार्गमेंदिव्यवननकेपुष्प
लेबेकोंभीमगयो॥तबयक्षपुरुकरिबे
कोंआये॥तहांसबयक्षनकोंभीमलक्ष
पुरुकरिपटकिपटकिजीते॥जबउन॥
कोनायकमणिमानयक्षपुरुकरिवेकों
आयो॥ताकोंभीमभुजानसोंपकडिभ्र
मायकेपटक्योसोमूर्छितभयो॥तबकु
बेरआपलइतेओरयक्षहेतिनकोंनि
वारणकरिइनकोंसनमानकस्यो॥फे
रिकैलासदिषायविदाकरे॥

तरतही दिव्यरथकोसबकुरिण वाकी
फरैषतही मातलीसहितइन्द्रकोरथमें
र्जुनकोदेष्यो ॥ जबसबही ठाड़ेहोइरहे
बरथपरबततेंउतरि युधिष्ठिरकेपासआ
यो तहां अर्जुनवारथतेंउतरि महाराज
युधिष्ठिरकेचरणनमेंप्रणामकर्यो ॥ ता
पीछेसबही अर्जुनसों मिलि आनंदि
तहोइउहांबैठे ॥ जबयुधिष्ठिर बोले
लोमसमुनिआयतेरे समाचारकहेजा
पीछेंकहाभयोसोकहो ॥ जबअर्जुनबो
लो मोकोसुरेंद्र अस्त्रविद्यापढायक
हीगुरदक्षिणादेउ ॥ तबमेंकहीआग्याक
रो सोहीदेउं ॥ ऐसेंसुणिइन्द्र बोले ॥ पौलो
मकालकेयनिवातकवचयेघोरदान
वहिरणपुरवासीदेवतानकेसत्रुहैं
सोब्रह्माकेवरतेंदेवतानसोंतो अवध्य
हैंतातेंतुमअस्त्रबलकरिइनकोंमा
रो ॥ जबमेंउनकोंप्रणामकरि आग्या
अंगीकारकरी ॥ तबइन्द्र आपकोकि
रीटतैंमेरेसिरपेधर्यो अरमेंजान्
यो आपकेहीहाथसोंमुजबंधबांधे
स्तु दिये

मकवचदियोदेवतांनकोंसंगभेजे॥ज
बमेंजापउनकेनगरकोंघेर्यो॥तब
उहांलपुरु कोंसाठिहजारदांनवसेना
सहितनिकसे॥तहांउनसोंबहुतदिन
लोंयुद्ध भयो॥तापाछें ब्रह्मास्त्रकरिकें
दग्धकरे॥फेरिजायइंद्रकोंप्रणांमक
र्यो॥जबउनबिजेकोंआसीर्वाददेप
बिदाकियो॥तबउहांतेंतुम्हारेपासर
आयो॥जातेंअबपामातलीकोंआदर
पूर्बकबिदाकरो॥जबयुधिष्ठिरवा
कोंसनमांनकरिबिदाकर्यो॥फेरियु
धिष्ठिरकीआग्यातेंअर्जुनअस्त्रबिद्या
दिषायबेकोंआरंभकर्यो॥तबनार
दमुनिआयकहीइनअस्त्रनकोंप्रम
नसमनुनबिनाप्रयोगनकरणों॥ओ
संकहिमनेंकियो॥तापाछेंपांडवग
धमादनतेंउतरतभये॥तहांतेंउत
तेंगहनबनमेंपर्बतसमानभुजंग
राजनेंभीमकोंपकड्यो॥वाकेबंधन
तेंभीमनेंकहुंहालिसक्योनहीं॥औ
नाईव्याकुलभये

स्तुति करि प्रार्थना करी पाकों के सै को
ाग सम अग्ने ही दुषित है तब नाग बो
ल्यो मेरे प्रस्न को उत्तर दे जब छोडों
तब राजा कह्यो प्रस्न कीजे जब नाग क
ही ब्राह्मण कोण सूद्र कोण मित्र कोण
सत्रु कोण पंडित कोण मूर्ष कोण सूर
कोण कायर कोण सत्य कहा असत्य
कहा धर्म कहा पाप कहा सुष कहा दु
ष कहा मुक्ति कहा संसार कहा ऐसे
नाग को दोइ दोइ प्रस्न सुण्यन हाराजा पु
धिष्टर हस्यत हो उत्तर देत भयो जाको
निष्कपट मन होइ सो ब्राह्मण जो श्रेष्ट
धर्म को त्याग करि दुराचारी होइ सो सू
द्र उत्तम कर्म करिबे को जो उद्यम कहै
सो मित्र है प्रमाद सो ही सत्रु है बधर्मो
राज्य ऐ सो पंडित इनको ग्यान नहीं सो
मूर्ष मन में बसि के याको बिनास करि बे
वाले जे कामादिक सत्रु तिन कों जीते सो
सूर है स्त्रीन के नेत्र कटाछन करि धीज
छोडे सो कायर जा में जीवन को न लोहि
त होय सो सत्य नाही है जो में जीवन को

बुरोहो॥ सोसत्य है असत्य है॥ वेदसास्त्र के अनकूलजो आचर्ण सो धर्म॥ औरकुपात्रन को वारदीई न को दान और सत्पात्र को उत्तम धर्म है॥ उपकारीन सों द्रोह बिस्वासघात आपके पूज्य होइ तिनसों मन में शत्रुता राखिबो येह पाप॥ सर्व बस्तुन में मध्य स्परहिबो सो सुख है॥ कुबिस्तार करिबो सो दुष्य॥ चित्त ग्रह आत्मा इनकी येकता करिबो सो मुक्ति है॥ हे सारंगध्वजि जो बुद्धि सो संसार है॥ ऐसें प्रस्नन को उत्तर देत ही राजा भीम को कुवा देष्यो॥ नाग नजर आयो नहीं॥ तापौं कूं बिमांन में बेठ्यो को इकदेवा जय जय सबद करि पुष्प बर्षा करि राजा सों बोल्यो॥ राजा तूंहि मार बंस को दीपक है॥ मैं नहुष नाम तुम्हारे पूर्व पुरषा है तपो बलतें इन्द्र सन पायो॥ उहां सब रिषिन को पालकी में जोइ इन्द्राणी के भोग लालसा करि चल्यो॥ तहां आगे जु पेजे अगस्त मुनि तिनको चर्ण सपरस करि सो सी घ्रता को॥ त

करिश्रापदियो तू हीसर्प हो॥ जब मैं श्रापके
अंतकी प्रार्थनाकरी॥ तब मुनि बोले तु
मीमकों जब पकडिराजायुधिष्टिर सो प्र
श्नकरैगो॥ तब प्रश्ननकों उत्तर ॥ एत
हीदिव्यदेह पावैगो॥ सो हे पुत्र मैं तेरे बच
ननतें दिव्य देह पाई॥ सो अब तुम॥ जा
यबिजैकोयत्न करो बिजय होइगी॥ ऐसे
कहि सुर्गलोककोगयो॥ नहुस कों उधा
रकरि पाछे पांडव औरह चरित्र करतक
रतफेरि काम्यकबनकों आये॥ तहां श्री
कृष्णनारद मार्कंडेय आपराजाकों अने
ककथा नकरि समाधान करि जैसे आ
ये हे तैसे ही गये॥ इति श्री भारत भा
षा का बनपर्व्वणि समाप्तमः॥ ३०॥
बैसंपायन उवाच॥ द्रोपदी सहित पां
डवनकों काम्यकबनमें सोहत आये
सुनि॥ दुर्योधन कर्णकों बुलायसमल
तकरी॥ जो आपसहित आयपांडव
नकों देखपो॥ और अपणी राजलक्ष्मी
दिखावणी॥ ऐसें बिचार करि धृतराष्टृ
सों छलकरि पूछ्यो॥ गाइनके ग्वालक ॥८८॥

हेहैं जो गाय बेल पुष्ट बहुत भये हैं तासों
आपकी आग्या होइ तो देषि आऊं। जब
धृतराष्ट्र आग्या दीनी। ऐसे आग्या पाय
कर्णसहित संपूर्ण सेना ले जनाने सहि
त है तब बन को गये। तहां पांडवन के समीप
सरोवर की तीर अधिकारीन को डेरा क
रिबे को भेजे। जब उहां डेरा होते ही चित्र
सेन गंधर्व के सेवक निवारण करत भये
तब यह सुनि दुर्योधन युद्ध करिबे को आ
यो। तहां सेना सहित चित्रसेन गंधर्व को
अरु कौरवन के घोर संग्राम भयो। जब
चित्रसेन कर्णादिकन को बिरथ करि
सर्व भाईन सहित दुर्योधन को कोपक
रि रथन में बांधि ले चले। वा दिन रा
जा युधिष्ठिर यज्ञदीक्षा में हो। सो उहां
अनाथवत कौरवन की स्त्री पुकारत
आई। तिनसों सब वृत्तांत सुनि राजा
भाईन सहित भीमसेन को दुर्योध
और भाईन सहित भीमसेन को दुर्योध
न के छुडायबे की आग्या करी। तब चारों
भाई आकास में जाते गंधर्वन पै बिपरी
त बाणधारा को बर्सत भये। जब ग

भ०म०
१६६

बनकौंब्याकुलदेषि चित्रसेनपांड
वेवा एवसोंकरि मायासों श्रस्त्रनका
धकारकस्यौ ॥ तब अर्जुन अश्त्र वे
चाकौंद्दरकस्यौ ॥ तापाछै द्दूमलाषगं
धर्ब्बमरे ॥ जबचित्रसेनगंदृपुढमे चिम
चित्रगतिक नैं सनमुष आयो ॥ तबअ
नवाकौं मित्रजानिकोमलबाणनकौ
रिब्याकुलकस्यौ ॥ जब चित्रसेनबोल्यो
हे अर्जुन तूं स्वार्थमे कैसे मोहपावैहै
यहदुर्योधनतुमकौं लज्जाहीनजानि
तिरस्कारकरिबेकौं आयौहो ताकौं इद्र
कीआगपसोंमैं बांधिलेजातहौं ॥ जाकौं
छुडायबेकौं तूं कपाकस्तकरैहै ॥ औरतु
म्हारे दुष्ष दैबेकौं मल कर्णभागिगयो
ताकौं हरतहौं सोपायोनही ॥ ऐसेंसु
नि अर्जुन बोल्यो ॥ जाकौं आपजीतिबौ
विचारे तावैरीकौं औरमारिबोवि
चारे यह समर्थ होइ तौसोसमर्थो जाय
नहीं ॥ आपुसकी लडाइमैं तौहमपांच
भवै वैरीसोंहै ॥ औरपैलेसों लडाईहो
इतामैंएकसोपांचहै ॥ जासों औरहि

सेसबार्तामेंकहाहे॥ महाराजयुधिष्टिर
कीआग्याछुडायवेकीमंईसोमेंअंगीका
रकरी॥असैंसुणिचित्रसेनदुर्योधनादि
कनाईनकोंछोडिबोलियुधिष्टिरकोंयस
मिमिंपरकिदिये॥तापीछेंइंद्रलोकमेंजाय
इंद्रसोंसबसौंनकही॥जबइंद्रअर्जुनके
मारवारहेतिनकोंअमतब्रिष्टिकरिजि
वाये॥उहांयुधिष्टिरदुर्योधनकोंनीचाई
दिकियेंदेषिकहीहेंनाई अैसेंकुकर्मक
रिमतिकरियो॥यहसुणिदुर्योधनलज्या
करिरूदयविदीर्णहोइगंगातीरआयवि
चारतभयो॥वैरीननेंछुडायोयाजीजे
तेतोमरणहीश्रेष्टहेयहनिहचेंकरि
दर्भासनबिछायअैनसनब्रतलेके
बैठ्यौ॥तहांकोईकसमैंकिंण्याकुचोजो
करणसेंदुस्सासनसकुनसहितआय
समझाये॥पेंदुर्योधनमान्यानहीं॥तब
पातालवासीदानवनकेसाहोयदर्
भासनपेंबेठ्योंपकडिमंगायबोले
देदुर्योधनतुंउदासीनतामतिल्यावे

गे॥ ऐसैं कहि युद्धमें दृढचित्त ह्वै करि वाइंद्र
नवननैं हस्तिनापुर कौं भेज्यो॥ उहां आइ
सभा करि बैठे भीष्म बो॥ हे राजा दुर्योधन
तेरी कुसलसों बडी खुसी हुई॥ और तें क
र्ण अर्जुन को पराक्रम हू नेत्रनसों देख्यो॥ ता
सों अब हू पांडवन कौं विभाग दै कै कुल की
रक्षा जोग्य है॥ अन्यथा कि पैं नास होइगो
ऐसैं कह्यो भीष्म को सुणि अंगीकार कियो
नहीं॥ जब बैठि उठि अपने स्थान न गये॥ तापी
छैं देवन को बचन यादि करि दुर्योधन
कर्णसों बोल्यो॥ जुवा करि युधिष्टिर कौं
जीत्यो॥ अब राजसूय के धर्मसों युधिष्ठि
र कौं जीतणो॥ जामें भीम अर्जुन को सोना
ही दिग्विजै करिबे कौं न समर्थ है॥ सो तू
राजसूय कराय॥ ऐसैं कहि कर्ण कौं दिग
विजै कौं भेज्यो॥ आप पुरोहित कौं बुला
इ कही राजसूय करावो॥ जब प्रोहित बो
ल्यो॥ एक सम्राट रहतैं दूसरो सम्राट है
नहीं॥ तातें राजसूय के तुल्य और यज्ञ
करे॥ ऐसैं पुरोहित कौ वचन सुणि राज
सूय समान ही और यज्ञ कियो॥ ता यज्ञ के स

मैंयुधिष्टिरकोंमारितोकौंराजस्थपकराऊ
जबमैंआनंदपाऊं॥अर्जुनकोंमारेबिन
पावैहूनहींध्रुवाकूंगो॥ऐसैंकर्णकीप्रतग्या
सुणिकेंदुर्योधनआपकोबिजेहीमांनत
भयो॥इतिश्रीभारतसारचंद्रिकायांबनपर्वणिए
कत्रंलतमोध्याय॥ ३०॥वैशंपायनउवाच॥॥
तापीकेसुपनमैंभगवानेंबिनतीकरीहेराज
नसिकारतैंमहारोवंसक्षीणभयो॥यहसु
णिद्रोपालयुधिष्टिरकाम्यकबनतेंतृणबा
धसरआये॥तहांतृणव्यंधकेआश्रममें
द्रोपदीकोंराषिआपसिकारकोंगये॥उहां
मार्गमेंजयध्रतसेनासहितसाल्वदेसवि
वाहकोंजायहो॥सोद्रोपदीकोंएकाकी
देषिरथमैंधरिचलतभयो॥जबद्रोपदी
कोलाहलकियो॥सोसुणिपांचोपांडव
आये॥तिनसोंजयध्रतहूसेनासहितजुध
करिबेकोंतयारभयो॥तेबअर्जुनकों
बाणबर्षाकरिकितनेकतोमारेगये॥कि
तनेकभागिगये॥औरभीमगदा
रिजयध्रतकोंबिरथकरिबां
रपासल्यायो॥जबयुधिष्टिरसोंजय

कह्यो मैं तुम्हारो दास हौं ॥ तब भीमसेनं महा
२ जु कही यह है तौ बधलायक पै तु म्हाकै
दैषियाकौं जीवदान द्यो ॥ ऐसें युधिष्टिर
की आग्या सुनि भीम छोड्यो ॥ पतिन कौ ज
यतें हर्षित द्रौपदी तासहित पांडव अप
नै आश्रम कौं आये ॥ तापाछैं जय धनंजय
गंगातीर तप तें महादेव कौं प्रसन्न कीनौ
सब पांडवन कौं जीतौं यह बर मांगत भ
ये ॥ तब महादेव कही च्यारि पांडवन कौं
एक दिन जीतैगो ॥ और श्रीकृष्ण कौं मि
त्रे अर्जुन जा तैं मोहीं कौं जीत्यो तासों
और कौंन जीतै ॥ ऐसें शिव बरदान देय
तरध्यान भये ॥ जब जय धनंजय बर पाय
हर्षित पुर कौं आयो ॥ और सब बन में रहतें
पांडव तिनसों एक ब्राह्मण आय बोल्यो
एक मृग मेरी अरणी कौं सींग में अटको
लियें जात है ताहि तुम ल्याय द्यो ॥ तब
पांडव धनुष बाण लें वा मृग के पीछैं
गये सो मृग कौं देख्यो नहीं ॥ त्रषा लगी
तब कोई एक बन के तट में नकुल जल लेबे
गये सो आयो नहीं ॥

तिनसबनकेपीके राजायुधिष्टिरगयेसो॥
च्यारौंनकोजलकीतीरअचेतगिरेदेषे॥त
बराजाबिचास्योयहकहाजबहीआकास
बाणीभई॥हेराजामेंजलहोंसोमेरेप्रश्नको
दियेबिनाजलपीवेतोकौमूत्युहोइ॥
जासोतूउत्तरदियेपाछे जलपी॥यहसुनि
धिष्टिरकही बांधवनकोमरेदेषिजलपी
कहाकामहे॥तोभीतुम्हारेप्रश्नको
गो॥ऐसेकहतहीप्रश्नबाणीभई॥
तिनकोउत्तरराजादेतभयो॥देवकौण॥स
केबचनतेंजाएपे आत्मासोदेव॥देवक
र॥प्राचीनकर्मसोदेव॥ताकोसुरअसुर
उल्लंघिसकेनहीं॥धन्यकोण॥बरोबर
जाकीसेवाकरें सोधन्य॥सुचिकोण
सत्यबचनरूपीगंगाजलजोन्हायसोसु
चि॥मोक्षकहा॥सर्ववासनारहितजोचित
सोहीमोक्ष॥लक्ष्मीकहा॥सर्वसंतोषसो
बिपत्तिकहा॥बिपुलतृष्णासोही
॥श्लोक॥कोमोदतेकिमाश्चर्यका
वार्त्ताकःपथस्मतः॥ब्रूहित्वंधर्मराजेंद्र
वार्त्तांवतिबांधव॥१॥देव

साकंप्रचंतिसुखहे॥ अनंतणीचामवासीच
सवांरिचरंमोदते २॥ अहर्निशंचभूतानि
गच्छंतिचयमालये॥ शेषाः स्थावरमिच्छंति
किमाश्चर्यमतःपरं ३॥ अस्मिन्महामोह
मयेकटाहे सूर्याग्निनारात्रिदिवेंधनेनमा
सस्वर्दवीपरिघट्टनेन भूतानिकालःप
चतीतिवार्ता ४॥ श्रुतिर्विभिन्नाःस्मृत
योपिभिन्ना॥ नेकोमुनिर्यस्यवचःप्रमाणं
धर्मस्यतत्वंनिहितंगुहायांमहाजनोयेन
गतःसपंथा ५॥ अर्थ॥ हेराजायुधिष्ठिर॥ आ
नंदकौंकौनपावेहे॥ आश्चर्यकहा॥ वार्त्ता
कौनकौंकहियें॥ मार्गकहा॥ ऐसेंप्रश्नसु
णिराजाबोल्यो॥ जापुरुषकेरिणनही प
रदेसगवननहीकरै॥ अरुच्यारिघडीदि
नरहेंहेंआपकेघरमेंसाकरूपचायकेपाय
सोहीखुसीहै॥ १॥ तिदिनप्राणनकौंयम
केयहांजातदेखि॥ आपकोंथिरमानें याम
यापआश्चर्यकहा॥ २॥ यासंसारमेंमहा
नाहहेसोहीताकेडाहहेंसूर्यअग्निहें रा
त्रिदिनईंधनहे॥ महीनाहेसोहीकौंचा
हे ताकरिकालपरमपार्णी

है॥पासिवाइवार्ताकहा॥३॥श्रुतिमेंहूमार्ग
जुदेजुदेस्मृतिहूमेंजुदे॥मुनिहूकेअनेक
वचन॥अरु धर्मकोतत्वगुफामेंथापित
कियो॥तासोंबडेजनजामार्गचलेसोहीमा
र्ग॥४॥५॥ फेरिआकासवाणीभई॥राजा
मेंउत्तरतेंप्रसन्नभयोसोमेरेबरतेंतेरे
इनभ्रातानमेंतेंएकजीवो॥जवरा
हीनकुलबहुतप्यारोहै सोजीवो॥सहो
दरभ्रातानकोंतेंदूमातभ्रातामेंअ
प्रीतिदेषिधर्मप्रसन्नतासोंसा
ईबोल्यो॥हेराजामेंधर्महोंतेमेरो
सोतेरेसुपरूपीचंभइस्माकेब
तेंमेरोइदयअतिसीतलभयो॥
कोदेषिवेकोहरिणहोइ॰
तानमेंप्रीतिदेषिवेकोजलपानकरते
इनकोंहरे॥अबतेरीदयाधर्मसत्यतेस
तुष्टहोइबरदेतहोंनबिजेकोपावेगो॥
धर्मबुध्यरहोसबैभ्राताजीवो॥औरमे
रीकृपातेंअलक्षितहोइएक
रनगरमेंबासकरो॥ऐसेंकहि॰
देयधर्मअंतरध्यानभयो॥तापी

हूमेंश्रानानकोंसंगलें ३ युधिष्टिर आश्रम
शापवाब्राह्मणकैंप्राणसमान आरणी दे
विद कियो ॥ ताउपरांतराजाबारहबर्ष
पूरेभये जाणिधौम्यमुनिकोंअग्निहोत्र
माहि तएकबर्षबासकरिबेकोंउपदनग
कोंभेजतभये ३ इंद्रसेनआदिबालनकों
आदिकपरवारसहितद्वारिकाकोंभेजे ॥
आपगुप्तबिहारकरिबेकोंतपारभये ॥
...दोहा ॥ भाषाभारथसार
यहहै बनपर्बसुखैन रावचांदस्यघको
...कभपाय कियोकबिचैन ॥ इतिश्रीन
...सार चंद्रिकायांबनपर्बणिद्वात्रंशत
...ध्यायः ॥ ३२ ॥ बनपर्बसमाप्तः ॥ ॥

॥श्रीगणेशायनमः॥ अथ भारतभाख
विराट पर्वकी लिख्यते॥ वैशंपाय
नउवाच॥ ताउपरांतपांचोंभाई द्रोपदी
सहितविराट नगरकेसमीपगये तहां
अर्जुनबोल्यो॥ आपांविराट के पासगुप्त
विधिकरिरहेंगे॥ तबयुधि
ष्ठिरबोले॥ मैंयुधिष्ठिर कौंपडितप्रिया॥ चो
ले॥ मैंयुधिष्ठिर कौंपडिलिया
देवालोंकेनामां॥ ब्राह्मणहों ऐसें
॥भीमबोल्यो॥ मैंबल्लभ
सरहोइरहोंगो॥ अर्जुन
ल्यो॥ मैंब्रहनट नामधरिराजकुमा
कोंनचगानसिखाइ बेकोहोइर
॥सहदेवबोल्यो॥ मैंतंत्रपालना
रि गायनबेलकोपालहोइरहों
ग्रंथकनामकरि
॥
वाल्योहोइरहोंगो॥
सैरंध्रीहोइ
ली॥ मा०
रानीपासरहोंगी॥ ऐसेंमन
कुधौम्यप्रोहितराजाकोरा
रिबोकहिअग्निहोत्रलेद्रुप
रकोंगयो॥ औरइन्द्रसेना

रा६०॥ कल्पपरिवारहार काकैौगये तापी
२५ उवसमाझ्त्र केबिवर मेंआपकेसख
कोधरिएकमुरराउ होतटकाप ऐसे
संकरिपरस्परसंकेतनामसबनकेधरे
प १ जयंत २ विजय ३ जयसेन ४ जय
द्वल ५ ऐसेगुप्तसंगपाकरियुधिष्ठिर
आसणको वसकरि रत्नन केपासाले
बिराटसभामेंगये तिन्हेंदेषिराजापू
छ्यो तुमकोणहो तबयुधिष्ठिरबोले
धर्मपुत्रराजाकोसभा चतुरककना
माब्राह्मणहो वेराजा सभापेपीछे
कहांजाणियेकहांगये जामेंतुम्हारे
पासजीवकानिष्पत्तआयोहो जब
बिराटबोले राजायुधिष्ठिरमेरोमि
त्रहो सोवाकोंचोपडिमिलावेहतेस
मोकोचोपडिमिलाइ आनंदपूर्वकर
हो ऐसेकहि उनकोराहिबेकोस्थान
जीवकाबतावत भये तापीछेदूसर
दिनभीमसेनकोंचाकरछीलेरसोई
दारकेरूपकरिगयोताकोराजापूछ्यो
नकोणहै

कहिस्सोंनिपुत्नहौं । औरआदूसरेसं
नगुरुसमैहुनिपुत्नहौ नकराअसंउछ:
नकरिवासौफिककवाहुबैरासौ जोगी
सौ सोपरीबिराटकौसोपी पाससेरथी
बैसकरिगईलासोसेरथीअभिकारस
सो ॥ जबसुरेसामहारानीस्याकौअ
उत्तसुपदेष्पकौबोली ॥ हेसुंदरीश्यामेर
मणीपुत्नैतौमूर्तिहै तातैसैरंध्रीकैकाम
जोगपनही ॥ तैसर्वकेनेत्रनकीभाग
कीअवधिहै ॥ औलाफोरभूलाफोरअ
धिहै ॥ तेरे अंगनकीकांतिसबउपमा
ननकोहसतहैं ॥ औरसामुद्रिकचिन्
तौकोचक्रवर्तीकीभार्याकहतहैं । तौ
कोदेषिपुरषनकोधीर्यजातरहैहै । औ
सातमेरेभर्तारकेआगेंआयबा । औ
रपुरषनआगेंकैसेरहैगी । जबसैरं
ध्रीबोली । मोकोराजाविराटवा और
पुरषकौउपर्सनकरिसकैगो मे
पतिपांचगंधर्वहैं सोअतिबलिष्ट
करैहैं । जोकोईवक्रदृष्टिकरि देषैं
ताहीकौमारैं औरमेंकोईकै

ना०१०६
बोनही उद्धिष्ठी बोनही ऐसें
सुदेस्नावाकौ सुगंध अधिकारपै
मालिनीनाम धस्यो तापीछे सह
व तंत्रपालनाम धरि गोपालवेस
रि बिराटपास आवै ताकीपरि
रि राजा ऋषभनको अधिकारदियौ
पीछे केसपास बांधि कंचुकी पहरि
जनवेस अलंकार पहरि बिराटको
पाय अर्जुन संट वेस करि बिराटपास
आयो जब राजा पूछ्यो तुम कोण हो
तब बोल्यौ ब्रहनट नाम धारी देव गं
धर्व सिष्यसंगीत बिद्यानिपुन हो ऐ
से सुणि बिराट उत्तरा को संगीत सि
षा गुरु करि राख्यौ तापीछे नकुल
ग्रंथिक नाम धरि सालिहोत्र बणि
आयौ ताकौ राजा अश्वाधिकार दि
यो ऐसे सुषपूर्वक बसत सबन
को च्यारि मास नये जब प्रसनाम
उत्सव भयौ तामे च्यारयो दिसानके
मल्ल आये तिनमै सिष्यन सहित
एक जीमूत नाम

कीमल्ललीलादेषिकोईहीमुष्टकरिबेंको समर्थनभयोनही।जबबिराटपुत्रलज्ञित होइबल्लवसोकहीयामल्लकीगर्जनानि वारणकरो।तबराजाकीआज्ञपाआप कोकोतुकनुज्ञानकीषातिरकरिमल्ला हूवोबल्लवबावाकेसनमुषजायषंबठो कोताकेसब्दकरिपर्बतबिदीर्णभयेश्र थवाकंपायमानभई।जीमूतकोगर्व जातरह्यो।ताप्रीछेवहमल्लगर्जनाक रतआवतभयो।ताकोंभीमउठायफि रायप्रथ्वीमेंपटकिमर्दनकरयो।वा कोपिताजीमूतजालमल्लअनेकन कोंएकहीकालमेंडडायपंडपंडकरिदे सोजीमूतनाममल्लबल्लवकीबिजे स्तुतिसुणिलाज्ञितभयो।राजाबिरा टहूप्रसन्नहोइचापेस्वबर्णकीबर्षा करी।देवताउपुष्पनकीब्रष्टिकरी।ऐ सेंस्वंधनकोंहाथीनकोंयुद्धमेंजीति राजाकोंप्रसन्नकरयो।ऐसेंनितिप्रति राजाकोंहर्षबधावतदसमास बीतभये।इतिश्रीम

राट ६० काप्योविराटपर्वणिप्रथमोध्याय
वैशंपायनउवाच तापुरीमेंसुदेष्ण
राणीकोबडोभ्राताकीचकनामए
कसोक्षत्रि १०६ भ्रातासहितरहै तो
द्रोपदीकोदेषीअतिरूपवतासुदेष्णाप
सैरंध्रीजाणिलोहुकामातुरभयो जब
भगनीसोनम्रहोइबोल्यो हेसुदेष्णा
तेरीमालनीनामसैरंध्रीमोकोभोगके
निमित्तदीजे तबसुदेष्णाबोली हेभ्रा
ताऐसेमतिबोलोयाकेपांचपतिगं
धर्वहैं सोगुप्तरक्षा करैहै जोपापदृ
ष्टिसेंयाकोमारैं औरधर्महदेषिप
रस्त्रीमेंचित्तनकरणो रावणकेदस
सिरकटेऔरसीताहापनआई ये
सैंसुणिकीचकमौनहोइ पीछेको
ईकसमैसैरंध्रीकोएकांतपायबो
ल्यो हेसैरंध्रीतदासीपणोछाडिमे
रीभार्याहोउ तोसैमेरोमनआसक्त
है ऐसेसुणिसैरंध्रीबोलीहेकीच
केमोमेंपापबुद्धिमतिकरैमेरेपांच
पतिगंधर्वहैंसोमारेंगे

कबोल्यो ॥ मैंगंधर्बनतेंहूं नडुरों ॥ अरु न
महूतेंनडुरों ॥ ऐसेंसुणिसेरंध्रीमोनग
ही ॥ तबफेरकीचकसुदेस्नासोंबहोत
प्रार्थनाकरी ॥ जबसुदेस्नाकहीतूंकछू
उछवकरिमैंयाकोमदिरादेयतेरे मो
नभेजोंगी ॥ ऐसेंसुणिकीचकआपके
घरजायउछवरचनाकरी ॥ तबसुदे
स्नाछलकरिमदपात्रदेसेरंध्रीबहुत
नसीतोहूभेजी ॥ जबसेरंध्रीसंध्यासमें
सूर्यदेवसोंप्रार्थनाकरिकीचकको
नकोंगई ॥ तबसूर्यहूयाकीरक्षाकरि
बकोंएकराक्षससंगभेज्यो ॥ तहांकीच
कहूयाकोंआवतदेषिसन्मुषआयहा
सिकैबोल्यो ॥ हेसुंदरीआवोहूंकाल
छोडिमोसोंआलिंगनकरि ॥ यहसब
संपतिदासदासीनचनसहितअंगी
कारकरिमाकोंप्रसन्नकरि ॥ ऐसे
हीकीचककोंसीलनसाइपदी
नलसममानहोतभई ॥ तोहूबल
त्कारकरिबस्त्रषैचिबेलग्योजब
यद्रीयाकोंपटकिराजमंदिरकों

तबकीचकपकडीसोंजापवाकेकेसपक
डिलातमारी जबद्रोपदीकीदेहतेसूर्यकों
भेज्यारातसनिकसिकीचककोमूर्छितक
रि प्रथ्वीमेंपटक्यो तहाराजसनामेंबैठ्या
भीमद्रोपदीकीपहदसादेषिक्रोधकर्‍या
ताकोंयुधिष्टिरसंग्याकरिरोक्यो तापीछें
द्रोपदीउठिरजसोंलिपटीभई राजसभापे
तेनसहि र हीतहांजाइबोली हेबिराटरा
जतुम्हारीनीतिकोंदेषतहो तुम्हारेदेष
तमोकोंनीचलातमारी जबबिराटबोल्यो
हेमालनीमैंकीचकके कलहएकांतमें
कोंनकारणभैनयो तबद्रोपदीबोलीदेष
रूपीपांचगुप्तबह्लभ नमेंबडोक्षमावा
नतहोइतौ ऐसेकोंणकरे ऐसेसुणियु
धिष्टिरबोले जोतेरेपांचोंपतिगंधर्बनि
मेंजयंतकोबलवंतमानेहेसोहीतेरीबां
छासिद्धकरेगो अबस्वस्थानकोंजा म
हाराजकोंहृतक्रीडामेंबिघ्नमतिकरे ऐ
सेंसुणिद्रोपदीकोंघगुप्तकरिसुदेस्नार
णीपेंजायकीचकवोदुचेष्टाकही अरु
परपुरषस्पर्सदूषितबस्त्रहेतिनकोंधो १०

हलनकरि। राजलमैंपाकसाबामैंजाप
गामसैंग्रालिंगनकरतमर्यातवभीम
ग्रागियासोंइद्रम्रालिंगनकरिगाके
हृदयकोदुष्टदीकियो॥तबद्रोपदीबो
ली.तुमप्रथमग्रपराधीदुस्सासनकों
मात्योनही॥तातैराजाबिराटकैमंदन
केघसिबेतेंमेरेहस्तचिन्हयुत्तकठोर
भयेहे।ग्ररुकीचककेसंगहैंप्रहार
प्रहारकियो॥सोहतुमयाकौंसीघ्रदंड
द्योनहींसोतुम्हारोहृदयकोविदीर्ण
नहीहोतहे।यहेसुणिबाधवनकोंदु
ष्यस्मर्णकरतनिस्वासनाषतनेजभु
जानकोंदेषतभीमबोल्यो।हेप्रियेहमरा
जाकेचमामंत्रतेंबंधेहें।तातेंसरलधार्मि
ग्रिलामयदेवतासीनाहीं।निस्पलपरा
क्रमीहे।सो।ग्रबतुमपुरेयाहरनसम
उपहे।तामेंकीचकसोंबिहारमें।संकेत
करौ।तहांमैंवाकोंमारिपरइव।नारदोभ
दिजमके।सुषमेंग्रामधांगया।ग्रोरसैं।वग्र।
द्रोपदीकौंसीघ्रदेयग्रायन।सुमंदपगैना
प्रसनो।तबद्रोपदी।भीमप्रति।ग्रोसेन

२०

नतेंसंतोषपायसुदेः।केमंदिरगई।तापी
छैकीचक ३ सारेदिनसुदेष्णाकेमंदिरम्
यौ।ताकों।द्रौपदीसनेह ग्रीष्मसोदेषिमधुर
वचनबोली। हेसुंदर तुमज... हौ
मोकोंकामबातोकही।तातेंकोपकियो।श्र
बतुमरात्रसमैंपुरबाहरनत्यमंडपमैंश्रा
वोतहांमैंहूश्रावोंगी।श्रेसेवचनसुणिक
कीचकहर्षपाय।बोल्यो।श्राजिमेरोपुन्य
उदैभयो।जोतुमप्रसन्नहोय।लतहो
श्रेसेंद्रौपदीसोंकहिकी-कहर्षसहित
निजभवनजाइसुंदरभेसधारिसंध्यासम
यनत्यमंडपकोंचलतभयो।तहांमार्गमें
श्रपसकुनहूकोंनहींगिणतभयो।तापीछें
सेरंध्रीकोरूपधारेंभीमसननसों।तहांश्रे
सेनत्यमंडपकेद्वारतेंसंगकेजनन।तिनकों
विदाकरिभीतरजायसुंदरीकहांहेकहि
श्रंधलोंभीमकोंस्पर्सकरिबोल्यो।मैंतो
तेरेकोमलश्रंगसंगकेलोभनतैंभूषणहू
धारेनहीं।श्ररुतेरोश्रंगकठोरकैसेंहें।श्रे
सेवाकेबचनसुणि।श्ररुद्रौपदीकेश्रना
दरतैंभीमक्रोधाग्निसोंप्रज्वलितनयोरी

है। अरुवाकेरूपअद्भुतदेषिऐश्वर्यजा
णि। आपकोपराक्रमप्रगटकरिबेकोः
वाकेस्कंधनपेहाथधरिजुद्धकोआरं
भकियो॥ परस्परजुद्धकरतेचरणप्रह
रतेंपृथ्वीकंपितभई॥ अरुकरप्रहारतें
गनगर्जतभयो॥ ऐसेंजुद्धकोंदेषिनिसा
चरचकितभयो॥ तहांभीमसेनजुद्धक
रतेंवाकेहृदयमेंमुष्टिप्रहारकरिपटकि
वाकोउदरबिदीर्णकरिवाकेभीतरहा
थपा॥ वासिरसबहीअंगधसाइपिंडा
कारकरिरंगमंदिरकेद्वारेधरि॥ ताकेआ
भूषणबिराटकेभवनमेंनाषिद्रोपदीसोंक
हिपाकस्थानमेंजायसयनकरतभयो॥
तापीछेवाकेआभूषणदेषिराणीसुदे
ष्णारुदनकरतएकसौपाच॥१०५॥ भाई
नसहिततनतंपमंडपजाइकीचककोंम
तकदेषिवाकीनारीसहितअतिबिला
पकरतभई॥ तहांसंपूर्णकीचककेआ
ताथ्यभकेलगीमालनीकोहर्षितदेषि
कही॥ यहनिजपतिनसोंपाकोमरण्र
ध्यकरिवेकोसैरंध्रीकोपेचतभये॥

बवानैं बिलाप कियो सो सुणि बुद्धिवान भी
मकी टकादि कालो कं बलचोरज सो ग्र
धकार करि गर्जना करत भ्रत्त उपाडि धा
वत भये ॥ ताकौं जम तुल्य आवत देषि गंध
र्व भय तैं जीव बचायवे कौं द्रोपदी कौं छो
डत भये ॥ जब भीमसेन कल कीचक भ्रात
नकों भ्रत्त सों मारि द्रोपदी [illegible] समाधान
करि ॥ जा मार्ग ह्वै गयो होतो ही मार्ग ह्वै
य पाकसाला में आयौ ॥ मालनी कौं आ
वत देषि पुरबासी पुरुष गंधर्व भय तैं
त्रासित भये ॥ अरु सकल कीचक
भ्रातान कौं गंधर्व हत सुणि राजा हू भय
पाइ मालनी सौं कछू कह्यौ नहीं ॥ वह अंत
पुर में गई जब राजा की आग्या तैं राणी सु
देस्न वाकों सीष दीनी ॥ सो सुणि माल
नी कही हे महाराणी आप तेरह दिन और
ह्लम करौ ता पीछे मेरे भर्त्ता आय हर्ष
सहित मो कौं निज नवन लै जाइगो अरु
विराट महाराज हू उन सहित विजय पा
वेंगे ॥ ऐसें सुणि महाराणी हू क्रोध तजि
क्षमा धारि मौन गई ॥ इति श्री भारतसार ॥

चंद्रिकायां बिराटपर्वणि तृतियोध्याय ॥ ३ ॥
बैशंपायन उवाच ॥ तापीछै पांडवक हू
हूनदेषे ॥ ऐसें इतनके मुषसें सुणि राजा
दुर्योधन चिंता करि सभामें भीष्मादिकनसें
बोल्यो ॥ अब पांडवक हांपावैगमो कों बडी
चिंता है ॥ ऐसें कहत हीं मत्स्यदेसतें आये
जे दूत ते बोले ॥ रात्रिमें गंधर्वनने एकसौ
ह ॥ १०५ ॥ कीचकनहू कों मारे ॥ सो सुणि द्रो
णाचार्य बोले ॥ कीचकबधनामत हीं जो
तसी कहै है ॥ हिडिंबबकबधवाहीतें
कहे है सो नपोहो ॥ ऐसें सुणि सकुनि बो
ल्यो ॥ द्रोणादिक भोजन तो तुम्हारे करें छ
कृपापांडवनकी करत है ॥ राम्भ...
र पांडवनको पक्ष करिबेतें आपके दोष
कों नही जाणत है ॥ तबभीष्म बोले ॥ जहां
पांडव रहे हैं तहां बिप्रमंडली वेदध्वनि कर
त रहे ॥ अनेक अग्निहोत्र अषंड रहत है
समय समयमें मेघ अषंड बांछित वर्षा
करत रहे ॥ सूर्य सीत गरम समान हीव
रत है ॥ गा... के अपार दूध होत है ॥ सत्व
वृक्ष बनस्पति आदि ये अंसपिफवफल

तहै वापीकूपतडागादिकनमें ग्रमततु
ल्यजलरहतहै प्रजाधर्ममें रत हतहै
राजाहूपुत्रकीसीनाही प्रजाकोपालनक
रतहै ऐसेंसुशितगर्तनाथसुसर्मानाः
मराजाकरजोडिकुरराजदुर्योधनसोंबो
ल्यो मरेहूतऐसेसुम लक्षणयुक्तमः
त्स्यदेसकोकहतहै तातेंधर्मपुत्रतहांही
निश्चैवसतहै परंतुकोणउपायतेंजाणे
जाय ग्रवएकसल्लाहहै मत्स्य जिनग
रतें गोहरणकरै जोतुम्हारेसत्रुतहां
हायगेतो गोहरणमें रोसतें प्रगटहोय
गे ओरजोवनहांहोयगेतो ग्रर्जुनतोग्र
वस्यहीप्रगटहोयगो ग्ररुतहां १८०
इतनदिनतो जगतमेंपांडवनहीहै पा
तें ग्रपारसैपत्यसहितमत्स्यदेशकोह
रणकोपानकरिये बलवंतकीचकही
मत्स्यराजाकोप्रधानसेनापतिहो सो
तो भ्रातानसहितगंधर्वनकीकोपाग्नि
मेंपतंगज्योंभस्मभयो तातेमत्स्यनाथ
इकलोहीहै तातेंबांधवसहितवासों
युद्धकरिएकतरफतेंगोहरणकरोंगो

याकेऐश्वर्यमत्तबलहीनगरको उद्यम
लैतुमअंगीकारकरौ ॥ ऐसेंसुसर्माके
बचनसुणिकर्णदुःसासनशकुनीपा
पबुद्धितैंदुष्ट बिचारसुंमिलि
यो — ताहि बिचारकोंअंगीकारकियो ता
हिसुणिभीष्मादिकननैंनिवारणकि
योसोदुर्योधनमान्योनहीं ॥ सुसर्माकोंबु
लाइकहीआजिदक्षिणदिसाकोंजायतु
मगोहरणकरो ॥ प्रभातकालिमैंहमसकल
सेनासहितउत्तरदिसाकीगोहरणक
रेंगे ॥ ऐसेंदुर्योधनकीआग्यातैंत्रिगर्त
नाथबिराटनगरतैंदक्षिणदिसाकीस
कलगोहरणकरिफिर्यो वाहीदिनध
र्मनंदनकोअग्यातबर्ससमाप्तभयो ॥
तादिनहीसकलग्वालकोलाहलकर
तराजाबिराटसोंआइबोले ॥ कीचक
नसोंपराजयपायोहो सोहीत्रिगर्तना
थआईअपारसेनासहित गोहरण
करिजातहै ॥ ऐसेंसुनिबिराटराजअ
ष्टसहस्ररथ ८००० एकलक्षअश्व
१००००० दससहस्र १०००० ॥ सुवर्ण

धुराकार मांडतगज असंष्यातपैदलसहित राजायुद्धको चलतकंककौधुजपताकासहितरथदियो तबकंकबोल्यो हे महाराज बृहन्नलाहू अनेकबारजीतेहैं तातें याहूकोयुद्धजोग्यरथदीजे ऐसें सुणिबृहन्नलाहूकोदिव्यरथदियो अरु ससरमद्रोणपुत्रनकरियुक्तबिराटराजासेनासहितसुशर्माकौगोहरणकरिजातदेष्यो तबसुशर्माहूगाइनकीरक्षाकरिबिराटसोंयुद्धकरिबेकौंफिर्यो जबदोऊसेनासहितयुद्धकरतभये तहारदोऊसेनाकोरुधिरलिप्तदेषिसंग्राममें असंष्यातअश्वरथगजपयादेनकोंषंडषंडकरिअनेकरुधिरनदीप्रगटकरी तहांसुशर्माबिराटकौंबिरथकरिमकेटकौंरथपेंबांधिलेचल्यो अरुगोधनकोंआगेंकरिबिजयकेबाजाबजायेइतेंबिराटराजाकीसेनाभाजतदेषिधर्मनंदनभीमसोंकही हेभ्रातमत्स्यराजआपनेदेषतसत्रुनकेबसभयोसोयहजोग्यनहीं ऐसेंकहियुधिष्ठिर ११२

बाणन तैं सहस्त्र बीर मारे भीमसात से
रथी मारे नकुल सहस्र व सहस्त्र रथी मारे
अरु भीम ह तेरह बेर म सों कह दिन सि
वाइ गये जाणि रथ सों कद्दि सरल ब्रह्म
उपादि ताते असंख्यात बीरन कों मारे त
ब ब्रह्म कों छिन्न देषि गज सों गज रथ सं
रथ अश्वन सों अश्व चूरण करत सुश
र्मा पास पहुंचि ताकी बाण धारा सहि वि
रथ करि के सर्प काइ बांधि लियो अरु
बिराट कों छुराय त्रिगर्त राज कों युधिष्टि
र पास ल्याय सिर छेदन करि बे लग्यो त
ब सुसर्मा कह्यो हे धर्मनंदन मैं तेरो अनो
ल्य दास हौं भीम तें मेरे प्राण बचावो
ऐसे कहत सुसर्मा को सिर मुंडित करि
युधिष्टिर की आज्ञा तें छोड्यो जब सु
सर्मा जीव बचाय नगर कों गयो भीम
सेन मूर्छित बिराट राजा को रथपे च
ढाय चेत कराइ बोल्यो हे महाराज तु
म्हारो सत्रु त्रिगर्त राज जीव बचाइ भाजि
तुम्हारो बिजय भयो

९६ दयौ । ऐसैं सुनि विराट नृपकं कैवख
कौं उरख स्वदेकरि चरणप्रणामकरि
तनकौं नगरमैं नेजि विजयपत्र हाइराज्ञ
कौं नहाई धासदियौ । इतिश्रीभारतसार
चंद्रिकायां विराटपर्वणि तृतीयोध्याय ३
वैसंपायन उवाच तापीछैं प्रभात ही
गोपालनकौं नायक जननीपास उत्त
रकुंवर मारकौं देखि गदगद बाणी सौं बो
ल्यौ हे राजकुमार राजा दुर्योधन सकल
सेनासहित आय उत्तर दिसातैं गोहरण
कियौ महाराज तौ दक्षिण दिसा वैरगो
धनछुडायवेकौं गयेहैं तातैं तुम हारे
ताकरौ ऐसैं सुनि भुजदंडनकौं निरष
तहंसिमा ताकेसमाय बोल्यौ जबलौं
मेरे बाण चलत नहीं तबलौं हे गोपालस
नुहर्षितहैं जौ मेरे जोग्य सारथी होइ
तौ मैंहूं दुर्योधनकौं अर्जुनलौं भयभीत
करौं ऐसैं सुनि सुदेस्ना बोली हे पुत्र
उत्तराके पास ब्रहन्नला है सो पांडवनाह
समै अर्जुनकौ सारथी भयौ हो सो तौ
रौतारथी हौ वे जो गये है जो वह मैं तौ

घोनहीमानेतोउत्तराकोभेजोपाकोकघो
मानेगो ऐसेंसुणिउत्तराकोभेजिब्रहन्न
टाकोबुलाइबहुतजतनतेंसारथीपणो
कबूलकरायकुमारिकानकेहाथसुवर्ण
मयकवचपहराय उत्तराबोली हेब्रह
न्नटाउत्तरकुमारकोसारथीहोइकौरव
नकोजीतिमेरीपूतलिकानिमित्तचित्रवि
चित्रवस्त्रल्याइयो ऐसेंसुणिसारथीहो
इब्रहन्नटाउत्तकोरथपेचढायतुरंगन
कोंबेगतेंचलाये अरुखतुनकीसेना
देषिसमसानसमीपसमीवृक्षनिकटजा
य बिराटनंदनब्रहन्नटासोंबोल्यो हेब्र
हन्नटाअसंष्यातरथगजतुरंगपेदलन
सहितभपानकभीष्मद्रोणकृपाचार्यअ
श्वत्थामाकर्णदुर्योधनसकुनदुस्सास
नइनबीरनतेंभयंकरसेन्यसागरदेषि
डरपकंपतहै तातेंजमपुरीकेमारग
तेंरथकोंफेरो ऐसेंसुणिभयभीतउ
त्तराकुमारतेंबहन्नटाबोल्यो हेराजपु
त्रसंग्राममेंकायरताकरि आजन्मप
र्यंतसूरबीरनकीसभामेंलज्जायमान

होयगो कीतितोयुगांतपर्यंतस्थिरहै इह
तो हरणभंगुहै यातैधैर्यधरौनिजकुलकौ
कलंकनलगावौ सरीरकौसस्त्रप्रहार
सौजर्जरकरे बिनानंदनबनमेदेवांगना
नकौबिहारदुर्लभहै माताभगनीस्त्रीजन
केआगैऐसीप्रतिज्ञाकहीमैदुर्योधनकौ
जीतोगोसोअबभाजिकैलज्जायमान
होयजीबेकौधिक्कारहै ऐसेसुणिधनु
षकौछिडिआतुरबिराटपुत्रबोल्यौ मरेपी
छेकीर्तिकहाखुबदेय स्त्रीजननकेनिक
टनिजभुजबलबर्णनकोणनहीकरतहै
ऐसैसस्त्रप्रहारकरिप्राणहरणवारो
अर्जुनकोणवार द्रोणभीष्मकृपकर्णअश्व
त्थामादुर्योधनादिककौबरवाणवर्षाक
रतइनकौसमयकरै ऐसैकहिसुस्क
मुखहोयभाजपायरथतेकूदिनम्यातब
कौअर्जुनभापकडिबेकौदौर्यौ तिनकौ
देषिकैसबबीर अट्टाटहासकरतबोले
भाजतेराजकुमारकौ अरुणवर्णस्त्रीनै
संधारैविषरेकेसदेषिकहीयहनटसौ
कौणहै सोसुणिद्रोणकृपभीष्मपरस्प

रबोले स्त्रीबिषधरिगुसम् त्रिगजेंद्रगतिमहा
भुजयह अर्जुन हीहै बाणवर्षासमयमेंब
षल्लुवैगो ऐसे ही अन्यबीरहूकोतिकरे
षिबेको निष्फलभये केसगहेंषेचतीवृह
न्नटासोउत्तरदीनहोपबोल्यो मेंतोकारण्य
अश्वगजमणिमाणकभूषणइच्छोंछूंहों
गो जेसेंजीवतोजननीपपहुचोंतसेंकरि
मोकोंगोधनसोंप्रयोजननहीं ऐसेंसुणि
बृहन्नटाबोल्यो हेराजकुमारजोशत्रुस
त्रुकीहरीगाइनकोंछुडाये बिनाप्राणन
कीरक्षाकरेंतोवाकोंधिक्कारहे जीवतअ
पकीर्तिहोइमरेंनर्कमेंपडे सत्रुनकोंना
सकरिगायनकोंछुडायजीवेंतोताहीको
जीवोसफलहे नहींतोरणमेंमरणपाय
सूर्यमंडलभेदिब्रह्मलोकजाय ऐसोमरण
श्रेष्ठहे ऐसेंसुणिउत्तरकुमारबोल्यो गी
तबादित्रनत्यमेंनिपुण ऐसेनपुंसकसंगतो
रणमेंप्राणहीजाय अरुगोधनआवेन
हीं ऐसोनीतिबिरुद्धकर्मकोणकरे तदि
बबृहन्नटाबोल्यो हेराजपुत्रमेंअर्जुन
हो जबउत्तरकहीमें अर्जुनकेदसनाम

८० सुणहसोकहै तबवृहन्नटाबोल्यो बीभ
त्स फाल्गुन किरीटी जिष्णु कृष्ण अर्जुन
विजय सव्यसाची धनंजय स्वेतबाजी
ऐसे मेरे दस नाम है तबउत्तर कही इन
दसोंनामको कारणकहो जब अर्जुनक
ही सबदेसनकों जीति धनलायो तातेंध
नंजय कहायो संग्राममें महाबीरनकोंजी
तो यातें विजयनामहै अरू मेरे रथके घो
डा स्वेतहै जासों स्वेतबाजी फाल्गुननक्ष
त्रमें मेरो जन्मभयो तासों फाल्गुनामहै
इंद्रनतें मुकुटदीयो इंद्र किरीट दियो यातें
किरीटी संग्राममें निंदितकर्म करों नही ता
सों बीभत्स दुहुहाथनतें बाण चलाऊंया
सों सव्यसाची कहै है सबपृथ्वी में मेरो
जस उज्वल कर्म करों जासों अर्जुन इंद्रको
सुत तासों जिष्णु मेरो स्याम रंग देषिपि
ताने कृष्णनाम धर्यो अरु युधिष्टिरके
कहे सों कंकभट्ट नाम है अश्वपाल नकुल
है गोपाल सहदेव है सैरंध्री द्रोपदी है
रूहमारे सब अस्त्र सर्व समी वृक्षमें धरे हैं
वृहन्नटनाम संगमहे अब पुन

सहै गांडीवधनुषहै तातैं अबतूमेरो सारथीहोयमेरीबाणबर्षातेकेरवनकोभाजनेदेखेगो ऐसेसुणिहर्षितउत्तरकुमारअर्जुनकीआग्याप्रमाणसारथीहोय अश्वनकोचलाये अर्जुनकेरथपैसवारहोतैंहीनलनकीपंक्तिसहितहणमानअर्जुनकीधुजामेंआपप्राप्तभये तिनकेदर्शनतैं अर्जुनहर्षितहोइपर्वतनकीगुहानकोंबिदारतदिग्गजनकेकर्णतालनकोंनिश्चलकरतसर्पनकेनेत्रनकोंमुंद्रितकरतदेवदत्तसंखकोंबजावतभयो ताकोसुणिभयपाइकौरवराजसकुनसोंबोले स्त्रीतोरथीहैबालकसारथीहैसंखकीधुनिअतिभयंकरकैसेहोतहै ऐसेंसुणिसकुनबोल्यो गोधनकीहानिभयतैं बिराटराजासंधिकरिबेकोंकन्यादेनीहै ताकोंअंगीकारकरिधेयस्थकूबिहारकरिये ऐसेवाक्यनसोंहर्षितभयेदुर्योधनसोंद्रोणाचार्यबोले हे दुर्योधनहोणहारदारुणयुद्धकेकारण ऐसे ऐसेअपसुकुनहोतहै तोममलिनभये

१ निर्धातहोतहै अर्जुनकै अनुपालहो
रहे वीरनकेहृदयमैकंप अ.तत
जोवृष्टिहोत सूर्यनिस्तेजहोतहै तातेअ
र्जुनबिनायासेनसागरकेसन्मुषकोए
आवै परक्रोधरूपीअग्निमेकरसेनाको
पतंगकरिडारैगो किरातरूपीशिवकोर
णदेषिवेवारे मदोन्मत्तनिवातकवचन
केमारिवेवारे हिरण्यपुरवासीअस्सी
हजारकालिकेयदैत्यनकोविदीर्णकर
नवारे अैसेअर्जुननकेबाणमुहूनिमि
त्तनजुकरतहैं अैसैंसुणदुर्योधनभी
ष्मसोंबोलैं हेपितामहविराटसों८८
करतेंआपनसोंयुद्धकरिवेकोअर्जुन
कैसेंआवेगो अरुआवैतौआपुनेक
हाहानिहै फेरिवनवासकरेगो अरु
णकेमारनमेपरकोहूतिकरैअैसेगु
रुद्रोणकोकहाकहै अैसेंसुणिभीष्म
बोले हेदुर्योधनपतऋतुकेवसनतैए
कमासअधिकाहैतातनपोहैं अैसैंसं
वादहोतही अर्जुनदेवदत्तसंषकीधुनि
किये ...

करि दिव्यास्त्रनको ध्यान करि सो सुणि भीष्म
बोले यह अर्जुन युद्ध निमित्त गांडीव धनुष
को सज्ज करि टंकार कियो है याकी धुजा
में हनुमान विराजे है सो सहाइक है ताते
संधि करि जगत को निर्णय करो ऐसे सुणि
दुर्योधन बोले पांडवांसूं संधि तो मैं कदाचि
त नही करो ऐसे वचन सुणि भीष्म दे
व बलवान मानि बोले हे सुभटहो तुम सा
वधान हो अर्जुन सों युद्ध करेंगे चतुर्था
स सेना गोधन ले पुर को पहुंचावो अरु ते
से ही दुर्योधन हू चतुर्थांस सेना ले जावो
सेवकन को जैसे तैसें स्वामी कों बचावनो
मित्त युद्ध होय तो बल वे कोर रणहीं रण में
विजय है अरु द्रोणादिक बीरन सहित मैं
अर्जुन को रोकोंगो यह सुणि दुर्योधन भ
य भीत हो जैसें ही करत भयो ताको देख
तें जात देखि अर्जुन बोल्यो हे उत्तर भयपा
य दुर्योधन गोधन ले हस्तनापुर जावे है उ
नके गये पीछे युद्ध देख्या होइगो ताते या

वो ऐसें सुणि उत्तर कुमार

अचनाय दुर्योधनकोमार्गरोको तबअ
र्जुनदुर्योधनकों नयभीतदेषिबोल्यो हेदु
र्योधनरणकोंतजिचंद्रबंसकेकलिकत
कोंकरैहै प्रथमतौगोहरणकियो अब
जुद्धमेंमोसोंभाजेहै सोजोग्यनहीं मैंधनु
धारीइकलेंतसतभ्रातबहुबीरनसहि
तताकोंऐसोसमयदुर्लभहै ऐसेहूबच
नकोंअनादरकरि भाजतदुर्योधनकों
मार्गरोकिजुद्धकोंतयार अर्जुनकोंदेषि
भीष्मादिकसकलबीरताकोंआय त
हासकलकेरवनकोंसाम्हनदेषिहर्षि
त अर्जुन देवदैत्यनकोंकंपकारीदेवद
त्तसंषकीधुनिकरि ब्रह्मांडमंडलबदीर
णकरतसोभासतभयो परवारसहित
हनुमानकीगर्जनातैलोकप्रलयहीमान
तभयो तासमैंअर्जुनधनुषटंकारकिय
सोसुणिगोधन उच्चपुछकरि अर्जुनको
नमुषहोइबिराटपुरकौंगयो अबअ
र्जुनदुर्योधनकोंदोषदोपदीकेकेसपैं
चकेरोसतैं अपारबाणधाराबर्षतइअ

र्यमंडलकों ढांपिदे इतने बाणनकों बर्ष्यै ति
नबाणनकों सकलकौरवबीरकाटिनसकें
वहइकलौसकलकौरवनके बाणनकों का
टि बीरनकेरथ अश्वगजपोधानके अंगन
में असोकोऊनरह्यौ जाकों अर्जुनके बाण
व्यथानकरी अरुजैसें एकहीकेसरीसिंघ
अपारगजघटानकेमदकोंहरकरै तैसें ए
कही अर्जुन सकलबीरनकोंमदहीनकरिभी
षमकेमुषकोंदेषिदोयबाणचर्णनमेंदिये पां
चबाणद्रोणाचार्यकेचरणनमेंदिये तीनबा
णकृपाचार्यकेचरणनमेंदिये सोबाणन
हीकरिउनकोंडंडोतकरी औरसकलबीर
नकोंबाणनकरिव्याकुलकरि गजनकेकुं
भस्थलविदीर्णकरि समरभूमिकोंभ्याभ
यकरी बाणनसोंदुःशासनादिकनकों
बाणप्रहारतें चित्रलिषेसेकिये जेसेंस
र्योदयतें तारामंडलद्युतिहीनहोय तैसेंस
बही बीरभये असेंपराजयदेषिजयद्र
थआदिसर्वही बीरसामिलहोइ अर्जुनसों
जुद्धकरतभये इकलो अर्जुन सकलबीर
नकों अनेकरूपधारियुद्धकरतदीसतभयो

सबनकामरणमें निष्खेदेषि अर्जुनकरुणाक
रि संमोहनास्त्र सों सब बीरनकों निशबस
किये तातें सकल बीर बाहन तजि अधोमुष
होय प्रथ्वीमें गिरे तब अर्जुन उत्तराकों बच
न सुमरण करि उत्तर कुमार सों बोल्यो हेरा
जपुत्र दुर्योधन के कर्ण की रंग कर्ण के सुबर्ण
रंग और बीरन के अनेक रंग की बागहें ते
उतारिल्यो और भीषम सोवेन हीहे द्रोणाचार्य
कृपाचार्य हू कों तैसें ही जाणि नुमस्कार क
रियो ऐसे सुणि उत्तरा कुमार रथ तें उतरि स
त्रु सेनामें जाय बस्त्र हरण करि फेरि आय स
रथी होय पुरके सनमुष चल्यो तापीछें स
कल सेना सचेत भई जब भीषम बाण चला
ये सो देषि अर्जुन तिन के रथ के अश्व मारि
दुर्योधन के किरीट कों [illegible] रि सकल
कोंफेरि समीवृक्षमें धरि बिराटपुर कों आ
ये॥ इति श्री भारथसार चंद्रिकायां बिराटपर्व
णि चतु र्थो ऽध्यायः॥ ४॥ हे शुंभाय नम नमः॥
राजा बिराट बिजय करि निजनगर आये त
हां बृहन्नटा कों सारथी करि उत्तरा कुमार
भीष्मादिक बीरन सों जय करि [illegible] १

णिदुष्पतभयो अरु कंक हर्षितभयो तबरा
जाबिराटपुत्रको सहाइ करिबेको सेना तया
रकरै हो जितनेही हलकारानने आयउत्त
राकुमार के बिजयको षबरिदीनी तबरा
जाहर्षपायनगरमैं उत्सव करायकंकसों
चोपड़िषेलिबेलग्यो तहां बिराटबोले हेकं
क सेनाबिनाही उत्तरकुमार भीष्मादिकन
कों जीति गोधनको ल्यायो सकलकोर
वनसों बिजयपायबेवारो उत्तरसमान
और बीर हैही नहीं ऐसें सुणिकंकबो
ल्यो महाबलपराक्रमी बृहन्नटाजहांजा
यतहां बिजयमें संदेह कहा ऐसें सुणिबि
राटकंक के लिलाटमें पासाकी दई तहां
तें रुधिरधाराचली तबयुधिष्ठिरबिचारी
मेरोरुधिरपातकपृथ्वीमें देषिभीमवा
अर्जुनयाकेकुलकोनासकरेंगे या राजा
केघरमें एकबर्सबसनाकोकुलनासन
करणो ऐसें बिचारि हाथनमें रुधिर
कों धार्यो तहां मालनीसीघ्र आयसुव
र्णपात्रमें कंककोरुधिरलीनो ताहिदे
षिराजाबिराट क्रोधकरिमालनीसों

बोले हे मालनी कंक कौ रुधिर सुवर्णपात्र
मैं धारि बो जो भूमि नहीं तब मालनी बोली हे
राजेंद्र वृथा क्रोध न करणौ या कौ कारण सु
णौ कंक कौ रुधिर जा देस मैं गिरै तहां दु
र्भिक्ष अनावृष्टि अकालमरणभय होइ ऐ
सें कहि निजस्थान गई ता पीछै नगर मैं
आवत भये उत्तर सो कहा हम कौं तौ नहि
न और भी प्रगट होणौ नहीं ऐसैं इत सौ
सादेय उत्तर कौं रथी करि आप सारथी
होय रणजद्धार आवत भयौ ता पीछै राजा
द्वारपाल के मुख सौं विजय करि बृहन्नला
सहित उत्तर कुमार कौ आयो सुणि दोऊ
न कौं सीघ्र निकट बुलाये तब कंक कही
मेरे सरीर तैं रुधिर काढिबे वारे कौं कुटंब
सहित जमलोक पठावै है या कारण तैं
बृहन्नला कौं मति ल्यावै उत्तर कुमार ही कौं
ल्यावौ ऐसैं सुणि द्वारपाल इकेले उत्तर कु
मार ही कौं सभा मैं ल्यायौ तब कंक के लि
लाट मैं रुधिर देषि उत्तर कुमार पिता तैं
पूछी यह कर्म कौण नैं कर्यौ तब राजा
कै मुख तैं पूर्व प्रसंग सुणि बोल्यो हे राजें

इन्सैयणनकौं क्रोधकरायबोजोग्पनहीइ
नकोप्रणामकरिप्रसन्नकरो॥ऐसेपुत्रबच
नतेंराजाकंककौंप्रणामकरिप्रसन्नकरत
भयो॥सकललोकनकोकोपकरिभस्मकरि
बेसमर्थऐसोकंकहूलिलाटमेंपाटीबांधि
क्षमावाननमेंसिरोमणिभयो॥तबराजाकं
ककोंरुधिरगुप्तकियोदेषिवृहन्नलाहूकोंबु
लायो॥अरुपुत्रसोंकह्यातैनेंलोकनकोंइ
जीतिबेवारेऐसेभीष्मादिकवीरनकोतुम
एकलेहीकेसेंजीते॥तबउत्तरकुमारकही
हेमहाराजकोइदिव्यपुरुषमेरेपुन्यके
प्रभावतें॥सहायकरिसकलसत्रुनकोंजी
ते॥सोदिनतीनपीछेंप्रगटहोइगो॥सोसु
णिराजाप्रसन्नभयो॥इतिश्रीभारथसार
चंद्रिकायांबिराटपर्वणिअंतमोध्याय॥१
जैसंपायनउवाच॥तीसरेदिनप्रभातही
स्नानादिककर्मकरिनिर्मलवस्त्रधारि
राजायुधिष्ठिरकोंअग्रकरिभीमादिक
च्यारोभ्राताबिराटकीसभामेंआयसिंघा
सनपैयुधिष्ठिरकोंबैठाय॥आपआपकी
ठोरसकलभ्राताबैठे॥यहसुणिराजाचक

गु॰ तमय्। जब उत्तरकुमारकेमुषसौंसंपूर्
ण्णवृत्तांतसुनि सीघ्रआइमहाराजायुधि
ष्ठिरके चर्णनमैंप्रणामकरिबोल्यो हेमहा
राज हमारेस्वामीमातापिता ईस्वरतुमहो मो
दासकेसकलअपराधछमाकरोगे ऐसै
कहिचर्णनमैगिरयो तबबिराटकोमीमाव
के प्यारे भ्रातउठाय आसनपैबैठायो जब
सोद्रियह कह्योमैंदेस भूपालते बारसहितआप
केसंगतैंपबित्रभयो अरुअपराधछमा
करायबैंको अर्जुनके निमित्तउत्तराक
न्याकोंदेतहौं सोल्यो तबअर्जुनकहीआ
पकी पढाई कोंकुमारीकोंपुत्रीसमानमा
नतहै अरुतुमकोअतिही आग्रहहोय
तौ यह कन्या मेरे पुत्र अभिमन्यकोदीजै
ऐसैंसुनिब्राह्मणनतैंविवाहलग्नकोनिश्च
करि अभिमन्युकेबुलायबेकोंहलकारा
भेज्यो सोसीघ्रश्रीकृष्णकेद्वारजायपहुच्यो
तबहलकारोद्वारपालकेमुषतैंआयोसुनि
श्रीकृष्णसभामैं बुलायसकलवृत्तांतपू
छतभये जब हलकारेप्रणामकरिबोल्यो म
हाराजयुधिष्ठिरभ्रातानसहितगोप्यता

ससमास्तकरि गोहरणसमै दुर्योधनकौं आदि
दे सकलकौरवनकौं जीते जबराजा बिराट उ
त्तराकौ ब्याह अर्जुनसौं करयौ तब अर्जुन कही
मैं पढाई तातें कन्यासम है तब अभिमन्यसौं
ठहराय तुम्हारे पासमोकौं भेज्यौ है पातें हैं
जगदीश्वर सुभद्रा सहित अभिमन्यकौं भे
जिये आपयाके मामा है तातें बिबाहकौ नि
मंत्रणपत्र तुमहूकौं पठायौ है जासौं आप
हू परिवार सहित चलौ उत्तराके बिबाहमैं
प्रसन्न अभिमन्यकौं सोभायमान देषौ ऐसें
सुणि श्रीकृष्ण सब अंगीकार दरिहूलकौं निज
बस्त्र आभूषण उतारि दिने पीछैं बिदा कियौ
अरु अभिमन्यकौं उद्धवतें नीति सिसिखाद्दि बाघ
निपुण जानि दिब्यास्त्र बिद्याय पठाय अश्व
गजरथपयादेन सहित सेना संग दे
य बिराटपुरकौं पठावत भये सो अभिमन्य
को आगमन सुणि हर्षित होय बिराट पांडव
सहित सकलसेना संगलेय कुमारके सनमु
षगये जब अभिमन्य महाराज युधिष्ठिर
कौं देषि तुरंग तें उत्तरि साष्टांग प्रणाम करी
पीछैं भीमादिकनकौं प्रणाम करी

र प्रणामकरतभयो ॥ फेरिउत्तरसों आलिंगनक
रिमिलतभयो ॥ फेरियुधिष्टिरकी आज्ञातैंतुर
पैसवारहोय ॥ परमहर्षतैंउत्सवसहितबिरा
कौनगरतामैं प्रवेसकरिपांडवनसहितराजा
द्रिमैं वासकरतभये ॥ तैसेंही इतमुषतैसु
णीपरिवारसहितलियें प्रद्युम्नअल्स
कलसेनासंगलेयराजाद्रुपदहू आयो ता
हूकोसत्कारकरितामयो ॥ तापीछैं भीष्मजकेबि
वाहमें अपारहस्तिगजतुरंगरथवस्त्रअल
कारसामग्रीदेवेकों बलदेवउद्धवसात्य
कीअक्रूरादिकमंडलीसहितश्रीकृष्णआ
ये तिनकेसन्मुखयुधिष्टिरादिकसबराजा
जायपरमआदरतैंमिलि राजायुधिष्टिरस
बवृत्तांतनिवेदनकरिनगरमेंल्यायबिवा
कोउत्सवकरतभये राजाबिराटगणपति
पूजनादिकसबकुलकर्मकरिसुभमुहूर्तमें
वस्त्रअलंकारसोंमंडितकरिउत्तराकूव
रपूजनकरिपाणिग्रहणकरवायो ॥ तापी
छें राजाबिराटवस्त्रअलंकारगजअश्व
रथधनरत्नदासदासीदेय अरुबरकीसा
थआयेश्रीकृष्णबलदेवउद्धसात्यकीइत्या

रिकनकौंपूजि॥असंख्यभक्तभोजादिकनसौं
तमकरिसुंदरबस्त्रकन्याकोसं॥जोगरोबिरा
जाबिराटभ्रातसाकोंकन्यार्पमानतभयो॥
तापीछेंअभिमन्युसकलगुरजननकों
प्रणामकरि॥ब्राह्मणनतेंआसीर्बादपायनि
जभवनमेंआयसुभद्राकोंप्रणामकरतभयो
सुभद्राहूबधूसहितपुत्रकोंहृदयमेंलगा
यआनंदमान्यो॥द्रोपदीहूसुदेष्णाराणीतें
सनमानपाया॥द्रुपदकेदियेबस्त्रअलंका
रनसोंमंडितहोइपुत्रकोंबधूसहितदेषि
आनंदसहितहोइयाबिप्रनकोंअनेकदा
नदेतभई॥अरुनगरीमेंगीतवादउत्सव
अपारहोतभयो॥दोहा॥भाषाभारतसार
यहपर्बबिराटप्रमान॥रावचांदस्यघकेहु
कमकियेसुकबिसुषदान॥४॥इतीश्रीभा
रतसारचंद्रिकायांबिराटपर्बणिअष्टमोःप्र
॥ बिराटपर्वसमाप्त॥

ऐसें अभिमन्यु कौ बिवाह करि पांचौ पांडव सब लैदेव द्रुपद द्रोपदी मंत्र करिवे कौं बैठे तहां जुधिष्टिर बोले हे कृष्ण तुम हमारे नाथ हो हम बारह बरस बनबास कियो एक बरस बिराट नगर में अग्यात बास करि प्रतिग्या पालन करी यह चौदहौं बरस है अब कहा करतब्य है बांधवन के साथ बिरोध सौं जय पराजय में पहुंचे इ बंस सर बारन सौं रहित होइगो अरु उनकों जीते गये तौ अपकीर्ति होयगी जो धृतराष्ट्र हमकौं पांच गाव भी देतौ जुद्ध में कलेस काहे कौं करें अरु यह प्रथ्वी कौं तौ बहुत भोगे है यातें गिलानि समान है अरु भोग पहीन पति कौं छोडि भोग बान सों रतहोय है तातें या में प्रीति करि पातक कौं करणों वैसो बांधव सुखार हो हम पांच दुखी ह्वै रहेंगे ऐसें सुणि द्रुपद बोले अलेतनकाहु मे अतिघर सणतें अग्निप्रगट होत है अरु अभिमान पापकर्मा करे तिन कौं नीति कौ उपदेस कहा काहि पै अरु नीति के जाणिबे वारे तौ अप

पराधीगुरुनहूकोंमारैहै जैसेंअग्निहोत्री
घरकोजलावतैअग्निकोंबुझावे यातेंएक
भीमहीकीगदाप्रहारकरिवेतेंबमिहोय
ऐसेंबेरानपेतुमसगसधर्मेत्माविनाह
माकोंएकरे ऐसेंसुणिश्रीकृष्णवोले ध
र्मकसारवचनतोंराजायुधिष्ठिरकहै स
रबारतांकसार ऐसेंवचनसुणकर
अवमेंकहाकहोंताहसुणो पराक्रमवि
नातानीलिरंडाहे श्रीकृनीतिविलापरा
क्रमतिर्थकहे यदोकृहोदार्निकपा
मार्याकोंप्रगेटकरेहे सवलागनाम
हितनीतिसकुलराज्ञानकेवनकवि
वेकोकारणहे तातेंपदानीतिदावि
येजोअधकपुरनीतिकेअंलीजाबक
रेतो ऐसेंश्रीकृष्णकेवचनसुणितेंउ
लालकपडापदबोली नीतिमुमार्गपि
रंपपडे बुद्धिनपडे सचनुलजानान
नेकोंजावा अकसचनुलनेलापकी
पावा यकरोकेमदनमलनान्यनैल
देविसमावतीनानुमारेदर

जावैरीनसोंसंधिकरो मैंतौप्राणत्यागक
रिवेको अग्निमेंपरोंगो ऐसेबोलतोहोप
दीकेनिस्वासपवनतैंभीमकोक्रोधरूपी
अग्निप्रज्वलितभयो तबभीमनकुटीको
चुरायहोठनकोंडसतबोल्यो बालनीला
मैंमाकोंउननेखिसदियो अरुलाक्षायह
मेंअग्निलगायोसोमेरेहृदयकोंजबलों
है अरुद्रोपदीकेकेसपकड्येपाछें
अबलोंनिद्रानहींआवैहै जौलोंदुःशासन
केहृदयकेरुधिरनहींपीवोंहौ अरुदुर्यो
धनकीजंघाकोंगदातेंचूर्णनहींकरौं
होंतोलोंमाकोंधिक्कारहै अरुक्षत्रकर्म
करिमंडलजाजितननेंसंधिकरेतिनतें
गदासोंमैंबैरीनकेपंडपंडकरिप्रथ्वीमें
डारोंगो ऐसेकहिप्रथ्वीपेहाथनकों
पटकिभीमगरालेज्यो तबबलदेवके
अनुजांननेपकरिवाले हेभीमतबलके
ढिकरिजगतकोंजीते तोहूवेकुलीबली
सेहैसोजातेनहींजाय औरुवडेनकी
आज्ञाहूउलंघनकरिवोजोग्यनहीं त
युधिष्ठिरकेवचनमांनिवोयोग्यहीं

अरुबेहूतो ही सिरीसे गर्वितहैं संधिको
नमानेहैं तातैं रोसकेवस होयोगयन
ही रणकेनिमित्तसेनाइकट्ठीकरणी अ
रुबैरीनकेपास यथार्थवादीहूतभेजणो
असेंसुणिसबही बिचारकरिसंधिवान्
इनरीझ निमित्त द्रुपदपुरोहितकोधृ
तराष्ट्रपासपठायो अरुसेनासंचयकी
बेकी आगपाईकरि श्रीकृष्णद्वारिकागये त
बपांडवहू रणनिमित्तराजानकोबुला
वतभये तहांपाचपुत्रनसहितपांचौभव
ईनकीसहाइताकरिबेकोराजाद्रुपदए
कअक्षोहणीसहितआयो अरुबिराटरा
जाहूपरिवारसहितएकअक्षोहणीसंग
लेआयो अरुसात्यकीयादवपहलीहीएक
अक्षोहणीआईही तिनसेंआपकीअक्षो
हणीमिलायत्रिवेणीकरी और धृष्ट
केतुसिसुपालपुत्र जरासिंधुपुत्रसहदे
वएकएकअक्षोहणीलेकेसामिलभ
ये औरमाहिष्मतीपतिराजानील केक
यदेसकेराजापांचोंभाला ब्र मपुत्र
अरुकुन्तभोजश्रेणिमांनसिंवि

दिलै और हू अनेक देसन के राजा मिलि यु
धिष्टिर कौं सम अक्षौहणी पति कियो अरु
श्री कृष्ण के आय वे कौं दुर्योधन अरु अर्जु
न दोऊ एक ही समै मैं पहोचे तहां अंतःपुर
मैं श्री कृष्ण कौं सोवत देषि दुर्योधन तौ ताके
सीस पास बैठ्यो अरु अर्जुन पावन के पास
बैठ्यो जब श्री कृष्ण जागि बैठे नये तब प
हलै अर्जुन कौं देषि तासौं कुसल पूछि पी
छै तिहि पाछे कौं बोलनगा पै दुर्योधन कौं
देष्यो तहां दोऊ कही जुद्ध मैं सहाय करिबौ
मांग्यो तब श्री कृष्ण दुर्योधन सौं बोले
है कौरव तें तुम पहलै आयो पीछै अर्जुन
आयो परंतु पहलै दृष्टि मैं आय अर्जुन स
हायता मांगी पीछै तुम मांगी सो एक
तरफ तौ जुद्ध बिना मैं अरु एक तरफ मे
री एक १ अक्षौहणी सेना सो दोऊन मैं
एक ल्यो ऐसे सुणि कृतवर्मा सहित एक
अक्षौहिणी सेना सो दोऊन मैं सो एक ल्यो
ऐसे सुणि कृतवर्मा सहित एक अक्षौ
हिणी सेना लै पहु दुर्योधन हर्षयुक्त हस्तिना
आयो अरु कृष्ण नै सारथ्यापणो कबू

कियेतनबैरीनकोंजीतेमांनिअर्जुनयु
ष्ठिरपासआयो।शल्यपांडवनकेपासआ
वैहोताकोंदुर्योधनसनमानकरिआप
पक्षपातीकियो।यहबृत्तांतकहिवेकों
युधिष्ठिरपासआपसमाचारकहे।यु
ष्ठिरबोले।तुम्हारीइछाहोयसोहीजावो
कोरवनकोपक्षकरलहुतुमनिंदाबचनन
करिकर्णकोतेजनाशकेरो।ऐसेंअंगी
करिशल्यदुर्योधनपासआयो।अरुदुर्यो
नपासऔरहूराजाआये।भोमासुरको
पुत्रभगदत्तो।सिंधुराजजयध्रत।अवंती
पतिबिंद १ अनुबिंद २ दोऊभ्राता।श
रपति।कृतबर्मा।कांबोजराजसुदक्षण
सोमदत्तपुत्रभूरीश्रवा।येसातोंबा
संबंधीनसहितसात ७ अक्षोहणीसे
नालेकरिआये।औरसबराजामिलिचा
रि ४ अक्षोहणीसेनालेकरिआये ऐसें
दुर्योधनकेग्यारह ११ अक्षोहणीसेनाह्वै
~~करिआये ऐसेंदुर्योधनके~~ भई।तबस
भामेंबैठाधृतराष्ट्रताकेपास
भेज्योप्रोहितआपबचबोलो

ायुधिष्ठिर यह कही है मैं सूतके कारके
दनबिलीतकिये अब प्रथ्वीको बिभाग हम
हकोदीजे यह प्रथ्वीमंडलको एकसो चारि
१०४ भाइन सहित पालन कियो चाहत हौ
प्रथ्वी एकसो भोगी आपनही कुलके होते
आलको न भोगें तातें तुम बांधवनसों पूछि
मनमें बिचारि उत्तर द्यो ऐसें कहि पुरोहित
सबनकी तरफ देख्यो नहीं कोऊ बोल्यो नहीं
तब भीष्म बोले भुजबल करि सब बिपत्ति
ति बिपति समुद्रको पार पांडवननें पायो यह
आनंद भयो अरु महादेवको भुजबलसों
संतुष्ट करि बार अर्जुननें पायो ऐसे महाप
राक्रमी पांडव है तो इवे संधि कहीको चा
हत हैं तातें उनके क्रोधाग्निमें जितने प्र
थ्वीपति पतंगके के न होय पड़े तितने ही कुस
नहै ऐसें भीष्मके कहते ही कर्णनें क्रोधु
दायबोल्यो रणतें डरपें भीष्म मांगे ऐसे
भी ... पांडव है तिनते
भय तुम हमको क्यों करि कहत हो प्रथ्वीमें
और ह अनंत बार है तो हु उन निंदुकन
स्तुति करत लज्जा नहीं पावत है अपवा

असमर्थपुत्र पिताकों वा पितामहकोंप्या
रेहोतहैं। तातेसमर्थकौरवनकीनिंदाकरि
पांडवनकीस्तुतिकरोहो। असैंसुणिभीष्म
बोले। हेराधेयकर्णपांडवनकीस्तुतिसुणि
तूक्योंसंतापकरैहै। राजाविराटकेगोहर
णमें। अरुघोसजात्रामें जुद्ध अर्जुनसोंभ
योतहांतेरोपराक्रमदेष्योतो। तेरोनिर्भ
यताधन्यहै। असेंभीष्मकेबचनसुणिस
भासदसबहीहसे। तातेकर्णकोमुषमलि
नभयो। जबधृतराष्ट्रबोले। भीष्मपितामह
जोबचनबोलैहै। सोबसाग्निबुजायबे
कोजलहै। पांडवनकोतेजजगतकोसंघा
रकरिबेकोसमर्थहै। तोहूवेक्षमाकरैहै
सोयोग्यहीहै। अबयाकोउत्तरदेबेकोसं
जयजावो। उनकोंप्रसन्नकरो। असैंकहि
पुरोहितकेसंगसंजयकोंपठायो। तबसं
जयउपलब्यनामकपुरमेंमंत्रीमित्र
सहितराजायुधिष्ठिरताकेपासजाय
पकोंनामकहिप्रणामकीनों। तब
ष्ठिरकुसलपूछी। तबसंजयप
कीतुमकुसलचाहो

नहींहोय अवमहाराजधृतराष्ट्रसंदेसक
याहै सोसुणों धूलिमईभूमिकीइच्छाकरि
बांधवनकोंमारे ताकीकीर्त्तिकैसेंरहै ता
तैंतुमलत्तभूमीकीवांछाकरिकलहमतिकरो
तुमधर्मात्माहो ऐसेंसुणियुधिष्टिरबोले
मेंधृतराष्ट्रतेंकलहकीवार्ताहूनही
करी तोहूमासोंऐसेंकोंकहेहै हालतागु
केकोप्रसंगहैहीनही पहलैंबचनकहे
ताधर्मलेंबंध्यो ऐसोमेरो१पिताधृतरा
ष्ट्र प्रथ्वीदेहीगो अरुजोपुत्रनकेमम
त्वतेंपरवसहोयनदेयतौयाकार्यमेंश्री
कृष्णकहैंगेसोहोइगो ऐसेंसुणिश्रीकृ
ष्णबोले जोधृतराष्ट्रराजायुधिष्टिरकों
प्रथ्वीकोविभागदेतौ द्रोपदीकेकेसर्षे
चिबेआदिओरहूअपराधनकोंसहैंगे
अथवाइंद्रप्रस्थ१ पत्रप्रस्थ२ माकंद
३ वारणावत ४ एकओरकोईग्राम
पांचदेतौ इनकोनदेतौभीमकोगदा
र्जुनकेबाणकरेंगेसोहोयगो ऐसेंश्री
कृष्णपांडवनकोबचनसुणिसंजयबो
कैरिधृतराष्ट्रपासआयसबवृत्तांतक

जबधतराष्टु संजयकेबचनतेंपांडवन
कोधर्मबिबेकभूरतविचारि चिंतायुक्त
होयविदुरकोबुलायसमाचारकहे सोसु
णिबिदुरबोले हेमहाराजचिंताकरिव्याकु
लमतिहो संपतिआपत्ति अनित्यहे आ
त्मानित्यहे बैरीकोहरितेंआयोदेषि स
न्मुषजरूकोहोयवेहोण्हरकहावतहे यह
आत्माकोईकोहेनही मैमेरीयह अज्ञानि
नकोहठहे तातेपांडुपुत्रतुम्हारेपुत्रन
कोसमदृष्टिकरिदेषो जबधतराष्ट्रक
ह्योजोसमदृष्टिज्ञानबिनाहोयनही ता
तेंज्ञानकोउपदेसकरो ऐसेसुणिबिदुर
सनत्सुजातमुनिकोध्यानकस्यो तबसन
त्सुजात आयराजाकोग्यानकोउपदेस
कियो प्रभातसभाकरि दुर्योधनकोबुला
य संजयकोधतराष्ट्रकह्यो पांडवनके
समाचारसबहीकहो तबसंजयदुर्यो
धनसोंबोल्यो राजायुधिष्टिरतुमको
संदेसकह्योहे तुमपृथ्वीकोभारधास्यो
हमतीर्थनमेंभ्रमे अबइतनेकालतेंतुम
कोषेदभयो सोअबवानारकोछोडो हम

ांचलेबेकोंहाजिरहें भीमकह्योहैजोतुम
ह्थ्वीनद्योगेतोमेरीगदाकोभारसैहोतु
मारेपरछोडूंगो अरुअर्जुनकहीजोतुम
राजआप्पनदोवोगेतोमैं कर्णकोंमारिते
रेपासआऊंगो ऐसेंसुणि सिरधुनापभी
मअथलराद्रसोंकही द्यूतमेंपांडवकोंअ
पमांनकरिबनबासदियो तौहूतोकोल
ज्ञानभई ऐसेमर्यादाहीनतेरेपुत्रहैं तौ
हूपांडवतेरेमांनराषिबेकोंमर्यादानही
कोडतहैं उनकेतोपांडवसोंतअरुतूसों
पांडव ऐसेंआपमेंअरुतुममैभेदनहीमा
नतहै अबलोंनीतिहीमेरतऐसेपांडव
नसोंअधिकाकरिबोयोग्यहै अरुउन
पेक्कोनजीतिसके अबभीमतेरेपुत्रनकें
मारैगो तबकर्णादिककेसेंराषेंगे ऐ
सेंभीभवचनसुणिकर्णबोल्यो ऐसेंन
सोंमातेरज्ञानहोयगीतोतुमहीकोरव
नकीरक्षाकरो तुमअर्जुनकेसरसप्याे
सो वोगेतबमेंजुद्धकरोंगो ऐसेंकहिक
र्णनेंधनुषधरिदियो

वैशंपायनउवाच॥ सेनपगयेपीछे राजायु
धिष्टिरकलहनहोपजेसेनसंग्रं[illegible]
यानिमित्तद्यायुक्तहोप श्रीकृष्ण[illegible]
नकेपासप्रार्थनाकरिपठाये तबश्रीकृ[illegible]
चलतेंद्रोपदीसोंकह्योगजामें[illegible]
निमित्तपठावैहुसोजाकरु तबद्रोपदी
नीहाथमेंकेसगहिश्रीकृष्णसोंविधाय
बोली जबसंधिकरोनचहूर्लेंके[illegible]
रिलीजो [illegible]
सैनसहितश्रीकृष्णतब[illegible]
करानिर्वाहिक[illegible]
वाहिरस्थपि[illegible]
नेंदिनये[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

घरगोविंद आपते पितरपितामहतमम
वि ऐसे बिदुर बीनती करि अर्घ दे पे पांवधो
य चर्णोदिको सिरपे धार्यो फेरि भगवान
को स्नान कराय चंदन लगाय मिष्टांन्न भो
जन करायतो बूलदेय प्रणाम करि बोलो
श्रीकृष्ण आपतो जगतके नाथ को मैं निर
धन हो आपकी प्रसन्नता लायक कहा च्य
ति थ्य करो साकपत्र स्वाद अस्वाद जो
है सो अंगीकार करि क्षमा कीजे जब श्रीकृ
ष्ण बोले हे [illegible] तेरी भक्ति ते बहुत प्रस
न्न हो साधूनके दर्सन ते साधु संतुष्ट हो
त है साधूनको दर्सन महापुनीत है सा
धु तीर्थन हू ते अधिक है तेरे दर्सनते
मैं कृतार्थ भयो ऐसे सुणि बिदुर बोलो
हे स्वामी मोको ऐसे कहिबो जोग नही
ब्रह्मादिक देव तुम्हारे ऐसे वे है मैं की
तुच्छ जीव कहा जब श्रीकृष्ण बोले हे
बि दुर मै तेरी भक्ति ते प्रसन्न हो जो चाहे
सो बर मो ते मांगि तब बिदुर बोले हे स्वा
मी मेरो चित्त आपके चर्ननमें जैसे अब
है तैसे सदा रहो कदाचित हू न्यारो मति हो

आपकेचरणारविंदनमें अचलभक्ति सदारहो आपकीकृपातेंऔर बांछाहैहीनहीं जबश्री कृष्णप्रसन्नहोयतथास्तु ऐसेंकह्यो तापी छैं एकरात्रिबिदुरके घरबासकरिप्रभातही बिदुरसहितश्रीकृष्णधृतराष्ट्रकीसभामें आग ये तहांपांडवनकेपठायेबिदुरकेघररहिआव तश्रीकृष्णकोंजाणिदुर्योधनसन्मुखनहीग यो औरभीष्मद्रोणादिकसबहीसन्मुखआ यसनमानकरिश्रीकृष्णकोंसभामेंल्याये त हांश्रीकृष्णसिंघासनपरबैठे बिदुरपासबै ठ्या तबदुर्योधनबोल्यो हे कृष्णतुमकहांतें आये रात्रिकोंनकेघररहे अरु काहाकाम आयेसोसत्यकहो तबश्रीकृष्णबोले में बिराटनगरतें आयो बिदुरकेघररह्यो हांहीभोजनकियो पांडवनकोपठायोयहजा नो जबदुर्योधनबोल्यो हे कृष्णभीष्मदुर्यो धनकोंछांडिदासपुत्रबिदुरकेघररहिके सेंभोजनकियो तबश्रीकृष्णबोले हेदुर्यो धनतूंभोजनपूछैहै सोभोजनतोप्रीतिसों होयहै अरुआदर॰
प्रीतिभावतेंहोय ॰

प्राणत्यागबेकोदुषतोछणमात्ररहे अरुमा
नषंडनकोदुष्पजीवैलोलोरहे आदरतेंल्यापे
साकपत्रतोअमृतसमानहैं अरुअना रते
ल्यायोअमृतहूविषतेंअधिकहै औरबिना
बुलायेघरजाय बिनापूछेंबोले बिनादिये
आसनपेबैठैतेपुरुषअधमकहिये तातें
अनादरकेभोजनतेंमृत्युश्रेष्टहै औरहा
लाहलपानतैंप्राणनासहोयसोहूश्रेष्टहै प
रंतुकुटिलबिमुषधनाढ्यकेघरभोजनश्रेष्ट
नहीं भोजनतेंब्राह्मणसंतुष्टहोतहैं मयू
रमेघगर्जनातें साधुपरकल्याणतें नीच
परबिपत्तितेंसंतुष्टहोतहै अधमतोकेव
लधनचाहतहैं मध्यमपुरुषधनमान
दोऊचाहतहैं अरुउत्तममान कोचाहत
है तातेंउत्तमपुरुषनकेमानहीधनहै
बालकतस्त्रीबेस्पास्वइनमेंबिबेकही
सारहे कुलकरिधनकरिकहा कुलीन
मूर्षहूनिंदहीहै अरुकुलहीनपंडितहूपू
ज्यहै कमलतेंपैदाभयोब्रह्मातपतेंउत्त
महै तातेंजातिकारणनही बिस्वामित्रक्ष
त्रीकेजन्मपायतपतेंब्राह्मणभये रिषि

श्रंगहिरणी तें जन्म पाय तप तें ब्राह्मण भये मांडि
व्य मुनि मीड का तें जन्म पाय तप तें ब्राह्मण भये
श्रग स्त्य वसिष्ट कुंभ तें जन्म पाय तप तें ब्राह्मण
भये द्रोणाचार्य सुवर्ण कुंभ तें जन्म पाय ब्राह्मण
भये ता तें जन्म ति कारण नही ब्राह्मण क्षत्री वैस्य
इनको आचार ही प्रथम धर्म है अनाचा
र है सो ई अधर्म है और सत्य धर्म परायण
जे श्रेष्ठ इह है तिनके घर भोजन करणो ताते
विदुर बहुं श्रेष्ठ है याके घर भोजन को दोस
नही जो स्त्रिन दिन प्रति पति के संग विहार
करि अग्नि प्रवेस करे ता स्त्री को भी पुन्य पा
प को लेप नही अरु पति ह पति व्रता इप
री पति के संग बिहार करि नित प्रति अ
ग्नि स्नान करे है और परनिंदा न जाणे वि
ष्णु भक्ति मे परायण बिनामे पुत्र पैदा भये
असे पांडुपुत्र ह पवित्र है सत्यवादी ज्ञान
वान दृढ व्रत सर्व सास्त्र वक्ता असे विदुर
को कोन उलंघन करे जब दुर्योधन बोल्यो
मान रहित राज्य वा जीवन वा धन अ
बनीर्थ कहे घोर बन मे बास नि
भोजन परे यह सेवाता

ग्री० वननिंदीतहै तबश्रीकृस्नबोले हेदुर्यो
न राज्यकों बहुतकाल भोगयो चाहैहै तामें
कह्योकरि पांडवपांचग्राममांगेहै सोउन
दियेसंधिहोयगी जोपांचग्रामहूनदेगो तौ
यमलोकमैंजायगो जबदुर्योधनबोल्यो ऐ
सेवचनसोंमैंडरोंनहीं मेरेंहूंभीष्मद्रोणकर्ण
शल्यदुःशासनआदिमहाबलीजोधाहैं पां
डवनकोंबलद्रोपदीकेवस्त्रहरणमेंदेखि
यो तबश्रीकृस्नबोले वे धर्मपरबसहोयक्ष
माकरी तातैंतूंजियो अबराज्यमांगनदेगो
तौवे पांडवहूमानकरैंगे ऐसेसुणिदुर्योध
न बोल्यो इंद्रप्रस्थगुरुकोंदियो मवप्रस्थ
कृपाचार्यकोंदियो वारणावतभीष्मकों
दियो माकंदीकर्णकोंदियो औरहस्तनापु
मैंमेरहूंहूं तातैंपृथ्वीमैंसूंनौग्रामएक
नहीं औरतीखीसुईकेअग्रभागकरिजि
ना पृथ्वीविषैं तितनीहूंजुद्धबिनाद्योंन
पांचोंपांडववे एकभार्यारतहैं सोम्ले
तुल्यहैं उनकीबार्तामोसोंमतिकहो
श्रीकृस्नबोले अंधकोबेटातूंअंध
समीप आई

नेको विनास आवे तिनकी विपरीति बुद्धि ऐ
सें ही होय है राम चंद्र सुवर्ण को मृग रूपी
राक्षस जाणि लियो तो हूं सिकार गये राजा
नाहुष ब्राह्मणन को जोणि लिय तो हू पाल
कीमें जोये युधिष्टर हू स्मूल की ड़ामें कूल
को जाणि लियो तो हू नाईं नको हास्या सोवि
पत्ति आवण हार होइ तब सब कुलनहू की
बुद्धि विपरीति होइ है ॥ ताते हे दुर्योधन रण
में बाण वर्षा करते अर्जुनको गंगा
च ते भीमको देषे गो तब सर्व पृथ्वी को कांह
गा ॥ ऐसे श्री कृष्ण के कठोर वचन सुणि दु
र्योधन कही याको बांधि ल्यावह अनर्थ को
मूल है ॥ ऐसे सुणि श्री कृष्ण के मारिवेको
दुशासनादिक सस्त्र लेके उठे तब श्री
कृष्ण विराटरूप दिषायो ॥ ताको देषि कितेक
कम्पित भये ॥ कितेक गिरे ॥ कितेकनके
सिर फूटे ॥ कितेकनके प्राण छूटे जब
श्म ड़ाणो दिक दुर्योधन सं बोले हे अंध
पुत्र श्री कृष्ण कहे है सो सत्य है श्री कृ
ष्ण काला लाहूं सो तू नजाणे है सुत्यज
... लक्ष्मीयाकी

१०६ पृथ्वीकोभारउतारिबेकों असुरनकोना
करिबेकोसाधूनकेपालबेनिमितिओतारध
स्योहै श्रीकृस्नजा कार्जआपसोनकरैंगे
सर्वकोनासहोयगो सर्वनासजाणिबि
कोआधोछोडनहै आधेमेंराजमहकरैओ
रजीवहूरहै सर्वनासनपैराजमहजोप अ
हभीणाहूनहीरहै ऐसेभीष्मादिकनको
बचनसुणिबिदुरबोले यहराजादुर्योध
न पीलेनेरनकोहै सोकेवलकुलनास
हीनहींकरैगो सर्वछत्रीनकोनासकरै
गो ऐसेकहिबिदुरद्रोणभीष्मसंजयहर्ष
करिश्रीकृस्नकोदेषतभये ओरजेबेरभा
वराषतहैजोमन्त्रित भये देवतापुष्पनकी
बर्षाकरीस्तुतिकरिकोपसान्तिकियो ६
स्वश्रीकृस्नउठिचलेतबद्रोणभीष्मकृ
पाचार्यकर्णबिदुरसभाद्वारताईपहुंचा
वबेकोआये जबश्रीकृस्नओरनकोसी
रय कर्णकोहाथपकडिरथमेबैठाय
तीकेपासआपसाथमागिपुरकेबाहि
र्णसहितदूरानकोंगये जहांएकांतमें
तीतेंजेसंकर्णको

कह्यो सोसुणिकर्णकष्टयुक्तहोयबोल्यो मैं सहोदरनकों जाणेबिनादुष्यदियो तातैंमो कोधिक्कारहै जोमैंपुत्रवधूतुल्यद्रौपदीकी दुर्दसादेषिहर्षपायो तातैंधिक्कारहै अरु सहोदरबांधवनकोछांडिउनकेबैरीनकों बांधवकरेयाहतैंधिक्कारहै असैंकष्ट सहितकर्णकोदेषिश्रीकृष्णबोले हेकर्ण हालहू आपकोनिंदामतिकरै बांधवनसों चलिमिलो युधिष्टिरादिकतेरीसेवाक रैंगे तबैभ्रातारामस्तकनपबैठैगो तब तेरीमाताकुंतीऊहपुत्रनसहितपरमआ नंदपावैगी अरुतपांडवनमैंमिलेगो तब दुर्योधनादिककलहनहीकरैंगे अरुस कलछत्रीवंसजीवैगो यहपुन्यतोकोंहोय गो असैंसुणिनिस्वासनाषिअंगराजक र्णबोल्यो हेश्रीकृष्णजुद्धसमैंआयमयेंभ्रा तानसोंकैसेंमिलो दुर्योधनएकमेरेभरो सेहीउनबलीनसोंबैरकियोहै सोवाकेर णकोधारीमैंहीहों बालकपणकोमित्रदु र्योधनहैवाकोछांडनेंमरोकृत्यफटतहै औरदुर्योधनकोछोडयुधिष्टिरसोंमिलेंजु

गतभ्रष्टकिनकरैंगे मोकोंआगानमेंश्रीतिवा
नज्ञाणिनीतिवंतसराहैंगे परंतुमित्रविश्वा
सकहारहैंगे बांधवैतालसोंकोंनिमित्ताबि
रोधहूकरैंहैं अरुमित्रपरमविपत्तिमेंआ
लंबनहोतहै जोमैंदुर्योधनकोंछोडौंतौजग
तमित्रविमुखहोयगो तबकौनकौं ष्पकौं
नदूरकरैंगो ऐसेकर्णकेबचनसुणि श्री
कृष्णसराहिपाछैंहांकिविदाकरियुधिष्टर
केपासआयजुद्धजानकोंप्रस्थानकरायो
॥इतिश्रीभारथ [illegible]
[illegible]
श्रीकृष्णयुधिष्टिरसौंबोले मैंअनेकयुक्ति
करिदुर्योधनकोंसमझायो परंतुकहीसु
ईकोंमयसौविधेइतनीहूप्रथ्वीविनाजुद्ध
दैनोंनही तातेंजुद्धकेनिमित्ततयार हो ऐसे
सुणिजुद्धकेलियेभूमिंविचारतभये तबश्री
कृष्णअर्जुनदुर्योधनयेलीनेपांजुद्धभूमिदेषि
वेकौंपृथ्वीमैंफिरतहैं तहांएकदेसदेष्यो
जहांकहूंजीवकठोरहृदयदयाधर्मवर्जितअ
नाचारी मनुष्यनकरिसंजुक्तदेसहो तहां
पितापुत्रहूंलरिवेकोंफिरतहै तहांएक

घ्यो।। जबपिताहलकेअग्रभागसौंपुत्रकोषैंचिष
तकेबाहिरनाष्यो।। अरफेरिहलवाहिबेलगि
गयो।। यहकठोरतादेषितीनोंआगेंचले तहां
सन्मुषभोजनलियेंवापुत्रकीस्त्रीआवतीदेषी
जबवासौंतीनोंहीपूछीतूंकोंनहै कहांजायगी
तबवहस्त्रीबोलीमेरोश्वसुर अरुभर्तारोकू
षेतीकरेहैं।। तिनकेलियेंभोजनजलेंलेजाहूं
जबश्रीकृस्नबोलेतेरेभर्त्तारकोतोसर्पकट्यो।।
सोमरिगयो।। जाकोषेलबाहरहलसोंउठाय
तेरेश्वसुरनेंफेकिदियो।। फेरिआपहलजो
तिबेलागिगयो।। ऐसेंवहस्त्रीसुणितहांही
बैठिगई।। भरताकेबरकीसामग्रीआपजल
पानकरि।। बाकीसामग्रीहीसोश्वसुरकोंदेय
आपजैसेंआईहीतैसेंहोगई।। यहआनांतदे
षितीनोंहीयहमहाकठोरभूमिजुद्धजोग्य
है ऐसेंविचारि।। जुद्धकारिबोउहांनिश्चैकि
यो।। तापीछेंउराआपतहांयुधिष्टरकेसंग
सेनासेंपरवारसहितराजाविराट सात्वि
कीयादव।। युधामन्यु उत्तमोजा पुत्रपौ।।
त्रादिकसहितद्रुपद।। हिडंबाकेपुत्र
[illegible]

राजकीसेनामेंमलिकुलक्षेत्रमेंआये अरु
दुर्योधनहू सकलसेनासहितआये तब
हांयुधिष्ठिर आपकेसबजोद्धांनसोंबोल्यो
कोनकोनकहाकहापराक्रमकरेगेसोक
हो जबभीमकह्यो दुर्योधनआदिसो १००
भ्रातानकोतोमेंमारोंगो अरदुःशासनके
हृदयबिदारणकरिवाकोरुधिरपीऊंगो त
बअर्जुनबोल्यो जोक्षत्रीमेरसन्मुखलडेंगे
तिनकोंमैनिश्चैहीमारोंगो तबसहदेव
बोल्यो जुद्धआरंभहोयगोंताकेअठारवेंदि
नदुर्योधनमरेगो यहसुणिगुप्तहलकारा
है सोजायदुर्योधनकोंसबसमाचारकहे
सोसुणिदुर्योधनभीष्मकेपासजायहाथ
जोडिबोल्यो मोकोंतुमपाल्योहे अरुपांड
वनकोंमेरबधकीसलाहभई है तासोंतुमम
रीरक्षाकरो जबभीष्मबोले हे राजादस
दिनतोंमैंतेरीरक्षाकरूंगो मोंजबतेंधनु
षधारोंतितनेकालहूनमारिसकेगो ऐ
सेंसुणिदुर्योधनद्रोणाचार्यकेपासजाय
पांडवभीष्मतेंबचनबोलेतिनसहितसब
समाचारकहे जबद्रोणाचार्यजीनें[illegible]

रिदिनलौं तेरीरक्षाकरौंगो। ऐसैंसुणिकर्ण
केपासजायपूछैं आचार्यकेबचन आदिपिछले
सबसमंचारकहे। तबकर्णबोल्यो हेराजन
मैंभीदोयदिनतेरीरक्षाकरौंगो। ऐसैंसुणिश
ल्यकेपासजाय। कर्णबचनकहेतिनैंआदि
देसबसमंचारकहे। तबशल्यकहीएकदिन
मेंरक्षाकरौंगो। जबदुर्योधनअठारहैंदि
नकोरक्षाकरिबेवालोजाण्योभीनहीं। तब
मनमैंब्याकुलहोयआपहीजुद्धकारिबोनि
श्चैकियो। सातअक्षोहणीपतितौराजायुधि
ष्टिरभयो। औरग्यारह ११ अक्षोहणीपति
दुर्योधनभयो। ऐसैंमिलिजुद्धकीतयारीक
रतभये॥ इतिश्रीभारतसारचंद्रिकायांउद्यो
गपर्वणिकुरुक्षेत्रसैन्यसमागमनोनामद्विती
योध्याय॥ २॥ वैशंपायनउवाच॥ दुर्योधन
हस्तिनापुरतैंकुरुक्षेत्रकोचल्यो। तबअप
सगुनभयेसोदेषिसबनैंमनैंकियोतौहूमा
नीनहीं। तबबिदुरकुंतीसोंकहीकुरुक्षेत्र
मेंयुद्धहोयगो। तहांकौरवपांडवनकेरुधि
रकोंपृथ्वीपानकरैगी। ऐसीबिदुरकीबाणी
सुणिगंगातीरसूर्यकेध्यानमेंमग्नहुवोकर्ण।

हो ताके पास कुंती गई जब वाको जप समाप्त
तो नि कुंती बोली तू मेरो कन्या समै को पुत्र है
यह सूर्य हो तेरो पिता है ऐसे कहते हैं स
र्य हू सांची भयो तब कर्ण आपकी माता जाणि
प्रणाम करि बोलो हे माता तेरा स्तनपान क
रि मैं ऐसे हो ह राजा युधिष्ठिर विश्व विजई
यो ताते मैं हू धन्य हो जो तुम्हारे स्तनन के दूध को
मो को साचे है तब कुंती ऐसे बोली तै कर्ण के
रे ऊहा पन लोग है रूहे में उग्रप बोली हे पु
युधिष्ठिरादिक पांचो तेरे दास है ताते तू पा
ई वन सों मिलि ताको मिल्यो जाणि दुर्योधन
है जुद्ध नहीं करेगो तातें पांचो पांडव स
ऊ १०० कौरव तेरे अनु यह सो जावेग ऐ
सुणि कर्ण बोल्यो माता मेरा विश्वास
जुद्ध को तयार भयो जो दुर्योधन ताको छो
डि युधिष्ठिर सों मिलो तो सूर्य देव कलं
त होय और पांडवन के भय तें कर्ण दुर्यो
न को छोडि उन तें मिल्यो ऐसे जगत में उ
हास सुणि तू बीर जननी है सो अबार ज
नी मति होय ॥ पांडवन को जीति दुर्यो
न को छत्र ... गो ऐसे सामन्त ग्या करि

भीष्मसमानकौ अबताहिकैसेंछोडों और महा
अभिमानीकृपाचार्यद्रोणाचार्य अश्वत्थामा
भीष्म येमहावीरजाकोसहायकर्ता औरक्रो
धपुंजदुर्योधनहै सोमोबिनाजुद्धकैसेंनहीं
करेगो औरहमतेरेछःपुत्रहैं तैसेहीदुर्यो
धनादिकसोऊ १०० तेरहीपुत्रहैं तातैसो
बांधवनकोंछोडिपांचनमेंमिलै यहकोंणवि
वेक ऐसेंसुणिकुंतीबोली तेरधैर्यतेकर्म
साक्षीसूर्यरवसंतुष्टहोवो तूसत्यवादी
वीर्यवानमित्रनमेंथिरहो तोहूलकनिष्ट
भ्रातानकों अभयदानदे मैंयहमांगोंहों त
बकर्णबोल्यो हेमाताअर्थामोकोंक्योंजाच
नाकरेहै मेरेसहोदरनकों अभय हमकों
भयपहतोश्रीकृष्णनेंपहलेहीदियोहै है
मातैपुरमेंक्षणक्षणमेंअसगुनहोतहैं ज
तबहुतहोतहैं चंद्रमातापकरेहै स्पर्श
सीतललगेहै भूकंपहोतहै मंदिरनमें
प्रतिमाचलेहै हंसेहै पसीनाहोतहै
रुधिरवमनकरैहै उल्कापातहोयहै स्त्री
गर्भणीनकेपसुआदिसंतानहोतहै येक
स्त्रीमेंतरतकन्यापैदाहोय

हैगवेहैनाचहै च्यारोदिसानमैदिग्दाह
होतहै औरपांचोंकोटेभ्रातानकोंसुप्नमै
ऊंचेमहलपेंचटेअपनेस्त्रीसाहितदेषे अरु
दुर्योधनादिकनकोंऊंटपेचटेदक्षिणदिसा
कोंजाते रक्तपुस्पआभरणसाहितसुप्नमैदेषे
युधिष्टरकोंपर्वतपेचटेराज्यकरतदेषे औ
औरभीमअर्जुनतहांहीघृतपीरनोजनक
रतदेषे अरुनकुलसहदेवकोंस्वेतहाथी
पेचटेदेषे औरश्रीकृष्णसात्यिकीकोंपाल
कीमेंचटेदेषे ऐसेतेरीसेनामैंसातनकों
स्वेतमालास्वेतवस्त्रस्वेतचंदनलगायेदे
षे अरुदुर्योधनकीसेनामैं अस्वस्थामा
कृपाचार्य कृतवर्माएतीन्यातौपांडवनको
होदेषे ताते सातनतौ वेतीनपेरसतौमत्स्यके
नपतेहीनहोयेंगे औरसबमत्स्यकेयासहो
इंगे ऐसेंसुणिकुंतीबोलीहेपुत्रजैसेंहैतौ
हैतौभ्रातानकोंअभयदानदे तबकर्णबो
ल्यो अर्जुनकेमारिबेकीमैंप्रतग्याकरीहै
तातेंअर्जुनबिनाच्यारोंनकोंअभयदान
मैंदियो परंतुअर्जुनहूकोमरणनयमनि
करें याकोकारणसुणि पहलेअस्त्रविद्या २

पढेहे तासमयमें अर्जुनकी ईर्षासें मेंद्रोणा
चार्यतें ब्रह्मास्त्रमांग्यो तबद्रोणाचार्य अर्जु
नपक्षकरिमोतेंबोले तेरे कुलको निर्णय
नहीं तातें नहीं देंगे याअनादरतेंमहिंद्राच
लपर्वतपे परसरामके पासमेंगयो तबमें
विचारी क्षत्रीबंसकबैरीपरसरामहे सो
क्षत्रीजांणिमोकों ब्रह्मास्त्रनदेंगे यामयतें
मायारूपब्राह्मणहोयमंत्रिसंपूर्णब्रह्म
विद्यापाई तापीछेमहेन्द्रतहोयबनमें भ्र
मतेमेरेबाणलेंकोईएकब्राह्मणकीगायम
री ताकोंस्वामीब्राह्मणमोकोंश्रापदियो
जाकोंतूंजीतिबेकीइच्छाकरेहे तासोंयुद्ध
मेंतेरेरथकेचक्रनकोंपृथ्वीगिलेगी तबमें
वाब्राह्मणसोंबहुतबिनतीकरी तोहूबाको
क्रोधमिट्यानहीं एकतोयहकारणहे दू
सरेमेरीगोदमेंसिरधरिगुरुनिद्राकरतहे
तासमेंमेरीजंघामेंअलिपीडाभई अरुगु
रुनकीनिद्राभंगहोनपतेंमेंसरीरकपायो
नहीं बिथाकोंमानीनहीं तितनेहीवज्रमु
ख कीटनमेरीजंघाकोंविदीर्णकरि
निकस्यो तबहिंगुरुजागिमेरीजंघारुधिर

मइ दोष पूछ्यो जब मेकोटद्दिषायो तब गुर
नके देष तें हीकोट नस्य होप रिव्यरेह धारिम्र
एामकरि बोलो मेंदेस हों न्रगुरिषिके मा
पतेकोटदेह पाईहों सो अब आपके दर्सन
ते साप मुक्त हों यदिव्य देह पापमें जात हों
असैंकहि अंतर्ध्यान भयो तब गुर कहो अ
र्जुन ऐसे ह महा[illegible]नहीं ता सो सत्री है
अरु तेकपट तें बिद्या पढी सो निस्फल होएगी
अरु कपट तें ब्रह्मास्त्र को सीष्यो सो हतरस
सकेर्दिवस वाकों सत्रु[illegible]डन करैगो हैमा
ताओर हु कारण सुणि भरक[illegible] कुंडल
सुभाव हीसों अनेदहे अरु इंद्र ब्राह्मण को
रूप धारि तिनको जाचना करी तब पिता सु
[illegible]भमें अन्याय मनें कियो तौ. ताकोमें क
वचकुंडल दिये अब अर्जुनको के सें जीत
औरजु धमें कइ को भी जीतो[illegible] अरु मेकव
काटि इंद्र कों दियो जब इंद्र मेरे सत्य तें संतुष्ट
होय एक वीर घातनी शक्ति दीनी सोहू क्र
ष्णके मंत्र तें निस्फल ही दीषै है मेंस्वप्न बल
तें मेरी[illegible]जु में मत्यु ही जानो हो पै बचन अ
न्यथा के सें करो और अब जद्यपात्रासमें २

मेंहेमातासर्वतीर्थरूपतेरेदर्सनपायेयातेंमें
धन्यहो ऐसेंबोलिप्रणामकरियाकुरुक्षेत्र
कोंकरी जबचलतेंहीकर्णकोकिरीटपृथ्वीमें
गिरयो औरहूअपसुकन अनेकभये तिन्हेंहू
दृषिधीर्जधरिकर्णकुरुक्षेत्रमेंदुर्योधनपास
गयो तहांसकलबीरमंडलीसहितदुर्योधन
होतवजयद्रथबोल्यो मेंसकलपांडवनकों
जीतोंगो ऐसेंसुणिजयद्रथकोसेनापतिको
अभिषेककियो जबपांडवनमें सात्यकी
जादव सहदेवमगधराज धृष्टद्युम्न विरा
ट सिषंडी धृष्टकेतचेदीस्वर एसातनकों
युधिष्टिरहूसेनापतिकोअभिषेककियो
ऐसेंजुद्धदेषनादेषिमध्यस्थबलदेवयुधि
ष्टिर सोंपूछितीर्थयात्राकोंगये तबतहांतु
ममेरेसरणआवोमेंतुमकोंविजयदहूंगो
ऐसेंबोलतोअक्षोहणीपतिरुक्मीआयो ता
कोंयुधिष्टिर दुर्योधनदोऊननेंअंगीकार
नकर्‍यो सोआपकेपुरकोंगयो जबदुर्योध
नओरानसोंबोल्यो येपांडवनकीसातअ
क्षोहणीसेनानकोंकोणबीरकितेकदिनमें
मारै तबभाष्मद्रोणतोदिन ३

पाचार्यदिन १० साठिकहे अश्वत्थामादिन
१० दसकहे कर्णदिन ५ पांचकहे तब ऐसैं
सुणि दुर्योधनभी असौ रथी महारथी अति
रथीनकी संख्या पूछी जब भीष्मपितामहनें रन
कों कहतें कहतें कर्णकों अर्धरथी कह्यो तब क
र्णसुणि के बहत गुस्सा भयो सो वो गज
उदृक रोषयह टकरी जब [illegible] ऐसैं सुणि
राजा दुर्योधनहू पांडवनकों भयभीतकरिवे
कों राजा उलूककों हतकर्म करिवेकों पठायो
सो सभामें बिराजमान राजा युधिष्ठिर सों बो
ला हे राजा युधिष्ठिर तुमकों न केवलतें कुरु
राजनें जुद्ध कस्यो चाहत हो यह दूतकोबल
नहीं है जो मैं हारपीछें भाइयां बांधवनसहि
तजीवतजाय जुद्धमैंतो सब के प्राण रहेंगे
[illegible]गे नहीं तातें जीवतेजाय विराटनृप
के घर रसोईदार भ्राता भीमके प्रसादतें सब
दा[illegible] भोजन करें अर्जुनके धनुषकी प्रत
चा[illegible] द्रोपदीका तिवस्त्र[illegible]पवि
[illegible]पहरावो ऐसे हनि[illegible]त
गारी[illegible] महतो की[illegible] राजचिं
ताहे ताकों छोडो यह सा[illegible]की[illegible]

नकेंकालकेकलेऊमनिकरे अरुजोरथपाल
कीहाथीघोडाचढिबेकीबांछाहेतो।सेवक
नकोकल्पबृत्तराजादुर्योधनहै।ताकीहासला
अंगीकारकरिरहो।ऐसेसु।पांडवनके चौस
कलयोधानकेलालनेत्रहोयभ्रकुटीचढिस
न्मुखिबेलगे।तबयुधिष्टरकीभ्रकुटीकोसं
ग्याकरिउलूकप्राणबचायबेकेनिमित्तभयभी
तहोयभागिदुर्योधनकेपासजायसर्वसमाचा
रकहे।सोहाप्रगटपर्वउद्योगयहभाषाभार
तसार।रावसंभुसुतकेहुकमकीनोसुक
बिबिचार॥१॥इतिश्रीभारतसारचंद्रिकायां
उद्योगपर्वणिउलूकागमननामचतुर्थोध्या
य॥४॥ उद्योगपर्वसमाप्तं॥ ॥ ॥

॥ अथ श्रीमहाभारत [illegible] ॥ नारायणंनमस्कृत्य
नरंचैवनरोत्तमं ॥ देवीसरस्वतीव्यासंततोजयमु
दीरयेत् ॥१॥ [illegible] ॥ ऐसेकुरुक्षेत्र
मेंजुद्धसुणि भक्तपडुमेंबालकवृद्धहीतौघरन
मेंरहे अरु सर्वबारदोऊसेनामेंपत्तपाताव
णि बणिआये तबबेदव्यासमुनिधृतराष्ट्रसों
आयबोले तोकोंमेंदिव्यनेत्रद्यूंहूंसोतूपानु
द्धकोदेषु तबधृतराष्ट्रबोल्यामेंअजिलों
जन्मपर्यंतकछुदेष्योनहीं अबकुलकोक्षय
कैसेदेषूं तातेसंजयकोंदिव्यदृष्टिदीजिये
यहसबदेषिजुद्धकीबातीमोसोंकहेगो जब
वेदव्याससंजयकोंदिव्यदृष्टिदेकेगये जब
संजयजुद्धदेषिराजाकेमहलनमें हतहीस
बभ्रातकहतभयो हेराजाधृतराष्ट्रसुणो
ज्यारणमेंसिरावेताकोंमारणोनहीं ऐसेप्र
तग्याकरिदोऊसेनाकेबीरजुद्धकोंतयार भये
यदे मातापितागुरब्राह्मणनकोंप्रणामक
रितिलकअक्षितपायबीरकंकणधारि
चलिबेकोंतयारभये तहांसुभद्राअभिमनु
सोंबोली हेपुत्रमेंबालकपनौ अरबीरमा
तोहूं पैतअबमोकोंबीरजननीहूकार २

ग्रसेंहीश्रो रहमातापुत्रनकोंग्रासीर्वादरेकरि
विदाकरे तहोंकोरवनकीसेनामेग्रगेसुरमी
भभये चारोकोरथस्वेरवस्त्रकवचग्रश्वति
नकरिसोभायमान सुवर्णमयपांचसाषासेजु
क्तातालवृक्षधुजकरिभकासमानसेनापतिभये
तिनकेग्रासपासद्रोणाचार्य ग्रश्वस्थामा क
पाचार्य ग्रैसेंचारितोग्रतिरथीभये कर्ण
शल्य सकुनि शिव उलूक सोंमदत्त भूरि
श्रवा कलिंगराज ग्रग्निकेत मगदत्त विक
र्ण दुःसासन जयद्रथ दुर्योधन ग्रोरहुम
हारथीभये पांडवनकीसेनामें श्वेतग्रश्वस
हितहनुमंत धजामेंजाके ग्रैसेबडेरथमेंम
हाग्रतिरथी ग्रर्जुनश्रीकृष्णसारथीसहितग्र
सवाहोयसबकेग्रागेंभयो ताकेग्रासपास
सात्यकी बिराट द्रुपद ग्रभिमनु भीमसेन
बर्बरीक घटोत्कच नकुल सहदेव राजा
युधिष्टिर एतोग्रतिरथी ग्रोर पांचोद्रोपदी
केपुत्र इरावान ग्रर्जुनकोपुत्र सिषंडि ध
ष्टद्युम्न शंषश्वेत ग्रादिलेर बिराटकेपु
त्रयेमहारथीभये सबनकेसिरोमणिश्री

म० ऋमीभये औरभीष्मद्रोणाचार्यके प्रभाव तेकों
१९ नकेहैं जोआयतीबलीभये तेहांश्रीकृष्णब
रीककेहाथमेंतीनबाणदेषिहैंसतेहांबोले
भीमहे अर्जुन याबर्बरीककोपराक्रमदेषो औ
सेयुद्धमेंतीनबाणलेकरिआयोहै इनकोंदे
पीछेकोहेतेयुद्धकरेगो औरसबतोअनेत
बाणधारेहें ऐसेसुणि बर्बरीकबोल्यो मैं
एकबाणकेहि सबनकोंघावकरिमरत्स्या
नमोचेनकरैगो द्वितियबाणकरिसबन
केजीवहरणकरूंगो एकबाणराषिनिमें
रहैगो ऐसोबचनसुणि श्रीकृष्णबोलेहम
कोंयरिक्षादिषावो तबबर्बरीकएकबाण
लिहकरिंजितकरि धनुषपेधरिकांनपर्यंतषैंचि
ल्यो बाससमेंचलायो सोबाणसबलोकनमें
लिसबनके मनुष्यानमेंलिहचिन्हकरिकृस
केचरणमेंप्रहारकियो तातेंसबनकेमर्ण
कोंमथाभई हसतै बाणसंधानकरिबे
लग्यो तबश्रीकृष्णहैसिकरिबोले हेबर्ब
रीकतेरोपराक्रमअनुपमदेषिहमप्रसन्नभ
ये अबबाणसंधानमतिकरै ऐसेकहिबर्ब
रीककोंप्रसन्नकियो तापाछेंहसते

नायतश्रीकृस्नपांडवनसोंबर्बरीककेदेष
तबोले यहजुद्धभूमिअतिबलवांनपुरुष
पसुकोबलिदानकरिपूजणीहे औरजोन
पूजेंगेतोयहरणभूमिसबपांडवनकोषाय
गी. असेसुणिपांडवबोले हमारेहितकर्ता
तोतुमबिनाओरहेहीनही तातेंजाकोबलि
दानकियेंबिजेहोसोयतुमहीबतावो तब
श्रीकृस्नबोले जोबत्तीसलक्षणसहितजो
धानिर्भयहोयसोबलिदानजोग्यहे तबपां
डवबोले यासेनामेंअैसोहोयताकोतुमही
बतावो असेसुणिश्रीकृस्नरुदनकरतहो
बोले एकतोमें दूजोबर्बरीक तीसरोअर्जु
न इनतीनिनमेंजाकीइछाहोयताकोबलिदान
करो एककेमरतें ओरसबजीवेंगे बेरी
मात्रमरेंगे असेंसुणिबर्बरीकहर्षितहोय
बोल्या श्रीकृस्नअर्जुनबिनातोसबमरेंही
हे तातेंमेरोहीबलिदानकरो मेरेमरतें
सबकोजीवनहोयतोमधन्यहों तुमसब
राज्यकरोगेयातेंमेरो अधिकभाग्यकहा
हे असेंक॰ ६५

भ०७ हि॥ सरे हाथतैं सिर काटि श्री कृष्णसौं बोले
हे कृष्ण हे कृष्ण प्रथ्वीके भार हरिकरिबेकौ
प मनुष्य रूप धार्यौ है मैं आपकौ आगपा
रीदास हौ तातैं मोकौ सर्व जुद्ध दिषाय मुक्ति
सकरौ ऐसैं भक्त बर्बरीककौ बचन सुनि
श्री कृष्ण तथास्तु कहि आपके चर्णनमैं पड
ते बर्बरीकके मस्तककौं दोऊ हाथतैं उठाय
पर्वतके शिषिरपै धरि बोले हे महाबीर बर्ब
रीक जो जुद्ध होयगो सो तू देषि ऐसैं कहि पां
डवनकौ सोक हरि करि जुद्धकौ आरंभ करा
वतभये मार्गशीर्ष शुक्ल त्रयोदसी भौमबा
रमैं कौरव पांडवनकौ जुद्ध आरंभ भयो जुद्ध
समयमैं दोऊ सेनाकौं तयार देषि अर्जुन श्री
कृष्णसौं बचन बोल्यो मेरे रथकौं दोऊ सेना
केबीचि स्थापन करौ दुर्बुद्धि दुर्योधनकौ हि
तकरिबेकौं जुद्धमैं आये तिनकौं देषूंगो ऐ
सैं अर्जुनकौ बचन सुनि अर्जुनके रथकौं श्री
कृष्ण भीष्म द्रोणादिकनके सन्मुष स्थापन क
रि बोले हे अर्जुन इन कौरवनकौं देषि तब
अर्जुन सेना देषी तामैं पितृ पितामह आ

चार्यमित्रसुहृद पुत्रपोत्र सषाश्वसुरगुरु
ऐसेदोऊसेनामेंसर्वबांधवनकोंदेषिकृपा
सहितदुष्षकरतबोल्यो हेश्याकसजुरुकरि
वेकोंआये स्वजनकोंदेषिमेरीसदुष्षपावत
हे मुषसूकतहे रोमांचकंपादिकहोयहे गां
डीवधनुषहाथतैंगिरेहै त्वचाजलेहै ग
टारहिसकूंनही मनभ्रमैहै सकुनषोटेदी
षैहै तातैंसुजनकोंमारि विजयसुषराज्यन
चाहूंहौ जिनकेअर्थराज्यभोगसुषचाहियै
वेप्राणधनकोंछोडिजुद्धमेंआये आचार्य पि
र पुत्रपितामह मामा श्वसुर साला सं
बंधी एमोकोंमारैतौहूमैत्रैलोक्यकेराज
निमित्तहूइनकोंनहीमारूं यहपृथ्वीकोरा
ज्यकहाहै धृतराष्ट्रकेबेटानकोंमारतैंह
कोंकहासुषहोय इनआततांईनकेमा
पातकहीहोय तातैंधृतराष्ट्रकेपुत्रनकैं
मारणोजोग्यनही स्वजनकेमारैंकहासु
होय यहलोभकेमारैपुरुषकुलक्षयक
सकों मित्रद्रोहकेपातककोंनदेषैहै
कोंनकरैंगे

हा

४० नष्टहोंय कुलधर्मनष्टभयें अधर्मबधे अध
र्मकीवृद्धितैंकुलस्त्रीनष्टहोय तबवर्णसं
करसंतानहोय वहबर्णसंकरसंतानपित
रनकोंपिंडदांनदैकैंनर्कनमेंपटकै असेंव
र्णसंकरकीवृद्धितेंजातिकुलधर्मनष्टहोय
धर्मनष्टभयेंमनुष्यनर्कहीमेंपड़ै सोहम
राज्यकेसुषलोभतेंमहापातककरिबेकों
तयार भयेस्वजनहत्याकरिबेंगेलें सोअ
बनकरेंगे अरुधृतराष्ट्रकेबेटासस्त्रचला
वैंतो हाथहूंचाडेंनकरेंगे अरुसस्त्रहूधा
रणनकरेंगो जोधृतराष्ट्रकेबेटारणमें
मारिडारेंतोहूकुसलहोय असेंकहिअर्जुन
धनषबाणधरिसोकसोंव्याकुलहोयरथमें
बैठिगयो इतिश्रीभारथसारचंद्रिकाभी
ष्मपर्वणिप्रथमोध्याय १ संजयउवाच असें
सोकलग्योतेंरुदनकरतविषादसहित अर्जु
नकोंदेखि हसतेहीश्रीकृष्णबचनबोले
हेअर्जुनअसेंरणमेंकायरतानेंकोंकहांतें
आई कायरतातोनीचकोधर्महै असेंकि
येंयालोकमेंअपकीर्तिहोय परलोकमेंनर्क
प्राप्तहोय ...

सूखीरहे॥ तातेंताकोंनपुंसकपणोयोग्यनही॥ युद्ध्जीवनकासीकायरताछोड़िउठिकेसत्व धारियुद्धकरि॥ तबअर्जुनबोल्यो॥ मेंकायरता तेंयुद्धसोंनटोंनही॥ जिनहमकोंबालकपणेतें पाले॥ विस्तापदाई॥ ऐसेभीष्मपितामहगुरु द्रोणाचार्य॥ जिनसोंबाणीहूतेंयुद्धजोग्यन ही॥ तिनतेंबाणीनसोंकैसेंयुद्धकरें॥ येतो पूजाकरिबेकेंजोग्यहें॥ गुरूनकोंपितामह नकोंमारिकरिभोगभोगनोंसोतोरुधिरपा नहे॥ इनकोंमारेबिनाभिक्षाकरिजीवणोसो हीश्रेष्ठहे॥ राज्यसंपत्ति जिनकेवास्तेचाहि ये॥ सोतोसर्वहीप्राणधनछोडिजुद्धकरिबे कोंतयारभये॥ याधर्मसंकटमेंयुद्धकरेंसो अथवा॥ भिक्षाकरिजीवेंसोधर्महीयसोनि श्चयकरिआग्याकरो॥ मेंआपकोंसरणागत सिष्यहोंतुमबिनामेरोउद्धारकरिबेवालोऔ रहेनही॥ संजयउवाच॥ ऐसेंदोऊसेनाके बीचिबिषादकरतेअर्जुनसोंश्रीकृष्ण तिनकों सोच वे हेअर्जुनसो
वेपंडितनही॥

ोलतहै पंडितनौमरेनकौंवाजीवतेनकौन
ीसोचत सुधर्मदृषिकैकायरपणेजोग्य
नही अरुक्षत्रीनकोधर्मकरिप्राप्तभयोजोयु
द्धतातेंअधिककल्याणकौंकरिबेवालोहूसरोसा
धनहै नही तातेंईस्वरकीइच्छातैंमिल्योखुल्यो
हुवोस्वर्गकोद्वारतौयुद्धहीहै सोअतिपुन्यवंत
क्षत्रिपपावतहै अबधर्मसोप्राप्तहुवोजुद्धन
करैगोतौ सुधर्मवाकीर्त्तिकोंछोडिनर्कमेंपडैगो
चंद्रसूर्यरहै गतौलगतेरीअकीर्त्तिजगतमें
रहैगी प्रतिष्टितको अपकीर्त्तिमरणतैंभीअ
धिकहै रथातेंरणविमुषभयोपहकोइनक
हैगो जैतोकोंबहुतमानेहै वेसबतोकों
तुछजाणेंगे षोटेबचनकहैंगे तेरेसामर्थ्य
ताकीनिंदाकरैंगे यातेंअधिकदुःषकहाहै
युद्धमेंमरैगौतौ स्वर्गपावेगो जीतेगौतौभू
मिभोगेगो तातेंयुद्धकेनिमित्तउठि सुष
दुष लाभ अलाभ जय पराजय येसबसमा
नमांनियुद्धकरि ऐसैकियेपापनलगैगो य
हमैंबुद्धिदईहैसोकरि मोकियामैंभाग्योअ
सेबद्धचितहूमतकरि जोकर्मकरै वानो

ननकरे ओहोमें ओदेवे ओतपकरे सोमेरे
अर्पणकरि कर्मतोकरि परंतुफलकी कामना
मतिकरे सिद्धि असिद्धि समानजाणि फलका
मनाछोडि क्षत्रियको धर्मयहही है ऐसोजा
णि जुद्धकरि पापतेंलिपेगोनही ऐसोश्रीकृ
ष्णकोवचनसुणि अर्जुनमोहछोडि जुद्धकरि
वेकोंउठ्यो सस्त्रधारणकिये तासमयमेंस
र्वबारसस्त्रास्त्रप्रहारकरिबेलगे वीरनकेप
रस्परकोलाहलभेरी तुरी डमरू नगारे सं
ष बाजाबजे तासमयमेंयुधिष्ठिरसस्त्रछो
डिरथतेंउतरिचल्यो ताकूं देषिकहीराजा
कहांजायहे ताकेपाछेंभीमादिकभ्राताहू
पयादेसंगभये तिनसहितराजाभीषमपा
सगयो ताकूंदेषिसर्वकौरवदुर्योधनादिक
ऐसेंबिचारतभयेयहयुधिष्ठिरभयपनीतके
केसरणआयो तापीछें युधिष्ठिरभीषमके
चरणनमेंप्रणामकरिबोल्यो हेपितामहह
मतुमतेंजुद्धकरेंविजयकेनिमित्तयहआ
ग्याद्यो ऐसेंसुणिभीषमबोले हेयुधिष्ठिर
तुमजुद्धकरो हमकोंजीतो जोआगपालेंवे

भीष्म० कौनपावैतो तौलौकौंशापदैनौ तातै
२४३ यहतौकोयोगपहाहो अबकहाबरह
युधिष्टिरबोले जो आपप्रसन्नहोतो
मरिबेको उपायबतावो तबभीष्मबोले
रेवजुद्धकरेंतौहनमरौं फेरिकनीआवै
बनिजमरणकोउपायकहौंगो ऐसैंभी
मिलिद्रोणाचार्यपासगयो उहांहभीष्मवे
सिष्टाचारकियो जबद्रोणाचार्यहभीष्मलौं
नदेयबोले जबराजउनहकोउनकेमरबेवे
पायपूछ्यो जबद्रोणबोले मैसस्त्रत्यागक
तबमरौं जबयुधिष्टिरकहीसस्त्रत्यागके
करो तबद्रोणबोले तौसरासेसत्यबादी
मुखसौं अतिअप्रियसुणोंतबसस्त्रत्यागक
रौं तातेअबतुमजावो जुद्धकरिबेरीनकोंज
तो ऐसेंद्रोणकीआग्यापायकृपाचार्यपा
सजायप्रणामकरि दोऊनकोसंबादकरि
जयकोआसीर्बादपायशल्यपासगयो ता
कोंप्रणामकरि प्रसन्नकियो जबवहबरदे
नदेवेलग्यो तबपहलीप्रतिग्याकर्णकोउ
त्साहभंगवचनकीकरीहोसोहीह्रकहा

ई॥ तापाछेंश्रीकृष्ण चेंद्रकर्णकेपासजायबो
ले भीष्मजीवृतेंतजुद्धमेरेंगोनहीं॥ तातेंह
मारेसामिलहो॥ भीष्ममरेपीछेंहूनमेंसहि
ष्ठायमिलियो॥ सोबचनकर्णमान्योनहीं॥ ते
बश्रीकृष्णयुधिष्टिरदोऊसेनाकेबीचमुजा
उठायकेबोले॥ जोअबहूहमारेसामिलआवें
ताकोंअंगीकारकरें॥ ऐसेंसुणिंकेराजाध
तराष्ट्रकेसौ१००कुपुत्रनतेंजुदोंहोय युयु
त्सुपुत्रपांडवनमेंमिल्यो॥ ताकोंसंगलेंनि
जसेनामेंआय राजायुधिष्टिररथपेंसवा
रभयो॥ औरहूभीमादिकभ्राताहूरथनपेंचढि
जुद्धकेनिमित्ततयारभये॥ सबनकेरथन
कनकेहीवरअश्वनकेंसपगजनकेगाति
नशस्त्र वीरनकेसिरनारसबकलबाहिश्र
स्त्रिनकरिदसोंदिसाशाप्यमानभई॥ त
हांसंग्राममेंसवारसवारतें पयादेपया
देनतें रथीरथीनतें हाथीनकेसवार
हाथीनकेसवारनतें परस्परकेंद्रजु
करतभये एककेंकेलागसकें कोपकर्तेंक
ल्लोनदिमन्त्रिभई पी ॥ ९९ ॥

रिरुधिर कीवर्षातैंरजइबी तापीछैंबारप
रस्परघोर हकरतभये तिनमैंकितनेनके
शिरभुजाहाथपेपाउकटिकटिरणमैपड़ेति
नकरिभूमिछापगई तासमैंमैंअभिमन्यु बा
णवर्षाकरत शत्रुनकेव्यूहमैंप्रवेसकरि
बैरीनकैामथनकियो ताकेरोकिवेकों राजा
बृहद्बल कृपाचार्यदोऊआये तब अभिम
न्युबृहद्बलसोंघोरजुद्धकरतभयो त्यांजो
धानकोसबजोद्धादेषतभये दुर्मुषधृतराष्ट्
पुत्रबृहद्बलकीसहातांकोंआयो ताकेसा
रथीकोंसहदेवमारयो बृहद्बल बाणनकरि
अभिमन्युकेसारथीकोंअरुध्वजाकोंकेरव
करयो सोदेषिकोपयुक्तहोयअभिमन्युस
कलसेनाकोंमर्दनकरि बाणवृष्टितेंदशों
दिशाआछादितकरी सर्वसेनाकोंव्या
कुलकरिनगाई सेनाभागीदेषिभीष्मपि
तामहधनुषटंकारकरि बाणनकीबर्षा
करतेआये तबर्षातेंपांडवनकीसेनाव्या
कुलभई ताकीरक्षाकरिवेकों एकअभिम
भीष्मकेसन्मुखआपभीष्मकेऊद्यमैं २४४

बाणमारे॥ प्रपौत्रकेबाण उरस्थमेलगे तिन
कोपुष्पवृष्टितुल्यमानि आनंदतेनेत्रमीचे
कोसबकौरवननेंब्याकुलमांनिसहायता
केनिमित्त॥ कृपाचार्यकृतवर्मा॥ दुर्मुष॥ बि॥
बिंशति शल्य आयअभिमन्युसोजुद्धकरत
भये अभिमन्युऊमहारथीनकेबाणन
कीबथाकोनगिणी भीष्मकीधुजाकाटी दुर्मु
षकेसारथीकोंमाऱ्यो कृपाचार्यकोधनुष
काट्यो धजाछेदतें भीष्मकोधकरिजमदं
डतुल्यबाण चलायेतिनकोंदेषि पांडवनकी
सेनातेंसहायतानिमित्तदशमहारथीआये
तिनकोंदेषिभीष्मऐसोजुद्धकऱ्यो सोसब
ननेंभीष्मकोंमूरतिवंतबीररसहीमान्यो त
हांबिराटपुत्रउत्तरभीष्मकेसारथी श्री
श्वनकोमारे तबशल्यदेषिउत्तरकेमार
बेकोंशक्तिचलाई ताकेप्रहारतें हाथीतें
गिरिकैउत्तरमऱ्यो जबउत्तरकोभ्रातासं
ष शल्यकेसारथीघोडामारे शल्यब्याकु
लहोयकृतवर्माकेरथपैचढ्यो ताकोंसंष
बाणनतेंब्याकुलकियो तासंपलेपांडव

जयद्रथआयजुद्धकरिरह्यो तबसंषकेमा
रिबेकोआवतेभीष्मकोअर्जुनआपरोके
तबभीष्मअर्जुनकोजुद्धअनेकबारनकोसं
घारकियो अरुसंषशल्यकोपयारोकस्यो
तबशल्यगदाप्रहारकरिशंषकोरथतोडि
आपहोतैसोहीकियो जबसंषषड्गप्रहा
रकरतबैरानकोमारि अर्जुनकेरथपेंचढ्यो
जयद्रथअर्जुनबिनासबपांडवनकोब्याकु
लकिये भीष्मगजघटानकोषंडषंडकरतभट
समूहकोसंहारकरत रथीनकेसमूहको
छिन्नभिन्नकरतसवारनकोमारतभयोसा
क्षातजमरूपहीदीषै बांणनतैंआकास
छायगयो तासअंधकारकोदेषिसूर्यअस्ता
चलकोगयो जबभीष्मजुद्धकोअवहार
कस्यो तबचंद्रमाकेप्रकासतैंसर्बबीरआ
पआपकेस्थानगये इतिश्रीभारथसार
चंद्रिकायांभीष्मपर्बणिप्रथमादिवसजुद्धव
र्णनंनामद्वितीयोध्याय बैशंपायनउवाच
रात्रमैराजायुधिष्ठिरभीष्मकोपराक्रमदेषि
ब्याकुलभयो ताकोश्रीकृष्णसमाधानक (४५

रतभये प्रभातसूर्योदयसमेक्रौंचव्यूहरचि
कौरवपांडवजुद्धकरतभये भीषमबाणनके
राजानकेसिरकाटे सोपृथ्वीमेपडतभये
तिनकोदेषिअर्जुनलडवेकोदोड्यो तिन
सोंऊनकोद्वंदजुद्धभयो औरवीरपरस्परय
थेजुद्धकरतभये भीमसेनकलिंगराजकी
सेनामेजाय हाथीनकेसिरगदासोंबिदीर्ण
करे तिनतेमोतीरनकीबर्षाभई हाथीन
कोंपकड़िपकड़िकेआकासमेंफेंके तिनके
रुधिरकीबर्षातेंब्याकुलक्षत्रदेवभानुम
तयेदोऊभये तबउनदोऊनकोंभीममा
रे ऐसेभीमकोपराक्रमदेषिसेनाभगी
ताकोसमाधानकरतभीषमभीमसोंजुद्ध
आयकियो जबदुर्योधनादिकभीषमकी
सहायताकोंआये भीमकीसहायताको
अभिमन्युआयो तिनकेपरस्परअतिघो
रजुद्धभयो तामेंअनेकबीरमरे रणभू
मिमर्दुकाकीडाभूमिसमानभई सूर्य
कोअस्तभयोदेषिजुद्धकोअवहारभयो
इतिद्वितीयदिनजुद्ध फेरिप्रभातभीषम

१०६ ८५ हस्तनाकरी पांडवग्रंथ ध्वंस बूहव
रियुद्धकी बेलगो परस्परप्रहारनतें रुधिर
वृष्टिभई तातेसबरक्तवर्णभये तासमेंमेंना
घघटोत्कच द्रोणकोरवसेनामेंप्रवेसकेपा
सर्वकोरव द्रोणनपरबाणवृष्टिकरी जब
भीमसेन दुर्योधनकों विरथकरि उरमेंबा
णमाऱ्यो तासोंमूर्छितहोयगिऱ्यो तबसा
रथीदुर्योधनकोंलेगयो फेरिचेतपायनी
षपेग्राय दुर्योधनबोल्यो तुमपांडवनतें
मिलेहो सोमनसों युद्धनहींकरतहो
ऐसैसुनिभीष्मक्रोधकरि बाणबर्षायपां
डवनकीसेनाग्रतिब्याकुलकरी मोर
पिभीकृष्ण ग्रर्जुनकेरथकोंभीष्मकेसनु
षल्याये ग्रर्जुनबाणवृष्टिकरिभीष्मके
बाणनकोंछेदि ग्रनेकराजानकेसिरका
टे ग्रौरराजानकेसिरकाटिकाटिप्रथ्वी
मेंबिछायतकरी भीष्मकेभक्तिग्रौसक्ति
दोऊदेखाई भीष्महूबाणधारानकरिश्री
कृष्णग्रर्जुनकोंपिंजरमेंदेपप्रहारकी
तनकरिदोऊरुधिरमयभये इनकादसा १४६

देषि पांडवनकी सेनाभगी। अर्जुन भीष्मकेगी
रथतैं सिथलनुह करतभयो। तबश्रीकृष्णबो
ले। तुयावृद्धको मारेनहीहै सोमेंमारोंगो ऐ
सेकहिरथतैंउतरिचक्रलेंपभीष्मकेसन्मुष
दोड़े। तबभीकृष्णको आवतदेषि भीष्मबो
ले। हेर्नपयआईयेआईयेआपकेप्रसन्नक
रिबेकोंतपवृष्याहीकरहे। मैअपराधीह
धन्यहो। अबमेरोशिरचक्रतें काटिये ऐसें
कहि शिरनवायो। सोदेषि अर्जुनरथतेंउ
तरि श्रीकृष्णकोरोकभुजानवीचिपकडे
अरुबचनबोल्यो। हे कृष्णप्रतिज्ञाभलि
यहक्रोधकरिबोअसमयमेंजोग्यनहीआ
पकोहीपराक्रममोमेहै सोदेषो। ऐसैंकहि
प्रणामकरिरथपैलेगायो फेरिधनुषधारि
बाणनकीवर्षाकरि अनेकरथीमहानकों
मारिरणभूमिकोंरुधिरमईकरी। ताकोंदे
षिसर्ववीरप्रलयकालमेंकुपितजोरुद्रता
कीतुल्यहाअर्जुनकोंमानतभये। ऐसैंअर्जु
नकोविजयदेषिसर्वसेनाव्याकुलभई। स
र्यास्तजाणिसबवीर अपने अपनेस्थान

गये इती तृतीयदिनजुद्ध सबही बीतरात्रि
बितीतकरिप्रभातही कौरवकर्मव्यूहकरिजु
द्धकौंग्राये पांडव अर्धचंद्रव्यूहरचिजुद्धकौंआ
ये भीमअभिमनुकौंमुख्यकरिदोऊसेनाजु
द्धकरतभई कितनेककालताईभीमकेअ
भिमन्युकेसमानजुद्धभयो धृष्टद्युम्नपौरव
कोपुत्रमदन आयमो इदन ऊनसौंजुद्ध
करिदोऊनकौंमार भीमसेनमगधेइ कीसे
नाकेहाथीनकौंमारिपयादौगदागहिबीर
नकौंऐसेंमारतभयो जैसेंतृणमंडलमें
बिचरतअग्निनासकरै जबदुर्योधनभ्रा
तानसहितआपभीमकेहृदयमेंबाणमा॰
रे सोव्यथासहिभीमक्रोधकरिएकबा
णदुर्योधनकीछातीमेंमारयो तासोमूर्छि
तभयो ताअवकासै सेनापति सुषेण
जलसंधः सुलोचन भीम उग्ररथ भीम
बाहु अलोलुप सम बिबित्सु बिकट दुर्मु
ष दुर्षण दुर्मर्ष इनचौदहनकौंभीमयम
लोकप ठायसिंहनादकियो तासमैमेभ
गदत्तहाथीपरचढ्यौ आपभीमकौबाण

तैमाकुलहियो तहाँ...
नकीसेनाकौमारि...
हाथीसहितहाप...
जानकोमारि घोर...
रात्रकरी तारात्रमें आपनेघरायेकी...
घोनही बीर बहुतमरेतिनकोदेखि...
दिनहीमें जुद्धकोसमासकियो सोसुणेको
रव्या जितोनमरे असें बिचारत उरानकों
गये अरुपांडव प्रभातमारे गये सो नि...
रतआपकेडेरानकोगये इती चतुर्दस...
सजुद्ध तापीछेदुर्योधनरात्रमें भीषमपास
जापपूछी हेपितामहनित पांडवमारि
हें अरु आपनो विजयनही ...
हा जबभीषमबोले हे दुर्योधन ...
कोजाननाते नरनारायण ...
भये सोउनको ...
तेहै तासौं ...
असैंसुणिदुर्योधन ...
तेरात्रिबितातकरी ...
दूसरे पांडवनको ...

आये भीम भीष्म एदोऊ रे नानमैंप्रबलकार
घोरजुद्धकरतभये तहांसात्यकीयास्वरस
हजाररथीनकोंयमलोकपठाये ऐसोसा
सकीकोपराक्रमदेषिभूरिश्रवासात्यकीकेद
सपुत्रमारे तापाछेसात्यकीअरुभूरिश्रवा
घोरजुद्धकरतभये क्रोधसोंदोऊविरथहोय
केषड्गजुद्धकरतभोहितभये तबभीमसेन
दुर्योधनआपआपकेरथनमेंधरिदोऊमं
डितनकोंलेगये चेतपायदोऊहींजीव
नकोंमरणतेंअधिकमानतभये तासमें
मेंसात्यकीकेपुत्रनकोंमरणसुणिअर्जुन
क्रोधनेकौरवसेनाकोंअग्निरूपबाणना
सकरतभयो पचीसहजाररमहारथीमा
रियमलोकपठाये सबसेनारुधिरमईन
दीनमेंरूबर्णहोयपहोयव्याकुलभई ताके
समाधानकेनिमित्तभीष्मकूचकरतेक
रतेंहीसूर्यअस्तभयो तबजुद्धसमाप्तभयो
इतिश्रीभारतसारचंद्रिकायांभीष्मपर्वणि
पंचमदिवसजुद्धनामततीयाध्याय फेरि
प्रभातहीकौरवतोंओंचक्रव्यूहरचि पांडवम

करब्यूहरचिरोकजुद्धकरतभये सोभीष्मवे
बाणनकरिपांडवनकीसेनाब्याकुलभई
ताकोदेषिभीमधृष्टद्युम्नकौरवनकीसे
कोतृपकरतभये तहांभीमसोंदुर्योधनद्वं
जुद्धकियो तबभीमदुर्योधनकेप्रहारसों रि
रथतेंउतरि सेनडनहाथीनकोंपकडिप
कडिआकासमेंफेंकै घोरधृष्टद्युम्नबाण
नकीबर्षाकरिकौरवनकोंब्याकुलकरे ध
ष्टद्युम्नकेबाणनतेंदुर्योधनमूर्छितभयो
ताकोंकृपाचार्यरथपेंधरिलेगये तबपां
डवनकीसेनाकोंसिंहनादसुणिभीष्मबा
णबर्षाकरी तहांद्रौपदीकेपांचोपुत्रभा
गि निजसेनाकोंथांभि कौरवनकीसेना
कोतृपकरयो इनकोंजुद्धहो तहांतहींसू
र्यअस्तभयो तबजुद्धसमाप्तभयो इतीष
ष्ठमदिवसजुद्ध नामचतुर्थोध्याय ४
प्रभातहीभीष्ममंडलब्यूहरचि पांडवनके
बज्रब्यूहकेसन्मुषआये तहांअर्जुनभी
ष्मकेघोरजुद्धभयो बिराटकेद्रोणाचार्य
केजुद्धभयो सोजुद्धमेंबिराटबिरथहोयस

षकैरथमेंसवारभयो जबपितापुत्रदोऊद्रो
सोजुद्धकरतभये तबद्रोणाचार्यशंषकोंमा
बिराटकोंब्याकुलकियो तहांसात्यकीपार
आयबिराटकोंछुडाय द्रोणाचार्यसोंजुद्धकि
यो तहांअलंबुषराक्षस बिंद अनुबिंद उ
ज्जैणिकेराजाआय द्रोणाचार्यकीसहायता
करी तहांअर्जुनकोपुत्रइरावानआय बिं
द अनुबिंदकोंभगाये सात्यकीअलंबुषको
घेरि अस्त्रतेंभगायो ताअवकासमेंभगदत्त
घटोत्कचदोऊसेनानमेंप्रवेसकरिआति
जुद्धकरतभये शल्यनकुलसोंजुद्धकरतभ
ये श्रुतायुकेयुधिष्ठिरकेजुद्धभयो ऐसे
जुद्धमेंअनेकवीरमरिमरि जमलोकगये
तहांसूर्यास्तदेषिजुद्धसमाप्तकियो इतिश्री
सप्तमदिवसयुद्धनामपंचमोध्याय ५ ता
पीछेप्रभातहीभीमसेनाआगरब्यूहरचिपांड
वनकेशृंगाटकब्यूहसोंजुद्धकरतभये त
हांधृष्टद्युम्नआदिअनेकवीरनकोंभगा
ये तहांसर्वसेनामेंएकभीमही सन्मुखआ
भीष्मकेसारथीकोंमारयो जबरथकेघो

उर्द्रतउत्तमभमंतभये तासवकासमैंबका
शी कुंडधार विशाल अपराजित पंडितक
महोदर सुनाभ एसातधृतराष्ट्रकेपुत्रन
कोंभीममारे तबतहांसातनकोमरदेषि
अदिस केतनामभ्राताजुद्धकोंआये ता
कोंभीमयमलोकपठायो ऐसेभीमकोरवबी
रनकोंमारिगर्जनाकरिसबनकोंबहरेकरे ता
समयमें अलंबुषकोपुत्रइरावान सकुनीके
सात ७ पुत्रनकोंमारिरणमेंविषज्वालान
कीबर्षाकरतभयो तबदुर्योधनकीआग्या
ते अलंबुषमायामयघोड़ापेचढि राक्षस
नकीसेनासहितजुद्धकोंआयो तबयाके
अरुइरावानकेजुद्धभयो तहांराक्षसनकी
अलंबुषकेमुषतें अग्निज्वालानिकसी इ
रावानकेमुषतेंविषज्वालानिकसी तीन
करिकेराक्षसनकोंओरनागनकोबहुत
क्षयभयो जबअलंबुषराक्षसनकोक्षयदे
षिधनुषधारिबाणनकीबर्षाकरी तबइ
रावानराक्षसनकोधनुषपकरिसोकाटि अ
रुबारनकोंमारिकै ५

तो हू रावनसू अलंबुषसों पहलेकैकै कहोनफे
रि जुद्धकरत भयो तब इरावोन वाकेमारिबेकों
सेकड़नसर्पनको दृष्टिकरी जब अलंबुष स
र्पव राम सर्वसर्पनको भक्षणकरि षड्गसों इरा
वानको शिरकाट्यो तब इरावानको मऱ्यो देखि
घटोत्कचराक्षस अलंबुषकी सेनाको मथन
करयो अनेकबीरनको मारि आपके परिवार
केराक्षसनको मांस रुधिरसोंतृप्तिकरे ऐसे
घटोत्कचको पराक्रम देखि राजा भगदत्तहाथी
परचढ्यो हौसों आय घटोत्कचके रक्तकभा
रिराक्षसनको मारि गर्जनाकरी जब घटो
त्कचहू वरछाके प्रहारकरि अनेक हाथीनको
मारि भगदत्तसों जुद्धकरत भयो तहां अर्जुन
हू पुत्र इरावानको मरणसुणि क्रोधतें राजा
नकेमस्तकनकाटि रथ्याछापदई औरभीम
सेनहू क्रोधतें अनाधृष्ट कुंडली व्यूढोर
स्कदीर्घलोचन कुंडभेद दीर्घबाहु सुबा
हु कनकध्वज बिरज येनवदुर्योधनकेभ्रा
ताहे तिनकोमारे औरराजानको पांडवनमा
रे ऐसेंजुद्धकरतेभये तब देखिपुत्रावहारन

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] तहाँ [illegible]

पकेतुजब [illegible]

कन्नाकेरिबेवालेसरस [illegible]

सेसेसामर्थवानहूतुमपोडसेन [illegible]

रिमारेनहीं तातेंतुमकर्णकोंभ्रागपास्राते

पहमारेगो ऐसेसुणिभीमबोले [illegible]

र्जुनकोंकोनजीतिबेवालोहै [illegible]

मेरेबाणदेषेगो ऐसेंमुनि [illegible]

योधनगयो तापीछें मपानं [illegible]

तोभइ्यूहकरि पांडवनकै [illegible]

सोंजुद्धकरिबेगयो तहांव [illegible]

पांडवनकीसेनाकोंब्यार [illegible]

पि अभिमन्युबाणधारनकै [illegible]

रवनकीसेनामेंघोरजुद्ध [illegible]

नाइर्योधनआगपाकरी [illegible]

नसबाणधारानकरि अभिमन्युकौछाया
कीसहायकरिकैंदोणपुत्रजाय
तिनसौंलंबुषकेसबबाणकाटिकरिक्षि
नकियैं नाथीकैंरामचलपायतमोमईमा
याकरी ताकेअंधकारकौदिषिसूर्यासक
प्रभावतैंअभिमन्युरावणकौबाणनतैंछि
न्नभिन्नकरिभगायो तबभीष्मकौआदिदै
महावीरमिलि अभिमन्युकौघाल्योतर
कल्यौघेरिबाणनकोबर्षाकरी जबअभि
मन्युहूसबननैंयुद्धकल्यो तबतहांअर्जुन
आयकैंबनास्त्रकरिदीरथनकौउडायै तब
द्रोणाचार्यपर्वतास्त्रकरिपवनकौबं
धकरी अरूपांडवनकीसेनाकौचूर्णक
रतभये जबअर्जुनबज्रास्त्रतेंपर्वतनके
षंडषंडकरि बीरनकौमारिरुधिरकीसे
कडननदीकरी तबभीष्महूकोपकरिपां
डवनकीसेनाकेबहुतबीरमोरे बाणन
केमहारननैंफेरअर्जुनकौआकुलकियैं
तबअर्जुनकौयुद्धमैमदहोंषदौंकैसरकौं
छाडिभीष्मकेसन्मुषदौंडे जबभीष्मकी

श्रीकृस्नकोश्राव्रतदेषिबोले हेनाथहेगोबिं
दश्राइये अरुमाँदोकोरछानेमारिये ऐसें
भीषमकोबोलीसुणिअर्जुनरथतेंउतरिप्रणा
मकरिश्रीकृस्नकोरथपेलेगयो तापीछेअ
र्जुनबहुतबाणकरिबीरनकोमारि जुद्धमैंक
वंधनतदेषतभयो अरुभीषमबहुतबी
रनकोसंघारकरतसूर्यास्तदेषियुद्धकोस
माप्तबोले इतिश्रीनवमदिवसयुद्धनाम९
सप्तमोध्याय ७ अरुनवेदिनभीषमको
घोरयुद्धदेषि रात्रिमैंयुधिष्टिरश्रीकृस्न
सोंबोले जोतीनलोकसामिलहोयपुद्धक
रतोहूभीषमसोंजीतैनही हमनमर्षपगतें
युद्धकोश्रारंभकियो जैसेपतंगचाहेजैस
नोहीपराक्रमकरो प्रज्वलितअग्निकोतोबुझाय
सकेनही ऐसेसुणिश्रीकृस्नबोले हेरा
जनप्रभातमैंभीषमकोंमारूंगो अर्जुनमैं
अरुमोमैंभेदकराहे तबयुधिष्टिरबो
ले मेंतुमकोमिथ्यावादीनहीकरोंगो भी
षमहीपूछें सविजयकोउपायपूछैंगे सो
ऐसेंनिश्चयकरिश्रीकृस्नकोश्रोरपेदेषिरचा

तानसहित भीष्मके पास युधिष्ठिर गये तहां जा
पप्रणाम कियो जब भीष्म हस्ती कुशल कैं कोप्र
पेदेपिप्रणाम करि प्रार्थना करी तुम ऐसे मो
सेअपराधी कोंदर्शन दे कृतार्थ कियो तब श्री
कृष्ण बोले तुम्हारे तुल्य और वीर हे हीन ही
तातें युधिष्ठिर की विनती सुनौ जब युधिष्ठि
र बोले हे पितामह तुम्हारे तुल्य और पराक्र
मी है नहीं तुम इच्छामृत्यु हो हमारा सब बे
ना मारी अब हम कौरवनसौं कैसे जीते
हम बालक पिता है नहीं हमारे पिता मस
रक्षक तुमही हो जो तुम्हे हमको मरणो ह
है तो हमसौं पहली ही क्यों न कह्यो जो तेह
वनकैं जाते गुरु को मार मन ही करते
रहमहुकौ रखहु तुम्हारे बालक है सोवे
र तो प्रबल अरु राज्यवंत है और तु
म उनही की रक्षा करत हो तातें उनतें आ
के दूसरा या पृथ्वी में है नहीं अरु हम नि
ले है राज्य भ्रष्ट है तिनको तुम हमारा ह
तै हमको आज्ञा पारी जे जो सत्रु के लान कै
य अपवापडु तें हमारा सिर लाटये अ

हमकोंजपकोउपापबनाईयै॥ तबभीषमवे
हे धर्मराजतेरीसमानश्रोरबलवानहेन
ब्रह्मादिकजाकेपापपूजेंसोश्रीकृस्नतुम्ह
रेपालकहे॥ यहश्रीकृस्नदुष्टनकोंमरायरा
तोकोंदेगो॥ ब्राह्मणनकोधर्मपालनकरेगो॥ हि
सश्रीकृस्नकीभक्तितेंतुमकोंकछूभीदुर्लभ
नहीहे॥ श्ररमेंजितनेंधनुषधारिजुद्धकरें
तितनेंमोकोंकोऊहीजीतिसकेनही॥ तातें
तुमसिषंडीकोंसेनापतिकरिमोसोंजुद्धकरो
मेंवाकेसन्मुषजुद्धनहीकरोंगो॥ तबतुम्हा
रोजयहोयगो॥ यासिषंडीनेंहीमेरोमरणहे॥
यहपहलेंस्त्रीहोसोमेंवाकोंस्त्रीहीजांणिबा
णनहीचलाऊंगो॥ तातेंश्रर्जुनसिषंडीकेपी
छेरहिमोकोंबाणनतेंमारिसरसय्यामेंसु
वावो॥ श्रेसेंसुणिपांडवभीषमकोंप्रणामकरि
डेरानकोंश्रायें॥ तापीछेदोऊसेनाकेयोद्धा
पहलेंयुद्धकरेहेतेसेंहीजुद्धकरतभये॥ त
हापांडवसिषंडीकोंश्रागेकरिभीषमकेसन्मु
श्राये॥ तिनकोंदेषिभीष्मबाणबर्षातेंश्रने

री तासमैंभीष्मकोबाणवर्षाकरतैंमध्यानके
स चलोकौंईहांदेषिसकेनहीं तबबाणधारा
वर्षतासिषंडीहांसन्मुषआयो ताकोंदेषिभी
ष्मबोले हेसिषंडीतूंतेरीइच्छापूर्बकमोपे
प्रहारकरिमेरेबाणतोपेंऐसेनहींआवेंगे जैं
सें कुंतीकोधनअपारआपैनहींजाय तबसि
षंडीबोल्यो हेभीष्मतुममोपेसस्त्रचलावो
अथवानहीचलावो परंतुतुमआजजीव
तेजावोगेनहीं अरुजोभाजोगेतोहीजीवो
गे ऐसेंकहिअसंष्यातबाणभीष्मपेचलाये
तबभीष्महूंरोमनकेअग्रभागतेंसिषं
डीकेप्रचंडबाणनकोंषंडनकरि आपकेबाण
नसों श्रीकृष्णअर्जुनकोंआछादनकरि
अनेकबीरनकेसिरकाटतभये तासमैपमे
थ्वीरुधिरमईहोयगई ऐसोउतपातदेषि
द्रोणाचार्यभयभीतहोयसकलकौरवन
कोसंगलेय भीष्मकीरक्षानिमित्त आये
कैंपांडुनकोंकोटकरतभये तहांअर्जुन
आपबीरमंडलीसहितवाकोटकोंषंडनके
असंष्यातबीरनकोंमारत युधिष्ठिरसे

हितभीष्मपितामहकेंप्रणामकरतभये॥ तब
भीष्मयुधिष्ठिरसेंबोले॥ हेपुत्र॥ तनेबीरनकों
मरणदेषिकरुणातेंमोकोंषेदहोतहे॥ तातेंमो
हूकोंनिपातनकरो॥ ऐसेंआपसुणिराजायु
धिष्टिर॥ आपकेसकलबीरनकोंभीष्मकेम
रिबेकोंपठाये॥ तबघोरजुद्धहोतभयो॥ तहां
रुधिरनदीनमेंअसंष्यातगजनकोंआदिलें
बहतभये॥ तहांभीष्मकेदिब्यास्त्रबलतेंस
र्वबीरनकोंबिमुषदेषि॥ सिषंडीसन्मुषआ
यबाणबर्षाकरी॥ तहांहसतभीष्मकोंदेषि
बसुआपबोले॥ हेभीष्मअबतुमकोंयासम
यमेंसत्यस्यागकरिबोयोग्यहे॥ ऐसीह
मारीबांछाहे॥ ऐसेंबसुनकोबचनसुणि
भीष्मजुद्धतेंसिथलभये॥ अरुसिषंडीबाण
नकोंप्रहारकरतरह्यो॥ तिनकोंभीष्मपुष्पस
मानहीमानतभये॥ तबअर्जुनऔरबीरन
केबाणबर्षातेंभजाय॥ भीष्मकोंअसंषिबा
णनतेंमर्मस्थलबेधतभयो॥ तबभीष्महूम
र्मछेदतेंअर्जुनकेबाणजाणि॥ अर्जुनपेबां
[illegible]

रोममैंभीष्मकेबाणप्रवेसकिये भीष्म हू उन
बा नतकोमर्मस्थानमें प्रवेसदेषिहासकेरि
पासठाड़ोजोदुःसासनतासोंबोले अरेदेषि
सर्पजैसेंबिलमेंसूर्यकेकिरणजैसेंजलमैं
तैसेंएबाणमेरेमर्मनमैंप्रवेसकरैहैं तातें
अर्जुनकेहीहैं सिषंडीकेनही अरु ऐसेंजा
णियेहैपुत्रकेप्रेमतैंइन्द्रहीबज्रधारावर्षहि
कहा अथवाकिरातकोरूपधारीरुद्रतेंपु
द्धकियो ताहूकेऐसेबाणसंभवें ऐसेंदुः
सासनसोंबोलि अर्जुनकेप्रहारनतेंआ
पकोंव्याकुलतानहींदेषिकरि अरेअर्जुन
तेरेबाणसिथलहीहैं तातेंइनप्रहारकी
ऐसीसीखाकरतहीसक्तिचलाई तबअ
र्जुनवासक्तिकेतीनषंडकर तासमयमेंभ
ईलअस्त्रपीसतीनबाणचलावे ताव
इकरी तबअर्जुनक्रोधकरि असंषिबा
नकरिभीष्मकेरोमरोमबधिमर्मछेद
किये तबभीष्मसायंकालमेंसर्वलोपथ
मेंपड़े एरनागमानंनिमेषअसोंषिसरनि
कीशय्यामेंसोये ताकोदेषिसकलबीर

हाकारकरतभये॥ दुःखसोकभयतैंशकलरा
जांनकेनेत्रनतेंअश्रुपातभये॥ सर्वबीरम्लुं
कंप युक्तभये॥ अरुभीष्मकोंतोदिब्यरूपानही
रह्यो॥ तासमयमेंआकासबाणीभई॥ हेयोगे
श्भीष्म॥ उत्तरायणकालपर्यंतप्राणनकोंश
रीरमेंधारणकरो॥ औरगंगाकेपठायेहंसरू
पधारिमुनिजनने हूं असेंहीकह्यो॥ सोसुणि
भीष्मयोगेश्हू बोले॥ उत्तरायणपर्यंत असें
हीरहोंगो॥ तापीछेंतहांरुदनकरतेकौरव
पांडवनकोंभीष्मसमाधानकरिकेबोले हे
पुत्रहोमेरोसिरलटकेहै॥ याकेंतकिया
लगायमेरोकष्टहरिकरो॥ तबदुर्योधन
कोंआदिदे राजाअनेकअनेकतरहकेत
किपाल्याये॥ तिनसबनकोंअनादरकरि
अर्जुनसोंबोले हेअर्जुनत् तकियालगा
य सोसुणिअर्जुनतीक्ष्णबाणगुदीमेंमा
रिसिरऊंचोकियो॥ तबभीष्मअर्जुनकोंस
राहिगांधारीपुत्रनसोंबोले॥ सपत्नीनके
बेरपतिजीवतरहै तबता   असेंतु
म्हारोह बेरमेरेमरण   तासों

अबबैर कीऊ सोदुर्योधनमानीनहीं तापी
छे रात्रिमेंजलमाग्यो जबराजासुवर्णपात्र
मेंजललेकेआये तिनकोअनादरकियो ता
हिदेषिअर्जुनदिव्यास्त्रबलतेंदिव्यजलधारा
निकासितिनकोतृप्तकिये जबभीष्महूअर्जु
नकीबहुतसराहकरी तबऔरराजनकोग
येपाछेकर्णआयहाथजोडिभीष्मसोंअप
राधक्षमाकरायो जबभीष्मकर्णसोंबोले
हेकुंतीकेपुत्र पांडवतेरेसहोदरहें तातें
पुत्रतउनसोंबैरत्यागकरि तबकर्णबोलो
मेरोवैरतिनसोंहै तिनसोंतोहैही औरप्रेम
तोदुर्योधनसें अबवाद्धमेंहैं ऐसेंबोलि
रथमेंसवारहोयगयो तापाछेवारात्रिमें
अर्जुनकेबाणभयतेंव्याकुलदुर्योधनकी
सेना ताकोकर्णवीरकेवचनहींसमाधा
नकरतभये दोहा भीष्मपर्वभाषायहैभार
तसारप्रमान रायचंदसिंघकेहुकमकीनो
सुकविसुजान १ इतिश्रीभारतसारचंदि
कायांभीष्मपर्वणिनामअष्टमोध्याय ८॥

श्रीगणेशायनमः [illegible]
चैवल [illegible]
दीरपेद २ [illegible]
रतसारके [illegible] ते सेनपत [illegible]
पीस्सकेअर्जुनने [illegible] कर्णदुर्योधन [illegible]
कासपापदुर्योधनकर्णकीसलाहतेसे [illegible]
पर्कूसेनापतिकोअभिसेककियो तबद्रो
णचार्यदुरपोधनसूंकहीबरमांगि तबदु
र्योधनकहीयुधिष्टिरकोंजीवतेकोपकडि
तबद्रोणबोले जोवाकेनिकट अरजुनरहे
नकरैतोयुधिष्टिरकोंपकडिल्यो सोसुणिकौ
रवनकीसेनामेंबडोहरषनादभयो यहसुणो
तसुणियुधिष्टिरअर्जुनकूंआपरक्षा [illegible]
तिराषिबेकोचक्रव्यूहरचतभयो तबदुर्योध
नसकटव्यूहराचिअर्जुनकोंलपारभयो [illegible]
बद्रोणाचार्यहरतकवरणकेअ [illegible] पुन [illegible]
र्णरथपेसवारेहायबुहबे आगेभये [illegible]
र्णकोकमंडलवेदी एरे ध्वजापेंचिन्ह [illegible]
श्वेतकेसश्वेतवस्त्र [illegible]
[illegible]

सनमुषग्राये तिनद्रोणाचार्यबाणनकीव
ष्टिकरिव्याकुलकिये अरुअर्जुनकेअरु
कर्णकैघोरयुद्धभयो अरुभीमसेनसल्य
पेरोउरणमैंमड़लकरतेगदायुद्धकरतभ
ये दोउमूर्छापायभूमिमेंपरे तबसह्देवकौ
कृतबर्मारथमेंधरिलेगयो तापीछैभी
मसेनउठिगदातैंअनेकबीरमंडलकोषंड
नकरतभयो तबकर्णकेपुत्र ब्रषसेनपां
चोंद्रोपदीकेपुत्रनकोयुद्धमेंव्याकुलकर
तभयो तहाद्रोणाचार्यअतस्पापालनक
रिबेकोयुधिष्टरकौसाकरबेवारे स्पंघ
मुष युगंधर व्याघ्रमुष कोंआदिले रा
जांनकोमारे तायुद्धमेंअनेकबीरनकेरु
धिरकीनदीभई ताकेप्रवाहमेंपिसाचाग
जसुंडनसोंरुधिरभरिभरिपानकरिमदो
नमत्तभये अरुमांसभक्षणतेंत्रप्तहोय
अर्जुनकेधनुसकीटंकारसुनिसुनि
नाचतभये तापीछैंअर्जुनकोरवनकी
सेनाकेबीरनकोंमारिबिललोकपठाये पै
सेंयुद्धहोतैंसूर्यअस्तभयो इतीप्रथम

दिवसयुद्धम. तापाछेरात्रिकेसमे दुर्योध
नद्रोणाचार्यसपुछ्यो. आपयुधिष्ठिरको
पकड्यानहीताकोकारणकहा. तबद्रोण
बोले. अर्जुनकोनिकटरहतेंयुधिष्ठिरप
कडमेंआवेनही. असेंसुणत्रगर्तराजसु
सर्माबोल्यो हेद्रोणप्रभातमेंअर्जुनकोजु
द्धकेनिमत्तबुलाऊंगो. तुमयुधिष्ठिरको
पकडो. असेंकहिसुसर्माप्रभातअर्धचंद्र
व्युहरचनाकरिदसहजारमहारथीन
कोसंगलेयअर्जुनकोयुद्धकेनिमत्तबुला
यो. तबअर्जुनयुधिष्ठिरकोआपापायर
जाकीरक्षाकरिबेकोसत्यजितराजाको
राषिसुसर्माकासेनाकेसंघारकरिबे
कोचल्यो. तबआवतेंअर्जुनकोत्रगर्त
राजसुसर्माकेसर्वयोधायेकहीसमय
मेंअसंख्यातव्यावाणधारानतेंआछादि
तकरतभये. तापाछेंअर्जुनदेवदत्तसंख
कोबजावतोभयो. ताकेश्रवणतेंसक
ल जोधासंतप्तभये जैसेअग्निकरित्रण
होय. तापाछैंअर्जुनत्वाष्ट्रअस्त्रकेप्र

नमुषआये तिनकोंद्रोणाचार्यबाणनकीवृ
ष्टकरिव्याकुलकिये अरुतिनमनुकेअरु
कर्णकेघोरयुद्धभयो अरुभीमसेनसल्य
परेउरणमेंमड़लकरतेगदायुद्धकरतभ
ये दोउमूर्छापायभूमिमेंपरे तबसल्यको
कृतवर्मारथमेंधरिलेगयो तापीछेंभी
मसेनउठिगदातेंअनेकवीरमंडलकोखंड
नकरतभयो तबकर्णकेपुत्रवृषसेनपां
चोंद्रोपदीकेपुत्रनकोयुद्धमेंव्याकुलकर
तभयो तहांद्रोणाचार्यअलंपापालनक
रिबेकोंयुधिष्ठिरकोरक्षाकरबेवारे अघ
मुष युगंधर व्याघ्रमुष कोंआदिलेरा
जांनकोंमारे ताजुद्धमेंअनेकवीरनके
धिरकीनदीभई ताकेप्रवाहमेंपिसाचा
जसुरनसोंरुधिरभरिभरिपांनकरिम
नमत्तभये अरुमांसभक्षणतेंत्रहोप
अर्जुनकेधनुसकोटंकारसुनिसुनि
नाचतभये तापीछेंअर्जुनकोरवनके
सेनाकेवीरनकोंमारिब्रह्मलोकपठाये
सेंयुद्धहोतेंसूर्यअस्तभयो इतीप्रथ

दिवसयुद्धम॰ तापाछेरात्रिकेसमे दुर्योध
नद्रोणाचार्यसंपुछ्यौ॰ आपयुधिष्ठिरकों
पकड्योनहीताकोकारणकहा॰ तबद्रोण
बोले अर्जुनकोनिकटरहतैयुधिष्ठिरप
कड्मेंआवेनही॰ ऐसेंसुणि त्रगर्तराजसु
सर्माबोल्यो॰ हेद्रोणप्रभातमें अर्जुनकोज
द्धकेनिमत्तबुलाऊंगो॰ तुमयुधिष्ठिरको
पकडो॰ ऐसेंकहिसुसर्माप्रभातअर्धचंद्र
मुहरचनाकरिद्सहस्रमहारथीन
कोसंगलेयअर्जुनकोयुद्धकेनिमत्तबुला
यो॰ तबअर्जुनयुधिष्ठिरकोंआपपाछाय
जाकीरक्षाकरिवेकोंसत्यजितराजाकुं
राखिसुसर्माकीसेनाकेसंघारकरिवे॰
कोंचल्यो॰ तबआवतेंअर्जुनकोंत्रगर्त
राजसुसर्माकेसर्वयोधायकहासमय
मेंअसंख्यातबाणधनुषनतेंछाडे
नकरतभये॰ तापीछेंअर्जुनदेवदत्तसंख
कोबजावतोभयो॰ ताकेशब्दसुणतैंसर्व
... ...
... तापीछें अर्जुन ...

भोगतैं ज्वाला बरषत बीरन कौं ग्रैसौ दी
ख्यो जैसैं म ध्यान कौ सर्प अरु अर्जुन तौ
त्रिगर्तन सौं युध करत रह्यो तौ अवसर मैं
द्रोणाचार्य बाणन तैं बीरन कौ संघार कर
तौ करत युधिष्टिर के पकडिबे कौं आये ति
न कौं पांचाल बीर सत्यजित रोके अरु सत
जित के अनेक बाण द्रोणाचार्य पै पडे तौहू
तिन कौ अनादर कर द्रोणाचार्य क्रोध तैं स
तानीक अरु राट कौ कनिष्ट भ्राता इ
सेन अरु चत्रदेव बसुदान ईन च्यार
न कूं सेना सहित मारे तब युधिष्टिर संग्राम
कौं छांडि भागत भयो तापीछैं पांडवन कैयो
धा द्रोणाचार्य के प्रहार तैं व्याकुल होय भी
म के सरण आये तब भीमसेन सरन आ
ये राजान के समाधान कर द्रोणाचार्य की
सेना के अनेक बीर मारे तापीछैं अर्जुन
सुबाहु अरु तबाहु दोऊ राजान कौं सप
वार मारत भयो तब भीमसेन गज्ज रा
पैं चढि बंगदेस के राजा कूं मारिवा के अ
क बीरन कौं मारत भयो ताकूं देषि प्रा

जोतिसपुरकोराजाभगदत्तहूयोजनपादगजै
ऽपैचढिभीमसेनजुद्धकरिबेकोआयो ताको
देषिसकलबीरचकितभये जाकेमदकीगं
धतेंदिग्गजहूमदहीनभये अरुजाकेचेचल
काननकीपवनतेंअनेकबीरबाहनसहितउ
डतभये अरुजाकेसुंडादंडकेप्रहारतेंमेघ
षंडषंडभये अरुकालप्रलयकेसमानरूपदे
षनेंतैंबीरनकोतेजनष्टकरतपोपुहुकरु
हे ऐसेभगदत्तप्रभयो अरुकुकसुंडके
भमायबेतेंकालज्यों अनेकबीरनकेप्राण
हरतभये एकयोजनप्रमाणपृथ्वीकोआ
पैपावनतेंदाबिपडारतहै ऐसेगजेंद्रकोदे
षिसकलबीरबिचारकरतभये महाएक
हीगज [illegible]पावपैपरेंनराचसुर[illegible]
तैं[illegible]मारबेकोसमर्थहै [illegible]
उप[illegible]भगदत्त[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

करतभयो तब दुर्योधन युधिष्ठिर को ग्रा
हि बाणन सौं बेधि के ताकी सेना सौं बेधते सेना को धन खच्चाये ति
नकौं देषि गजराज भीम कौं तब युधिष्ठि
रादिक महारथीनके सनमुख आवत भ
यो तब भगदत्त बाणन के प्रहार तें बान
कीयार बकौं ब्याकुल करि अनेक बीरन
कौं मारत भयो तिन बीरन कौ रुधिर
पान करि अनेक पिशाच मग्न होय गान
नृत्य करत भये अरु गजराज तिनके बा
रनकौं सुंडतें पकरि आकास तें फेंकत
भयो ताकों भय तें भीमादिक बीरनि कर
आय सकै नही अरु भगदत्त के बाणनक
रि बीर ब्याकुल होय हाहाकार करत भये
ताको सुणि अर्जुन त्रिगर्त सेना कूं पवना
स्त्र सौं नष्ट करि पवन के बेग समान रथ
तें भगदत्त के सनमुख आयो आवतही बा
णन तें बीरन को मारि पृथ्वी को रुधिरम
ई करी अरु भगदत्त चाके टंकार तें सेना को ब
धिर करि गजराज पे बाणन को प्रहारक
रत भयो अरु भगदत्त हू अर्जुन पे आक

लपे असंख्यातबाणवृष्टिकरिअर्जुनके
प्राणहरबेकौंनारायणास्त्रचलायो ताकौं
अमोघजाणिश्रीकृष्णवक्षस्थलमैं हाथु
ल्लिधारणकियो सो देषिअर्जुनश्रीकृष्ण
सौंकह्यो हे कृष्ण या अस्त्र कौं आप वक्षस्थ
लमैं धार्यो सो युद्धमैं या अस्त्र कौं मैं धारबे
नाम्पनहीकह्या तब श्रीकृष्ण बोले हे अर्जु
नमैं प्रथ्वीकी प्रार्थनातें पहलै प्रथ्वी
केपुत्रनरकासुरकौं दियो हो अरु तानें आ
पकेपुत्र भगदत्तकौं दियो सो अबमैं मेरो
अस्त्र लियो यातें हे अर्जुन तू पेदमतिक
रो ऐसो कृष्णको वाक्य सुणि अर्जुन ऊर्ध
मुख असंख्य बाणनकरिभगदत्तकौं ऐ
गजराजकौं विदारणकरिदेवबासदेवनकौं
हूं व्याकुलकिये ओ बाणनकरि गजेंद्रकी
घंटाकाटिअसंख्य बाणनके प्रहारतें गजें
द्रकौं भगदत्तकौं व्याकुल भयो सो
विधे नये हू दो उपांडवनकी सेनाकौं मथ
नकरत भये तापाछे अर्जुन गजराजके
कुंभस्थलमैं मार्यो सो बाण लल्लाटकौं मैं

ष्टिभागहोयतिकस्यो जबगजराजप्रा
हीनहोय पृथ्वीमेंपड़वेलग्यो ताकोंपा
नतेंदोबिभगदत्तअर्जुनपे अस्त्रवाण
हारकरे जबअर्जुनहूयुद्धकरतहीअ
द्धचंद्राकारवाणकरिभगदत्तकोशिरका
टपृथ्वीमेंनाषतभयो जैसेंकामरूपीरा
नाभगदत्तकोंमारि अर्जुनबाणधारान
करिकोरवनकीसेनाकोंब्याकुलकरीसो
भयभीतसेनाकोंकोईसरणमिल्योनहीं
जैसेंवोलानकीवृष्टितें मरुस्थलकेपंथ
नकोंवृक्षादिकहूशरणनहींमिले और
गांधारकेवीरवृषक अचल एदोउयुद्ध
कोंआये तिनकोंअर्जुनएकवाणमहा
रतेंमारे तबशकुनीभ्राताकामरणकेरोष
तेंयुद्धकोंआयो सोमायामयअनेकदुष्ट
अस्त्रनकेप्रयोगतेंअंधकाराकियो ताकों
अर्जुनसोरास्त्रबलतेंब्याकुलकरिनशा
यो तबद्रोणाचार्ययुधिष्टिरकेपकडवे
कोंपांचालराजाकीसेनामेंप्रवेसकरि
वीरनकेसिरनतेंचारयोंदिसाछुादितक

रि पांडवसेनाकोंब्याकुलकरी तबनीलेव
स्त्र रथ सारथी ग्रश्वनाके ग्रेसोमाहिष
तीकेंपतिराजानीलग्राग्येपग्रस्त्रतें द्रोणसे
नाकोंव्याकुलकरी तबग्रेसेदेषिग्रश्वथा
मास्त्रापध्वजाछत्र धनुष रथ कृस्नकरिष
ऊ धरिग्रावतेनीलकोंमाखो तानीलकोंम
स्योजाणिकरिवहस्पतिसिंघनादकियो सोसु
ग्रर्जुनत्रिगर्तसंसपक्कनकोंमारिफेरिग्रा
य द्रोणाचार्यकीसेनाकोविध्वंसकियो त
बकर्णग्रापग्राग्नेय्यस्त्रसोंग्रर्जुनकीसेना
कोंदग्धकरी जबग्रर्जुनमेघास्त्रतेंग्रग्निको
सांतिकरिकर्णसोंयुद्धकरतभयो तबकर्ण
ग्रर्जुनकेघोरयुद्धमें वीरनकेसरीरतेंग्रने
करुधिरमईनदीबहतभई जबग्रर्जुनवा
युद्धमेंकर्णके बिराटे शत्रुंजय बीर उनतो
न्योभ्रातानकोमारे जायुद्धमेंनिसाचरपि
साच तसहोय हर्षतेंसब्धकरतभये रुधि
रकीनदीनमेंग्रनेकबीरवहे तहाभीम
ग्रनेकबीरनकेशिरकाटि बेरीनकीसे
नाबिध्वंसकरिगाजतभयो

कल्याणनतैंघायलभयेजे वीर तिननैंअति
कोलाहलकरयो तहांताकौपुत्रामैंबैठेजेह
नुमांनसो याकोलाहलकोंसुणि आपकेपु
छकेआग्निनैंदग्धहोते लंकावासीननैंको
लाहलकरयोहो ताकोंस्मरणकरतभये सं
सेंअर्जुनकेपराक्रमतैंशकलराजाभयभीत
होयसूर्यकोंअस्तजाणियुद्धकोंसमाप्तक
रता इतीश्रीभारतसारचंद्रिकायांद्रोणपर्व
णिद्वितियदिवसयुद्धनामाद्वितीयोध्याय ता
पाछैंप्रभातहीद्रोणाचार्यसौं दुर्योधनबोल्यो
हेगुरु तुमयुधिष्ठिरकेपकडबेकीप्रतिज्ञा
करीहीसोपकड्यानहीं तातेंउनमैंतुम्हा
रोपक्षिपातहै अरुमोकोंमिथ्यासेंहर्षिप
वाहै तासोंअबसत्यकहो जबद्रोणाचा
र्यबोल्या हेराजनजितनेंअर्जुनराजाकी
ताकरै तितनेंमैंसोपकड्योजायनहीं तातैं
संसप्तकगणअर्जुनकोंहटिलेजावो तापी
मैंयुद्धकरिसोतुमदेषो असेंकहि दुर्यो
नकोंप्रसन्नकरिद्रोणाचार्यचक्रव्यूहरचि
तहांदसहजाररथमहारथीननकोंसंग

कृपाचार्य कर्ण दुःसासन सहितदुर्योधनको
व्यूहकेमध्यभागमेंराष्यो अरुतासदुर्योधनके
भ्रातासहितद्रोणाचार्यअग्रभागमेंरहे अ
रुसकुनी शल्य भूरिश्रवा इनसहितजयद्र
थकोआपनेसमीपराषे ताव्यूहमेंदुर्योध
नकोदेषि राजायुधिष्टिर अभिमनुसोबो
ल्यो हेपुत्रसुणिश्रीकृष्णअर्जुनप्रद्युम्नअ
रुतूयाचक्रव्यूहकेभेदबेमेंसमर्थहो सोअब
श्रीकृष्णअर्जुनतोजुद्धकोहरिगये अरुयातो
तूहाहेतासोयहभारकोतहीधारगो यहक
हिबोयोग्यनही परंतुसमेकहाबेहै तबअ
भिमनुबोल्यो हेतातमेंमाताकेगर्भमेंहो
तबश्रीकृष्णकेमुषतेचक्रव्यूहकोभेदनके
रिपबेसतोसुण्याहो अरुनिकसिबोसुण्यो
नहीं तातेयाकोभेदअबेसतोकरोंगो परंतु
निकसिबेकीसामर्थनहीं असेंसुणियुधि
ष्टिरबोले हेपुत्रहमअरुहूतरेपीछेलगे
आवेंगेसोताकोनिकासिल्यावेंगे असें
सुणिअभिमनुव्यूहभेदनअंगीकारकरिकं
तापेंजायप्रणामकरि

रुपापजुद्धकौंचलतैंहीसन्मुषठाढाउत्तराकौं
देषि तबउत्तराहूस्वामीकौंपुछ निमित्तजातर
षिनेत्रअस्रुपुर्णकरे ताकौंइष्टिहीतेगर्भ
वतीकरीअलसमाधानकरिफेरियुधिष्टि
रकेपासआयो ताकौंअ [illegible] रकरिपांडव
पुत्रकौंचले पीतअश्व [illegible] करथपैसवारहो
य सुबर्णमयसारंगपत्तायुक्तध्वजासहि
त रथपैकुंडलाकारधनुषतैंबाणवर्षाक
रिबैरानकौ [illegible] चल्यो जैसेंरु
लकेग्रह। तैंकाककुलभगे तैसैंशत्रुसेना
कौंभगावरणमंडलमैंगर्जनाकरत जय
द्रथद्रोणाचार्यसौंयुद्धकरत [illegible] हकोमुष
भेदनकरिबेग [illegible] भयो ताके
पाछैंप्रवेशकरतभो वनकौं [illegible] बर
मनावतेजयद्रथजुद्धकरिरोके एकलो
अभिमन्युहीब्यूहमध्यमेंजायबाणवर्षा
अपारकरी अभिमन्युव्यूहकेमध्यअने
कराजानकोसंहारकरि गजअश्वनरन
केरुधिरप्रवाहनमेंअनेकरुंडमुंडबहाये
ऐसेंजुद्ध [illegible] कर्णकेरोजकनिष्ट

भ्रातानकौंमारि। कर्ण। शकुनिदुर्योधनआदि
बीरनकेबाणनतेंछिन्नभिन्नकरिजाय। त
हांपिसाचनकेबालकहाथीजकेकाननकों।
पात्रकरिरुधिरपानकरतभये ऐसेबिजय
पायअभिमन्युसंषधुनिकियो। तानादतेंरि
सानकोंशप्रायमानकरिबीरनकोंआकुल
करे। तहांकर्णपुत्रवृषसेनबसातिराजसु
सप्रवापुरुकोंआये तिनकोंमारिशल्यके
पुत्ररुक्मरथकोंमास्यो। ताकीरक्षाकरिबे
कोंसत। १०० राजपुत्रआये तिनहूकोंमारे
ऐसोपराक्रमदेषिसकलबीरनकोंकंपा
यमानकरतभये। तबदुर्योधनकोपुत्रल
क्ष्मणपुरुकोंआयो। तबतासोंघोरयुद्धक
रिवाहूकोंमास्यो। तापाछेंपुत्रसोकतेंदुर्यो
धनदुष्पितहोय। क्रोधकरिअनेकराजमं
डलासहितयुद्धकोंआयो। तहांअभिमन्यु
सकलसेनासोंयुद्धकरतवृंदारकराजा
कोंमारि। वाकेकंठकेरुधिरसोंलक्ष्मणकोंज
लांजलीदई। अरुअयोध्याकेराजाबृहद्ब
लकोंसिरकाटिदुर्योधनकेपुत्रकों त
[illegible]

जानकेसिरकाटिरुद्रकौबलिदानदियो
रुभोजराजनकोमारि दुःसासनकेपुत्रको
सिरकाटिशलकोरथतोडिमेघवेग विधुके
न सुवर्चा सत्रुंजय इतनेराजानकोमारि
कुनीकीसेनाहूकोमारतभयो तापाछेंदु
र्योधनकोंनगाय प्रलयकालकेअग्निकी
नाईरणमंडलमेंदेदीप्यमानहोतभयो
ताकोंदेषिअनेकबारहाहाकारकरतभये
जबदुर्योधन॥ व्यासनापलद्रोणाचार्य
सोंबोलतभयो हेगुरुयहअभिमन्युधनु
षमंडलतेंबाणवर्षाकरत युद्धमेंसकल
वीरनकोसंहारकरैहे अरुगजअश्वरथ
रथीनपैयाकेबाणवज्रसमानपरतहेसा
पहलयहीहै अथवायमहीहै वाप्रलय
कालकोअग्निहीहै याकेसन्मुषगये
पीछेंकोऊबचैनहीं तातेंतुम्हारीसेना
मेंयहरुपरोगरूपहोयआयोहे जासो
अबतोयाहोताकरिबोयोग्यनहीं अरु
युद्धमेंयाकोंजीतिवेकोउपायकरणो त
बद्रोणाचार्यबोले हेदुर्योधनयहकुमार
युद्धमेंश्रीकृष्णअर्जुनकेसमानहे याके

बलकेसोवैबारेहकोंअपनीसेनानहीं अरु
पाइपोत्रकोंसुरासुरहूजीतिसकैंनहीं ता
सोंयथासक्ति उपायकरैंहींगे ऐसैंकहिद्रो
णाचार्यकर्णकोंसंगलेयुद्धकोंगये तहांअ
भिमन्युहूबाणनकीवर्षाकरिदोऊनकोंजीति
संग्रामतैं विमुषकरतभयो तबकर्णद्रोण
दोऊननैविचारकियो यहअभिमन्युऐसो
पराक्रमीहै जोपासोंएकएकयुद्धकरैतोस
बनकोंमारै तातैंसबमिलियासोंजुद्धकरैं
गेजबयहमरैगो यहविचारकरिसबसा
मिलहोययुद्धकोंआये तहांकृतबर्मापाछे
मन्युषकोमार्गछोडि पार्श्वभागमेंआयरथ
कोंकाटिबाहनमारे अरुकृपाचार्यसार
थीकोंमारिचक्ररक्षकमारे कर्णधनुषका
ट्यो तबखड्गचर्मधारिअभिमन्युरणमंड
लमेंबीरनसिरकाटतविचरतभयो आ
काशमेंउछलतबीरनकेसिरकाटिवेकोंप
इतपारप्रहारतैंपृथ्वीकोंकैंपावत अने
कगजनकेकुंभस्थलविदारत ऐसेंरण
मेंअतिभयंकरअभिमन्युकोंदेषि द्रोणा

चार्यबाणप्रहारतैंखड्गकोंमूठिपंडनाकि
यो तबअभिमन्युचक्रधारिचक्रपाणिः
छोंदानबस्वपबैरानकोंनासकर[illegible]त
बअंसैदेषिद्रोणाचार्य अस्वत्थामा कर्ण
कृपाचार्य [illegible] शकुनि दुःशासनको
पुत्र इनसातो ७ मिलिताकोबक्रकाढ्या
जबअभिमन्युगदाधारि गदाधरलोंअने
कबीरनकोंमारनशकुनीकेकनेछभ्रा
ताकालसेनकोंमारि असंष्यातगजरथ
टानकोंषंडषंडकरि दसराजानकोंमा
रिकेकयराजाकोंरथतोड्यो तबदुःशा
सनकोपुत्रगदालेकेआयो जबदोऊन
केघा [illegible] भयो तेदोऊलड्तलड्तपृथ्वी
मेंपडे तबतेहांपडेअभिमन्युकोंदेषि सक
लयोद्धासामिलहोएकसमयमेंअनेकास
स्त्रःहारनतेंमार्यो जबदुःशासनकोपु
त्र[illegible]ठिकरिअभिमन्युकोंधिक्कारकरि म
स्तकमेंगदाप्रहारकियो ऐसेताकोंमा
र्योदेषि[illegible]ताकासबासादेवबोले याएक
लेरथहीनअभिमन्युकेंअनेकमहारथी

मिलिअन्यायकरिमाग्यो । यहआकासबाणीसु
णिकौरवनकेसकलजयोद्धा सिंहनादकरिपां
डवनकीसेनाकोंभजावतभये तबहीसूर्य
अस्तभयो जबदोऊसेनाकेबीरननेयुद्धसमा
प्तकियो श्लोक मातुलोयस्यगोविंदःपिताय
स्यधनंजयः सोभिमन्युर्हतोयुद्धेकालोहिदु
रतिक्रमः १ तापाछे अर्जुनसंसप्तकगणन
कोंमारि अपसगुनदेषिउदासहोय निजसे
नामेंआवतभयो तहांसबबांधवनकोंसो
कतेंआतुरअधोमुषदेषिबोलतभयो हेयो
द्धाहो आजतोमेरेसन्मुषअबहीआयेहो अ
र अभिमन्युनहीआवेहै याकोकारणकहा
अथवानिकसिबोजाणेबिनाचक्रव्यूहमें
प्रवेसकियो ऐसेअभिमन्युकोंसकलबै
रीननेबलकरिअधर्मतेंमाग्योकहा ऐसे
चिंताकरतयुधिष्ठिरकेमुषतेंअभिमन्युव
धकोवृत्तांतसुणिअर्जुनमूर्छितभयो तब
ताकोंसमाधानकरि श्रीकृष्णबोले हेअर्जु
नवीरशत्रुनकोंसंहारकरिदिव्यगतिकोंप
हुंचेताबीरकोंनसोचिये ऐसेंसुणिअर्जुन

तेरेमुषकोंमैंकवदेखोंगो अरुनीमत्रादि
अस्त्रधारानहैंतेरेरक्षानकरी तबतमातु
लकोहमरणनाकियो तातेसवआपासमर्थ
मातुलआछैरहतोकोंनराख्यो ऐसैबोलि
पृथ्वीमेंपडिफेरिसंग्रामापडयो तबअभि
मन्युकेपीछेंचलतेमहारथीनकोंजयद्र
रोके ऐसेंसुणिअर्जुनक्रोधतेंबोल्यो जो
तत्कालसूर्यास्तपहिलेंरुद्रके रापेहू जय
थकोंनमारोंतो महापातकीनकेपातव
तोलिसहूं औअग्निमेंप्रवेसकरूं ऐसी
र्जुनकीप्रतग्याहैतनकेमुषतेंसुणि जय
कंपितहोयदुर्योधनसोंकही हेदुर्योध
तुममेरीरक्षाकरिसकोतोमैंरहों नाहि
तैंनजिआजेपुत्रकेसोककरिकैआतु
अर्जुनमोकोंमारेहीगो ऐसैसुणिदुर्यो
जयद्रथकोंलेजाय द्रोणाचार्यसोंकही
कीरक्षाकरो जवद्रोणाचार्यथाकोंसव
करिराख्यो तापीछेंसुभद्रापुत्रकेसोक
लापकरिबोली हेपुत्रतूंरुपावंतव्रस
तारसत्यवादीसुसीलनीतिवंतीअप
...सनेसुनुकरतो आगतिकोंपशु

तिकोंत हुजा ऐसें करत भई। तापाछें ग्राक
सकों आगें प्रातैं अर्जुन सपन करत भयो त
हां सुपनमें अर्जुन श्रीकृष्णसहित कैलासमें जाय
शिवकों प्रणाम करि स्तुति करत भयो श्लोक
नमः शिवाय रुद्राय महेशाय कपालिने ॥ ज्ञानि
नेपशुनाथाय भवाय भवमाथिने ॥१॥ कामरू
द्राय त्रिकामाय धर्मदाय मखच्छिदे ॥ सुधाक
रकिरीटाय नीलग्रीवाय तेनमः ॥२॥ ऐसी स्तु
ति तें प्रसन्न महादेव धनुष पाशुपतास्त्र बिज
य मंत्र अर्जुनकों दियो सो पायकृतकृत्त होय।
अर्जुन जाग्यो। प्रभात ही समुद्र तुल्य भतग्याह
ताको गोपुरजलसमान मां निपुधिष्ठिरकों
सुपनकों वृत्तांत कहि। आनंदित करत भयो
इतीतृतीय दिवसयुद्ध ॥३॥ तापाछें प्रभात
ही आह्निक करि सर्व ही अस्त्र शस्त्र धारि वी
र रणभूमिमें आये। करु रात्रिके समें अर्जुन
के नपतैं निद्राहीन कौरव अरु गुरु द्रोणाचा
र्य वीरन सहित सकट ब्यूह रच्यो ताब्यूह
के चौतरफ जथाजोग वीरनकों राखि ताके
बीचि पद्मब्यूह करि ताके कृतवर्मा दिक वी
रनकों आवर्ण कियो ताके बीचि सूचीब्यूह

रिमुषकौ मैंकवदैगो अरु नीमआदि
अस्त्रधारीन मैंहूंनें रोर हांनकरी तब तमातु
लकोंहूं समर्पनकियो तातैंसब आपासमर्थ
मातुलआकुलहूंतौंकोंन लयौ अैसैंबोलि
रथ्धामैंपडिफोरि संग्राम पठयौ तब अनि
मन्युकेपाछैं चलतेमहारथीनकोंजयद्रथ
रोकैं अैसैंसुणिअर्जुनक्रोधतैंबोल्यो जोया
तकालसूर्यास्तपहिलैंरुद्रकैरायेहूं जयद्र
थकोंनमारौंतो महापातकीनकैपातकन
तैंलिपहूं अौ अग्रिमैंप्रवेसकरूं अैसौंअ
र्जुनकोंप्रतिमार्कतनकेमुषतेंसुणि जयद्रथ
कंपितहोयदुर्योधनसौंकही हेदुर्योधनजो
तुममेरीरक्षाकरिसकोंतोमैंरहों नांतोंघर
तैंजिजाऊं पुत्रकेसोककरिकेआतुरअैस
अर्जुनमोकोंमारहीगो अैसैंसुणिदुर्योधन
जयद्रथकोंलेजाय द्रोणाचार्यसौंकहीआपय
कीरक्षाकरो जबद्रोणाचार्ययाकोंसमाधा
करिराष्यो तापाछैंसुनद्रापुत्रकेसोकतैंवि
लापकरिबोली हेपुत्रतूंयावतब्रह्मवेत्ता
तारसत्यवादीसुसीलनीतिवंतीअश्वमेधा
दिकअनेयज्ञकरता जागतिकोंपहुंचेता

तिकों तहुज्ञा ऐसें कहतभए। तापीछे ग्राक
सकी ज्ञा गेमातेंग्र र्जुनसपनकरतभयो त
हांसुपनमें ग्रर्जुन श्रीकृष्णसहितकैलासमेंजाय
शिवकोंप्रणामकरिस्तुतिकरतभयो श्लोक
नमःशिवायरुद्रायमहेशायकपालिने स्थाणि
नेपशुनाथायभवायभवमाथिने १ कामद
दायात्तकामायधर्मदायमखच्छिदे सुधाक
रकिरीटायपनीलग्रीवायतेनमः २ ऐसीस्तु
तिते प्रसन्नमहादेव धनुषपाशुपतास्त्रबिज
यमंत्र ग्रर्जुनकोंदियो सोपायकृतकृत्तहोय
ग्रर्जुनजागेप्रभातहीसमुद्रतुल्यभतग्पाह
ताकोंगोष्पदजलसमानमानियुधिष्ठिरकों
सुपनकोवृत्तांतकहि आनंदितकरतभयो
इतीतृतीयदिवसयुद्ध ३ तापीछे प्रभात
हीग्राह्निककरिसर्वहीसस्त्रग्रस्त्रधारिवा
रणभूमिमेंग्राये ग्ररुरात्रिकेसमें ग्रर्जुन
केनपतौनिद्राहीनकौरव ग्ररुगुरद्रोणाचा
र्यबीरनसहितसकट व्यूहरच्यो ताव्यूह
केचौतरफजथाजोगपबीरनकोंराषि ताके
बीचिपद्मव्यूहकरि ताकेकृतवर्मादि
रनकोंग्रावर्णकियो

रचतभयो तांकेमध्य अनेकबीरनसहितज
यद्रथकोंराषिबेरीनकेमारिबेकों अरुजय
द्रथकीरक्षाकरिबेकों आपद्रोणाचार्यसकट
ब्यूहके अग्रभागमेंरहे इहांकपिध्वजरत्नम
ईरथमेंश्रीकृष्ण अर्जुनसवारहोय ऐसेसो
हे जैसेसूर्यके अंकमेंबिराजमानयमराजसो
है तबश्रीकृष्ण अर्जुननिजशंखनादकरत
भये तासब्दकोंसुणिदोऊसेनाकेबीरपरस्प
रयुद्धकरतभये तहांयुद्धकरतेंएकक्षणमात्र
मेंसबकेसरीररुधिरमईभये तांकोगंधसं
घतहांसबहीबीर [illegible] अंधहोयगये तहां
आपणेपरायेकोंग्यानरह्योनहीं अतिघोरयु
द्धभयोतामेंरुधिरकीनदीचली तामेंहस्तीन
केसरीरपडेतिरतहैं तिनकोंरथकेचक्रन
कीधारासोंचूर्णकरत अर्जुनद्रोणाचार्यके
सन्मुषआयबाणनकेप्रहारमईप्रणामक
रिद्रोणाचार्यकोंदाहिणोलेयब्यूहमेंप्रवेस
कियो अरुताकेचक्ररक्षिकयुधामन्युउत्तमो
जायेदोऊराजाहूप्रवेसकरतभये येतीनों
ब्यूहकेमध्यजायअनेकराजानकोंसंहारक
रिअनेक हस्तीनकोंमारि रथअश्वनकोंना

सकरि प्रलयके अग्नि ज्यों दीप्यमान होत भये औ युद्धकों सन्मुख आवे ऐसे क्रतवर्मा आदि बीरनकों भजाय पवनकाबोजनकी सेनाहू पीछनकी तीन्यो दग्ध करत भये तहां पीछेतें आय द्रोणाचार्य ब्रह्मास्त्र चलायो ताकों अर्जुन ब्रह्मास्त्रसों निवारण करि भोजराजाकी सेनाकों बिधुंस करत भयो तब बरुणको पुत्र श्रुतायुध श्रीकृष्ण अर्जुनकों बाणनतें बेधत भयो जब अर्जुनहू बाणनतें सस्त्र अरु रथकों काटे तब श्रुतायुध गदा लेके युद्धकों आयो सो यह गदा पिता बरुणकी दीनी हो तासमें ऐसेंक याहे जा युद्ध न करै तापे चलायें प्रहारकर्ता ही को नास करैगी ता गदाकों धारे श्रुतायुध अर्जुनके सनमुख आयो तब श्रीकृष्ण बोले रे मूढ यह मार्ग छोडि ऐसें कही जब श्रीकृष्ण पे क्रोध करि गदा चलावत भयो सो गदा श्रीकृष्णकों आलिंगन करि गदा फिरिके श्रुतायुधकों मारत भई तब अर्जुनहू जयद्रथपे क्रोध करि आगें चल्यो ताके सनमुख आय कांबोज सुदक्षिण अद्भुत युद्ध करत भये तिनदोऊनकों मारि अर्जुन आगें चलत भयो

वेकोंअच्युतायअुतायुपेदोऊरजोआपघोरयु
द्धकरतभये जबअर्जुनइनदोऊनकोंआता
सेककनसहितमारि आगेंचलि अंगबंगक
लिंगराजांनकोंमारि अरुबीरनकेअलंकार
रत्ननकरि संयुक्तरुधिररूपीजककेरपरि
पूर्णअसेअष्टमसमुद्रकरतभयो अरुगज
समूहकेकुंभस्थलनकोंबाणनतेंबिदीर्णक
रि पृथ्वीकोंमुक्तानमईकरतभयो तहांरा
त्सहरुधिरपांनकरतभये तापीछेंअर्जुन
मलेछसेनाकोंमारि अंबष्टादिपतिको
रकाटि जयद्रथकेसारथिकोंआगेंचल्यो त
अर्जुनकोंदेषिदुर्योधनद्रोणाचार्यकोंआ
कह्यो हेगुरु तुम्हारोप्यारोसिस्यअर्जुन
सोतुमसेंहलेबाकोरोक्योनहीं तातेंतुम
उलंघनकरिआगेंगयो अरुरात्रिमेंभाजि
जयद्रथकोतुमअभयदानदेकेव्यूहमें
ष्यो अरुअर्जुनकोंव्यूहमेंप्रवेसकरते
क्योनहीं सोयहतुम्हारीअनीतिचरि
संहै तबद्रोणाचार्यबोले हेदुर्योधनअ
हअर्जुनकेअश्वनकोबेगवंतकरिमो
उलंघिव्यूहमेंप्रवेसकियो अरुजोमें

पीछूजागेतौ भीमकोंआदिदैसर्वहीबीरप्रवेस करते तातैमेरमंत्रमयवज्रकवचकोंधारि त अर्जुनसोंयुद्धकरि अरुमैंभीमकोंआदि देवीरनकोंराकोंहो ऐसेकहि रुद्रइंद्रकोंदि यो इंद्रपरसरामकोंदियोपरसरामद्रनकोंदि दियोहो सोमंत्रमयवज्रकवचदुर्योधनको पहरायपुद्धकरिबेकोंपठायो जबदुर्योध नसेनालेकेअर्जुनकपीछेचल्यो तहांदोऊ नके घोरयुद्धभयो अरुकोरवपांडवनकेयु द्धमैयमराजआपकेपरिवारकोंमनबंछित भोजनकरावतभयो तायुद्धमैंहाथीनकेस वारतौबाणनकरीहाथीदांतनकरिमहाव तअंकुसनकरिपरस्परयुद्धकरतभये तहां कोईएकवीरकोसिरषड्गतेकटि मारमार सब्दकरतआकासमैगयो ताकोंअनुराग करिअपछराचुंबनकरतभई ताकबंधके कंठपेंखड्गतेकयेगजकोसिरपड्यो तब वहकबंधअधिकनत्यकरिबेलग्यो सोन त्यकरतऐसोदीष्यो जैसेरुद्रकेतांडवनत्य मैंनत्यकरतगजाननदीषे औरयुद्धकरते वीरनकेशस्त्रास्त्रक्षीणभये तबवीरकदि

करि हस्तीनके दंत उपाडि उपाडि तिनसों युद्ध
करते बीरसुभस युद्ध करतेसे दीखे कितनेक
मुष्टि प्रहारतें कितनेक दंतनतें कितनेकन
खप्रहारतें लडतभये अरु अर्जुनबीरनकों
मारतमारतचल्यो ताकेरथकोंमारगसक
धारीजीवलेबैरीनसों तौनलयो सोही रथ
कोंमेंगमरेबैरीनकेसुरीरननतेरोक्यो अ
नबाणधारावर्षतवर्षत अनीकबीरनके
मारतमारतयुद्धमेंअनेकसन्मुखआये
वंतीपतिबिंदअनुबिंददोऊभ्रातानकों
गतेंमारे महाघोरयुद्धमेंअनेकबीरन
संहारकरिअर्जुनश्रीकृष्णसोंबोल्यो हे
हयारथकेघोडेबानकेप्रहारनतेंश्रा
साकरिव्याकुलहै सोइनकोंबहुरिक
जलपानकरावो ऐसेंकहिअर्जुनरथ
तरिच्यारोंतरफयुद्धकरतेबीरनकोंमा
रुबाणकेप्रहारतेंपृथ्वीकोंविदीर्णक
जलकोप्रवाहकाढतभयो तामेंघोड
कोंश्रीकृष्णजलपानकरायअरुआरहा
सपरसतेंसरीरकीविथाहरिकरि
बलतिनघोडानमेंकरिरथकेजोरि

नसहितआपसवारभये तापीछे अर्जुनघोर
बाणनकीबर्षाकरत बारनकोकेपावतभयो
तहांमंत्रमयकवचकोंबांधिदुर्योधनयुद्धमेंआ
यअर्जुनकोंरोक्यो तबश्रीकृष्णबोले हेअर्जुन
यहदुर्योधनअनर्थकोमूलहै तातेंयहमारि
बेहीजोग्यहै ऐसेंश्रीकृष्णकोवचनसुणि
अर्जुन दुर्योधनकेमारिबेकोंअनेकसस्त्रअ
स्त्रचलाये तेसबहीऐसेंव्रथागये जैसेंकृ
पणतेंजाचिकव्रथाजाय तबसस्त्रास्त्रनकों
व्रथागयेदेषिश्रीकृष्णअर्जुनसोंकहीयहकहा
है ऐसेंश्रीकृष्णकोवचनसुणिअर्जुनबोल्या
हेकृष्णमैंनाणोंहोंगुरुद्रोणाचार्यनेयाकेंबज्रं
त्रमयकवचबांध्योहै सोमैंयाकोछेदनहूंना
णोंहों ऐसेंकहिअर्जुनअस्त्रचलावतभयो
ताअस्त्रकोंद्रोणाचार्यआयनिवारणकरतभ
ये औरदिव्यअस्त्रदूसरैंचलावणोंनहीं यह
विचारिअर्जुनबाणनतेंदुर्योधनकोधनुष
काटि सारथीकोंमारि अश्वनकोंमारिछत्र
काटिगजघटानकोंषंडनकरि अरुद्रोणाचा
र्यकेरथाघुजाकोदेदीप्यमानहीताकोक
लसकाटिपृथ्वीमेंनाषि तापीछेंदुर्योधनके

षनकी संधिनकों मंत्र मई कयुव बिना जोणि
वाणन तें भेधनकरत भयो तब दुर्योधन भयभी
त ह्वै नाग्सा अरु अर्जुन अस्व थामादिकनकों
रुधिरसों लिप्त करि सबनकी धुजा काटि के ति
निनको आगें चल्यो तब द्रोणाचार्य हू सिंह
नाद करतो ऐसो पांडवनकी सेनाके सन्मुख
आय युद्ध करत भये तहां अनेक बीरनकों मा
रि युधिष्टिरकों बिरथ कल्यो तब राजाकों प
कडनो पकड्यो ऐसे सबै पुकारत भये जब यु
धिष्टिर हू द्रोणाचार्यपे बरछी चलाई ताकों
द्रोणाचार्य ब्रह्मास्त्र तें काटी तब युधिष्टिर
सहदेवके रथपे सवार होय भागे तापीछे से
ना हू स्वामी की भक्ति तें संग ही भागी तबपी
छे सो आवती कौरवनकी सेनाकों देखि पांड
वनकी सेनाके बीर फिरि के युद्ध करत भये
तहां बृहत्क्षत्र केकय राजकुमार धृतिकों मारयो
त्रगर्त राजकुमार धन्वा कूं धृष्टकेतु कों मारयो
सात्यकी व्याघ्रदत्त कों मारयो अथ जनु पनी
सपे आय अस्व चलायो जब भीम हू ताकूं मल
कों लपट ऐसो निवारण करि युद्ध कल्यो अन्त
बुष भीमकों दबायो सोऊ युद्ध कोऊ चल मल बु

षकोंरथतेंपटकिरथ्वीमेंपासिनाष्यो तबअश्व
स्थामाआपघटोत्कचसेंजुद्ध कस्यो तहांदोऊवी
रननेंदोऊसेनाकोंव्याकुलकरिभगाई अरुयुधि
ष्ठिरभागेहेसोहरिगये तहांअर्जुनकोंशंखध्व
निसुएपानहीं जबअश्वत्थामासोंजुद्धकरते
सात्यकीसोंयुधिष्ठिरबोले हेश्रूरतेरोगुरुस
त्रुसेनामेंप्रवेसकियो ताकीसहायताकोंयह
समैहे जासोंतूअर्जुनकीसहायताकेनिमित्त
जा धृष्टद्युम्नभीममेरेरक्षकहें तातेंमोकोंद्रो
णाचार्यकोभयहैनहीं ऐसेसुणिसात्यकीरा
नमेंहीं आदिमंगलकर्मकरियुधिष्ठिरकोंप्र
णांमकरिकेचल्यो सोबाणवृष्टिसेंवीरनकोंव
दिरुधिरकरिमार्गकोंरंजितकरतहीं अरि
व्यूहमेंगयो तहांप्रथमहीमार्गमेंद्रोणाचार्य
सोंअतियुद्धभयो अरुबाणजालनतेंसूर्यहू
आछादितभयो तहांऐसोद्रोणाचार्यको
अस्त्रबलदेषिसात्यकीबोल्यो हेगुरुतुम्हा
रेशिष्यकेपासजातेंमोकोंरोकिबोतुम्हेंजोग्य
नहीं जबद्रोणाचार्यकही मैंतोकोंजायबेद्यो
नहीं ऐसेंबोलतेंद्रोणाचार्यपेबाणवृष्टिक
रिअंधकारतेंव्याकुलकरिरथकोंदोडाय

९

र्मा आदि वीरन कौ क्लि निकरिव्यूह मैं प्रवे
नकरया ल वपांडवं सात्पकी कौ गयौ जो ण व्यूह
प्रवेस करिबे कौ चले तिनकौ कृतवर्मा जो
रोके अरु सात्पकी बाणन तें आकास कौ
छापकौ थले वीरन कौ मारत भयौ ताकौ कार
व बारनेत्रन सौं देषि सेहूं के नही अरु सात्प
की गज घटानकौ खंडन करि लडते मगधेस्ज
लसंध कौ मारि गजरान तें पटकयो बाणन कौ
ल बंधन तें रुसकर तकरत अनेक सुदर्शना
दि बीरनके सिर बाणन तें काटि आकास में फे
के ने मानौ आकास रूपी रुद्र कौ मुंडमाल
चढाई है ताप छै दुःशासन कौ बाणन तें
बिदीर्ण करि आगे चल्यौ तब दुःशासन द्रो
णाचार्य के पास आय आपकौ दुर्दसा दिषाय
सोच करत भयौ ताकौ देषि द्रोणाचार्य बोले हे
मूर्ख सात्पकी सौं युद्ध में त्रास ते व्याकुल क्यौं हो
य है द्रोपदी के केस षैचि [illegible] ताकी हा
गयो द्यूत में पासान को पात दो बहास करै
सो अब युद्ध में बाण रूपी यम पास पाल दी
बहु हास कहा गया जो युद्ध तें भय है तो
बहु संधि करो नही तो परलोक कौ यीनिःशं

जुद्धकरो। ऐसेंसुणिनीचोमुषकह्यो। सोदेसा
वतारदु:शासनपातालबासीदैत्यनकेसरण
जावेकौंइच्छाकरतसोदीष्यो। तापीछेम्लेछ
नकोबलसंगलेकेसात्यकीसोजुद्धकरिबेकों
फिरिगये। तवद्रोणाचार्यताश्रवकासमैंत्री
धतेदेवस्त्रीनसों अनेकबीरनरनकेबिवाह
कराये। औरबीरकेतु। चित्रकेतु। चित्ररथ
सुधन्वा। एच्यारिपांचालसेनाकेजयरथमहा
तिनकोंमारे। तबधृष्टद्युम्नबाणनकरिद्रो
णाचार्यचितन्यपायवेतस्तिकबाणनतेधृष्ट
द्युम्नकोंब्याकुलकरि भगायो। तापीछेद्रो
णाचार्यबाणवृष्टितेंयुधिष्ठिरकीसेनासमु
द्रकोंशुष्ककियो। अरुदु:शासनसात्यकी
संयुद्धमेंम्लेछसेनाकोंमरवायजुद्धकरत
भयो। तबसात्यदु:सासनकोंकवचआयु
काटिबिरथकरि भीमकेपणभयतेंमास्यो
नहीं। जबद्रोणाचार्यपांडुसेनारूपीनदीमेंप्र
वेसकरिअनेकबीरनकेसिरकमलनकों
बीरश्रीकृष्णपूजाकेनिमित्ततोडिके
कयदेसकराजाकोंजेष्ट
कोंमारि। सिसुपालकेपुत्रध

मारि जरासंधुकोपुत्रसहदेवताकोंमारि ध
ष्टद्युम्नकोपुत्रक्षत्रधर्माताकोंमारि तेजतें
ज्वलमानद्रोणाचार्यतृणनमेंअग्निज्यों
पांडुसेनाकोदग्धकरतभयो इतीसात्यकी
सबैसु तबहीयुधिष्ठिरसर्पकोसोस्वासहोतो
देखिभयभीतह्वैपनीमसेंबोल्यो हेभ्रातायु
वीरेयताकोमकोसमयहै तातेंसत्रुनकी
सेनाकेमध्यअर्जुनहैताकेपासजावौ अब
श्रीकृष्णकेसंखकीधुनिलोसुणयेहै अरु
अर्जुनकेसंखकीधुनिनही औरवैरीमहा
विषमहैं तातेंतुमजाय अर्जुनकीरक्षाक
रो द्रोणाचार्यतैंदुपदपुत्रमेरीरक्षाकरेगो
ऐसेंसुणिभीमसेनराजाकीआगपासिरपै
धरिरथपैसवारहोय बाणधारानकरि
वैरीनकोंमारिमारगकरत मदोन्मत्तग
जराजलोंसकटव्यूहमेंदिवेकोंचल्यो त
बताकेसन्मुषद्रोणाचार्यआयबोले हेभी
ममेरेआगेतूसकटव्यूहमेदिवेकोंइहांके
सेंकरैहै ऐसेंकहिकरबाणनतेंभीमकों
परिपूर्णकरतभये तिनबाणनकरिइदयतें
रुधिरझरतभीमऐसोदीख्यौ जैसेंकालीके

चक्रीकेसरितैंलिमकालदीषे तबभीमसेन बोलतभये हेद्रोणाचार्यतुममेरेगुरनहीं मैं तुम्हारोसिष्यनही तातेंअबमैंतुमकोंजीति व्यूहमेंप्रवेसकरि अर्जुनपासजाऊंहूंसोतुम देषो असेंकहि घंटानादसहित असीगदाके प्रहारसोंरथकोंतोडिद्रोणाचार्यकोंपीडितकि ये तबहे धृतराष्ट्रतासमयमेंभ्रातानसहित दुर्योधनआयो सोभीमकेबाणनकरि असो दीष्यो जैसेंसर्पनसहितचंदनकोबनदीषे तापीछें वृंदारक दीर्घनेत्र सुषेण दुर्विमो चन रोद्रकर्मा अभय चित्रकांति सुदर्शन इनतेरे आठपुत्रनकोंमारिनीमतिनकेसिर नसोंकंदुकक्रीडाकरी तापीछें औरबीरन कोंमारिपमदूतनकोंतृप्तकिये असेंभीमकों देषिद्रोणाचार्यरथपेसवारहोय युद्धकोंआ ये जबभीमरथतेंउतरि हाथीकोंपकडिता केप्रहारनतेंद्रोणाचार्यकेरथकोंषंडषंडकि यो तबद्रोणकोंबिरथदेषिबेगतेंभीमव्यू हमेंप्रवेसकरतभये तापीछें जमदंडतुल्य बाणनतें असंख्यातवीरनकोंमारत गज नकरिपरिपूर्ण

मारि अवासंधुकोपुत्रसहदेवताकोंमारि ५
धृष्टद्युम्नकोपुत्र क्षत्रधर्मा ताकोंमारि तेजतै
ताज्वलमानद्रोणाचार्य तरुणनमें अग्निज्यों
पांडुसेनाकोदग्धकरतभये इतीसात्यकी
प्रवेस तासौंयुधिष्ठिरनृपकौ अल्लहोतौ
द्वैषिमयभीतहोयभीमसेंबोल्यो हेभ्राताअ
बतैरथताकेमध्यकोसमर्थहै तातैंसत्रुनको
सेनाकेमध्यअर्जुनहैताकेपासजावो अब
श्रीकृष्णकेसंखकीधुनिनासुणियेहै अरु
अर्जुनकेसंखकीधुनिनहीं औरबैरीमहा
बिषमहै तातैंतुमजाय अर्जुनकीरक्षाक
रो द्रोणाचार्यतैंद्रुपदपुत्रमेरीरक्षाकरैगो
ऐसैंसुणिभीमसेनराजाकीआग्यासिरपै
धरिरथपैअसवारहोय बाणधारानकरि
बैरीनकोंमारिमारगकरत मदोन्मत्तग
जराजलौंसकटब्यूहमेंछिदिबेकोंचल्यो त
बताकेसन्मुखद्रोणाचार्यआयबोले हे
भीमतेरेआगेतूसकटब्यूहमेंछिदिबेकौइच्छा
सेंकरैहै ऐसैंकहिकरिबाणनतेंभीमकौ
परिपूर्णकरतभये तिनबाणनकरिहृदयमें
रुधिरझरतभीमऐसोदीख्यो जैसैंकाली

धकाटि अनेक राजानके सिर काटे तब कर्ण
औररथपै सवार होय भीमसों युद्ध करिबेकों
फेरि आयो तहां रोकनके घोर युद्ध भयो ताकों
देषिबेकों आये जो देवता सोहू आश्चर्य तें
शिर धुनावत भये तब भीमहू दुर्जय नामा ते
रपुत्रकों मारि गदाप्रहार तें कर्णको रथ पै
रि तोड्यो अरु तहां आवने तेरे पुत्र दुर्मष
नकों बाणन तें बींधि व्याकुल कर्यो तब कर्ण
औररथपै सवार होय आय भीमके ऊपर
बाण मारे तिन बाणन तें भीमके क्रोधरूपी
अग्नि प्रज्वलित भयो जब कर्ण और राजान
सों युद्ध करत भयो तब भीम पैन दुर्मर्षण दु
र्यह जय दुःशल दुःसह इन पांचन तेरे पुत्रन
कों मारि रणमें अगार्जना करि कर्णके रथ
युध फेरि काटत भयो अरु नाके [illegible]
पिबेको चित्र उपचित्र चित्रवर्मा चित्र
धन्वा चारुचित्र विचित्र चित्रचाप ये
[illegible]मान पुत्र आये तिनकों इन प्रकार
भये तापीछे वारवार [illegible]
रपुत्र कों मारि देषि [illegible]
पिर्वेदमें [illegible]

वार सोय फेरि आयो अरु भीमकों बाण बीस
करि रुधिर मय कियो तब भीम हू बाण धारा
न करि कर्णकों मूर्छित करयो ताकी रक्षाकों
चित्रायुध चित्रसेन चित्रसेन विकर्ण सत्रु
सत्रुंजय सत्रुंसह ऐसें सात भ्राता फेरि आये तिन
कों हू भीम मारे तब कर्ण चलपाय बाणन
तें भीमकों बिरथ कियो जब भीम अस्त्र च
लावे तिन हूकों कर्ण काटत भयो तब अ
स्त्रहीन भीमसेन अनेक हाथीनकों उठाय
उठाय फेंके अरु भीमकों बाणन तें
बिरथ करि पृथ्वी में पटकि धनुषकी टिलवा
धत भयो अरु कुंतीके बचन तें मारयो नहीं
ऐसें जाणि अनादर करत नहीं बोल्यो हे भी
मत अस्त्र विद्या में निपुण नहीं तातें बा
लकन तें युद्ध करिबे लायक तू है नहीं अ
रु तेरो सरीर पुष्ट है और बहु भोजनकै
है तातें रसोइदार को कर्म करिबे हीजो
है ऐसें कहि कर्ण बारंबार धनुषकी कों
तें प्रहार करत भयो तहां पहद सा भीमक
श्रीकृष्णके कहे तें अर्जुन द्वारा बाण बे
करि कर्णकों आकुल कियो तब भीम

मूर्छाकों डिसांटपकों केरथमैंसवारहोय अने
कबीरनकोंमारतभयो इतीभीमप्रवेस ता
पीछें अर्जुनकरणपैबाणचलाये तिनकों अस्व
त्यामाबाणनतैंकाटतभयो तबअर्जुनहूबा
णनतें अस्वत्यामाकोंनजायअनेकबीरन
कोसंघारकरत जयद्रथकेमारिबेकों अतिसी
घ्ररथकोंचलायपद्मब्यूहसोंयुद्धकरतभयो
तहांपद्मब्यूहकेबीरनकोंमारि तापीछें अ
नेकमहारथीनकारक्षितजयद्रथसूची
ब्यूहकेएकदेसमेंग्रसहो ताहूब्यूहमैं अर्जु
नप्रवेसकरिताकेबीरनसोंयुद्धकरतभयो
तहांभीमहूगदाप्रहारतें अनेकबीरनकोंमा
रतभयो अरुसात्यकीहूक्रोधतैंकौरवन
कीसेनाकोंमारिहाहाकारसबकरावत
भयो अरुसात्यकीहूक्रोधतैंकौरवनकी
सेनाकोंमारिहाहाकारि तासात्यकीकोंदेषि
अलंबुषयुद्धकरिबेकों आयो तासोंयुद्धक
रिसात्यकीअनेकबीरनकोंमारिअलंबु
षकोसिरपृथ्वीमेंपटक्यो जिसकेचक्रतें
कट्योराहुकोसिरतैसें अलंबुषकोंदेषिरा
जमंडलदुःषितभयो

से ५०० बार ओर मारे तिन को कोलाहल सुणि
री श्रवा युद्ध कों आयो तब दोऊ ही मेघ समा
न बाण धारा बर्षत दोऊ सेना कों व्याकुल क
न अनेक सस्त्र अस्त्र मय युद्ध करत भये ति
के युद्ध कों सर्व बीर परस्पर युद्ध छोड देषत
ये तब दोऊ नके बाणन तें बेध करि करि र
षी में प्रवेस करत भये स्वामी को मनोवांछि
त काम कर्यो नहीं तातें कहा मुष दिषावें य
ल तातें हि मानो अंतर्द्धान न पे ऐसें दोऊ नके
बाण महा हते सारथी अश्व धनुष ध्वजा
करे तब दोऊ षड्ग युद्ध करत भये तापीछें भू
रीश्रवा सात्यकी कों पृथ्वी में पटकि के सगरि
खड्ग तें सिर काटिबे लग्यो तब श्रीकृष्ण
अर्जुन सों बोले हे अर्जुन तेरो सिष्य सात्य
की ताहू कों जीतिबे लायक सोमदत्त को पु
त्र भूरिश्रवा के बस पड्यो है यह काल की म
हिमा देषो ऐसें सुणि अर्जुन बाण तें भूरी
श्रवा को भुज खड्ग सहित मूलतें काटत भयो
तब भूरिश्रवा बोल्यो हे अर्जुन तूं बीरन में सि
रोमणि होय यह कूट युद्ध कों नये तें सीष्यो
पिता इंद्र अग्नि रूप ह्वै ए इन में तो यह बिद्या १४

हेनही यह श्रीकृष्णकी मित्रताको फल हे कही
ऐसें कहि भूरिश्रवा प्राणायाम करि योगधारणा
करत भये ताके शिरतें धूमसहित अग्नि निक
स्यो सो देषि ओर राजा अर्जुनकी निंदा करत भये
तिनकों अर्जुन बोल्यो अभिमन्युकों मारते तो तु
मधर्म देष्यो नही अब तुम धर्म देषो हो अरु
मोकों प्राणहूतें प्यारो सिष्य ताकी रक्षा करत
मोहि अधर्मी जाणि निंदा करो हो सो तुम्हें जोग
नही ऐसें अर्जुनके बचन सुणत ही सात्यकी
चेतपाय पूर्ववृत्तांत जाणे बिना प्रथम ही यो
गाभ्यासतें गतप्राण ऐसे भूरिश्रवाको खड्ग
तें सिर काट्यो ताकों देषि कितनेक बार निंदा
करत भये कितनेक स्तुति करत भये सूर्यास्त
पर्यंत जयद्रथ की रक्षाकों इतने बीर सन्न
द्ध भये कर्ण कृप अश्वत्थामा दुर्योधन श
ल्य बृषसेन बृषक इतने आय बाणनतें अ
र्जुनको छायलियो तब अर्जुन कोपकरि बाण
बृष्टितें सबनकों भगाये तब फेरि आय अर्जु
नकों सबननें घार्यो तर्फ सो घेर्यो
तब बृषकको धनुष काटि शल्यकी पाघ कट
नकरि कृपाचार्य

करि वृषसेनकौकानकाटिदुर्योधनकोमुक
टकाटि सबनकेउरमेंबाणमारे तबसकल
राजाअर्जुनकेबाणनतैंब्याकुलहोयबोले
अबसूर्यदेवआकासमेंबिलंबक्यों करतहे
सीघ्रअस्ताचलकोंक्योंनजातहेऐसेंबोले
रोषसोंरक्तनेत्रनकरिसूर्यकोंदेषतभयेति
नकेरक्तनेत्रनतैंहीकहामानोंसूर्यहूरक्तभ
योहे जगतकोउपकारकरताहूसूर्यताको
अस्तकामीउलूकचोरलोकोंरषवाहतभ
ये करिसबनकोबाणनतेंमूर्छितकरि अ
र्जुनजयद्रथकेमारिबेकोंचल्यो तबदुर्यो
धनच्यारिसहायनकोंबीचकोंपठाये ति
नकोंभीमपकडिउछाले तेपौनतैंतूलतें
ज्योंउडिसंबर्तवायुचक्रमेंपडेजेअबमेंहें त
बतहांद्रोणाचार्यआप अर्जुनसोंयुद्धकर
तभये गुरुशिष्यकोघोरयुद्धदेषिश्रीकृष्ण
उपायकियो जबसुदर्शनचक्रतेंसूर्यको
आवर्णकरिअस्तदिषायो तबजुद्धकरते
द्रोणाचार्यअर्जुनसोंबोले हेअर्जुनतुम
त्यबादीहोयसूर्यअस्तभयेतोहूयुद्धकोंक
रेहे प्रतिग्यापालनतें अधिकसरनकोंऔ २

रधर्महै हीनहीं॥ ऐसैं सुणि अर्जुनयुद्धत
जिरथतैं उतरी काष्टकी रासिकों अग्नितें प्र
ज्वलितकरि तामैंप्रवेसकी तयारी करी
सो सुणि पांडव॥ हाहाकार करतभये कौर
वनसों छलकरतहीं श्रीकृष्ण अर्जुनसों
बोले हे अर्जुन तेरो अपराध नहीं होणहा
रमाफिक तेरे मुषतैं प्रतग्यानिकसी ता
तैं अब बिलंबनकरि तो सरीषो मित्र मो
कों फेरि मिलेगो नहीं तातैं मोसों एकबार
आपमिलि ऐसैं कौरवनकों छलिकरत
करतहीं अर्जुनसों मिलिकानमैं कही हे अ
र्जुनत अग्निकी प्रदक्षिणा करि जयद्रथ
इपरी पतनहीं वाकों सिर काटि संध्या
करते वाके पिताकी अंजुलीमैं नाषि वानैं
पुत्रकों बरदियोहै जो तेरोशिरकों पृथ्वी
नाषैता कों सिर ततकालही पृथ्वीमैं प
गो॥ ऐसैं सुणि अर्जुन अग्निकी प्रदक्षिणा
करतभयो ताके देषिबेकों कौरवसबं
पे यह वृत्तांत सुणि जयद्रथ हू देषिबेकों
सिर निकास्यो॥ ॥ अर्धवंद

मामैं संध्योपासन करत भये पिता वृद्धक्ष
त्रकी अंगुली मैं नाख्यो नेत्रमीचें ही वृद्धक्षत्र
चकित होय वा शिरकों पृथ्वीमैं नाख्यो तब
तत्काल वाको हू शिर पृथ्वीमैं पड्यो जब द्रो
णाचार्य सहित कौरवनपक्ष्यकों दोषजित
नें कें अर्जुनकी निंदा करें तिननें ही श्रीकृष्ण
सुदर्शनको अंतर्द्धान करि सूर्य्यकों दिषायो
तब सब ही कौरव आश्चर्य युक्त भये अ
रु अर्जुन हू सात अक्षौहणी सहित जयद्र
थकों मारि गर्जना करत भयो ता गर्जना
कों सुणि महात्मन नी महहर्ष तें अपार ना
द कस्यो ताकों सुणि युधिष्टिर कें आनंद हो
त भयो अहनंगतें व्याकुल कौरवनकी
सेना रात्रि मैं भी व्याकुल गज घटालो चा
रयो ओर भ्रमत भई जब अर्जुन कृपाचा
र्य अश्वत्थामाकों बाणनतें भगाय अने
क बीरनके सिर कमलनतें संध्याकों पूज
त भयो अरु सात्यकी हू युद्धमें कर्णकों जी
ति दारुक सारथी सहित श्रीकृष्णके रथ
पें सवार होय अनेक बीरनकों मारत भ
यो अरु बली भीमकों अपमान कियो ७५

तातेंकोपकरि अर्जुनकर्णके आगेंहू मसेन
मारिवेकी प्रतिपाकरि बीरनकोंमारतसा
त्यकी भीमसहित युधिष्ठिरकोंआयप्रणाम
कियो अरुयुधिष्ठिरके आगे भीमसात्यकी
अर्जुनकेरणकी प्रसंसकरतभये तबराजा
युधिष्ठिरतो श्रीकृष्ण अर्जुनतें आलिंगनक
रिजयहेतु श्रीकृष्णकी स्तुतिकरतभयो
इतिश्रीभारतसारचंद्रिकायां द्रोणपर्वणि
चतुर्थदिवसयुद्धे जयद्रथवधवर्ननोनाम
ततियोध्याय: ३ संजयउवाच तापीछें दुर्यो
धनअश्रुपातकरत द्रोणाचार्यपास जाय
बोल्यो हेगुरु आपजाकों अभयदियो होतो
जयद्रथतुम्हारे देषतहीमर्यो अबकहा
करोगो ऐसेंसुणि द्रोणाचार्यबोले हेंदु
र्योधनतेरेबैरीनकोंमारेबिना आजिरां
मेंकवचनउतारोंगो ऐसें द्रोणाचार्य
केबचनसुणि दुर्योधनसर्वअस्त्रनयेंधा
रसर्वबीरनकोतयारकरि युद्धकोंचल्यो
अर्जुनहू श्रीकृष्णसहितकोरवसेना
केंसंमुषआवतभयो तहांद्रोणाचार्य
धनुषकोटंकारतैंमांसभाजी

१७ हु के उत्स चमें आये हैं ते अर्जुन के रथ की धु
जा में जो हनुमंत ता की गर्जना तें त्रास पाय ना
मे हनुमंत के सब्द की प्रतिध्वनि ज्यों भीम मु
ष के राते निकसा जो ध्वनि सो सत्रु सेना कों
कं पायमान करी तब दोऊ सेना के बीर पर
स्पर युद्ध करत रुधिर सों रंजित भये द्रोणा
चार्य बाणनतें सहस्त्र गज दश हजार रथ
लक्ष पयादेन कों मारि राजा शिव के शिर का
टत भये अरु भीमसेन युद्ध करतें कलिंग रा
जा के पुत्र कों मुष्टी तें मारि अस्त बषेरे तैवा के
भोग कारि बेला पक मानों पुन्य है औसे दाष बि
दार कें रस सोई दार जो भीम ता नें कलिंगन कों
मारि रणभूमि में पटके तें मानों कालिका को
र्व लिनि मित्र बिजन के दीषे तहां कुलिंग कु
लक मार देषि ध्रुव जयतर आये तिन कों भी
म मुष्टि प्रहार तें मारि अरु कर्ण को युद्ध में व्या
कुल करि केरि दुःस्वर्ण दुर्मद येतेरे पुत्रन
कों मारि गाजत भयो तापिछै सात्यकी याद
व सोमदत्त को पुत्र भूरिश्रवा ता को सहोदर
सल जा कों मारि अनेक बीरन कों मार तन
यो तहां अश्वत्थामा आय सात्यकी कुं रोकि

अनेकबीरनकोनासकियो ताकेसन्मुषघटो
त्कचघोरशब्दकरत आय बाणनकीबर्षाक
री तबअश्वत्थामाहूघटोत्कचकूं बाणबर्षा
तेंब्याकुलकरि गर्जनाकरतोघटोत्कचकेपुत्र
अंजनपर्वाकूंमास्यो तापीछें राक्षसनकीसेना
कूं अश्वत्थामाभगाय अरुद्रुपदकेआठपुत्रन
कूंमारि पीछें कुंतिभोजकेदसपुत्रनकूंमारि
अनेकबीरनकोमारतभयो तबभीमहूबाल्ही
कराजाकूंमारि प्रमाथीबिरजा नागदत्त दृढ
रथ बीरबाहु अयोबाहु सुहस्त सुहट कर्ण
नाम कुंडसाई येतेरेदसपुत्रनकूंमारे त
बताअवकासमेंद्रोणाचार्ययुधिष्ठिरकेघोरयु
द्धहोतभयो तब भीमशकुनिकेसातभ्रातानके
सिरकाटि आकासमेंकेकेतसप्तशिषिनकेह
स्ततेंपडतेकमंडलसेदीषे तबपांडवनकोंदे
षराक्रतेंसकलसेनाव्याकुलदेषि दुर्योध
न कर्णपेजाय दीनबचनबोलिबीनतीक
री जबबाणबर्षतही कर्णबोल्यो हेदुर्यो
धनतुमभयमतिकरो इनतेरेबैरीनकेपी
सिबेकोंभारमोकूंहे आजिअर्जुनकोंमा
रि तोकूंनिस्कंटककरोगो असेबोलतेक

ऐसोंकृपाचार्य बोले हे सूतपुत्र गोहरणमैं अ
रुधोपयात्रामैं तरीप्यौहुनही तातैं अबय
थासक्ति युद्धकरो अरु अप्यागजेनामालिकरो
ऐसैं सुणि कर्ण क्रोधकरि खड्ग धारि कृपाचा
र्यसौं बोल्यो जो तुम फेरि ऐसें बोलोगे तो
खड्गतैं जिह्वा काटोंगो तब मामाके अनाद
रतें कोपकरि खड्ग धारि अश्वत्थामा कर्णकि
सन्मुख आय बोल्यो रेरे नीच तूं कैसें भूसैहे
तब ऐसैं सुणि कर्णहू खड्ग लेय युद्धकौं आयो ज
ब दोउनके बीचि कृपाचार्य दुर्योधन आय नि
वारण करत भये तापछे कर्ण अश्वत्थामा
दुर्योधन ये तीनों आय पांडवनकी सेनाकौं
व्याकुल करि अनेक बीरनकौं मारत भये त
हां बीरनके मुषतें यहे रहे है अब कैसे मरेंगे ऐ
सो सबद निकस्यो तब अर्जुन आय बाणवृ
ष्टिकरी तहां कोरवनकी सेनाके सरणोक
र्णही होत भयो तब कर्ण अर्जुनके बाणन
तें आपको रथ अरु मनोरथको नअनभयो
देखि कृपाचार्यके सरण गयो अरु अश्व
त्थामा द्रुपदके पुत्रनकौं मारि अनेक बीरनकौं
मारत भयो तब युधिष्ठिर भीम अर्जुनकौं

पार्थचक्ररत्नकरिकौरवनकीसेनाकेवीर
नकौंमारिव्याकुलकरतभयो॥सात्यकीयु
द्धकरिसोमदत्तकौंमार्यो॥अरुअर्जुनद्रोण
दोऊनके॥दिव्यास्त्रप्रकाशतैंदीप्यमानव
हरात्रिऐसीसोही॥जैसैंरुद्रकेनेत्राग्निप्रका
सतैंदीप्यमानकालरात्रिसोहै॥घोरअंध
कारमैंवीरदीपिकानकेप्रकाशतैंयुद्धकर
तभये॥दीपिकनिकेप्रकाशतेंकहूंकहूंअद्भु
त॥अंधकारवीरनकेशस्त्रप्रहारनतेंपंडि
तसोदीप्यो॥महावीरनकेशस्त्रप्रहारनतेंअ
नेकदीपिकाकटिकटिपडीतेंअंधकारकी
चपेटनतेंमानोंपडीरात्रिऐसीदीषी॥अरु
बलिष्टदेखावतारदुर्योधनकोंदेखावता
रयुधिष्टिरातिकोंजीत्यो॥यहसबनकोंआ
श्चर्यभयो॥कर्णअनेकवीरनकोंमारिलबसा
नतसहदेवकोंमाताकेवचननतेंछोड्यो॥युधि
ष्टिरद्रुमसेनआदिराजानकेशिरनतैंपृथ्वीछा
यदीनि॥तापाछेकर्णद्रोणाचार्यहूयुधिष्टिर
कीसेनाकेवीरनकोमारिप्रथ्वीकोंछायदई॥
धष्टद्युम्नआदिवीरनकोंभगाय॥पांडवनकी

पारबाणधारावर्षतभये सोदेषिश्रीकृष्ण
घटोत्कचसौंबोले हे घटोत्कचमहाबीरतू
तूकेन्पांलौंकैसेठाटोहै अथवायुद्धनकरि
जाएतातेंहीजुद्धकौंबुद्धिनहींकरे हे कहा ऐ
सेंसुणिघटोत्कचबोल्यो हे कृसहेकृसमेंतै
रेदासकौदासहौं अरुमेरोबलहूरात्रिहीमें
है तातेंमौदिवसमेंयुद्धनकरोंहों अबतु
म्हारीआग्यातेंकौरवसेनाकौंअबहीपाता
लमेंप्रवेशहोयपर्वतनतेंचूर्णकरोंगो
असेंबाकौवचनसुणिश्रीकृसयुधिष्टि
रसौंबोले हेधर्मराज आपहूकौरवसेना
तेंयुद्धकरौ असेंराजासौंकहिघटोत्क
चकौंउत्साहसहितकरियुद्धकौंपठायो
जबघटोत्कचगर्जनाकरितें अग्निप्रगटहो
यनेत्रनासिकाकर्णमुष्या डारातेंनिक
सिसस्ज्वालन्रूपभयकरत पीतवर्ण
केसडाढीमूंछनकौंधारि सिष्वरनमेंदा
वानलज्वालसहितपर्वतलौटाइयो ता
कौंदेषतहीकितनेककायरतौनष्टभये
अरुसूरवीरनकौंइषितेंगर्जनातेंभगाय
कर्णकोंसरजालतेंआछादितकरयो तब

विचित्रदीर्घधनुषधारें इंद्रधनुषसहित
जनपर्वतसोदीष्यो तहांकर्णकोंआकुल
धिदुर्योधन अलंबुषकोंपठायो सोकर्णके
शागें आपघटोत्कचसोंयुद्धकरतभयो जब
घटोत्कचचारिसे ४०० हाथप्रमाणरथमें
सवारहोयजयसुरकेपुत्रसोंयुद्धकरतभयो
तहांदोऊपक्षसहितपर्वतलोंयुद्धकरतभये
तिनकेतुल्ययुद्धकोंसर्वबीरदेषतभये त
बघटोत्कचवाकेरथकोंआपकेरथलेंतो
डिअलंबुषकोबलस्युंलधरिभुजानसोंनिचो
ड्यो ताकेसरीरतेंरुधिरधारानसहितप्राण
निकसे तबघटोत्कचवाकोसिरकोंतोडिदु
र्योधनकोंदिषायबोल्यो ऐसेंहोकर्णकोंभि
दिषाउंगोसोतुमदेषोगे ऐसेंकहिकर्णपे
सीघ्रआयबाणनतेंआछादितकियो तबक
र्णहूअसंष्यबाणनतेंवाकोमर्ममर्मबेध्यो
जबभीमपुत्रहूसहस्रारचक्रधरिकर्णकोंमा
रिबेकोंआयो तबकर्णवाचक्रकोंबाणनतें
काट्यो जबघटोत्कचरथसहितआकास
मेंजायमायायुद्धकरिअसंष्याबीरनकों
मुक्को अरुरथ्वी अग्निकीज्वालानतें

ज्ञरतभई आकासतैंबाणवृष्टिभई अरु
दिसांनकौंअनेकराक्षसनरोकी जबकौरवन
कीसेनामहासंकटपायो तबकर्णदिव्यास्त्र
तैंमायानिवारणकरिलक्षावधिराक्षसनकौं
मारतरामचंद्रतुल्यहोंदीष्यो जबघटोत्क
चराइकौवणायो अष्टचक्रनसहितवज्र
ताकौंचलायकर्णकौरथभंगकर्यो तब
कर्णहूबाणनतेंवाकौरथतोड्यो जबघटो
त्कचपैंजरहीनपक्षीलौंउडिआकासमें
गयो तहांजायगर्जनाकरतमायाबीअला
युधकेसन्मुषयुद्धकौंठाढोभयो तबअला
युधहूभूमिमेंठाढोजोभीमतासौंयुद्धकरै
होसोतजिवाकेसन्मुषआयो तबवकराक्ष
सकोमित्रअलायुधभीमकोपुत्रघटो
त्कचइनकैआकासमेंघोरयुद्धभयो तिन
कीगर्जनातेंपर्वतनकेसिषरहूफाटे ऐसें
युद्धकरतेंअलायुधकोसिरकाटिघटोत्क
चभूमिमेंनाष्यो सोपर्वतकेसिषरकीस
मांनकटोशरकंसबबालदेषिविस्मितभ
ये ताअवकासमेंकर्णपांडुसेनामेंप्र ले
करिबीरनकौंमारतहो ताहिदेषिघटोत्क १७

चवाकेरथकोतोडिआकासमेफेलिब्रह्मस
र्पमेला अग्निइनकोकोरवसेनामेवर्षाकर
तभयो तवकोरवसेना अैसेभाजी जैसेपा
जएटेसरोवरकोजलसुस्कहोतच्यारोदि
सानमेंजाय तहांकितनेकवीरहाथीघोडा
नकेसरीरमेंधसतभये अैसेयुद्धकरतेघ
टोत्कचकेसन्मुषकर्णवाणचलाये तव
घटोत्कचहकर्णपेवाणचलाये जवदोऊ
नकेवाणसंघेटतेंअग्निप्रगटहोयकोरवन
कीसेनामेपडिदग्धकरतभई अरुतहांरा
क्षसनकोराजाघटोत्कचसर्वजातिसवर्ष
तभयो तातेंसववीरविकलहोइहाहाकार
करतभये तवघटोत्कचआकासमेंकिलकि
लासषकरतहर्षतेंनृत्यकरतभयो अरुक
दिकदिहाथीघोडानकोभक्षणकरतभयो अरु
रुधिरनदीनतें अंजुलीभरिभरिरुधिरपानक
रतभयो अैसेराक्षसरात्रिकेयुद्धमेंराक्षसनतें
हीकितनेकनकेप्राणहरे कितनेकनकोराक्ष
सनकीवाहनतेंमरे तायुद्धकोदेषिकोर
वगजनकीघंटानतेंशिानकोरक्षाकरतभये
अरुयुद्धकरतेकर्णसोंदीनहोयबोले है

यहघटोत्कचरात्रिमेंहमसबनकोमारेगोतातें
पीछें तूंइंद्रनसक्तिसोंअर्जुनकोमारिकत
कृतकरेगो ऐसेसुणिकर्णनिमित्तराषीनिधि
लाइंद्रकीदीनीएकबीरघातनीसक्तिकोक
र्णघटोत्कचपेफेंकी सोवहसक्ति बीजलीस
मानअंधकारकेंदूरिकरतघटोत्कचके
हृदयकोंभिदीर्णकरिसुर्गकोंगई ताकेप्रहा
रतेंप्राणरहितघटोत्कचपड्यो एकअक्षौहणी
सेनाकोंचूर्णकर्यो तापीछेंसबबीरनकोंग
जायघटोत्कचताकोंमर्योदेषि कोरवहरषतें
नृत्यकरतभये तबश्रीकृष्णसबव्यापक
तादिषावतभये जबअर्जुनश्रीकृष्णसोंबो
ल्यो हेश्रीकृष्णयादुःखकेसमैंतुमनृत्यक
रतेंअचिंनहींदीषोहो यानृत्यकोकारणक
हाहेसोकहो तबश्रीकृष्णबोले हेअर्जुन
यहतेंनामईमूर्छितकर्णकोरवनकोपरमजी
वनहे अरुएकबीरघातनीइंद्रकीदीनीस
क्तिकर्णकोपरमजीवनही सोवहसक्तिघटो
त्कचकोंमारि किरिपानकरिहसतअब
तुम्हारेंरक्षकर्णमर्यो यहसुनिमैकहिबे
कोंमई ताते हेअर्जुनअबकोरवनकोंमरे १८

हीजाएैं। अरु इनकें स्वास आवैहै तेपोलेहूं इ
के पवनलोंजाएैं। अरुयासक्ति तें अर्जुनकोंमा
रियो ऐसेंकोरवनिसासिपावतहे। परंतुमेरी
मायाकेप्रभावतेंवाकोंया रिरहीनही। अरुएक
लव्यजरासंधसिसुपाल आदि अरुहु जयेहे
तिनकोंमेंमारे तबहू ऐसोजुद्धनदेष्यो। दुःसाध्य
सत्रुनकोंतोमेंमारे। अबशक्तिहीन कर्णआदि
सकलसत्रुनकोंतुममारो। ऐसेंश्रीकृष्णको।
बचनसुणिसर्वयुधिष्टिर भीम अर्जुनकोंआ
दिलेबारह्नुहोय युद्धकोंचले। तब चिंताक
रतयुधिष्टिरकों वेदव्यासमिलिकेबोले हेयु
धिष्टिर तुमधर्मतेंयुद्धकरि हाथदिनतेरोवि
जयंहोयगो। ऐसेंकहिअंतरधानभये। ता
पीछैघोर अंधकारमेंबारसबहू बधीवाणप्र
हारनतें बीरनकेमुषहृदयतिनकोंबीधत
भये अरु अंधकारमें अपणेंपरायोजाणे
बिनाही घोरयुद्धकरतभये। अरुपर्वतसहि
तपृथ्वीकोंउठावतेहू तिनकोंकदनहोय ऐ
सेहूबीरयुद्धमेंषेदपावतभये। अरु अर्जुनकों
कछुनाषेदभयोनही। तोभाकरुणाकरिबी
रनसोंकही एकक्षणमात्रतुमविश्रामकरो।

सोसुणि सकलबीर अर्जुनकोंसराहतहाप्या
घोडारथ्यनपेचढेही हुम्पूरकर वालीनिद्रा
ताकेबसहोयसोवतभये सस्त्रास्त्रसहितयुद्ध
कोंसन्नद्ध ऐसीदोऊसेना निद्राकरिनिश्चल
शोभत भई तापीछे चंद्रमाउदेभयो सोअ
मतवर्षवेवालीकिरणनकरिघायलबीरन
कोंसुषीकरतभयो रुधिरनकीनदीमेंषंडष
उचंद्रमाकेप्रतिबिंब ऐसेदीषे मांनोंनिजकु
लनांसतें चंद्रमाआपहीषंडषंउभयो अरु
चंद्रमाकीकिरणिस्परसतें दोऊसेनाबीर
जागियुद्धकोविचारकरतभये तापीछेस
योदयभयोतबसकलबीरनिश्चयकरियुद्ध
कोंसन्नद्धभये तबदुर्योधनद्रोणाचार्यपे
आयकटुकबचनबोल्यो जबवाकेबच
नतेंक्रोधकरिद्रोणाचार्य ... दिव्यास्त्र
प्रहारनतें अस्त्रविद्याकरिहीनहीनरन
हकोंमारतभयो अरुद्रोणाचार्यअषंडध
नुषमंडलतेंअसंख्यातबीरनकोंमारि ग
जअश्वनकोंछिन्नभिन्नकरिरुधिरकेप्रवाह
बहाये तिनमेंअनेकयोद्धाबूडिबूडिमरे ता
पीछेद्रोणाचार्यजुद्धमें ... चार्य १०

गपतें द्रुपदके पुत्र तिनकों मारत भयो तब वि
राट द्रुपद दू युद्ध में थिर असे द्रोणाचार्य पे बाण
वृष्टि करी जब द्रोणाचार्यने दू दो ऊ नके सिर
काटि पृथ्वी में डारे तब भीम धृष्टद्युम्न कों आ
दि ले सब बीर युद्ध कों द्रोणके सनमुख आये तिन
कों कर्ण सकुनि बारि राखे तहां अनेक बीरन के
समागम में अति घोर युद्ध भयो अरु विदीर्ण भ
ये हस्तीन के कुंभस्थल तें असंख्यात मोती पृथ्वी
में पडे अरु असंख्यात रुधिर की नदी बही त
ब द्रोणाचार्य पांडवन की सात अक्षौहणी सेना
कों मारत भये तब श्रीकृष्ण पांडवन सों बोले
हे युधिष्ठिर जबलों ई सस्त्र धारें तें हैं तबलों द्रो
णाचार्य को जी त्यो जाय नहीं ताते छल
करि इनके हाथतें अस्त्र सस्त्र छुडावो असें सु
णि अर्जुन को तन्य दिअधोमुख भयो अरु युधि
ष्ठिर सोक तें मूक भयो तापाछें भीमसेन मा
लव देसके राजा को अस्वत्थामा नाम गजरा
ज कों मारि ऊंचे स्वर सों अस्वत्थामा हत असें
सें बोल्यो तब लज्जा करि नम्र भयो असें भीम
के मुख तें अति अप्रिय बचन सुणि अरु पुत्र
अस्वत्थामा को अजेय जाणि असत्य मानि

पुछहीकरतरहे तापीछेसांठि हजारपां ल
वीरनकोमारि इसलक्ष वीरनकोब्रह्मास्त्रतें
दग्धकरि न्यारिसेंवरसकोद्रोणाचार्यतरुण
लोंयुद्धमेंविचरतभयो तबअलिकृतकर्मकरत
द्रोणाचार्यभीमकेवाक्यतेंसंकितहोययुधिष्ठिर
सोंपूछ्यो हेसत्यवक्ता युधिष्ठिरभीमकहीसोस
त्यहेकेहा ऐसेंद्रोणाचार्यकोवचनसुणश्री
कृष्णराजायुधिष्ठिरसेंप्रार्थनाकरी हेराजनजो
तुमसत्यहीबोलोगेतोपांडवनसहितजगत
प्रलयहोयगो यहश्रीकृष्णकीप्रार्थनातेंयु
धिष्ठिरअश्वत्थामाहतःयहतोऊंचेस्वरसों
भीमनेकहिनरोवाकुंजरोवायहधीरेंबो
ले अरुजबहीश्रीकृष्णनेसंखधुनिजोक
री तातेंराजाकहसेंकहेजोअक्षरसोद्रो
णसुणेहीनहीं तबद्रोणाचार्यपुत्रकेसोकतें
क्षणमात्रव्याकुलभयो ताहीछेपहलेंराजा
युधिष्ठिरकेरथकेजेश्रश्वश्रीकोस्पर्सक
रेबिनाहीचलेहे तेईश्रश्वराजाकेवचनक
हतहीभूमिमेंकष्टसोंचलतभये तबद्रोणाचा
र्यहधृष्टद्युम्नकोमातिएकलक्षवीरकोश्रोर
मारि ऐसेंयुद्धकरतद्रोणाचार्यसोंभीमजाय

बोल्यो हेगुरु तुम ब्राह्मण होय राज्ञस लोकहत्या करोहो अरु पुत्रके मरणको दुष्य तुम लिगयो याते तुमको धिक्कार हे ऐसे नामको वचन सुणि द्रोणाचार्य सस्त्र अस्त्र त्याग करि सकल जीवन को अभयदान देय योगे द्रोणाचार्य योग आसन करि बेठ्यो तिनके ब्रह्मांड तें ज्वाला निक्सि प्राण मुक्त भये तापीछे धृष्टद्युम्न आय पांडवन के बरजत और राजानके मुष सों धिक्कार सब्द सुणतहू केस पकडि गुरु द्रोणाचार्य को सिर छेदन कर्यो तापीछे सकल सेना व्याकुल भई तब देषि पूछत भयो जो अश्वत्थामा तासों कृष्ण कहत हुये धनसंकलवं नीवक ... भयो सोसुणि पिताके मरणतें क्रोध ... ... से तेसे गट भयो जो अश्वत्थामा ...

... भयंक

रूपधार्यो ...

ता पिताको ...

... ...

बिश्वास परंतु पिताको दियो नारायणास्त्र मोपे है ५ ताकरि पांचपांडव श्रीकृष्ण हीन बिश्वक रोंमें ऐसें कहि पवित्र होय नारायणास्त्रधा रि अश्वत्थामा गर्जत भयो तातें गुरु असु र सबही कंपितभये तब अर्जुन वागर्जनातें ना कोंब्याकुल देखि पश्चात्तापयुक्त होय राजा युधिष्ठिर सौं बोल्यो हे महाराज आजन्म पर्यंत सत्य बादी तुम हो यह निश्चय जानि स त्यासत्य त्यागकरि योगाभ्यासमें बैठे बिना शस्त्र ऐसे गुरुकों मार्यो ताकौ अतें गुरुकर ते या द्रोणाचार्य के पुत्रकों द्रोण मारे और राज भोग बांछितकों धिक्कार है जो पापी गुरुगुरुनंदनहीन योगी कों साक्षात मा र्यो ऐसें कहि तें अर्जुन को प्रलाप सुणि २ क्रोध युक्त होय भीमपृथ्वी को सहाय मा नकर तबोल्यो हे अर्जुन तू क्षत्रिय हो यमुनि तुल्य बचनबोलत भलो दीसै नहीं और बै रीकें मारिबेमें न्यायको बिचार कों ण करे है हमतुमक्षात्रिकूं स्वपक्ष युद्धकी तयार रहै है ऐसो भीमको बचनसुकोपयुक्त धृष्टद्यु

अर्जुनसौंबोल्यो हे महाबीर अर्जुन तुम सु
णो यह असबधु अत्र गपानह ननकोहू अ
स्त्रतें मारे पातें यह अधर्मी याहासूं छुट्या
रीहो अरु मेरे पिताको बैरी द्रोणताकों में मा
र्यो अरु वृद्ध पितामह तो भीष्म दूसरो तुम्हा
रे पिताको मित्र भगदत्त इन धर्मयोद्धानकों तु
मकैसें मारे ऐसें बोलतें धृष्टद्युम्नकों अर्जु
न धिक्कार करि कटाक्ष सों प्रेरणा करि सात्यकी
कों बुलायो तब सात्यकी बोल्यो हमकों धि
क्कार है जो गुरुकों कपटसों मार्यो तब सा
त्यकी बोल्यो हमकों धिक्कार है जो गुरु कों क
पटसों मार्यो तब ऐसें सुणि धृष्टद्युम्न बो
ल्यो अनशनव्रत धारि योगाभ्यास करतें भू
रिश्रवाकों कोण मार्यो तब यह सुणि सा
त्यकी बोल्यो हे निर्दय दुराचार धृष्टद्युम्न
ऐसें फेरि बोल्या तौ तोकों में मारोंगो ऐसें
बोलि सात्यकी षड्ग लियो जब धृष्टद्युम्न हू
षड्ग धारि पुरुकों आयो तब दोऊनकौ युद्ध
कों सनमुख देषि श्रीकृष्णके बाक्यतें भीमसे
न आपबीचैके पाअवकासमें अभ्वस्था
मके चलाये नारायण स्त्रकी ज्वालानकों

रिसांनमैंब्राह्मनहूदेषि अरुताअश्वत्थामा
हीकेअनेकसस्त्रनतेंसेनाकोंब्याकुलदेषिअ
र्जुनसोंयुधिष्टिरबोल्यो सत्यजितकोंआदि
लैकेंमहारथमारे दुर्मुषअभिमन्युकों
छलतेंमार्यो अरुदुर्योधनकोंअनेसरदेष
कवचदियो तागुरकेंमरणतेंक्रोधकोंरोकि
मध्यस्थहोणोंहीजोगहै सात्यकीधृष्टद्यु
म्नयेआपकेंघरजावो मेंअग्निमेंप्रवेशक
रूंगो अरुकालतुल्यकृपाचार्यकोंअबकों
णजीतिसकै औसेंयुधिष्टिरकेबोलतेंही
चतुर्भुजभगवानकृष्णधर्मजकोंनारायण
अस्त्रकीज्वालातेंब्याकुलजेराजातिनसोंबो
ले औरअस्त्रशस्त्ररथनकोंछोडौतिनकों
यहअस्त्रदग्धनकरेंगो औसेंसुणिसबरा
जाशस्त्रअस्त्ररथनकोंछाडिपिरभूमिमेंध
रिप्रणामकरतभये तबभीमराजानसोंबो
ल्यो हेराजाहौतुमभयमतकरो मैंनिर्दयअ
श्वत्थामाकोंगदातेंमारोंगो औसेंकहिगर्ज
नाकरतभीमगदालेकेंदौड्यो तबअश्वत्था
मायहमर्षहै औसें हेसिकेंकहिबाणन
सोंपूरतभयो अरुरथआयुधहीनराजान

कोंकोडिनारायणास्त्रकीज्वालामंडलमेंनिकें
करिलियो। जबअर्जुनभीमकोंज्वालामंडलतें
व्याकुलदेषि। वरुणास्त्रचलायो। सोवरुणास्त्र
नारायणास्त्रकीज्वालानमेंदग्धभयो। ऋस्त्र
स्त्रकेआतापकोंसहियुद्धकरतभीमकोंदेषि
देवताहूविस्मितभये। तबश्रीकृष्णअर्जुनयेभी
मपासआयजोरावरीकरिभीमकोंरथतेंउता
रिअस्त्रहूभूमिमेंनाषे। तबपांडवनकेदुःख
सहित। अश्वत्थामाकेमनोरथसहित सबलो
ककीतापसहित नारायणास्त्रसांतिभयो सो
देषिदुर्योधनअश्वत्थामासोंकही याहीअस्त्र
कोप्रयोगफेरिकरि। तबअश्वत्थामादिव्यास्त्र
इसरेंचलैनहीं ऐसेंकहि युद्धकरिबेकोंदौ
ऱ्यो। तहांसात्यकीधृष्टद्युम्नदोउनकोंसस्त्र
वर्षातेंजीति। सुदर्शननामपौरवराजकोंमा
ऱ्यो। तबयुधिष्ठिरकीसेनाकोंव्याकुलदेषि
अर्जुनअश्वत्थामाकोंबाणवृष्टिकरिरो
क्यो। तबअश्वत्थामाआग्नेयास्त्रचलायो
ताकीज्वालानतेंअनेकवीरदग्धभये। धू
ममंडलतेंसर्वमंदभयो। नक्षत्रमंडलदि
मैंहीदीष्यो। एकअक्षोहणीसेनाकोंदग्ध

शाण०
१८५

करिबहुरिअस्त्रश्रीकृष्णअर्जुनपैछोड्यौ। ताव
मांनकरि श्रीकृष्णअर्जुनछायगये। तव
र्जुननिजअस्त्रलाघवतैंअश्वत्थामाकेअस्त्र
कौंध्वांतकरिरणमेंदैदीप्यमानभयो। १४
कौंअपांडवीरकैंबिनाहीदिव्यास्त्रकौप्र
नदेखि अश्वत्थामादिव्यास्त्रनकीनिंदाक
रै। तबतौअश्वत्थामाकौंबेदव्यासआय
दर्शनदियो जबरथछोडि अश्वत्थामामु
निकौंदंडौतकरिबोल्यो मेरोदिव्यअस्त्रश्री
कृष्णअर्जुनमेंनिष्फलभयोयाकौकारणक
हाहै सोकहौ तबव्यासबोले हेपुत्रश्रीकृष्ण
अर्जुननरनारायणहै यहजाणौ साठिहजा
रबर्षतपकरि नारायणरुद्रसेवनतैंताकौ
तुल्यभये तमूर्तिसेवातैंरुद्रांशताकौप्राप्त
भयो यहश्रीकृष्णरुद्रस्वरूपहै तदंश
है लैअस्त्रश्रीकृष्णअर्जुनपैए रूपहै इन
किंचिन्मात्रमेंसंदेहमानिकरि ऐसेबोलिव्या
स अंतर्धानभये। तबअश्वत्थामाउनकौ
णामकरि श्रीकृष्णअर्जुनकौदेवरूपजा
क्रोधकौंध्वांतकरिमुछहलसमानकियो। त
नपालराजानिजनिजडेरानकौंगये जब

अर्जुनहूँ रनमैंआव+नमार्गमैंकरनेहैपा
पनमुनिकोंदेषिप्रणामकरिपूछ्यो हेमहा
राजयुद्धमैंसूलधारीविकरालरूपनरअ
नलकीज्वालानकरि मेरेबाणप्रहारतेंपह
लीसकलकौरवबीरनकोंसंहारकरतप्रति
दिनदीषैहै सोकोणहै तबबेदब्यासबोल
ले श्रीकृष्णकीकृपातें तोपैप्रसन्नभयेतन
नकोंकरूप रुद्रपार्वतीपतिरूद्रहै आत्मा अ
नात्मा ईस्वर अनीस्वर ज्ञान अज्ञान प्रिय
अप्रिय सर्वरूप अरूप ऐसेरुद्रकैध्यानतें
ताकौसर्वसिद्धिहोयगी ऐसेंअर्जुनकोंस
देहहरिकरिमुनिअंतर्ध्यानभये बारदेवन
मेंप्रवेसकरिअपनेअपनेयथाजोगपक
सकरतभये ॥७८॥ द्रोणपर्वकेवचनिका
भाषाभारतसार रावचांदसिंघकेकुलमन
योसुग्रंथविचार ॥ इति श्री भारत...
कायांडेग पर्वसमाप्तम् /

[illegible] हे सल्य अबमै अर्जुन
[illegible] श्री कृस्नतहाँ बिजयप
[illegible] यगौ अरु ईहू मेरो प्र
[illegible] ताकतैं अश्रुपात करेंगो
[illegible] तैं कौर बोल्यो हे कर्ण ऐसें उन्म
[illegible] नाही प्रलाप करत मेरे आगें लज्
[illegible] हैं तेरो अरु अर्जुन को परा क्रम
प बे युद्ध मैं अरु बिराट के गोहरण मैं कौन
न नैंन हीं देष्यो कहा तब कर्ण शल्य सूं कही
तूं आज मेरो प्रभाव देषेगो ऐसें बोलि आ
प के ज्ञान सौं कहत भयो हे शल्य हो इं
द्र कौ जो तब बेवारो अर्जुन कहा है सो तु
धिर पीवे को लालसा करे है जो मोकु अ
ब अर्जुन दिषावै ताकों सत १०० ग्राम हा
थी घोडा दास रथ पद देऊं हूं ऐसें सु
शल्य बोल्यो हे कर्ण तो कूं अर्जुन आप
ही दर्शन देय अरु प्राण हरेगो परतें वा
तैं मिलें या सेंतें सरीर कुं छकाय
ग गजोग बेवारे अर्जुन
सब र्णमलके

नसैरावरकेरहिबेवारे ऐसेंहंसनतैंउहि
श्भोजनकरिवेवारेकागकेंसेंसमानहो
पैं अरुहेअंगराजकर्णमूर्खकोंसोनाही अंगन
कैंनबताईनचापलै तबताईसिंहसमानअ
र्जुननहींदीषैहै तबकर्णक्रोधकरिबोल्यो मैं
अर्जुनकेंजाणैंहों अरुअर्जुनमोकोंजाणैंहै
हेशल्य तूबचनबाणनतेंमर्मछेदकरैहैं ता
तेंतूमित्रमुषसत्रुहै अरुतेरदेसबासीनको
यहसुभावहै अगम्यागवन अपेयपान अभ
क्षभक्षणकरैहैं सोतिनकोतूराजा ऐसेकसें
नहिबोलै तबशल्यबोल्यो हेकर्ण तेरेदेसमें
स्त्रीपुत्रनकोंबेचैंहै अरुमुखतेंमैथुनकरा
वैहैं सकलदुष्टकर्मकेकरिबेवालेहैं तिनके
राजामेंसुबुद्धिकहांतेंआवे तातैंहेमूर्षमोहि
तकोंकहाहोत क्रोधकरैहै सोअर्जुनतेंयुद्ध
कियेंतेरेप्राणहीजायगे तातैयुद्धमतिकरै
ऐसेंबोलिशल्यअर्जुनकेमनजइकरतहांच
लाये तबकर्णहूअनेकबाणवर्षायअनेकवी
रनकोंमारिदिव्यगतिकोंपहुंचाये ऐसेबा
णवर्षाकरतहर्षयुक्तकर्णकोंदेषिमद्रनाथ
शल्यफेरिबोल्यो हेसूतपुत्रतूदेषिपहः

र्जुनकेयुद्धकीलीलाकोलेसग्रोमहारथानके
प्राणनकोनासकरैहै अरुअर्जुनकेएकए
कबाणनकरिसातसात आठआठ दसद
स बीसबीस महारथारहेत्यागकरिकरिदिव्य
देहधारिइन्द्रलोककोजातहैं सकलसंसप्तक
गणमंडलकोमारिरणमेंगर्जतोइंद्रपुत्रको
नकेसाध्य है ऐसेंसुणिकर्णबाणवर्षान
करि आकासमेंबाणमंडलसोंसूर्यकोछाय
युधिष्ठिरकोविरथकरिदशहजारमहार
थानकोमारि अरुयुधिष्ठिरकोव्याकुलकि
यो तबयुधिष्ठिरविरथसारथीहीनसस्त्रन
करिरहितकर्णकेबाणनकरिपीडितकंप
यमानभयो ऐसेंराजाकोदेषिमहाभीमग
गदाप्रहारनसोंअनेकवीरनकोघटाखंड
डकरि नंद उपनंद कोची सुपर्वा पासी
तुथांह महाभुज विंद दीर्घात्मक संनि
गी क्रोप जरासंधु दृढदशदुर्मी धनके
तानकोमारे तिनकोदेषिसबकोरवन
सेनाकंपायमानभई फेरिभीमसेनहा
घोडासत्तरिसतहिंहजारमारिव्याघ्र
आदिराजानकोमारिरणमंडलमेंभय १८८

करयमतुल्पराष्यो तबकर्णहपांडवनकेअन
कवीरनकोमारेताकोदेषिश्रीकृष्णअर्जुनसो
बोलेहेपार्थवीरनकीभुजानकोछेदनकर
तोसंग्रामसागरमेंतिरतोकर्णसिंहतोशरमे
बिनाकोनकेबसकोहै तातेयुद्धकेनिमित्त
चलो ऐसेकहिश्रीकृष्णरथकोकर्णकेसन्मु
षलेचले तहांमार्गमेंनामश्रीयुधिष्ठिरको
वृत्तांतकह्यो हेश्रीकृष्णअर्जुनराजायुधि
ष्टिरकर्णकेयुद्धमेंविरथहोयबाणनकेप्र
हारतेंविदीर्णहोयपशिवरमेंगयो सोसुनि
श्रीकृष्णअर्जुनयुधिष्ठिरकेदर्शनकोग
ये तबमहाराजयुधिष्ठिरश्रीकृष्णअर्जु
नकोआयेदेषि कर्णकोमारिआये ऐसेजा
णिघायलहूहर्षसोंसथ्यातेंउठ्यो तबनम
स्कारकरिदोऊवीर राजाकोघावनतेंपूर
देष्यो जबराजाश्रीकृष्णअर्जुनसोंबोल्यो
सनाकोमारिबेवारे परशुरामकोशि
ष्य ऐसेकर्णकोरणमेंकैसेमार्यो तबअ
र्जुनबोल्यो हेमहाराज अश्वत्थामाके
जीतिबेमेंविलंबलग्यो तातेंकर्णकोमार्यो
नहीं रणभारनामकोसोपितुम्हारोवृत्तांत

० सुणिदर्शनकौंआयोहो ऐसोसुणिक्रोधयु
क्तयुधिष्ठिरबोले हेअधमतूकुंतीकेउदर
मैंवृथाआयो अरुमोकोंधिक्कारहैजोतोका
यरमैंविजयकीआसाराषी एकबांधवकौंर
णमैंछोडिकर्णतैंभीतहोयइहांआयो तातैंअ
बयहगांडीवधनुषऔरकौंऊबलीकौंसौंपिजो
बैरीनतैंहमकौंराषै ऐसैंसुणिअर्जुनक्रो
धतैषड्गकौंतर्फदेष्यो तबश्रीकृष्णबोले
हेअर्जुनगांडीवधनुषऔरकौंदेयहमुक
हेताकौंमारौंयहतेरीप्रतग्याहै सोषड्गकौं
बिनाषैंचेहीबड़ेनकीनिंदाकरिबोहै सोबि
नाशस्त्रहीबधहै तातैंराजाकीनिंदाकरि
ऐसैंसुणिअर्जुनयुधिष्ठिरसोंबोल्यो हेराज
नभयभीतह्वैभूपतितोहीकौंदेष्यो अरु
आपसोंहोयऔरनकौंदुर्वचनकहै सोहू
तोहीकौंदेष्यो ऐसेयुधिष्ठिरकीनिंदाकिये
पाछैं जेष्टभ्रातासमझि अर्जुनआपमारिबे
कौंतयारभयो तबश्रीकृष्णफेरिबोले हेअ
र्जुनतूतेराहीस्तुतिकरि सत्पुर्षनकौंआ
पकीस्तुतिआपकरैसोहीमृत्युतुल्यहै ऐ
सैंसुणिअर्जुनबोल्यो युद्धमैंकर्णकौंमैंसंतु ११

किया इंद्रादिकनसौं अबहूं ऐसे निबात
कवचद्रानवनसौं ताते कलिकालकेबीर
नमैं मेरी तुल्य अस्त्र बिद्यामें औरहै हीनहीं
जबराजा युधिष्टिर आपकी निंदा अर्जुनकी
स्तुति अर्जुनमुषतें सुणि क्रोधमु क्तभयो ता
सांश्रीकृस्नबोले हेराजेंद्र क्रोधन करोतु
म्हारी तोनिंदा अरु आपकी स्तुति अर्जुनाद
चारिकैं करीहै ताको प्रयोजन पीछैं जाणो
गे. तातें अबप्रणाम करै है सोयाकौ बिज
यासीर्बाद द्यो. तब अर्जुन कौंपायनमें प्र
णाम करतौ देषि राजा युधिष्टिरः निजय
कौ आसीर्बाद दे य. हृदयसौं लगाय विदाकि
यो. तब अर्जुन उहांतें चलतो हो राजानवे
सिरनसौं पृथ्वीकौं आछादित करतो हो च
लो. अरु भीमगदाकरि वैरीनकौं अरु ग
जारथ्यासारथ्या हाथी घोडा रथ पयादान
कौं मारि सबनकौं एकाकार करै. परभी
मकौ पराक्रम देषि सर्व पांछालपनीत हो
य संग्रामके मुषकौं छोडि लागे. तब भीम
णा सं. न कौ सारथी मारिरथ के. तो छिन्ना
सनकौ कं. पक. छि. आपराक. व

चनतैंयाकेअपराधनकौंपारिकरिक्रो
धतैंयाकोंमारिगोदमैंधरि आरक्तनेत्र
नसौंच्यारौंतर्फदेषिऊंचेस्वरसौंबोल्यो
हेराजाहो तुमदेषौ ओ दुष्ट दुःशासनस
भामैं द्रौपदीकेकेसवस्त्रषैंचिषैंचिहर्ष
मान्योहो सोअबमैंताके वक्षस्थलकोवि
दीर्णकरिरुधिरपानकरौंहौं ऐसेंकहि
दुःशासनकेविसालवक्षस्थलकौंफारि
अंगुलीनभरिभरि बारंबाररुधिरपानकर
त आसपासकेराजानकोदेषतभयो ता
पीछेंभीमकौं ठोकतरुधिरसौंरंगेहोठनकौं
चाटतलालनेत्रनकौंभ्रमावत रोमनकों
नचावत ऐसेंभीमकौंदेषिसकलवीरमूर्छि
तभये वाकोपतैंभीमजगतकों कर्णदुर्यो
धनकरिकेहीनहीं करतौ पैद्रौपदीकेकेस
बंधनषोलिवेकौंयादिकरतरौद्ररसमैंश्रृं
गाररसयुक्तनहींहोतौतौ ताअवकासमैं
कर्णकोपुत्रवृषसेनवीरअर्जुनकेसन्मु
षआवत मारगमैंअनेकवीरनकौंमा
रिनकुलसहदेवसात्यकी इनकौंरणतैंवि
मुषकिये तबअर्जुनऐसेंदेषिबाणवर्षाक

तकर्णपुत्रके हाथकोननाककाटिशिर[illegible]
यो तबकर्णपुत्रकोमरणसुणिधीर्जधारिये
नसोंयुद्धकोतयारभयो ताकोदेषिश्रीकृष्ण
अर्जुनसोंबोले हेअर्जुनकर्णकोदेषि अनेक
लयुक्तरथमेंसवारहै अनेकशस्त्रअस्त्र
नकरिसोभितहै सोतोसोंयुद्धकरिबेकोआव
तहै अरुशल्यकर्णसोंबोल्यो हेकर्णअर्जुनके
रथकोदेषि श्रीकृष्णतोसारथीहै हनुमतधु
जामेंहै अरुइंद्रकोपुत्रअतिबलवानमहार
थीहै अर्जुनसोंतयुद्धकैसेकरेगो तबकर्ण
बोल्यो हेशल्यजाकीधुजामेंहनुवतारह
तु[illegible]साक्षातनारायणजाकोसारथी
[illegible]रविष्णुतुल्यअर्जुनसंग्राममेंअजे
[illegible] [illegible]हराजेइशल्यअर्जुनकेसन्मुष
[illegible] [illegible] अरुमेरोयुद्धदेषि ऐसे
[illegible]रथकोअर्जुनकेसन्मुषल्या
[illegible] तबकर्णअर्जुनके आजन्मपर्यंत
[illegible]के विचारमाफिक
[illegible] [illegible]देषिबेकोदेवताग
[illegible]आये अरुदेवता
[illegible]तब्रह्मासों

९० महादेवसों पूछ्यो । इनमें दोऊनमें कौनकौ बि-
९१ जय होयगो । तब ब्रह्मा शिव बोले । जहां श्री
कृष्ण हैं तहां सदा ही जय है । ता पाछें दोऊ ब-
रसन्मुख आपसमें नाद करयो । ताकौं सुनि
बीरनके हृदय कंपायमान भये । अरु ब्र-
ह्मादैत्यनके मारिबेकौ इंद्रकौं दियो । इंद्रनें
नके मारिबेकौ परसरामकौं दियो । अरु परस
रामकर्णकौं दियो । सो बिजयनाम धनुषकौं
कर्ण षैंचि टंकार करि बाणवृष्टि करत भयो
अरु अर्जुनहू गांडीव धनुषकौं षैंचि टंका-
र करि बाणवृष्टि करी । दोऊनकी बाणव-
र्षातें समीपके अनेक बीर तौ मरे । अरु अ-
नेक बीर भागे । ता पाछें कर्णके बाण अर्जु-
नके सरीरमें प्रवेस किये । अरु अर्जुनके बा-
ण कर्णके सरीरकौं भेदि पृथ्वीकौं बिदार-
ण करि पाताललौं गये । अरु कर्णहू लाघव-
ताकरि अर्जुनके हाथमें बाण जेते हे काटे
तिन बाणनकौं कटे देषि भीमसेन श्रीकृ-
ष्ण अर्जुनसों बोल्यो । हे बीर अर्जुन पांडव
बनवास कालके दानवनसें जुद्ध किरा-
तरूप शिवके युद्धहूतें इहां अधिक साव-

धांनहोयपुद्धकरि ऐसैंसुणिअर्जुनबाणमारि
नतेंआकासकोंछायदियो अरुकर्णकेरथको
बाणप्रहारनकरिएकजोजनलोंपीछेंधकाय
यो तबकर्णहूफिरिआपनार्गवास्त्रकेप्रभाव
तें सकलबाणमंडलकाटिश्रीकृष्णहनुमंत
सहितअर्जुनकेरथकोंतीनपेंडपीछेंधकायो
तबदेवताआकासतेंकर्णपेंफूलनकीव्रष्टि
करी ताकोंदेषिअर्जुनश्रीकृष्णसोंबोल्यो हे
श्रीकृष्णमेंकर्णकेरथकोंएकजोजनधकायो
अरुकर्णमेरेरथकोंतीनपेंडधकायोसोदेव
ताकर्णपेंफूलनकीव्रष्टिकरीयाकोकारणक
हो जबश्रीकृष्णबोले हेअर्जुनकर्णतोसों
भारीपराक्रमकर्यो जोतेरेसंदेहहोयतोमे
रेमुषकोंदेषि तबअर्जुनश्रीकृष्णकेमुषमें
सप्तदीपसमुद्रपर्वतव्रक्षनसहितचराच
रविश्वदेष्यो तबताकेरथनेंहीअर्जुनम
होपाई जबश्रीकृष्णबोले हेअर्जुनयहक
र्णसाभारणसस्त्रनतेंजीत्योजायनहीं तोते
इद्धहोयमुद्धकरो ऐसैंसुणिअर्जुनक्रोध
करिअस्त्रसषिबाणनतेंकर्णकोरथआछा
दितकियो तबकर्णहूआग्नेयअस्त्रतेंअर्जुन

७०
२

केबाणनकौदग्धकरि पाडवनकीसेनाकौ
दग्धकरतभयो अरुअग्निहूप्रचंडज्वालान
करिपाडवनकेयोधानकेरथसस्त्रअस्त्रके
सछत्रचवरधुजापताकानकौजलावतभयो
अरुसर्वसेनाअग्निमईभई तबअर्जुनआ
पकीसेनाकौव्याकुलदेषिवारुणास्त्रतै
अग्निकौसांतकरिकौरवनकीसेनाकौज
लसमूहमैडबोई तबकर्णहू वायव्यास्त्र
तैंमेघनकौउडायवीरनकौआकासमैच
ढावतभयो सोदेषिअर्जुनवाकेराषिबेकौ
पर्वतास्त्र चलायो तातैंपवनतौसांतभयो
अरुकौरवनकीसेनामैपर्वतपडिबेलगे
तिनकौदेषिकर्णवज्रास्त्र चलायो तबअ
र्जुनवज्रास्त्रकौरुद्रास्त्रतैषंडनकरिअने
कबीरनकौमारि कर्णकौछत्रमुकटपता
कौकाटतभयो जबकर्णक्रोधतैंअर्जु
नपैंअर्धचंद्राकारबाण चलायो तबअ
र्जुनवाबाणकौबीचहीमैंकाट्यो तब
कर्णअर्जुनकेहृदयमैंपांचबाणमारे
जबअर्जुनहू तृणमात्रमूर्छापाय तापीछे
च्यारिबाणनतैकर्णकेघोडामारि रथकौ १५२

तोडि सारथी के हृदयमें एकबाण मारि
अरु एकबाण कर्णके उरमें मारि गर्जना क
री। असें कर्ण अर्जुनको युद्ध देषि सर्वबारध्या
श्चर्यसंयुक्त भये। तबश्री कृष्णकी आग्यातें
रथ्वी कर्णके रथके चक्रकों गिल्यो। तब क
र्णरथतें उतरि जितनें रथकों उकासै तित
नें ही अर्जुन श्री कृष्णकी आग्यातें बाण प्रहा
र करत भयो। तब कर्ण बोल्यो। हे पार्थ हे म
हाबाहु जितनें में पृथ्वीतें चक्र निकासों ति
तनें क्षणमात्र क्षमा करि। सो सुणि अर्जुन
क्षमा करी जब श्री कृष्ण बोले हे अर्जुन ति
तनें याको चक्र नहीं निकसे अरु इहि
हुनी वेहे तितनें तू निस्संक प्रहार करि। अ
शक्ति देषि प्रहार करे हे लेई जानें हैं। असे
सें श्री कृष्णको वचन सुणि अर्जुन असं
षि बाणनको प्रहार कर्यो। अरु कर्ण हू च
क्र निकासत तनी वैमुखकि येयह जाणी
श्री कृष्णकी आग्यातें मेरे मारिबे निमित्त
अर्जुन प्रहार करे है। तब ही श्री कृष्णसों बो
ल्यो। हे कृष्ण मैं मत्यसों डरों नहीं यह सरी
र क्षणविध्वंसी है। तातें रणमें मरेतो [illegible]

७ सुर्गभोग मिले अरु जीवे तो लक्ष्मी पृथ्वी
३ भोग मिले जातें मरे तें चिंता कहा तोहू
जितनै मैं चक्र कौं निकासौं तितनै में माकु
रो अरु मैं तो पृथ्वी में स्थित अर्जुन रथ में स्थि
त तासौं यह अश्वधर्मयुद्ध सो विचारो ऐसे
सुणि श्री कृष्ण क्रोध करि बोले हे कर्ण पहि
ले रीबा का सुणि बडो आनंद भयो भीम कौं
विष मोदक देतें लाक्षाग्रह कौ दाह करतें
अरु द्रौपदी के केस पकडि खेंचतें अभिम
न्यु के मारतें काहू नैं धर्म देख्या नहीं अब
तो कैं धर्म पादि आयो ऐसैं श्री कृष्ण क
र्ण सौं कहि करि तत्काल ही तें अर्जुन कौं प्रे
रणा करी जब अर्जुन बाण वर्षा करत भ
यो तासमय मैं कर्ण कौ मित्र यो धनक
घर मैं छोड्यो सो सर्प आय बोल्यो हे कर्ण
तेरे तुल्य और वीर नहीं अरु मैं तेरा सहा
य करिबे कौं आयो हौं सो तू मो कौं बाण
जिम धनुष में संधान करि चलाय मैं मेरे प
रिवार सहित जाय श्री कृष्ण अर्जुन कौं बा
धौंगो तब कर्ण धनुष मैं संधान करि चला
यो सो जाय श्री कृष्ण अर्जुन के अंग न कौं बा

धिमर्मभेउसनभयो॥ सोसुणियुधिष्ठि
रआयदोऊनकोदेसादेषिरुदनकरतभ
यो॥ तबनहानारदआयपुधिष्टिरसोबो
ले॥ हेराजनअपाकदनकोकरहो॥ यह
श्रीकृस्नअर्जुननरनारायणहीहै॥ तातै
तुमकोमत्तहैहानही॥ सोअबश्रीकृष्णको
बाहनगरुडहै ताकोस्मर्णकरि॥ तबरि
षिकेबाकतेराजायुधिष्टिरगरुडकोस्म
र्णकियो॥ जबगरुडआयेताकेपाषनकी
पोनतेकोरवपांडवनकीसनाकेबीर
उडिउडिआकासमेगये॥ तीरकोला
हलसबकरतअधोमुषहोयआकास
तेहाथीघोडापयादेनपैपेडतभये॥ ज
बगरुडश्रीकृस्नअर्जुनपासआयठाडो
भयो॥ तितनेहीवाकेगंधहीते सर्वसर्पछो
डिनागपातालकोगये॥ अरुकितन
कनागतेसर्पनकोगरुडभक्षणकियो॥
जबसर्पकेबंधनतेछूटिश्रीकृस्नअ
र्जुनउठे॥ तबगरुडबोल्यो॥ हेश्रीकृस्नमो
कोआग्याकरो॥ तो कोरवनकीसेनाको
भक्षणकरो॥ अथवाकहोतोपक्षनकी

सुर्गभोगमिले अरुजीवैतोलक्ष्मीपृथ्वी
भोगमिले जातेमरैतैंचिंताकहा तोहू
जितलेमैंचक्रकौंनिकासौ तिलनैनमाक
रो अरुमैंतोपृथ्वीमेंस्पातिअर्जुनरथमेंसु
ति तासैंापहअधर्मयुद्धसोविचारो अैसे
सुणिश्रीकृष्णक्रोधकरिबोले हेकर्णपह
लेरेबाकासुणिबडोआनंदभयो भीमकौं
बिषमोदकदेतैंला तायहकौंदाहकरतै
अरुद्रोपदीकेकेसपकडि बेचतैं अभिम
न्युकेमारतैंकाहूनैंधर्मदेष्योनही अब
तोकौंधर्मयादिआयो अैसेंश्रीकृष्णक
र्णसौंकहिकरातक्षणितैंअर्जुनकौंप्रेर
णाकरी जबअर्जुनबाणबर्षाकरतभ
यो तासमयतैंकर्णकौमित्रदुर्योधनके
घरमेंकौंद्रासोसर्पआयबोल्यो हेकर्ण
तेरेतुल्यऔरवीरनही अरुमेंतेरासहा
यकरिबेकौंआयोहों सोतमोकौंबाण
जिमधुनसमेंसंधानकरिचलाय मेंमेरेप
रिवारसहितजाय श्रीकृष्णअर्जुनकौंबा
धोगो तबकर्णधनुषमेंसंधानकरिचला
यो सोजानश्रीकृष्णअर्जुनकेअंगनकौंबा

धिमर्ममेड स्तभयो॥ सो सुणियुधिष्टि
र आयदोऊनको देसादेषेतस्न का रथते
यो॥ तबतहानारदआयपयुधिष्टिरसोंबो
ले॥ हेराजनेत्रंथाकदनक्योंकरेहे॥ यह
श्रीक्रस्नअर्जुननरनारायणहीहे॥ ताते
इनकोमत्यहेहानही॥ सोअबश्रीक्रस्नको
बाहनगरुडहे ताको स्मर्णकरि॥ तबमे
घिकेबाकातेंराजायुधिष्टिरगरुडकोस्म
र्णकियो॥ जबगरुडआयेताकेपाषनकी
पोंनतेकोरवपांडवनकीसनाकेबार
उडिउडि॥ आकासमेंगये॥ वेघीरकोला
हलसष्करतअधोमुषहोयआकास
तेंहाथी घोडापयारेनपेपेडतनप॥ ज
बगरुडश्रीक्रस्नअर्जुनपासआयठाढो
भयो॥ तितनेहीवाकेगधहाते सर्वसर्पछो
डि भागिपातालकोंगये॥ अरु कितने
कनागतेसर्पनकोगरुडभक्षणकियो
जबसर्पकेबंधनतेंछुटिश्रीक्रस्नअ
र्जुनउठे॥ तबगरुडबोल्यो॥ हेश्रीक्रस्नमो
कों आग्याकरो॥ तो कौरवनकीसेनाको
भक्षणकरो॥ अथवा कहोतोपत्तनकी

पौनतैंउडायसमुद्रमेंपटकौ ऐसेंसुणि
श्रीकृस्नबोले हेगरुडकौरवपांडवन
कीसेनामेंमेरीपुछनहींकरीतौतूमेरी
बाहनकैसेंपुछकरैगो तातैंमेराआपा
तेंतूजा ऐसेंश्रीकृस्नकीआग्यालेंगरु
डजातभयो तापाछेंश्रीकृस्नअर्जुनतया
रहोयजितनेपुरुकोआवे तितनेंकर्णबा
रहचक्रनिकामिलियो अरुरथपेसवार
होपेसवराजानकेसुणतेंअर्जुनसोंबो
ले हेअर्जुनतेरोबलश्रीकृस्नहीहे अरु
देखितुमनागपासबद्धभयेतवमेंअधर्म
जाणिएकहूबाणनचलायो औरतुमने
रेरथकोचक्रगड्योतवएकछणमात्र
हूंतमानकरी तातेंतेरोपुरुषार्थकहा
ऐसेंसुणिमोनमुक्तअर्जुनक्रोधतैंबा
णहीचलावतभयो तिनबाणनकोंछेद
नहींकर्णयुद्धकरतभयो तासमेंपांड
वनमाहेंमेंअर्जुनकेनामसर्पकोपूछ
कोरीहासोबाणनाहिंकर्णकेतरकस
मेंआयबोलो हे कर्ण अर्जुनकेमारबे
रहें मोकोंबाणकरिचलापसोतु

लिकर्णधनुषमेंधरि चलायो।सोअर्जुनके।
किरीटकाटिपृथ्वीमेंगयो। तासर्पकोअर्जुन
खंडखंडकरिमार्यो। तबकर्णकोपतेअर्जुनके
कंठछेदिबेकेनिमित्तअर्धचंद्राकारबाणच
लायो। ताबाणकोअर्जुनकेकंठपालआयो
देषिश्रीकृस्नजोरकरिएकतालपृथ्वीकोप
ध्वीमेंदाब्यो। तबकर्णकोबाणअर्जुनकेमु
कटकोकाटिगयो। ऐसेयुद्धकरतेकर्णकेरथ
चक्रकोफेरिपृथ्वीगिल्यो। अरुश्रीकृष्णने
आपतेंअर्जुनप्रहारकरहकरलयो। त
बकर्णअर्जुनसोंकहीक्षणमात्रक्षमाक्रि
सोअर्जुनक्षमाकरी। जबकर्णनेभिररथमें
तेंरथपेअर्जुनहोतासोंयुद्धकियो। तब
अर्जुनआग्नेयअस्त्रकरिकर्णकोरणमें
उलमेंपटक्यो। परंतुइननेकारणनयेन
बाणआसोजनमेजयपृथ्वीचक्र
गिल्योमातावाणहरे। इंद्रब्रह्मणप
कवचहर्यो। गुरपरशुरामशापदियो
तातेंअबफुरेनहीं। श्रीकृस्नछलकियो
अर्जुनप्रावारसन्मुनयो। इनछेहकारण
तेंएकलोकर्णकहावे तोहूमहाराजाय
१९

धूकरतकरतकर्णरथमेंपय्यो तबमरेपुत्र
कोहीमानोसर्पपक्षिमसमुद्रजलांजली
देवेकोंगयो तबकितनेकवीरतोप्रसन्नभ
येअरुकितनेकवीरमलिनमुषभये तब
कौरवनकीसेनभयभीतहोयभागीताकों
दुर्योधनसमाधानकरतबीरश्रीकोंधा
रतभयेअरुपांडवनकेवीरहर्षसोंगर्ज
नाकरतभये तबअर्जुनश्रीकृष्णसोंबो
ल्यो हेश्रीकृष्णमैंमहावीरकर्णकोंमारि
जसलयो ऐसोगर्वसहितवचनअर्जुन
केसुनिश्रीकृष्णसिरकंपायहँसिके
बोले हेअर्जुनऐसोगर्वकेवाक्यकहिवेते
मैंतोकोंसर्वहीमारयोहै कर्णकेनासके
छहकारणहैं प्रथमतोमैंअरुतुमदोऊ
तौपृथ्वीइंद्रपरसुरामइनछहकारण
तेकर्णआपत्तेमेंपरयोहै हेअर्जुन
पूर्वजन्ममेंयहकर्णबालिहो तबहू
ताकोंमेंअधर्मतेंमारयो अरुयातन
मेंहूयाबालिकोंहमतुमअधर्मतेंमा
नातेआपकोपरकोगुणदोषकहेंदे
तोसोपुरुषअधमहै ऐसेंश्रीकृष

र्जुनसोबातकरतैंदुर्योधनकर्णपैजायसोच
करतहीबोल्यो॥हेमहावीरतेरेपतनतेंमैं
मरयो॥तातेंतुकैंयासतोहै॥उच्युद्धकरि॥मे
रेपालनकीप्रतग्याछोडाकहा॥तोबिना
पांडवमोकैंमारैंगे॥तातेंहेमहाबलउठिमो
सरनागतकोपालनकरि॥हेकर्णजैसेंबुद्
हीनबिप्र॥मदहीनगज॥जलहीननदी॥तै
सेंकर्णहीनसेनाहै॥अरुजैसेंरूपहीन
नारी॥चंद्रहीनरात्री॥सूर्यहीनदिन॥तैसें
हेकर्णतोहीनयहसेनाहै॥अरुजैसेंचं
द्रहीनतारामंडल॥बर्गहीनकुल॥प्राणही
नदेह॥नहींसोहै॥तैसेंकर्णहीनसेनाहन
सोहै॥ऐसेंदुर्योधपडेकर्णपासबिलाप
करिडेरानकोंगयो॥अरुतहांजायप्रभा
सेनापतिकोंणहोयगो॥यहचिंताकरतभयो
तापीछैंश्रीकृष्णएकलेकर्णकोंपराक्रम
अर्जुनसोंबोले॥हेअर्जुनकर्णकेधीर्य
हीताकरिबेकोंमैंतोब्रह्माब्राह्मणबर्ण
अरुतबा॥तकहिसबबाणि॥वहांनवि
कोधीर्जदेखिमैंबरदेगो॥यहमहाम
सुनीर॥सत्यशीलतत्पर॥जितेंद्रिय

सुद्ध अैसोयहकर्णमोकों अलिलिपहै अै
सेकहि श्रीकृष्णब्रह्मब्राह्मणरूपधारिसि
सरूप अर्जुनकेकों ... पारि पावनतेगि
रतपडतकर्णपासजायबोले हेकर्णम
हाबाहु तू ... नलमेंसदा दाना बिष्णुके
प्रसादतें तें अनेकवरपाये अरुतेरोस
रीरव्याधिरहितआदिरहित याचिक
नकेमनोरथपूरणकर ... तसेवकजनब
रसजीवो तेरोकल्याणहो लक्ष्मीस्थिर
रहो आयुस्यदीर्घहो बलहो आरोग्यहो
वांछितअर्थनकीसिद्धिहो तुम्हारेव
मेंसदाई हरिभक्तिहो लक्ष्मीगोविंदो
जायगी रूपवावुधिविरूपेजायगी अ
हकर्णतोकोंसुर्गमयमोक्षै येजाचिकके
णपासजायगो तातेंबनपर्वतबासी
नकोतोजन्मनलो अरुपुत्रहीनमात
ली परंतुजाचिककेकुलमैंजन्मनले
अरुहेकर्णसबतेंलघुतोत्रणहै तृण
घृतहै अरुत्रणतेंलघुजाचिक
लघुहैजाचिककोंजाचिबेकेभयतें अरुसब
हअंगीकारनहीकरैहै

ऋता। दीनस्वर। प्रस्वेद। गलग्रह। ये जे ते मरण
के चिह्न है। ते ते जाचिकमें निरंतर रहत है। हे क
र्णमहादेवकामकों दग्धकियो। अरु दिव्यग्रं त
नसहितअर्जुनपांडवबनकों दग्धकियो। रा
वणकरिरक्षितलंकापुरीकों हनूमानदग्ध
करी। इनसबननें ये अजोग्यकाम ही कियो
अरु जगतकों संतापकारी ऐसे ॥ दरिद्रकों
काहूहीनें दग्धकियो नहीं। तातें हे कर्णमे
रें कन्या बिवाहजोग्य है। अरु मेरें धनकछू
ह नहीं। तातें मे तो पें बहुत सुवर्ण मांगो हों।
ऐसें सुणि कर्ण बोल्यो। हे विप्रमें यह अब
स्था पायपृथ्वीमें रहतो हों। पास कछू ह वित
हनहीं। तातें तुम कृपाकरि मेरी स्त्री पास
जाचनाकरो। मैं पतो बताऊं हूं। सो
कहेंतुमकों बहुत धन देगी। ऐसें
सुणि ब्राह्मण बोल्यो। हे कर्ण मेघसमें पा
णी अन्नसमें मे फल हैं। अरु पृथ्वी
लरहत हैं। गायह समें ही
धरत है। ये तो सब ही समें ही पाय फ
है। अरु हे कर्ण तसदा
यह तेरी कीर्ति सुणि तो पें आ

र्वदासर्वदाताहै। अरुसर्वदाहीतैसेसमथ
है हमारेकर्महीनहै तातेंतहद्रव्यमेंपड्यो
है तबकर्णबोल्यो हेब्राह्मणमेरेहाथमय
तेनाप्रमाणसुवर्णसोबधैहै सोभेदंतउ
पाडिहोत। अरुसुवर्णल्यो। तबब्राह्मणबो
ल्यो हे कर्णमैं वृद्धहोतेरदांतउपाडिबेकोसा
मर्थनहीं। अबकर्णबोल्यो मोकोपाषाणल्या
यदे। तबब्राह्मणकहीपाषाणल्यायबेकीहू
मैं सामर्थ्यनहीं। जबकर्णआपहीसरके
पाषाणलेपरदांतउपाडिसुवर्णहीरादेबल
ग्यो तबश्रीकृष्णचतुर्भुजरूपधारिकर्णबे
हा पयकाइबोल्यो हे कर्ण हे महाबाहो तोर
मानरख्योमैंदानलेकरकोजहैनहीं। अ
रपाळकर्मतेमैंप्रसन्नभयो हेमहाबु
नअबतूमनबाञ्छितवरमांगि तबक
बोल्यो हे श्रीकृष्ण जोतुमप्रसन्नभये
तो यहवरदानदेहु ब्राह्मणकेअर्थध
प आपकेलोकेअर्थजोवनदेय स्व
कामसंप्राणत्याग यहदेहु अरुआस
अनसोसंकीर्ण मंदिरविप्रनकेहि सं
हृदयसाक्षकरि संकीर्ण अरुविष

भोजन सुनरखतैं
ग्रोरहु तैहूनैंनूलदान सुमिर
ग्रातुरकोंग्रभयदानमहद्यो ग्रोर
इन्नेंबुद्धिनहोय. परनिंदाकैं
सदा त्याच्यु दया दान. दुष्टम
साधुपालन यहद्यो ग्रोर जोमोपैप्रसन्न
नपैहोतो व्याह्रिहिनदेह। ग्रारिराहितमन। प्रिय
त्मी ग्ररुहे श्रीकृष्णतुम्हारीनिरभक्ति
ग्रोर सर्वमनोरथसिद्धि। धन धा
।वस्त्र सख सात. दानसक्ति भोगस
भोजनसक्तियहदयो। ग्ररुहेश्रीकृष्ण
पैंप्रसन्ननपैहोतो। ग्ररुग्धभूमिमेंमेरो
जवश्रीकृष्णप्रसन्नहोयवाकोंम
नवांछितसर्वहीवरदानदियो॥ ग्ररुग्रैसेंव
रदानदेयश्रीकृष्णउहांतेंचलेंतिलनेंरीवा
र्णउनकेचरणनकोंमस्तकतेंस्परसकरिप्र
णतजे। तबश्रीकृष्णहूकर्णकोंबहुतसरा
हतभये। रेवताप्रस्पनकोंब्रिषिकरी जब
श्रीकृष्णअर्जुनकर्णकेदाहजोग्य। ग्ररुग्र
भूमिदेषिबेकोंसरवत्रफिरे पै कहूंभीदेषी
नहीं॥ तबएकस्थानमेंपवित्रभूमिदेषिर

थ्वीसौंपूछो॥ हे प्रथ्वी यहांकोकथ्योरहद
ग्धभयोहै अब पृथ्वीबोली॥ हे ऋषिकौसल
मसुणो॥ श्लोक॥ अत्र लीभसतदग्धहोए
नोचक्पातन्नपं दुर्योधनसहस्रं चंकर्णमध्य
नविद्यते॥ अब पृथ्वीकोवचनसुणिऋषिक
स्तआपनेदहण हस्तकोबलिकेदानजेबे
सोरग्धजा॥णि॥ कर्णकेसरीरकोबामहस्त
मेदग्धाकियो॥ दोहा॥ कर्णपर्वकीवचनिका
नभारतसार॥ रावचांदरूपकहुकम
कीनीमुकबिबिचार॥ १॥ इतीश्रीभारत
सारवचनिकाकर्णपर्वसमापतम॥ ७॥

ऐं श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ शल्यपर्व की बचनि
का लिष्यते श्लोक ॥ नारायणं नमस्कृत्य नरं
चैव नरोत्तमं ॥ देवीं सरस्वतीं व्यासं
॥१॥ हते भीष्मे हते द्रोणे कर्णे चानि
धनं गते ॥ आशा बलवती राजन् शल्यो जेष्य
ति पांडवान् ॥२॥ वैशंपायन उवाच ॥
के राजा दुर्योधन प्रात काल अश्वत्थामा
कृपाचार्य के कहे सों शल्य कों सेनापति कि
यो ॥ जब शल्य हू रथ पे सवार होय युद्ध कों
आयो ॥ ताको देषि श्रीकृष्ण जु
ले ॥ हे राजन यह शल्य भीष्म द्रोण कर्ण हू तें
अधिक है ॥ अरु अर्जुन युद्ध तें श्रमित है
तें या तें तुम युद्ध करो ॥ ऐसें सुणि राजा यु
धिष्ठर शल्य के मारिबे को यत्न्य करो ॥
सात्यकी धृष्टद्युम्न सिषंडी इन सहित रा
जा युधिष्ठर युद्ध कों चल्यो ॥ तब श
ऐसें राजा कों सन्मुष आवतो देषि ॥
तो भई ब्यूह रचि युद्ध कर बे
तहां परस्पर घोर युद्ध है
अनेक योद्धान कों मारे ॥ तब श
ये पांडवनकों सात्यकी धृष्टद्युम्न

मारतभये॥अरुभीमसेनहूगदाप्रहारनतेंअ
नेकहाथीनकोंमारि बीरनकोंमारिरणभूमि
रुधिरमईकरी॥अरुसत्यसेन सुसेन क
र्णसेन इनतीन्यौं कर्णकेपुत्रनकोंनकुलमारि
गर्जनाकरतभयो॥ऐसोंपांडवनकोपराक्रम
देषि शल्य बाणधारानकरि पृथ्वीआकास
कोंबाणमईएकाकारकस्यौ॥ऐसोशल्यको
प्रभावदेषिदुर्योधनबोल्यौमैंभीष्मद्रोणक
र्णादिबीरनकोंवृथाहीमराये प्रथमहीश
ल्यकोंसेनापतिकरतौतौनिश्चैंही बिजैहो
तो॥ऐसेंसुणि शल्यगर्वतेंभीमपेंअनेक
बाणप्रहारकियो॥जबभीमक्रोधतेंसन्मुष
आयगदाप्रहारतें शल्यकेरथकोंचूर्णक
रि शल्यकोंबिरथकरिदोऊगदायुद्धक
रतभये॥जबयुद्धकरतकरतदोऊमूर्छि
तहोय पृथ्वीमेंपडे॥तबदोऊनकीसेनाके
बीरअनेकजतनसोंसचेतकरिरथनपें
धरि आपनीआपनी सेनामेंलेगये॥जब
फेरि शल्यसावधानहोययुद्धकोंआयो॥ता
कोंदेषि राजायुधिष्टिरसन्मुषआय क्रो
धतेंअनेकबाणप्रहारकिये॥तबतहांदोऊ

तिघोरयुद्ध भयो॥ जबयुधिष्ठिरशल्यकी
बिरथकियो॥ श्ररुशल्यहू युधिष्ठिरको बिर
कियो॥ जबदोऊबिरथ्येहू घोरयुद्ध करतभ
तबयुधिष्ठिरसक्तिलई॥ सोवहसक्तिश्र
क्तिबिश्वकर्माबणायमहादेवकोदै अर्पण
सोमहादेवमयकोदीनी॥ मयसो त
युधिष्ठिरकोदीनी॥ तासक्तिसोशल्यकोराज
यमेप्रहारकियो॥ जोतेशल्य
र्णहृदयहोयप्रथ्वीमेंपड्यो॥ ताकेदेखिश्र
बिधिश्रकवचश्रायो ता
युधिष्ठिरबाणप्रहारनलेयमलो
ये॥ तापीछे भीमसेनगदाप्रहारन
रिश्रबसेसबारनकोसंघारकियो॥ तापीछे
मी कृपाचार्यहारदिक्यअश्वत्थामा ये
लिश्राजियुद्धसमाप्तकर्यो श्रेसेबि
रिघोरयुद्धकरतभये॥ तहांजोधकार
काकारभये॥ श्रापणेपराये
गपांनरह्यो नहीं॥ सोश्रेसेकहतभयेक
कृतबर्मा कहां अश्वत्थामा कहांदुर्यो
कुनि॥ श्रेसेबोलतपांडवश्रने
मारे॥ श्ररभीमसेन महाबाहु

ल्य०
६०

घोर दुर्विषह सह विविंशति दंडधार
मंमह सुबर्चो सुजात श्रुतवान बालबे
नृविल ऐसे त्रयोदश तेरे पुत्रनकौंभी म
रिलधिरभ्राता कृपो श्रुतसुतर्मा राजाकौं
पुत्रभ्रातासहित अर्जुन मारयो और भीम
तेरे सुदर्शननामा पुत्रकौं मारयो सकुनिपु
ठि नीकौ रनमें प्रहार करे है ताहि सहदेव म
रयो अरु शकुनिको पुत्र उलूक सेनासहित
होताहकौं सहदेव मारयो और हतबाकि जय
लेवेकौ उपाय करे है तहां सात्यकी मोकौं
पकडि बोलो संजय मेरे हाथ लग्यो है जब
धृष्टद्युम्न कह्यो याहू कौं मारो तब सात्यकि
मारिबे लग्यो तहां वेदब्यास आय अंतर्द
र्शन देय मोकौं छुडायो तब मैं एकादश अ
क्षौहणीपति दुर्योधनकौं सहाय करता बि
ना पायो ऐसे देख्यो और तारणमें अश्वत्थामा
कृपाचार्य कृतवर्मा और एकादश अक्षौ
हिणी सकल बीरनसहित समाप्त भई
पाउंव हू जीति भये इति श्री भारतसारवं
दिकायां शल्यपर्व समाप्त ॥ ५ ॥

॥श्रीगणेशायनमः॥ अथ अगदापर्वे वानेक लिख्यते॥ जैसे पायनकुवाच॥ तापीछेदुर्यो धनसंग्राममेंमरे पुत्रकोरुदनकरि॥ अश्व स्थामा कृपाचार्य कृतबर्मा को साजेमाधृि धतराष्ट्रपासजायप्रणामकरिबोलतन यो॥ हे पिताइनपांडवनसोंमेरेप्राणबचेसो उपायकरो॥ प्रभातपांडवनसोंमोकोयुद्धक रणोपडेगो॥ जबधतराष्ट्रकदनकरतदुर्यो धनकोदीनबचनसुणिकही॥ हे पुत्रमेंउपा यजाणोंनही॥ तातेरीमातासोंपूछि॥ तबदु र्योधनमातापेजायप्रणामकरिबोल्यो॥ हेमा तातूपतिव्रतानमेंमुख्यहै॥ सोमोपुत्रकी पालणाकरि॥ प्रभातमेंपांडवनसोंयुद्धक रोंगो॥ तामेंमेरेप्राणनासनहोयसोउपा यबताव॥ अरुअपानासठमर्यादरहित॥ बे सनासक्त पापिष्ट॥ हिंसक॥ ऐसेपुत्रहूकी मातारक्षाकरेहे॥ ऐसेंपुत्रकेबचनसुणि गांधारीबोली॥ हेपुत्रमेरेबचनतेंतूंयुध सिपासजाय॥ वाकेचरणनसोंसिरलगा य॥ ऐसेंकहिमेंसरणागतहों॥ तजेइच्छा ताहैं तातेमेरीरक्षाकरि॥ अरुवहतेरेहित

कोउपदेसकछूनकहै तबताईवाकोपावनमें
तैंअरमतिउठावे अरुवाकेकहेकोअनप्या
मतिमाने ऐसेमाताकोबचनसुणिदुर्योध
नयुधिष्ठिरपासजाय प्रणामकरिबोल्यो हे
धर्मराज धर्मातमामेंसरणागतहों मेरीरक्षाके
रि अरुदानवनमूर्षजनकोस्याधुहापाल
नकरेहे ऐसेदुर्योधनकोबचनसुणिरा
जायुधिष्ठिरबोल्यो हेदुर्योधनमहाबीर
तूमानीसरकोरवनकोराजा बांधवनको
पालक ऐसोतूहेएकलाहीकैसेआयो अ
रुराजाएकलोरणमेंबिचरेनहीं तातेतूमहा
राजहोयएकलोहीकैसेआयो अबतते
रेघरजा ऐसेयुधिष्ठिरकोबचनसुणिदु
र्योधनबोल्यो हेराजनअबतोमेरेमाता
पिताबंधुहितकारीतुमहीहो अरुमर्मको
छेदनकरे ऐसेबाक्यअबतोतुमकोबोलि
बोयोग्यनहीं तुमधर्मात्माहो सत्रुमित्र
नकोसमानजानतहो अरुतुमअजातस
त्रुहो यांकोबचनअनप्यानहीं तातेपतै
तुमकोरक्षकजाणिमेंसरणआयोहों मा
ताकूकहीहीतेरेजेष्टभ्रातापासजातासोमें

मेंमानकालयुरुत्योगो अरसाहदेवकी मेरीरक्षाकरेहे

मरणनहोय। ऐसोउपायबताबो। ऐसेसु
णियुधिष्ठिरइतउतदेषिअश्वपरकतबोल्यो
हेभ्राताजामेरोकसोकरेगोतोनेरोमरणनहीं
होयगो।जासोंअवतनग्रहोयबालककोसी
नाहीमाताकेसनमुषनिसंकगढोरहि स
र्वअंगरिषाय।वाकीदृष्टिमेनांहेरोअंगअ
वेगोसोसर्वहीवज्रतुल्यहोयगो।। नातेहेदु
र्योधनतअबसीघ्रजामेरोकसोकरिकोम
मोविलंबमतिकरि।ऐसेहीकरेगोतोतेरोना
सकदाचितहूनहीहोयगो।ऐसेसुणदुर्योध
नयुधिष्ठिरकीपरिक्रमाकरिहर्षसहितहोय।
वस्त्रसोसिरढांकिउहातेंचल्यो।जबमार्गमे
विश्वात्मासर्वगश्रीकृष्णसन्मुखआये।सि
रढांकेंमोनकरिजातेदुर्योधनकोहेराजकु
ऐसेकहिवाकीबुद्धिभ्रष्टकरतहीहंसिके
श्रीकृष्णबोले।हेदुर्योधनमहाबीर।युधि
ष्ठिरसोनकहाहितपूछ्यो।उनतोसोंक
कह्यो।रुअबरणमेआयबारनकोदेष
युधिष्ठिरबिकलभयोहो।अश्वत्थामांहत
ऐसेंअसत्यवचनबोलिगुरुद्रोणाचा
र्यकोसस्त्रपटकायोतबवाहीसमे

चार्यसापाहियो॥हे दुष्टात्मा मेरप्रांणलेबेकौं
तूंकूं पहरतेंग्रसत्यबोल्यो॥तातेंहेपापिष्ट अ
नत्त बिकलहो॥ऐसें पृथापारिपैपांडै युधिष्ठि
रामध्याहीबोलेहे॥ऐसोजाणतहूंवाकेसर
णतूंक्योंगयो॥लोकवानेताकोंनिंदितकर्म
हीवतायोहोयगो॥सोतहमसोकहिउचि
तअनुचितविचारिकैंहमतोसोंकहैंगे
ऐसेंनानाप्रकारकेंपरुषवचनतेंदुर्योधन
कीबुद्धिकोंभ्रमायुधिष्ठिरकेंपायदांतन
तेंचिग्रांगुलीदाबिकरुणासहितश्रीकृ
स्नवचनकह्योसोसुणिदुर्योधनबोल्यो
हेश्रीकृस्नयुधिष्ठिरकोवचनमेरमनमें
आछ्योलग्योनहीं॥तातैंकहेंब्रानकरूंयह
संदेहहीहै॥अबलबेवाकअरकोकहतें
नीमेंलज्जातहोतहो॥तुमकोंबांधवदया
लेजांणिकहाहों॥तैंयहमेरोयुधिष्ठिरको
संवादऔरसोंकहियौमति॥ऐसैंबोलि
हतचितदोयदुर्योधनयुधिष्ठिरकोवाक्य
श्रीकृस्नकेकांनमेंकह्यो॥सोसुणिश्रीकृ
स्नहसतहीबोले॥हेबारिप्रारामणितार्के
वाबिकलकोंवचनकरणोहीनहींहै॥ऐ

सेंकहि कही हायपुधिष्टिर तेरी बुद्धि कैसें भष्ट
भई ॥ ऐसें पश्चात्ताप करते श्री कृष्ण सों दुर्यो
धन बोल्यो ॥ हे महाबाहु श्रीकृष्ण अब कहा
करणो तातें मेरो हित कहा है सो तुम ही कहो मे
मेरी इच्छा तें युधिष्ठिर पै नही गयो ॥ माता के प
ठाये तें गयो यह मेरो अपराध है नही ॥ जब
गंधारी को पठायो युधिष्ठिर पास गयो सुनि
वाके पास अवतल सोकि न होय श्रीकृष्ण बोले
हे महाराज दुर्योधन माता के बचन तें जो तू
युधिष्ठिर पास गयो ॥ तो युधिष्ठिर को कहा
है करि ॥ परंतु माता कार के घर जाय पुत्र
न की कछनी बणाय बोसो ॥ गोपुअंगन को
ढाकि माता के पास जा ॥ अरु मेरो वाक्य मा
ता सों नही कहणो ॥ जो तू जैसें मैं कहो तैसे
करेगो तो माता को वा युधिष्ठिर को वच
यगो ॥ अरु तू हे कौतिक रूप
न करैगो तो निर्लज्ज
कहावेगो ॥ ऐसें श्रीकृष्ण के बचन तें गुह्य
अंगन को ढाकि माता के आगे ठाढो होय
बोल्यो ॥ हे माता युधिष्ठिर के बचन तें मैं ते
रे निकट आयो हो ॥ ऐसें तो कह्यो ॥ अरु मा

य्रा०

गमैंश्रीकृस्नसोंसंबादभयोसोनहींकह्यो
बम्रैसेंसुणिमाताबोली।हेपुत्रतैंयुधिष्ठि
रकोंकह्यो।सर्वहीकह्योहै।तबदुर्योधन
कहीमैंसर्वहीकह्योहै।अबतूमोकोंदेषि
ऐसेंपुत्रकोबचनसुणिगंधारीभर्त्ताकोच
रणसुमरणकरि।वस्त्रसोंबधेनेनतिन
कोकष्टतैंषोलिदुर्योधनकेअंगनकोदेषि
तभई।तबअंगमैंपुस्पनकीकछनीकोंदे
षिनेत्रमींचिदुर्योधनसोंबोली।हेमतिही
नपुत्रमार्गमैंकपटीश्रीकृस्नमिलितेरी
मतिहरीकह्या।तबदुर्योधनबोल्यो।हेमा
तातूंसत्यहीकहैहै।मार्गमैंश्रीकृस्नमिलि
मेरीबुद्धिकोंहरिलीनी।तबमाताबोलीहे
महामूढतैंश्रीकृस्नकेकहेतैंमरणकेनि
मित्ततैंगुह्यअंगनकोंढक्यो।तातैंयामैंमेरो
कहाबस।भवितव्यहैसोहोहीपरै।अबश्री
रतौतैसेंबज्रअंगमैंदेषिबेतैंबज्रमईभ
यो।अरुजोपुस्पनकीकछनीतैंढक्योसोही
कोमलरहै।तातैंअबतूअंतकालमैंबा
रधर्ममतिपावैगो।यामर्मस्थानकोंबचा
वयुद्धकरि।ऐसेंमाताकोबचनसुणिदु

रासहोपरएमें आपविचारकरतभयो॥ अब
मेरोजीवनउपायपातालवासीदेत्यनतेंजल
स्थंभनविद्यासीषीहीसोहीहै॥ तापीछेऐसें
विचारिजलस्थंभकरिद्रहमेंप्रवेसकीयो॥
अरु तापीछे अश्वत्थामा॥ कृतबर्मा॥ कृपा
चार्य॥ येतीन्योमहारथीमहाराजदुर्योधनके
हांहे॥ ऐसेबिचारितलासकरतोफिरेहां॥ ति
नेदेषिसैनपदुर्योधनकेसमाचारकहेंत
बवेहबनमेंजायविश्रामकरतभये॥ अबयु
धिष्ठिर दुर्योधनादिकनकोहानिकोयुधि
ष्ठिरकोआग्यातेंहस्तनापुरलेगयो॥ अरु
राजायुधिष्ठिरचिंतातेंआतुरह्वैयकहीबी
रकोमलदुर्योधनकहांगयो॥ ऐसेंवाकोहरि
तनकोतलासकरिवेकोभेज्यो॥ अरुअश्व
त्थामाकृतबर्मा॥ कृपाचार्ययेतीन्योमहा
रथीरात्रबाकीरहीतामेंद्रहकेतटजायबो
लेहेबीरदुर्योधनतूनिकसि॥ अरुहमा
रेसंगहोयअर्जुनादिकबैरीनकोजीति॥
ऐसेंसुणिदुर्योधनतिनकोंलराहिबोल्यो॥
हमहारथीहोमैंश्रमितहोंतातेंतुमहुजा
ययेकांतमेंबिश्रामकरो॥ प्रभातहीबैरी
कोमारेंगो॥ ऐसेंसुणितीन्योंहीगये॥

इनकोसंबोदननैसोपेकभीलषनमैंछिपे
सुणतहो॥ सोभीमसोंजायकहौदुर्योधनजु
लस्यंभेकरिदहमैंछिप्योहै॥ जेबयह वार्ता
भीमसुषसोंसुणिराजायुधिष्टिर हर्षितभयो
तबसबपरिवारश्रीकृष्णसहितराजायु
धिष्टिरदहकौच्यारौतरफसोंघेरि॥ श्रीकृ
ष्णकहतेंयुधिष्टिरनें ल्यो हेदुर्योधनतेंद
हमैंप्रवेसकरिजसकोनासकीयौ है॥ अरु
अभिमानहूंसदातें हृदयमें रहेहो सोहूदह
जलनें अबरहतैनिकसिकैत्रिरूपादर्पनकौ
संग्राममैंधारिणतैमांजिकेउज्जलकरि
अरुक्षत्रीनकेसंग्रामहीचिंतामणिहै॥ अ
थवाचिंतामणिहूतैंअधिकहै॥ क्षत्रीतो
येकपृथ्वीकोवांछाकरिजुद्धकरेहैं॥ सोर
णकेतौपृथ्वीदेय॥ अथवासुर्गदेय॥ ऐसे
सुणिभीमबोल्यो॥ अरेदुर्योधनतुरणमें
त्रासपायजलमैंप्रवेसकैपोंकियो॥ अरुभी
ष्मद्रोणकर्णशल्यपेकोनषत ११ अठा
नकोमराय अनेकबीरनकोनासकरा
॥ अबजीवेकोविचारकरैहै॥ तसो
वंसीक्षत्रीनकेबंसमैंजन्मपाय ऐसे

बैठि रह्यो है॥ अरु तू
धन है॥ तातें अब निकसि जु
रो॥ ऐ णि दुर्योधन बोल्यो॥ हे राजा
ऐसे दुर्वचनन तैं कहा फल है॥ मेरी
उच्छिष्ट पृथ्वी कौं भोगि॥ जब युधिष्ठिर बोले
अब पृथ्वी दान करिबे तैं प्रयोजन नहीं कहा है॥
सूची की अणी तें बिधे इतनी हू पृथ्वी पांडव
न कौं देतो नहीं॥ ऐसें बोलि अब सकल पृथ्वी
दान करि बो कहत है सो प्रलग्पा नग तैं तुम्हें ला
ज क्यों नहीं आवै है॥ तातें निकसि कै युद्ध करो
युद्ध तैं पृथ्वी तेरी है अथवा मेरी है॥ अरु तो
कौ मोकौं जीवतें रहें दोऊन हीं के मन मैं बिज
य को संदेह रहैगो सो संदेह मैं तिरहो॥ ऐसें
सुणि दुर्योधन क्रोध करि बोल्यो॥ हे राजा यु
धिष्ठिर मैं एक एक सौं गदा युद्ध करि तुम
सबन कौं मारौंगो॥ ऐसें बचन सुणि युधि
ष्ठिर प्रसन्न होय बोले॥ हे दुर्योधन हम मैं सौं
एक हू कौं तेरे बांछित शस्त्र तैं युद्ध मैं जी
तैं तो सकल पृथ्वी कौ तू राज्य करि॥ ऐसें
सुणि गदाधारैं दुर्योधन देह मैं तैं निकस्यो
युधिष्ठिर बोल्यो॥ हे राजा अभि

मनुकों तुम बहुतन मिलि मार्यो तातें हम
कों नहीं मारेंगे ॥ ऐसें कहि फिर ब्राह्मण केव
दुर्योधनकों दियो ॥ अरु कह्यो हे दुर्योधन
म पांचोंन में जासों तोकों जुद्ध कचै ताही सों
युद्ध करि ॥ तब श्रीकृष्ण क्रोध करि युधिष्ठि
रसों बोले ॥ हे मूरख पे ॥ र यह द्यूत कैयाके रहे
यह तोसों युद्ध करै तो कहा गति है ॥ पहे
त्रयोदस बर्ष लों बलदेवजी तें गदायुद्ध
सीख्यो है ॥ तातें भीम हू यातें जीतें अपवानही
जीतें ॥ ऐसें बोलें तें ही भीम उठि बोल्यो हे
श्रीकृष्ण ऐसें मति कहो ॥ मैं एक क्षणमें ग
दा करि याके प्राण हरोंगो ॥ जब दुर्योधन
गर्जना करत भीमसों बोल्यो ॥ हे भीमसेन
तें जरासंध ॥ भगदत्त ॥ कीचक ॥ मेघनाद
हिडंब ॥ बक ॥ किर्मीर ॥ ऐसें मित्र वे मारे ॥ औ
र दुःसासन आदि भ्रातान कों तें मारे ॥ तातें
अब सबनसों अनणी व्हैवेकों मैं तोकों
मारोंगो ॥ अरु मैं एक हू गदा प्रहार सहोंगो
ब तोकों मूरख मार जाणोगो ॥ ऐसें बोलि सिं
नाद करि दोऊ बीर परस्पर गदायुद्ध करत
भये ॥ ताही समैं तहां सरस्वती तीर्थयात्रा

करतेबलदेवनारदवाकूतेरोक सिष्यनके
आये। तिनकोदेषिश्र
कृसपांडवउ कियो। श्रीमेतप
चकसिद्धक्षेत्रमैभीमदुर्योधनकोयुद्ध
सरस्वतीकेदक्षणतीरवलदे
वकोंवाचिलेयसबवेठे जबभीमदुर्यो
धनदोऊगर्जनाकरतयुद्धकरतभये।ति
नकीबज्रमई देहमैपडतीगदान
स्फुलिंगउछलतभयो।जबदुर्योधनगदा
फिरायभीमकेवक्षस्थलमैंप्रहार कियो।त
बभीममूर्छितभयो।फिरिक्षणमात्रमैंभी
मसंभ्रपायदुर्योधनकेउरमैंगदामारी
तबराजाहूक्रोधतैंभीमपैगदाप्रहारकि
यो।ऐसेप्रहारकरतेंकरतेंदुर्योधनकी
सो।१०० गदाभग्नभई।जबफेरिदुर्यो
धनभीमकोंगदाप्रहारकरिपृथ्वीमैंप
टकिरुधिरमई कियो।तबभीमहूरुधि
रकोंपूंछिफेरियुद्धकरतभयो।जबफे
रिदुर्योधनगदाफिरायभीमकेउरमैंमा
री।ताप्रहारतैंभीमपृथ्वीमैंपडिमूर्छि
तभयो।ताकीदसादेषिदुर्योधनगर्व
मैंजीतोहों ऐसोजान्यो।तब

७ कौंमृतकजांणि रुदन करतपांडव श्रीकृ
ष्णसौंहमरे ऐसेबोले तब सो कृकारि
पीडितपांडवनकौंदेषि श्रीकृष्ण हंसतेहो
बोले हे पांडवहो मेरो बाक्यसुणो यहभी
मजीवैहै उठिकै गदाप्रहारकरि बेरीके
प्रांणहरैगो ऐसेंश्रीकृष्णके बोलतही
भीमउठि गर्जनाकरकै दुर्योधनसौंबोल्यो
हे बीर मोकौंपृथ्वीमेंनाषि कहांजायहै
एकगदाप्रहारमेरोहू तौसहि ऐसेंसुणि
दुर्योधनसन्मुषआयेबोल्यो हे भीमतूंमो
पेगदाप्रहारकरि तब सर्वबलसौंभीमग
दामेंमाय दुर्योधनकेकांधेमें प्रहारकियो
ताप्रहारकौंदुर्योधनपुष्पप्रहारसमान
मांनिकैंष्योंहूं नहीं अरु भीमकेउरमेंग
दाप्रहारमार्‍यो ताप्रहारतें भीमघूमत
भयो तब ऐसें युद्धदेषि युधिष्ठिर श्रीकृ
ष्णसौंपूछी इनदोऊनमेंकौनबली जब
श्रीकृष्णबोले हे राजन भीमहीबलीहै
दुर्योधनतौ सिक्षातें अधिकहै तातें सि
क्षामें अधिकहै पसोहीयुद्धमेंजीतेगो अ
रुछलतेंयुद्धकरिपाकौ ऊरुभंगकरि
बेतैभीमजीतेगो ऐसेंश्रीकृष्णयुधि

ष्टरकौंसंबारकरतेंही भीमको चेतनसें
हतदेषि जबश्रीकृस्न भीमको आपदी
नैघादिषायताडनकरी तबभीमहतासें
ष्पाकोजाणि आपकीप्रतग्यासमर्णकेरि
दुर्योधनकी उरुभंगके निमित्तनानाप्रका
रसोंयुद्धकरतभयो तोहजंघाप्रहारको
अवकासपायोनही जबदुर्योधनहू भीम
केप्रहारनतें आपकीदेहकोबचाय भीम
केह्रदयमेंगदाप्रहारकरी ताप्रहारसोंभी
मकोमूर्छितजाणि दुर्योधनफेरिप्रहारन
कस्यो अरुजोप्रहारकरतो भीमजीवैंही
नही परंतुगदाप्रहारकरिवेको दुर्योध
नहटो जबमूर्छाकेअंतमें उछलिभीम
दुर्योधनकेऊरुमेंगदाप्रहारकरिजंघा
भंगकरी तबऊरुभंगहोतेंही दुर्योधन
हाहाकारकरिपृथ्वीमेंपड्यो जबपडत
हीबोल्यो मैंश्रीकृस्नकेमास्योपृथ्वीमें
पड्योहों ऐसेंबोलतदुर्योधनकेमुक
रमेंभीमचरणप्रहारकरिबोल्यो हम
कोछलकरिद्यूतमें जीतिजिनद्रोपदीकों
गऊकहीही सोधर्मयुद्धतेंहममारि

नकैंगऊगऊकहहै ॥ असैंबोलतेभीमकौं ।
युधिष्ठिरनिवारणकर्‍यौ ॥ तोहभीमदुर्योध
नकेशिरपेचरणधर्‍यो ॥ जबयुधिष्ठिरलर
नकरलोहोदुर्योधनसौंबोल्यो ॥ हेबांधव
देवबलवानहे ॥ पांडुधृतराष्ट्रदोऊभ्रात
नकेपुत्रनकोबेरकुलकौनासकरीलयो ॥
जबयुधिष्ठिरकोबचनसुणिबलदेवबोले
अरेभीमतूकुलतेराजाकोंदृष्टीमेंपरकि
अबचरणतेकोंस्पर्सकरेहे ॥ असैंकहिव
लीबलदेवक्रोधतेंभीमपेदोडे ॥ तहांश्रीकृ
स्नआडेआयबोले ॥ हेतातगदायुद्धमेंकटिके
नीचेप्रहारनकरणो ॥ पेभीमप्रतग्यापालके
पालबेकोंसभामेंकरीहो ॥ हेदुर्योधनतेंद्रोप
दीकोंजंघापरिबेठायबेकोंकहेहे ॥ सोया
हीजंघामेंगदामारितेरेप्राणहरोंगो ॥ ताप्र
तग्याऊरूभंगकियोहे ॥ औरयाकेऊरू
भंगमेंमैत्रेयमुनिकोसापहूकारणहे ॥ अ
सेंबोलिबलदेवकोकोपसांतकियो ॥ औ
रुभीमसोंश्रीकृस्नबोले ॥ हेभीमतूअनीति
युद्धनकरि ॥ एकादसअक्षोहणीकेपतिको
शिरचरणसोंस्परसकरणोंयोगनहीं ॥ अ

सेंभीमकेंबरजिफेरिबलभद्रसोंबोले हे तात
तुमबडेबारहो तुम्हारे आगेपांडवमें रघ्व
नलबासीसर्वेनरदेव लोकनकेइंद्रादिक
देव पातालकेशेषादिकनाग बिष्णुशंकर
ब्रह्मा इनकों आदिदेमहाबली तुमसोंरणमें
स्थिरहोबेकोंकोऊसमर्थनहीं एकभीम
कहापदार्थहे असेंबोलिपांडुवसहितश्री
कृष्णबलदेवकेचर्णनमेंपड़तभये जबबल
देवहू श्रीकृष्णकोंजगदीश्वरउत्पत्तिस्थि
तिप्रलयकर्त्ता जांणि तिनकोंप्रणामकर्तेंद
धिलज्जितभये तबबलदेवकोंलज्जितजा
णिमानीदुर्योधनबोल्यो हेगुरुबलदेवबहू
त्याबारनकरो काकादिकजैसेंपावकोंशि
रस्पर्शकरेहे तैसेंभीमहू चरणतेंशिरस्प
र्शकरयो पांकीमेरेगिणतीनहीं तबऐसेंदु
र्योधनकोवचनसुणिबलदेवकही हेश्री
कृष्णतुमअरुपांडवबडेधर्मयोद्धाहो असें
कहिद्वारिकाकोंगये तबपांडवहार्षितहोय
श्रीकृष्णकेचरणनमेंप्रणामकरिस्तुतिकरि

अमेत्यु जय

मकौंप्राप्तभई है। जबधृष्टद्युम्न शिषंडी आ
दिसबहीभीमसोंबोल्यो हेभीमश्रा जिवडाव
धाईहै। तुमयादुष्टकेशिरपेचर्णधर्यो ऐ
सेकहिभीमकोंबहुतस्तुतिकरी। जबश्री
कृष्णबोले यहअपनेपापनतेंहार्मसोतो
कोबचनननतेंकोमारोहो। नबदुर्योधनति
नबटोंकेभुजानतेंपृथ्वीकोआश्रयलेपमु
षंजोचोकरिलल्लाटमैंभ्रकुटीचढायक्रोध
नेंश्रीकृष्णसोंबोल्यो रेकंसकेदासहमअ
पकेअधर्मनसोंमरे। अरुतेरेबनायेअध
र्मनतेंधर्मपोई पांडवनमरेकहा भीष्म
भूरिश्रवा। द्रोण। कर्ण। अरुमे। इनसबन
कोंतुमपापीजनेंअधर्मतेंहमारे अरुह
मतोंबैरीनकेसिरपेपावधरिप्रानाहि
राज्यभोगपो। अबपाइबहुमबिना उच्छिष्ट
राज्यभोगो ऐसेंबोलतेंदुर्योधनपेदेवन
नेंपुस्फनकीबृष्टिकरी। तापीछैं अर्जुन
हूरथतेंउतर्यो। तबहीहनुमांनतोअंतर्धा
नभये। अरुअर्जुनकोरथअस्त्रशस्त्र। आश्व
नकीरासिइनसाहितसबदग्धभयो। ऐसें
देषिअर्जुनश्रीकृष्णसोंबोल्यो। यहकहाभ

यो॥ जबश्रीकृष्णबोले॥ हेअर्जुनभीष्मद्रोणक
र्णइनकेअस्त्रज्वालानतेंतेरोरथपहलेंही
दग्धहोतो॥ पैइतनेकालपर्यंततोमेंराष्योहै
सोअबपहदग्धभयो॥ ऐसेंसुणिश्रीकृष्ण
कीसबहास्तुतिकरतडेरानमेंप्रवेसकियो
जबश्रीकृष्णबोलेहेराजनअबसरस्व
तीनदीकातीरजयंतीदेवीहेताकोपूजन
करिबेकोंचलो॥ ऐसेंकहिडेरानतेंश्रीकृष्ण
सात्यकीसहितपांडवनकोंलेगये॥ तापीछें
धृतराष्ट्र तेरोपुत्रदुर्योधनपरमपीड़ि
तहोयमोसोंबोल्यो॥ हेसंजयतेंदेषि पांड
वमेरेशिरपेपावदेयमानभंडाकियो॥ श्लो
भगनीदुःखलाये
ऐसेंव
धेनरुदनेकरतभयो॥ ताकोंदेषि
जबऔरजीवन
तापीछेंदुर्योधनकोंरुदन
देखकंवमी कृपाचा
कोंदेषि॥ श्लो
अश्वत्थामाबोल्यो

नन्रएकारश्रष्टत्रोहिणीतैं सकलपृथ्वी
मंडलकोव्याकुलकरिश्रैसीदसाकोकेसैप्रा
प्तभयो अलतैरछत्रचामरकहांगये गजपै
चढेजाकोसबीजनहर्षतैंदेषतहे ताकौंरत
मेंपडेकोंभोजनकरिबेकेअर्थहर्षसौंश्वा
देषतहैं जोएकक्षणमात्रसंगीतगानबिना
नरहतहो सोअबअमंगलसिवाधुनि
सुणेहे अरुजाकोंदूतउततैंआयबीरत्व
रजीवेजीवकहतहे ताकौंअबमांसभोगी
मारिमारिऐसेंकहतहैं जबऐसेंसुणिदु
र्योधनबोल्यो हेअश्वत्थामा मेंचक्रवर्ती
परभोग्यो अरुअर्थीओंबैरीनतैंबिमुष
नभयो गोब्राह्मणनकोपूजनकियो सज
नदुर्जनलकोयथायोग्यसत्कारअपकार
कियो अरुनीमकेसमुद्रपर्यंत ७ ६ ह
मानकियो तासौंमेरोराज्यकरबो श्रोमर
णपैदोऊही उज्वलभये युद्धरूपीमहाप्र
लयमैं ब्रह्मा बिष्णु रुद्र तुल्येतुम्तीनोंमो
कोंहीजोवतदेषे तातेंउत्साहनासकसो
कनकरो ऐसेंबोलिदुर्योधनमौनगही
ताकोंदेषिअश्वत्थामालालनेत्रकरिहा
थपीसतबोल्यो हेराजेंद्रमेरेपिताकोमरण

अबपचपांचाला॥पंचद्रोपदी
पुत्रे पंचेपांडव॥इनसबनकोपचत्वप्राप्तक
रोगो॥३॥तातेमोकोआगयादूर॥औरसेससे
नाकोनासकरोगो॥ऐसेसुणिदुर्योधनप्रस
नभयो॥तबकृपाचार्यकोंआगयादेय॥सरस्व
तीजलसों॥अश्वत्थामाकोंसेनापत्याभिषे
ककियो॥तबसूर्यास्तसमेंराजाकोंआसीर्वा
ददेय॥अश्वत्थामा॥कृपाचार्य॥कृतवर्मा॥
सहितपतीन्योसिबरिसमीपरहतभये॥३॥
ति श्रीभारत्थसार चंद्रिकायांगदापर्वसमाप्त

ऐसैं संजयतैं वृत्तांत सुणि धृतराष्ट्र मूर्छि
त भयो तब बलहा बेदब्यास आय धृतराष्ट्र
कौ समाधान कियौ तापीछे धृतराष्ट्र संज
यकौ रात्रिकौ वृत्तांत पूछत भयौ तब सं
जय बोल्यो हे राजन अश्वत्थामा सेनाप
त्य निषेक पाय तापीछे कृपाचार्य कृतव
र्मा अश्वत्थामा ये तीन्यो विसाल बटनीचै
गये तहां अश्वत्थामाकौं वैरीनके मारिबे
की चिंतातैं निद्रा आई नहीं वेदोऊ सोवत
भये तहां एक उलूक आय सूते कागनि
कौं मारे जब तिनकौ कोलाहल सुणि अ
श्वत्थामा विचार कियौ जैसैं उलूकनें सूते
वैरी कागनकौं मारे तैसैंही सूते वैरीन
कौं मारणौं ऐसौ निश्चै करि सूते कृतवर्मा
कृपाचार्यकौं जगाय कही अब हौं उलूकव
य सूते कागनकौं जैसैं मारे तैसैंही सू
ते वैरीनकौं मैंहू मारौंगो तब कृपाचार्य
बोले शस्त्र कवच रहित सूते वैरीनकौं
मारिबेवारो नर्कगामी होय है तातैं अमा
रिकारिबेकौ अब तौ निद्रा ही करौ प्रभात ध

मेंदेषेमो अरु मेरेपिताकोंयुद्धमें युधिष्ठिर
रु बोलिमात्यो ताकों श्रवणकरकेंमोकों
तुम्हारीबाईं निशाकेसंग्रामें अरु वारन
कोंतोजोअनरथाकरो ताकोंपावनहींकरि
बोधर्महै जिनकेमारिबेकामें अनरथाकरो
ताअनरथाकेपालनकरिबेमेंसंतनकोंनहीं
पूछोंगो तातेंयबमेंलोसलहींबेरानकों
मारेंगो सोकोंधर्म अधर्मलेबकरसे ऐसें
बोलिरथपेंसवारह्वोय अश्वत्थामा चल्यो
ताकेसाथ कृपाचार्यहु तबशीहूचले
तहांजाय अश्वत्थामा पांडवनकेषिव
रद्वारपेएकविसालमहिपुरुषदेख्यो हाथ
रतेंजिन अनेकहस्तनमें अनेकशस्त्र
धारें जाकेनेत्रनतें मुषतें अग्निज्वाला
निकसें मुंडमालागजचर्मधारें मणिमु
कुटअनेकसर्पनकेंआभरणधारें सेंकडोंसूर्य

चंद्रसमांनतेजजाको ॥ ताकेहीनकरिबेकोंअ
स्वत्थामा ॥ अनेकशस्त्रप्रहारकिये ॥ तेसर्वनि
स्फलगये ॥ तबअस्वत्थामाबिचारतभये ॥ बृ
कृपाचार्यकृतबर्माकोबचनमान्योनहीं
तातेंयहआपदपाई ॥ अबमहाकालकोआ
श्रयकरूं ॥ ऐसोबिचारकरि ॥ कुंडमेंअग्नि
प्रज्वलितकरि ॥ शिवकोध्यानस्तुतिकरिअ
ग्निकुंडमेंपडिबेकोंत्यारीकरी ॥ जबहीम
हाकालहंसिकैबोले ॥ हेअस्वत्थामा ॥ श्रीकृ
ष्णकीआग्यातेंयुधिष्ठिरकीसेनाकीरक्षा
करिबेकोंमेंऐसोरूपदिषायो ॥ अबतेरीभ
क्तिप्रसन्नभयो ॥ तातेंबरदेतहों ॥ अरुख
ड्गदेतहोंसोतूबैरीनकोंमारि ॥ ऐसेंकहि
खड्गदेकेशिवअंतर्धानभये ॥ जबअस्वत्था
मापौढ्योआयेकृपाचार्यकृतबर्मासोंति
नसोंबोल्यो ॥ तुमद्वारपेरहो ॥ जोकोउ
निकसै ताकोतुममारो ॥ ऐसेंकहिअस्व
त्थामाअस्वमार्गहोयशिबिरमेंप्रवेशकेयो
तहांजायशिबिरकेमांहेंधृष्टद्युम्नसोवतोजो
धृष्टद्युम्न ॥ ताकोंचर्णप्रहारकरिजगायउ
रतेकेकेसपकडिमारि ॥ तैसेंनमोनबध्यर

द्युम्नबोल्यो॥हेअश्वत्थामातूमोकोंशस्त्रनतेंमा
रि॥जबअश्वत्थामाकही॥मेरेशस्त्रगुरुद्रो
कोंस्पर्सनहींकरे॥ऐसेंकहिअश्वत्थामाधृ
ष्टद्युम्नकोंयज्ञकेपसूकेसीतरहमार्यो॥
तैसेंहीउत्तमौजाकोंमार्यो॥तापीछेंरथमें
सवारहोय॥औरजागेजेबीरतिनकोंअने
कशस्त्रनतेंमारि॥युधामन्युकों॥औरस
तेबीरनकों॥एकहीमहूर्तमेंमारतभयो॥
तापीछेंरथतेंउतरिखड्गलेयाचोंद्रौपदीके
पुत्रनकोंमारि॥शिखंडीकोंमारि॥द्रुपदकेपुत्र
पोत्रसुहृदमत्स्यइनकोंमारतभयो॥औरु
द्वारपेठाढेजेकृपाचार्यकृतबर्मातेआग्ने
यअस्त्रकीज्वालाजाकरिनिकसतेभाग
तेजेबीरतिनकोंदग्धकरतभये॥तापीछे
अश्वत्थामाकृपाचार्यकृतवर्मा॥इनके
मारेजेसेनाकेजोधातेऐसेंपुकारतभये
हमकोंकौनमारेहे॥तबरक्तवस्त्रपहरें
रक्तअंगरागलगायें रक्तमालापहरें॥
रक्ततैंरंगीपासहस्तमें तापासतेंअनेक
बीरनकोंनासकरती॥कालरात्रीसमान
कालीकों॥अश्वत्थामाके

नाको तुमने देषा है ताही के अंतसमे मैं
तीरथ व्रत तद्देष्यत भये ऐसे सकल बी
रन कौ नास करि अश्वथामा पाछैं तीनों
मिलि कथा करत द्रौपदी के पांचौ पुत्रन
के सिर लेय रणभूमि में पड्यो जो दुर्यो
धन ताके पास गये तहां ताको रक्त में
लिप्त संग्याहीन ऐसे देषि तीनों सोच
न रुदन करत बोले हे दुर्योधन पांच
न पांडव सात्यकी ये तौ बचे और सब
तेरे बैरी मारे गये ये उनके सिर है सो त
मैं ल्याहो यतो तुम जो ऐसे देषो तब दुर्यो
धन हर्ष तें उछित भयो बोल्यो भीष्म द्रोण
कर्ण इन जो पराक्रम न कियो सो पराक्रम
तुम कियो तातें मैं प्रसन्न भयो कौरवा
लकन के सिर देषि कही ए बालकन के हैं
पांडवन के नहीं तातें परलोक में तजो ज
लौ भी मिलै भी नहीं यह सोक भयो तातें
अब मैं प्रसन्न ना सों प्रांण छोड़त हौं तु
म्हारो हमारो मिलाप स्वर्ग के विषे में
होयगो ऐसे बोलि दुर्योधन प्राण छोड़े
सो देषि अश्वत्थामादिक भय तें तीनों हाहा चले सो

कृपाचार्य तो हस्तिनापुर गयो॥ कृतबर्मा द्वारिका
गयो॥ अश्वत्थामा ब्यास आश्रम जाबे की इच्छा क
री॥ यह संपूर्ण कथा कही॥ ता पीछें संजय धृतरा
ष्ट्र सों दुर्योधन को देह त्याग कह्यो॥ वैशंपायन उ
वाच॥ ता पीछें पांडव जयंती रेबा को पूजन
करि मार्ग में आवत है॥ तिन के सन्मुख धृष्ट
द्युम्न को सारथी॥ दैव जोग तें कृतबर्मा के अस्त्र
बचायो है सो॥ जाय युधिष्ठिर कों रात्रि को च रि
त्र सब कह्यो॥ ताकों सुणि राजा युधिष्ठिर मू
र्छा पाय पृथ्वी में पड्यो॥ ताको नाम को आदि
भ्राता श्री कृष्ण सात्यकी॥ इन सब भी लि
चेत करायो॥ जब राजा अश्रुपात तब बोल्यो
हे श्री कृष्ण हमारो बिजय है॥ हमारे नास को
कारण भयो॥ अरु द्रोपदी हू भ्राता॥ पुत्र इन
के सोक में मग्न भई है॥ ताको समाधान की
बे कों नकुल कों आग्या दैय॥ आप युधिष्ठिर
व रि सो धन कों गये॥ तहां राजा न को बाध
वन को मरे देखि राजा मूर्छित भयो॥ तब प
सो॥ श्री कृष्ण युधिष्ठिर को समाधान क
तन भयो॥ अरु तहां ही मरे पुत्र भ्राता तिन
सोक तें बिलाप करती द्रोपदी कों देखि
तब द्रोपदी

ली॥ अश्वत्थामाकों मारिवाको सिरोमणि दि
षावोजबमेजनकरे॥ ऐसेंकहि द्रोपदी अनस
नव्रतलियो॥ तापीछें भीमसेन द्रोपदीकोव्र
तपासुणि॥ नकुलकोंसारथीकरि अश्वत्था
माकेसन्मुषचल्यो॥ ताकोंदेषि श्रीकृष्णजु अर्जु
नसोंबोले॥ हेअर्जुनमें द्रोणाचार्यकेपुत्रको
कूरजांणिब्रह्मास्त्रदियोनहीं॥ तुमवनवास
कोंगये॥ जबअश्वत्थामाद्वारिकाविषै आय
मोसोंचक्रमांग्यो॥ तबमेंवाकोंचक्रदेवेलग्यो
सोचक्र अश्वत्थामाद्योऊहाथनतेंऊठाय
वेलग्यो जबउठ्योनहीं॥ तबवहमोसोंबोल्यो
हेश्रीकृष्णचक्रधारिवेकीमेरीसामर्थनहीं
अरुजोचक्रधारिवेकीमेरीसामर्थहोती
तोमें तुमहीसों जुद्धकरतो॥ सोचक्रजु
मेंतोमें असमर्थहों॥ तातेंब्रह्मास्त्रहीदे
जबमेंवाकोंब्रह्मास्त्रदियो॥ अरुमैंवा
कायरकोंयापहअश्वत्थामाहै॥ सोम
ष्यनमेंनहीं॥ अस्त्रजाणेंतापैंयहब्रह्मास्त्र
लावेजोगनहीं॥ तातेंयहअश्वत्थाम
मपैअस्त्रचलायमारेगो॥ तातेंयाकी
निमित्तचलो॥ ऐसेंसुणिकेयुधिष्ठिरश्री
अर्जुननीमकेपीछेंगये॥ तापीछें भीम

अश्वत्थामाकौं व्यासके आश्रममें व्यासकेपा
स॥ आलेवस्त्रधारें जलकीतीरठाढौदेषि भी
मबोल्यौ॥ रेक्रूरब्रह्मबंधुठाढौरहि॥ ऐसेंसुणि
अश्वत्थामारथसस्त्रहीणहू बामहस्ततें इ
सीकालेय ब्रह्मास्त्रतें मंत्रियहविस्वअपांड
वहो॥ ऐसोसंकल्पकरि चलाई॥ जबश्रीकृ
ष्ण अर्जुनसों बोले॥ हे अर्जुन यह अश्वत्थाम
तुम्हारोनासकरिबेकौं ब्रह्मास्त्र चलायो है॥
तातें तूं ब्रह्मास्त्र चलाय॥ दोऊअस्त्रनकौ
संघारकरि॥ तब ऐसें सुणि अर्जुनहू ब्रह्मा
स्त्रचलायो॥ सोदोऊ अस्त्रनकी ज्वालाकरि
पृथ्वी आकास छायो देषि प्रजा प्रलयमा
नतभई॥ जब अर्जुन श्रीकृष्णकी आग्यातें
अस्त्रदोऊसमेटि॥ अश्वत्थामाकौ पकडि द्रौ
पदीपैल्याये॥ तब वाके सिरकी मणिकाढि
मीपदीनी॥ जबश्रीकृष्ण बोल्या अश्वत्थामा
केअस्त्रतें॥ उत्तराकेगर्भ दग्धभयो॥ ताकौं
मैंरेतपकरिकै जिवायो है॥ तातें यह अश्व
त्थामापातकीमलिनहै॥ तातैं रुधिलोही
केदुरगंधसहितभ्रमतरहैगो॥ कहूं सतका
रपावैगोनहीं॥ पृथ्वीमें यहेसुणि आय वे

वहमणिभीमदेप
रश्वासतिनहृतथा स्तुकसे। वहमणिभीमदेप
दीकोंदीन्ही। द्रोपदीयुधिष्टिरकोंदीन्ही। जबर
जाकालितेसर्वसभा नविजयपरनवारी। ऐसी
वामणिकोंजोणिमुकटमेधरी। ताथीछैपा
डवकुरवनासतेतोदुषी। अरुअश्वस्थामाते
विजयपायसुनीनपे [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ध।
[illegible] दुर्योधनादिकनकी औरग
तराष्ट्र गांधारी। दुर्योधनादिकनकी औरग
जानकाश्रीरणमेमिमे आपआपके बांध
वेनकोरणमेपडेदेखिविलापकरतभई
जबधृतराष्ट्रगांधारी। दुर्योधनकेमरणे
दषिरुदनकरतबोले हेपुत्रदुर्बुधीतेसा
पांडवनकोंव्रथापीडाकरी। तातेयहफल
ई अबकौंघरचलि हमबूढेआंधे
पनकापालनतोबिनाऔरकोनकरे
अंसे विलापकरतेदेखिकनकोदेखि युधिष्ठ
केपठायेश्रीकृष्णजापदेकनकेसमा
करतबोले हेराजाधृतराष्ट्रहेगांधार

लराग्गतिबडीगहनहै॥ अरुपांडवहू तुम्हारेपु
त्रहीहैं॥ अरुमैंहूसकलयादवनसहितनुम्हा
रोआग्यकारीहौं॥ तातैंतुमसोंक्षमाकरौ॥
ऐसेंश्रीकृस्नकेवचनसुणिगांधारीबोली॥ हे
कृस्नतेरेकपटतैंमेरेपुत्रनकोअरुकुटंबको
नासभयो॥ तातैंतूहूंछत्तीसबर्स॥ ३६ पीछैंतेरे
सर्वकुटंबकोनासदेषैगो॥ ऐसेंसापदेयमू
र्छितहोय॥ गांधारीपृथ्वीमेंपडी॥ ताकोसमा
धानकरिश्रीकृस्नबोले॥ हेगांधारीतुमउठौ
अरुयुधिष्टिरकोपुत्रकीनाईपालनाकरौ॥
परिवारमेंचलिभोजनकरौ॥ ताकोंभोजनकि
येबिनापांडवभोजनकोंनकरैंगे॥ तबगांधा
रीबोली॥ हेकृस्नमेरेपुत्रमरेतातैंमैंभोज
नकरौंनहीं॥ अरुसबहीकोंसंयहछोडिबा
पुभक्षणकरौंगी॥ ऐसेंकहिगांधारीजडीभू
तभई॥ ताहिदेषिश्रीकृस्नकोतुकनिमित्त
क्षुधाकोंआग्याकरी॥ तूगांधारीकेसरीर
मेंप्रवेसकरि॥ जबक्षुधातैंगांधारीविह्वल
होयपाइतउतदेषनलगी॥ तहांएकआम्रको
वृक्षदेष्यो॥ ताकेफलपकेहूहे॥ अरुविनाप
केहूहौं॥ तबगांधारीफलभक्षणकाइछा
करीतब

फलहायआयोनही जबपुत्रदुर्योधनकोछा
तीपैपावदेयतो इबेलगी तोहृदोपआगु
लफलऊचोरह्यो तबसबपुत्रनेकोमेल
करिउनकोसाटोबनायऊंचोहोयफलले
वेकोउद्योगकस्यो जबहीआन्नकोब्रह्मन्म
र्षोनभये तबश्रीकृष्णआपगांधारी
सोंबोले हेगांधारीतऊंचीकोंभई ऐसें
सुणिगांधारीलज्जितनेई तासोश्रीकृष्ण
बोले कष्टहेपुत्रमरणकष्टात कष्टतरक्षु
धाइति अर्थ सबकष्टनतेंअधिककष्टतो
पुत्रमरण ताकष्टहूतेंअधिकक्षुधा तासों
हेगांधारीसुणि सत्ययुगमेंतोप्राणअस्थि
मेंरहेहे त्रेतामेंमांसमेंरहेहे द्वापरमेंमज्जा
मेंरहेहे अरुकलियुगमेंकेवलअन्नहा
मेंरहेहे तातेंअन्नब्रह्मकीनित्यही सेवा
करणी अन्नहीकेअर्थसर्वप्राणीपराईसे
वाकरेहे अरुछलछिद्रकपटद्रोहघात
पातआदिसबहेकअनर्थप्राणीअन्नकेअ
र्थकरेहे ऐसेंश्रीकृष्णकेबचनसुणिगां
धारीमानछोडिधृतराष्ट्रसहितयुधिष्ठिर
केपाससेवारिमेंआई तबराजायुधिष्ठि
रहूरणमेंमरे शृगालादिकनकरिनत्ति

ऐसैं
धारि
है
तासौं अब
धृतराष्ट्र
भवतव्य होसो भयो॥
रिअना
॥ऐसें आगापाय
बरणनमैं प्रणाम
करि श्रीकृसमासकी और तातानकेहूना
मलेले प्रणाम निवेदन करो अरु धृतराष्ट्र
आपके पुत्रनकों मारिबेवारो ऐसे भीमसे
नकों मनमें कपट राषि बुलायो॥ जब श्रीकृ
ष्णने मनकौ कपट जाणि पहलैं ही लोहम
ई भीम बणाय राष्यो हो ताकों सनमुष कियो
तब धृतराष्ट्र वाकों ह्रदय तैं लगाय भीमकों
मतैं वा लोहमई भीमकों चूर्ण कियो तापीछें
धृतराष्ट्र रुधिर वमन करे तब पृथ्वी मैं परि

कपटतैं हरनकरतैबोल्यो मोहतैं ब्याकुल
होयकम ध्यमपाडुवभीमसेनकौंमारिचूर्णकि
यो सोयाकेमरणकौदुःख मेरैं पुत्रमरणतैं
हूं अधिकभयो ऐसैं बिलापकरतेथे तबधृतरा
ष्ट्रसौं श्रीकृष्णबोले हेमहाराजभीमतौमर्यो
नहीं तातेंतुमचिंतामतिकरो अरुतुम्हारोके
परंजोणिम्रम महालोहमई भीमबणायरा
ख्योहो सोतुमनैंवाकौचूर्णकर्यो अरुतु
म्हारोबलअप्रमाणजाणि अयुतगज
भीमकौंमिलायोनहीं ऐसैंसुणिराज
पुत्रसोंहर्षितभयो जब श्रीकृष्णबोले
जनइहमित्रनकोवचनमान्योनहीं
तुम्हारेपुत्रनकौतुमहीमारेहै भीमपै
क्योंकोहो ऐसैं श्रीकृष्णकेवचनसौंरा
निजअपराधसौंपुत्रनकौंमरनजाणिहै
निकै श्रीकृष्णसौंबोल्यो हे श्रीकृष्णपुत्रन
केसोकसमुद्रमैंडूबतेमोतैंभीमकौबचा
य तुमनैबडौकामकियो ऐसैंकहि धृतरा
ष्ट्र युधिष्ठिरकौं आसीर्वाददियो तबफेरि
राजायुधिष्ठिरभीमआदिभ्रातानसहि
तगांधारीकौंप्रणामकियो तबगांधा

रीबोली॥हेयुधिष्ठिरमेरेपुत्रआपकेंहीअ
न्यायतेंमरे॥पेभीमसेननेंदुर्योधनदुःसास
नकोंकुमरयतेंमारे॥यहमोकोंमहादुष्षहे
तबभीमबोल्यो॥हेमाताँमेंअकर्तकियोसोक्ष
माकरी॥माताहोयसोअपराधनरेपुत्रनकें
मारेंनही॥अरुघूतसमामेंदुर्योधनद्रोपदीके
कोंजंघादिषायबैठिबेकोकही॥जबमेंयह
प्रतग्याकरीहीतासोंजंघाकेरनकरी॥अरु
दुःसासनकेरुधिरकीधारामेरहोठपार
नहीनई॥असेंसुणिगांधारीबोली॥धर्मात्मा
धर्मपुत्रकहांहे॥तबयुधिष्ठिरबोले॥हेमात
तेरेपुत्रनकोंमारिबेवारोयहपापीमेंहूं
सोतमोकोंअबसापदेयसुक्षकरी॥असेंसु
णिगांधारीबोलीनही॥अरुअपनेकुलके
कोंमूलजो॥युधिष्ठिरकोंसापदेनहींदि
यो॥असेंगांधारीकोंसमाधानकरि॥द्रोप
दीसहितपांडवकुंतीकोंप्रणामकरतभये
जबकुंतीपुत्रनकोंवाद्रोपदीकोंपायनमें
प्रणामकरतेदेषिसमाधानकरतभई॥ता
पीछेंकुंतीद्रोपदीसहितगांधारिकोंप्रण
मकरी॥तिनकोंदेषिगांधारीबोली॥हेकुंती
हेद्रोपदीतमअपअपनेकों

द्रोपदी कों मेरे बंधु पुत्र हानि भये कों ही समा
गम विधाता लिख्यो सो भयो गंगा के तरण मे
रण के मरण में सोच न करणों तातें युद्ध में
मरेन को सब ही विचारि सोच न करिये ऐ
सें कुंती द्रोपदी को समाधान करि गांधारी वे
द व्यास तें दिव्य द्रिष्टि पाय रण मंडल देषत भ
ई अरु तेसें ही वेदव्यास की आग्या तें ध
तराष्ट्र युधिष्ठिरादि कहूं देषत भये तहां अन
क मांस भोजीन करि पूर्ण बिलाप करती का
मिनीन के कोलाहल पूर्ण ऐसें रण मं
डल कों देषि गांधारी श्री कृष्ण सों बोली हे श्री
कृष्ण रण भूमि में रुधिर के सरोवर भरे हैं
तिन में वीरन के मुष कमल तिरत हैं
सो मानों यमराज के पान निमित्त अरुण म
दिरा के कमल युक्त पात्र ही भरे हैं वीरन के
सिरन पें दंड हीन छत्र पडे हैं ते मानों निज
मित्रन के मिलिवे कों अनेक पूरण चंद्र ही
सोच तें आलिंगन करत हैं अरु रुधिर स
मुद्र में वीरन के सिर तिरत हैं ते मानों
पमाकि करन के बालकन के तिरण सिषा
यबे कें को मज्जन में तुंबफल ही हैं ऊंचे मु
ष करें रुधिर पडे ऐसें दीषे हैं मानों अंबुज गग

यरथीनकेसंगजाबेकोजत कठिनहा
मांसभक्षणतेतापतनिसाचरनषननोन
रितभतकनकेनचलपीज अधारापानव
रात्तमनकीन्मीनतोनद,पहिलाव ननदा
हारधारिलधिरकोअंगरागके
क्षणतेनसिहोयानाचनाभुडनवा
क्रीडाकरताअर्जुनकेप कमको
होरोमरोममेबाणलगा धजेबे
अंगनक्षणकोआवेजलबुद मेबाणन
रिघाणकरिकेलिन,सतोयगमनव
कितनेकप्रहारनतेंक्षतप नयबीनकाय
गालबारिबारि कुटंब हिननोजनकरता
अरुहमाक्षमाकतनीकजा चेनतने
निजभर्त्तानकोपाह निश्चेल नकर
स्वामीतुममानोंबि नये मोकोद
पिकहूलणमाके कुचतुल्य ननन
बहुरिनिकरतहा ऐसेबोलत इनमिस
पउर्या धनकोदोयगाधारा तनेइ
केविचेतपाय आकसमोबोला हआके
स्मेरोतेरोवचननमाना नानेइ
यारमाकोप्रामनयो चरणगमेर
धनकेजलिमसरीरका याका

स्त्रीपर्व
१८

मतीनेत्रजलसौंधोवतहै ॥ औरहमेरेपुत्रन
स्त्रीपतिनकेअंगकोआलिंगनकेरिबिला
करैहै औरयहबिराटकीपुत्रीउत्तरा ॥ स्वा
अभिमन्युकेसरीरकोगोदमेंधरि तेरेमुषकौ
देषि ऐसेबोलैहै ॥ हेस्वामीकृस्नतुम्हारीभगि
कापुत्र रूपमेंबिनयमेंनयमेंश्रमेंतुम्हा
रतुल्य सोयहतुमसर्बव्यापीकेदेषत अनेक
बीरननेछलसौंइकलेकोंकैलैमार्यो औ
सेकहै स्वामीकेमुषकोचुंबनकरिफेरि
बोलैहै हेप्रियतुमयुद्धमेंजातसमैंहमोकौं
पूछ्यानहि ॥ तातेंअपराधवतीजांणिअबह
बोलतनहीहो ॥ जातैमैंजानतहौ तुमबह
स्पलदेवांगनानकोंदीनो ॥ तौहबिलाप
करतीमोकोंजोआतैंनिवारणकरोतौअ
नरहोय ॥ अथवामोसौंमधुरवचनबोलतहे
ताअभिमानतौक्रोधकौंभूलेंतातेंयहदसापा
ई ॥ अरुजोक्रोधकौंलैसहरापतेतोबैरीके
सेमारेसकते ॥ ऐसौंबिलापकरतीउत्तराकौं
बिराटकीराणीसुदेस्ना ॥ हायपुकारिबिरा
टपासआपरुदनकरै ॥ औरचेतनब्रह्मादि
कनहूकोंरुदनकरावतभई ॥ ऐसेंहीद्रुप
दकीस्त्रीद्रुपदकेपासबिलापकरैहै ॥ औ ३

द्रोणाचार्यकी चितामें कृपीपड़ीवैकोंलपार
ताकोंपैचि।ब्राहलणयुधिष्ठिरके।अपग
गावतद्रोणाचार्यकोसलक.रकरिग.चे
गमनकरतहै।अरूशल्यजिक.नैकण..
जोबधकरैहै।।नापातकमिटायबेको मा
नोजीपद्वीजठराग्निमेंनाजिकाकोद।मर्थ
है और मेरीपुत्रीदुःसलापतिकेसिरकोगु
यमेलगायबोलहै।।होअयथहैन पिमअ।लेप
है नातेघरकोचलो।श्रीरमरगाअन.कीपन्थ
मार्पारणमेंसूतेपतिसोदर्षाकोडिनुल्यबी
लैहै।है स्वामीतेरायहहाथवहहै जो..
नकोयज्ञनमेंसहश्रावाधगोदानादय. और
संग्राममेंबरानकोमा. अरूबिहार. स्त्री
नकेनामिडरनेघनस्पत्सकरे ..अब
णमेंपहदला पायछिन्नभिन्नपड़े.. औ
भ्रपसेनकीजननी.. भूमिमेंआपके..
कर्णकोआलिंगनकरिके जायवद्रलहै
समकुनिपड़्राहै जाकेकुमश्रनमें १००
पुत्रनकोयुधिष्ठिरइहपरला.न.न
नामकेश्रोथा।गमेंहोमे ..सेपुत्रन
पतेव्याकुलगाधारीश्रीकृष्णसों
श्रीकृष्ण ऐसे दाक्षनाहि

महतुम्हारेकुलकोदूसोदेषोगेतबश्रीकृष्ण
हहसतहीबोले हेगांधारीसर्वजगतताके
निवारणनहीकरिसके ऐसीत्रषातोको ब
धाकरतहै तोगंगाकोचलि तूपुत्रनकोज
लांजलिते अश्रुपातनतेहादेतहै पतेरात्र
षागंगाबिनामिटेगीनही ऐसेंबोलतेही
श्रीकृष्णकोइछ्यातेतषागांधारीकोबाधाक
री तबगांधारीलज्जितहोपबोली पुत्रसे
कतेहतेषादुःसहहै तातेकहाकरों धृतरा
ष्ट्रकेपुत्र पुत्रत्नसबनकेमुएतेमरेबीर
नकीसंष्यापूछी जबदिव्यदृष्टीयुधिष्टिर
बोल्पे असुसटिकोटि एकलाष बीसह
जारएतेतो अतिदुःसहबीरमरे औसात
हजारपांचसे राजनकेराजाइहहकोजी
तिबवा ....र और चोदालाष चौदाहजा
र एते बिकरसुभटमरे औरजिनरणमेगह
मते इंद्रतुल्यनये अरुमरणोहोयपहनिश्चबि
चारियुद्धमेमरेतेगंधर्वनये भाजतेमरेतेगु
ह्यकनये स्वामिभक्तिकीतेजप स्वर्गइन
कोबांछाबिनाबीरधर्मतेमरेतेब्रह्मपदगये
औरबीरत्वतेगर्जनाकरतयुद्धमेघायलहै
यरुधिरसमुद्रमैपडिपडिमरेतेउत्तरकुर

यो॥यह तीर्थयात्रा मैं लोमस के अनुग
तिनकी पृह गति दे
हि युधिष्टिर विदुर संजय पाइ इसेनाइ
मतक संस्कार की आग्या दीनी॥तब धौ
अगर इनतैं चिता रचि दग्ध करो॥ता पीछें र
धिष्टर यत्तरा ष्टू जाय सबन कौ जलां
लि दानी॥या तेत्र मैं जे छत्री मरे ति॥न कौ पह
जल अंत्र पत्न मिकारा हो औसें कहत जलांज
लि देत न पे॥ जेब कुंती युधिष्टिर कौं सूर्य तें क
पत्य कहि जन्मा जानि दिखाई॥तब अ
पकौ जेष्ट भ्राता जानि युधिष्टिर अति पछ्याता
नयो॥इति श्री भारत भाषा द्रि ऋ॥पा
श्रीपर्वं संपूर्णं॥

[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ तहां गंगाती
रनारदादिकमुनिआये जलांजलिदेयसंतापयु
क्तराजायुधिष्टिरहोता सोबोले हेराजायुधिष्टि
रयुद्धमेंकष्टतेंबेरानकोंमारि राज्यलाभभयो
अबचिंताकोंकरोहो तबयुधिष्टिरबोले जिन
केसुषकेअर्थराज्यचाहियै तेसर्वबांधवमें
माताकेबचनतेंयुद्धमेंमारिबेयो पुनाहमति
नकोंबानेमारेनहीं ऐसेत्रिलोकविजईसहो
दरभ्राताकर्णकोंमेंमाल्यो लोभचांडालकेयो
गतें मेंहचांडालवतकें नहीसमझेकरिबेजोग्य
भयो तातेंअर्जुनादिकराज्यकरोमेंकछूचि
तवनकरोंगो वनमेंजाय जीर्णपर्णभक्षण
करिएकांतकोंबसोंगो ऐसेंसुणिअर्जुनबोल्यो
जगतजोवस्तुमिलैनहीतामेंप्रीतिराषैहै स
ववस्तुसमर्थहोय तबतोवैराग्यचाहै सी
तमेंतापचाहै ग्रीषममेंसीतचाहै जैसेंहीहम
हाराजतुमहूवनमेंरहे हे जबतोराज्यचाह
तेहे अबराज्यमिल्यो तबवनचाहतहो ऐ
सेंकियेतेंतुमकोंजगतउन्मत्तमानिहसैगो
ऐसेंसुणिभीमहूबोल्यो हेमहाराजजाचन
करेंनहींजलहीकोआहारकरै जटाबल्क

लधारोसीतनापलहै ऐसेब्रह्मके
नयेबिनाकृतार्थहोतहेकहा
मेंसबहीगुणहैं एकलेरकानि
नासोसर्बगुणगये जबऐसेसुनि
लसहदेवबोले हेमहाराजसुणो
री बाणप्रस्थ सन्यासी एलवग
चेहैं अरुएतीन्योंहीबिषकी
करेहैं सोविसुद्धग्रहस्थने या
बोंकोकरतहै
पालनकोप्रजाकेकुल
नोगो तवऐसेसुणि
कोमारितुम्हारापसल
तानकोंदुष्षदियेनेतु
गो अरुबन्ध लपपालकेन
पवित्रहोय पेरूलघा
नेतुम्हारेराज्य
श्रमसफलहोय आनंदपाव
इनसवनकेवचननेहू
दुष्षनापल तनहीं
सआपवोले हराजेंद्र
सेनावीहोयसोनसेंहा होय
नराजह अपन

रिसके तातें मेमे कुलके नकों मारे पहसं
तापनकरि मैं बिश्वजई नीआदिकनकोंउन
केकर्म बिनाकैनमारिसकें औरसुणाम
र्गमें याकेस्थानमें पञ्चलबेबालेनकों जैसे
तृणमात्रसमागमहोय तैसेहीकुटंबानके
समागमहै जनकों बियोगभयेकहासोक
करणों यहकाललोइ जालवालेकी नाह
सर्वपदार्थनकों तृण तृणमें और औरही
बिचारहै तातें कोंणकोंणकों हर्षसोक
दिसे तातो हेराजायुधिष्ठिर कालकेपाये
बांधवनकों अथाकोंसोचकरहै और
पितलोकीकों रचनाकरि बिचारनकों
कालवूलीनिगलेहै तातें तूसोचमतकरनव
कोवि अबतो यहसमें प्रजापालनक
हीकोंहे राजानकोंप्रजापालनकोवि
तेंअधिक धर्मबलमैंनहींहै जीवनके
यनकोंराज्यके बिभागमैं पालनकरि
नकोंब्राह्मणभोजनतें तपकरि अक
जननतें इन्द्रतें इन्दुबीनकोंअधिक
कोंकहेहै श्रीवेदव्यासकेबचन
पीछे श्रीकृष्णबोले हेराजायुधिष्ठिर
बंको पुरसहोय सोजोलेपतिवार

तहाँय॥ ऐसोलः चकरेनही॥ औरसोचकरे
मरोमिलेनही॥ अरुमरपीछे उनकेनिमि॥ सो
ककरे सोवेजाणेनही॥ इसगवेबोधक[illegible]
अपसुणतेआनंदहोय॥ [illegible] सोहः देवनाग
नोगतेतेरबोधवमोषादिक [illegible] क्यो[illegible] प
करेहै॥ अरु रेषियह मत्तु लोग मे [illegible] भीतर
है यासहपी जीवनकोव [illegible] थी [illegible] यहै
जबरुचिहोयतबहीनसुणक [illegible]
नकोसाचकोणकरे औ[illegible] जोजनके
निपालकअभिराम भरतादि [illegible]
नही॥ परंतुमरनको गयोसोहः [illegible] तुमका
लकरावे है तातेयह जो [illegible] नहै सो [illegible]
सो चतुर्वर्गकोदाता है याको [illegible] परना
[illegible] लकरे है तातेहै [illegible] नाण
[illegible] डिराज्यकाय [illegible] पाद [illegible] सक
[illegible] के वचनसुणि [illegible]
[illegible] युधिष्ठिरबोल्यो हे श्रीकृष्ण [illegible]
[illegible] मरी [illegible] तार
[illegible] तक्षकेयमिट [illegible] अमना
[illegible] आतुरविलापकरतेहः [illegible]
[illegible] हे राजन पुत्रमे [illegible]
[illegible] कोहू नमा [illegible] सो [illegible]

नस्टहोतहैं॥ जोसत्रुपर्षाहप्रहारकरतेबैरी
नकोमारै॥ अथवामरैवाकेंदेवताहुपुन्यव
र्षानतेपूजेहै॥ यातेंमहाराजतुमनिस्पाप
तातेंप्रजापालनकरौ॥ जोमिथ्यासकाहैति
नकोंअश्वमेधयज्ञतेंहरकरौ॥ नीतिसों
राज्यभोगोंकाहेंकिप्रजानकोसंग्रहकरि
पुनिएकसमरबेकोंशास्त्रशाश्त्राईनीपगुस
हैतिनकोंबुद्धि॥ ऐसेंकृष्णद्वैपायनमुनिगी
श्रीकृष्णइनकोउपदेसुणि धृतराष्ट्रकोंप्र
गकरि॥ हस्तिनापुरमैंपरवारसहितप्रवेस
कियो॥ जहांवडेउत्सवकरिसभामंडपसों
मितकियो॥ तहांअपनेसमादिकनसंपिब्राह्म
णनकोंयुधिष्टिरपूजतभयो॥ तहांदुर्योध
कोमित्रत्रिदंडीमुनिवेषधारीराक्षसचार्वा
कन्नायबोल्यो॥ हेपापमतिहेबंसकोंग
यि युधिष्टिरतोकोंधिकारहे॥ ऐसेंबान
सुणिचार्वाकजाणिसबब्राह्मण
नहुंकारनकरिदग्धकरयो॥ जबयाकेमर
नयुधिष्टिरकोंब्रह्महत्याकोभयजाणि
सोंबोले॥ हेयुधिष्टिरयहराक्षसचार्वाक
सकोंबिनामहादेवहूकोंमारयोनमर
नेषमात्रहैंब्राह्मणहै॥ नातेंयाकीहत्

सत्तापनकरो॥ ऐसैंसुणिराजायुधिष्टिरप्र
न्नभयो॥ तापीछैंसर्वहीब्राम्हणमिलिराजा
प्राचीनराजाकेबिराजबेकेसिंघासनपैं द्रौ
दीसहितयुधिष्टिरकोंबिराजमानकरि च्या
रोंवेदनकेमंत्रनकरि॥ सर्वतीर्थनकेजलन
करि राज्याभिषेककरतभये तबयुधिष्टिर
हजैसैंशक्तियुधिष्टिर तैसैंहीगांधारीसहि
तधृतराष्ट्रकोंबिराजमानकरि पूजनभयो॥ ता
पीछैंभीमकोंभीनकेजोगराज्याभिषेककरायो
बिदुरकोंमंत्रकर्ममेंराख्यो॥ अर्जुनकोंजयके
योगमेंराख्यो॥ संजयकोंलाभखर्चमेंराख्यो
कुलकोंसेनाकारज्ञामें॥ धौम्य प्रोहितकों
ननकीपूजामें॥ सहदेवकोंसमानमित्रनके
मानकेअधिकारमेंराख्यो औरसचीन
नयाजोगस्थापनकरि राज्यश्रीकृष्ण
निवेदनकियो॥ तापीछैंभीमकोंदुर्योधन
हलदियो॥ अर्जुनकोंदुःसासनकोमह
लौ॥ औरकौरवनकेस्थानसर्वबांधव
तभयो॥ अरुश्रीकृष्णकीआग्यातेंय
राज्यपालनकरतभयो ऐसैंयुधिष्टि
यकरतोदेखि॥ सर्वप्रजामेंआनंदभयो
भीमकोंआदिदेसर्वभ्राता

पराक्रमकोगर्वकरतभये तासोंआपसम
वधी कोऊकहै मेरेपराक्रमसोंयुधिष्ठिर
राज्यमिलो औरसबकहै गर्जनाकरतेहै
सेंभीमअर्जुननकुलसहदेव येसबहीपर
परबोलिवेतेईर्षावांधि युद्धकरिवेकोंसन्नध
रणकरे जबतिनकोगर्वहरिवेकोंश्रीकृ
ष्णहँसतहीबोले हेभीमादिकवीरहोतुमसब
हीरणमेंघोरपराक्रमकियो तासोंअबगर्व
तेकलहमेंतिकेरो अरुजोतुमकोंपराक्रम
जाणिबेकीइच्छाहैतो सत्यवादीपुरुषसाक्षी
बर्बरीककोशिर पर्वतकेसिषरपैहै वापक
लो जाकोंवहकहैसोही अधिकपराक्रमीअ
रुआपकेमनतेतोगर्वसबहीजावनकेहो
तहे परंतु औरकोऊसाक्षीहोयतोसत्यहै
औरसेसुणिभीमसेनसबैभ्राताअरुश्रीकृ
ष्णसहितबर्बरीककेसिरपासगये तहाँभी
कहबोले हेबर्बरीक हेमहावीर हेपांडु
नकोंजयदेनवारे तेरेदेहत्यागनकरिवेतें
उवनराजपायो तातेहमतोसोंपूछैहै त
नांहि सोसत्यकहो अरुजोसाक्षीहोयमि
बोलेतो जोमहीनाकेमहानाकधर
हैसोवाकेपितरनकोपानकरिवेकोमि

मेंश्रीकृस्नकोवचनसुणि बर्बरीकबोल्यो
हे श्रीकृस्न दुष्टनामननमें तोयुद्धमें एककृता
देषी । कृस्नके तुम्हारे हाथतें चलतोएकसु
दर्सनचक्रदेष्यो सोचक्रनें तोसबनकोसि
रकाटेकृस्नके सानेसबनकोरुधिरपान
कियो तातें मैं तोदोऊ सेनामेंऐसो हा
देष्यो कृस्नहीकोपराक्रम [illegible] औरनी
मादिक द्रोणादिक वीरननेंतो कछुथाहीगर्व
ककेसिरकोसमुद्रमेंलाहिवेद. सोचक्र
सोठाकरहानी । लाठोर [illegible] सिरलि
कछुहल्योनही । जबश्री [illegible] मलेही
र्बरीककेसिरकोउठायो तबतोलेचल्या
मानतेजनिकसि श्रीकृस्नकेमुखमें [illegible]
लेयहसिरश्रीमहादेवजीके [illegible] इम्यानां
सुमेरहो । ऐसेकृस्न नहीं [illegible] आज्ञाय
सिरकोलेगया । सो जो [illegible] बेदन
ती । जबतेरईनेवाकों [illegible] इमान [illegible]
कियो । पहचे [illegible]
भाता गर्वनसि [illegible]
निस्थानकों जाय [illegible]
नहीं । तिनसोंल [illegible] अमर

अर्जुनके मंदिरमें विराजमान जो श्रीकृष्ण
तिनके पास राजा युधिष्ठिर गयो तहां श्रीकृ
ष्णकों ध्यान पुरुक देषि राजा युधिष्ठिर बोलो
हे श्रीकृष्ण सर्व योगीजन तौ तुमकों ध्यावे
है अरु तुम कौनकों ध्यावो हो सो कहो
जब श्रीकृष्ण बोले हे युधिष्ठिर जो मोकों
ध्यावे है ताकों मैंहू ध्यावो हों अरु अब वार
तौ पारसय्या मैं भीष्म मेरो ध्यान करे है ता
के दरसनकी लालसा मोकों लगि रही
है ऐसे सुणि युधिष्ठिर बोले हे श्रीकृ
ष्ण यह मन मैंहू भी परिवार सहित चलि
भीष्मकों दरसन करों जी ऐसें सुणि श्रीकृ
ष्ण पांडवन सहित वेदव्यास नारदादि
मुनि मंडली युक्त सवारी करि भीष्म पा
स गये तब भीष्महू परिवार सहित श्रीकृ
ष्णकों आये देषि मन मैं पूजन करत भय
हे श्रीकृष्ण तुम्हारी भक्ति तैं संसार मैं मनु
जो वहै सो हू मुक्ति होत है ऐसे तुमकों
मैं प्रणाम करत हों ऐसें भीष्मकों वच
न सुणि श्रीकृष्ण समेत कीं युधिष्ठिर भी
म अर्जुन आदि रथन सों उतरि भीष्
मकों प्रणाम करि आगे बैठे तब श्रीकृष्ण

व्यथातें आतुर भीष्मको देखिबोले हे भी
अलग्पानमय तेरो शरीर है सो बाण न
ग्नैतोन नयो है तब भीष्मबोले हे श्री
स्वरूपजो तुम्हारो ध्यान तामें लीनजो चित
नाको अतिकठोर बज्रमई बाणन
अथवा अग्निकी मलीह सनकेपथमई
यरोकहीताके समाना है ऐसे सुनि
भबोले हे भीष्मतन मरीके बलब
धारण करतापह पृथ्वीईश्वलोक
मेह ऐसेकाहे श्रीकृष्णभीष्मको
मईदृष्टिकरि विथारहितताके तहाँ
श्रीकृष्णभीष्मपेयुष्पनन दृष्टिकरी
श्रीकृष्णबोले हे भीष्मजो तुम
विथानहीहै तो प्रजातत्रायुधिष्ठि
मोपदेसकरोगे ऐसें सुनि भीष्म
श्रीकृष्णतुम्हारे अनुग्रहते
गोसोहोके होगा ऐसे सुनि श्री
तो हे भीष्म तुमधन्यहो ऐसे
पाडवनसहित हस्तिना
तही पांडवनसहित श्रीकृष्ण
वतभीष्मपासगये तबभीष्म

हे श्रीकृष्ण तुम्हारी कृपातें में समर्थ हों जो भ
मैं युधिष्ठिर पूछे गोसांईं कहो गो पैयह राजा
युधिष्ठिर क्षत्री के करिबे जोग्य कर्म तें काल
जित होत है प्रसन्न चित्त होय पूछे जब रा
जा युधिष्ठिर श्रीकृष्ण की आज्ञा पाते भीष्म के च
र्णन में प्रणाम करि राजधर्म पूछत भये जब
भीष्म श्रीकृष्ण को धर्म को ब्राह्मण के प्रणाम
करि राजधर्म कहत भये हे राजा युधिष्ठिर
राजा जो है सो पुत्रन की पूजाते रक्षाते नी
तितें सोभा पावत है और कर्णहार बा
जे इन तें नट विट सो भा पावत है राजा नही
अरु जा राजा को सोल हास्य में अधिकर
होय जाको सिर को सेवक चर्णसों स्पर्श
रे है जो राजा आपके सरीर को त्याग करि
के भी जो ब्राह्मणन को पालन करे सो सब
धर्म जीते है और राजा तेजते सूर्य तुल्य
कीर्त्तितें चंद्रमा तुल्य क्रोधतें काल तुल्य
है सात कहे क्रोधी कहे नयकर इन लो
ए पुरु राजा होय ताको कौण जीति सके
अरु यज्ञन में जे ब्राह्मण श्रीपति को अग्नि
को सेवे है तिनको क्रोधयुक्त न करे और

ब्राह्मणभस्महोयतौलक्ष्मीकों [illegible]
करतौबसकोद [illegible] हैं [illegible]
मष्टश्रेसे एकहू [illegible] मान [illegible]
पुरुसकोपापलबे [illegible] होय [illegible]
थास्योंबर्णजाराज [illegible]
दानहीक्ोई सोराजा [illegible]
जायपापमनकरिहै [illegible]
घेरेवदेवलोमेंश्रमल [illegible] के [illegible]
जोराजालसबाईहो [illegible]
रेतो उनदुषीनकीलाग [illegible]
केनागपश्रापुष्प [illegible]
जोश्रापराश्राचार [illegible] कोपा [illegible]
रहसदाश्राचारमें [illegible]
बसेंपरासेवहै [illegible]
जाणिबेवालोहोय मत्री [illegible]
होय जोश्रस्वामिधर्मीहोय [illegible]
दीहोय लोराजाम्पर्यसमानराज [illegible]
जाकोमंत्रगुप्तहोय [illegible] जाविस्थुकेनि
वायवेसमारिबेसेंसमर्थहै [illegible]
थासीराजाकेलक्ष्मीनही [illegible]
ताकोसुषनहीं नातेथ्रानि [illegible] थानि

सैकाराजानहीराखैऔरउद्धतनकौदंडासीन
नकौपालनाब्राह्मणनकौपूजैदानदैविस्नुकौ
सेवनएव्यारिराजानकौराजलक्ष्मीकेवृद्धि
कारणहैंकौपकौकारणहोयतौहूप्रगटकौ
पनकरैतौछिद्रपनहूमैंनिश्चौनरहै हर्षहूमैंनि
र्विकाररहैनातराजाकौलक्ष्मीकदाचित्तहू
छोडैनहीं हैऔरजीतिवेतौराजाप्रजान
कोपालनकरैनाराजाकौप्रजानकेछटेव
हकौधर्मप्राप्तहोतहै।इतिश्रीशांतिपर्वेणिरा
जधर्मप्रकर्णम्।। ऐसैराजायुधिष्ठिरराजध
र्मसुनिकैआपतिसांतीरा ऐसैराजानकेध
र्मपूछौजबभीष्मबोले हेयुधिष्ठिरआप
त्तिमैंजौराजाहोय तबवैरीनमैंप्रवे
शकरि कुलाकनासोवधिकैनिजलक्ष्मी
फेरिपावै आपकौमित्रबलअल्पहोय म
नुकौउदयहोय जबआपकौप्रजा
कोचकरि दुर्गकौआश्रयकरि कालहै
करे औरमित्रबल दुर्गबल
लवानसत्रुसौंहूजुद्धकरै
प्तीभोगेमरैतौइंद्रलोकजाय
नराजाऔरलोकारि देवब्राह्मणइनकौधन

वेनहीं॥नीतिसोंकोसहीकोंसंचितकरै।या
तेंसर्वविपत्तिटलै।अरुसंपतिचानकोंश्रा
पत्तिमेंभीसेवककोछोडेनहीं।निरदम्मकोंस
हजहमेंसेवकछोडिदेतहैं।तातेंसर्वजगत
श्रासीकीफासिसोंबंध्योहै।सोजातेंश्रा
सारटेताकोंछोडे।श्रोरराजाबिपत्तिमें
ऐसोध्यान।स्त्री।पुत्र।लक्ष्मी।इनसबनको
छोडिश्रापकेप्राणराषे।प्राणरहेतोयेएको
इकसमेंमेंफेरिसर्वहीहोय।श्रोरजोबहु
तवेरीश्रापकोंघेरेतोबुद्धिवानहोयसोस
र्वतेंश्रधिकबलीएककोंश्राश्रयकरि
सबनकोंमारै।जोश्रापकेदोषीहोय
प्रियबचनहूबोलेतोहूवाकोबिस्वासन
करियेजैसैंसिकारीनकोंगानम्रगनको
प्राणहारीहैतैसेंहीदोषीनकेप्रियबचन
जाणें।श्रोरप्रबलसत्रुहोयतोसोबैर
गुप्तकरिबसै।जबसमयपावैतबबैरप्रग
टकरिप्रहारकरै।श्रोरराजामेंवामंत्रीमेंइ
तनेगुणचाहिये।बुगलासरीसोकपटी
सर्पसोकुटिल।सिंघसमानपराक्रमी।का
गलाचतें।श्रतिसोंकेतोयइकेसीतरे
दीर्घदर्सीसदारहे।निर्लोभगुणीमूरवी

त०
२७

रनकेगुणकौंग्रहणकरै।। उज्वलरहै ऐ
सौराजा।। मंत्रीहोयतौ आपत्तिनपावै
।। इति श्री शांतिपर्वणि आपद्धर्म।। ऐसेसु
णिराजायुधिष्टिरमोक्षधर्मपूछ्यो।। ज
बभीष्मबोले।। हेयुधिष्टिर अग्यानीजीव
हैतेनरहोतेधनकौसोचकरतहैसोव्र
था।। अरुआयुष्यक्षीणहोतहैताकौनही
सोचतहै।। यहआयुष्यकेसीकहै त्रैलो
क्यकौ ऐश्वर्यदियेहूजाकोएकलवपावै
नहीं।। अरुअहंताममतानाहीदुःखकौमू
लहै।। इनकौछोडैसोसदाआनंदहीमे
है।। आपकौबंधवनकौआयुष्यघटै
तासालियहकौउत्सवकरिआनंदपावै
है।। अरुजोआयुष्यपदार्थनही।। तौआयु
ष्यसमाप्तभयेसोचकरैसोमूर्षहीहै।। ऐ
रजोबंधुकेदेहहीमेंस्नेहहोयतौमरकौशो
कधकरै।। जोआत्मामेंस्नेहहैतौवहसदा
है।। तातेंस्वआयुष्यहकौस्वर्गमोक्षकौ
उपायकरैसोहीफलहै।। तौउपायकौमूर्षहै
सोनहीकरैहै।। यहतृष्णारूपीकनोत
करिआत्माकौआनंदकोहै।। सोज्ञानतसा
मिटै।। त्योंत्योंआनंदबधै।। औरजैतोगरूपी :

दीपकसोंमोहरूपी अंधकारकोंदूरिकरैहैं तेआत्मतत्वदेषैहैं तेहीकृतार्थमुक्तहोयहैं॥इतिश्रीभारतसारचंद्रिकायांशांतिपर्व समाप्तम्॥॥१२॥ ॥श्रीकृष्णसहायः॥

॥श्रीगणेशायनमः॥ अथ माघमाहात्म्य भाषा वच
निका अनुशासनपर्वलिख्यते॥ अ नारायणं न
मस्कृत्य नरंचैवनरोत्तमम्। देवीं सरस्वती
व्यासं ततो जयमुदीरयेत्॥ वैशंपायन उवाच॥
ऐसै सुणि राजा युधिष्टिर फेरि बोल्या हे पिता
महराज के अंत मैं नर्क होयहै ऐसे जाणत हू
मैं कुल घात कर्‍या तातै मांकौं धिक्कार है तिन
मांकौ आभरण पहरायसौ तितकौ रोग घ
मैं राख्या मैं ताकौ बाण न तै मार्‍या और बे
रीन कौ नास करिबे कौ जिन मांकौ सस्त्र वि
द्या पढाई मैं वा सस्त्र विद्या तै उन ही कौ म
रे और ता वृतरसले बेकौ नमते जाकौउ
टीप कडि उद्विष्र ता बलषातै तापिता
ह कौ हम निर्दई न नैं मार्‍या तिनकौ सम
ति कैसै होयगी ऐसो चिंता करतै राजा
धिष्टिरसौं भीष्म बोले हे पुत्र मै तैर पासौ
मैं विवकबद्धी कोंदृधनकारै अकहम
कौ तू मत्यु काल इन नैं नही मारे हम
मारकमनर्क ही मरेहै अलतैं तातैं
त्र धर्म ही तैं युद्ध कर्‍या तातैं निर्दोष है
तू धर्म सेवन करि तेरा कृतार्थ होयगा॥

यनकोजीति यथोक्तदानश्रीकृष्ण करि रिलुका लमेंस्त्री सेवनकरि श्रोरश्रीकृष्णकोसेवन करि यहसाक्षातपरब्रह्महै अरुस्वर्गमें देवता मनुष्यलोकमेंमनुष्य पातालमेंरा क्षस दैत्य दानव सर्वहीयाश्रीकृष्णकोंसेवै है अरुब्रह्म विष्णु रुद्ररूप सृष्टिस्थिति प्र लयकर्त्तायहश्रीकृष्णहीहै यातेंयाहीकोंभ जो कार्तिक माघस्नानकरो एकादसीशुक्ल पक्षकीमेंजागर्णकरो द्वादसीमेंविष्णुपूजन ब्राह्मणनकोभोजनकरावो श्रोरहरिकीकथा सदाश्रवणकरो वेदपाठ पुराणपाठ गी तासहस्रनामपाठसदाकरणें श्रोरकार्त्ति कशुक्लएकादसीसोंपूर्णमासीपर्यंतश्री कृष्णकोउत्सवकरणो श्रोरश्रीकृष्णराज्य दाता मुक्तिदाता जयदाता भक्तिप्रतिपा लक यातेंयेहीमेरोतुम्हारोउद्धारकरेंगे ऐसेंबोलतहीसूर्यउत्तरायणश्रायो सो जाणिभीषमनेत्रनकोंफेरियुधिष्ठिरसोंकही ... तिकरियो श्रे ध्यानकरि प्राणायाम धारणाकरिवाणनसोंबि

ङ्सरीरकौत्यागकस्यौ ॥ ताहीसमैभीष्मकौ
ब्रह्मांडफोडितेजनिकसिश्रीकृस्नमैंलीनभयौ
तबदिव्यसिवकाबणाय ॥ युधिष्टिरछत्रधा
रि ॥ भीमअर्जुनचामरधारि ॥ चंदनकीचिता
मेंधासकरिदाहकियो ॥ भीष्मकौसरीरदग्धजा
णि युधिष्टिरपरवारसहितगंगामेंस्नान
करिजलांजलिदीनी ॥ जबगंगाहूबिलापक
रतभई ॥ हेपुत्रमसकतुल्यसिषंडी पूर्वस्त्री
हो सो तोकौ कैसेमास्यौ हाहायहमोकौंबडो
षेदहै ॥ ऐसेंरुदनकरतीगंगासौं श्रीकृस्नबो
ले हे गंगतेरोपुत्रइंद्रादिककौमास्योहूनमरै
सोस्वइच्छाहीसौंमस्यौहै ॥ ऐसेंसुणिगंगाप्रब
हबंधकरिनिश्चलभई ॥ तापीछैयुधिष्टिरगं
गाकौप्रणामकरिपरवारसहितहस्तना
पुरआये जहांआयप्रजाकौपुत्रवतपाल
नकरतभयौ ॥ अरुश्रीकृस्नहूअष्टादशअ
क्षौहणीनकौसंघारकरायप्रयुधिष्टिरकौंनि
स्कंटकराज्यदेयकेप्रसन्नभये ॥ जनमेजय
उवाच ॥ हेमुनि ऐसेवीरभीष्मादिकआ
पकौमत्युबतायबतायकेसैंमरे अरुदुर्यो
धनएकादशअक्षौहणीपति सप्तअक्षौहण

तिनकोंनहीजीत्यो॥ अरु केसैंमस्यो॥ जोदीन
मेंसोवेनही॥ सदाबारनकेसंगरहे॥ रात्रिमेंद
धिभोजनकरैनही॥ अरुगर्भणीस्त्रीसूंसंभो
गकरैनहीं॥ नित्यत्रिकालसंध्योपासनकरे॥
रजुस्वलाकोस्पर्सकरैनही॥ ऐसेंदुर्योधन
भीमतें अनादरपापकेसेंमस्यो॥ बेसंपायन
उवाच॥ हेजनमेजय॥ धर्मतेंजयहोयहे अध
र्मतैंपराजयहोयहे॥ यहवेदसास्त्रकहेहे॥
अरुयुधिष्टिरकुरक्षेत्रमेंयुद्धयज्ञकियो॥ ता
मेंआपदीक्षितयजमानभयो॥ युद्धभूमिकोवे
दीमानी॥ भीमकोंआदिदेच्यारोभ्रातनकोंऋ
त्विजमाने॥ अरुश्रीकृष्णकोकर्मकोउप
देसकर्ताआचार्यमाने॥ अरकौरवनकों
पशुमाने॥ राजानकेरुधिरकोघृतमान्यो॥
अरुद्रोपदीकोदुष्षणतिलाकोफलमान्यो॥
अरुदुर्योधनकोपूर्णाहूतिकोश्रीफलमा
नि ताकोंहोमिसकलयज्ञकोफलश्रीकृ
ष्णकोंअर्पणकियो॥ ऐसेंजोकर्मकियोता
कोधर्महीमान्यो॥ अरुकौरवलोभतेंयुद्धकि
योतेअधर्मीभये॥ तातेंबिजयपायोनही॥
॥श्लोक॥ धर्मोजयतिनाधर्मः॥ सत्यंजयतिना

नतम क्षमाजयतिनक्रोधो विष्णुर्जय
सुरः॥१॥ धर्मेणैवस्थितंराज्यं धर्मेणैव
तंकुलम् ॥ अधर्मनिरतोपिच तेनश्यतिवि
रान्नपाः २ आर णेषुचयेश्रूराः स्वापुबा
लेषुगोधव फलानिकृततोयद्धत् तद्वतेहि
पततिच ३ पापङ्खेनयुक्तानि वाहनानि
पुधानिच पुद्धकालेविशीर्यंति वायुनाच
घनंयथा ४ नविषंविषमित्याहुर्ब्रह्मस्व
विषमुच्यते विषमेकाकिनंहंति ब्रह्मस्वं
पुत्रपौत्रकं कुर्दृद्विजेकृतमेपेयजलपु
मइ नायणोपिनिहतः सकलत्रपुत्रः उ
लितसुरवरस्यपरहस्पालिंगको ब्रह्मशापनि
हतोनिधनंनयाति यातेअधर्मोब्रह्मरोहं
कौरवनष्टनये॥ इतिश्रीभारतेशान्तिप
र्वणि अनुशासनपर्वणि नतमं१७

॥श्रीगणेशायनमः॥ अथ अश्वमेधपर्व
चनिका॥नारायणंनमस्कृत्यनरंचैवन
रोत्तमं देवीसरस्वतीव्यासंततोजयमुद
रयेत्॥१॥वैशंपायनउवाच॥राजायुधिष्ठि
रराज्यपायमेंभीष्मादिकनकू अधर्मतें
मरायेऐसेविचारिशोकसमुद्रमेंमग्न
नयो॥तबश्रीकृष्ण धृतराष्ट्र वेदव्यास
नानाप्रकारकीयुक्तिनकरिसोकदूरिक
रायो॥तबयुधिष्ठिरपूछीहेपूज्यमेरोगो
त्रहत्याकैसेंमिटै॥तबश्रीकृष्णवेदव्यास
बोले॥हेराजा अश्वमेधयज्ञतेंतेरीहत्या
मिटै॥ऐसेसुणियुधिष्ठिरबोल्यो॥मेरे
धनहूनहीं॥औसहायहूनहीं॥अश्वमेध
यज्ञकैसेहोय॥तबश्रीकृष्णबोलेहेरा
जा मरुतराजाकेयज्ञकोशेषधनहिमाच
लकीभूमीमेंगड्योहै॥औरजोधनब्रा
ह्मणतसहायज्ञकोछोडिगयेहैंसोवोधन
भूमिमेंहै॥ औरभूमिकेधनकोधणीराजा
होहै॥सोवहधनल्यो॥तबयुधिष्ठिरबो
ल्यो हेश्रीकृष्णराजामरुतधन्यहैजाके
यज्ञमेंब्राह्मणतसहोयइतनोसुवर्णछो

ब० डिगये अबब्राह्मणस्व मैं कैसे मगावूं जा
धनतै दोऊ लोकनमें दूषहोय औरबं
धूहत्यातैं पेकल ज्यातो मोकूं है ही अस
[illegible] मगाय ब्राह्मणनकूं देतौ जीलज्ञ
आर होय ऐसैं सुणि .. सैबोले हेराजा
ब्राह्मणजब धन छोड्यो तबही उनको
स्वामित्व गयो जैसैं परशुराम पृथ्वीक
श्यपऋषिकूं दीनी काश्यपतैं दैत्यननलीं
नी उनकूं जीति क्षत्री लेतभये तातें राजाव
धनमें ब्राह्मणनको स्वामित्व नहीं तातैं हेयु
धिष्ठिर वाहधन तेरो ही है तब राजा बोले
हे गुरु पायज्ञमें ब्राह्मणकितने अरु दक्षि
णा कितनी अरु अश्व कैसा चाहिये सो क
हो तब बेदब्यास बोले हेराजा ब्राह्मण
तो बीस हज्जार अरु दक्षिणा येक येक ब्रा
ह्मणकूं हाथी १ रथ येक १ अरु सुवर्णके आ
भरणयुक्त अश्व येक १ गऊ येक हज्जार
अरु येक मन्य प्रमाण रत्न येक भार सुवर्ण
ऐसी दक्षणा चाहिये और सर्व देह श्वे
त चंद्रमा समान जाको वर्ण अरु येक
कर्ण जाको श्याम ऐसो अश्व चाहिये औ

रचैत्रकीपूर्णमासीकंवाकंछोड़ऐ॥ अरु
वर्षपर्यंतसेर्बवीरजाकीरक्षाकरें॥ यजमा
नकोपुत्रवाभ्राताजाकीरक्षाकंजाय॥ अरु
यजमानभार्यासहितअसिपत्रव्रतकरै॥ अ
रुअश्वजहांमलमूत्रकरैतहांब्राह्मणहव
नकरै॥ सहस्रगोदानकरै॥ अरुअश्वके
लिलाटमेंसुवर्णकोपत्रबांधे॥ तामेंयजमान
कोनामलिखो॥ मैंअश्वमेधकेनिमित्तयहअ
श्वछोड्याहै॥ जोबलवानहोय सोयाकूप
करो मेरोभ्रातावापुत्रयाकूछुडावैगो॥ ऐ
सेंछोडिअश्वकूजोग्रहणकरैताकूछुडा
वणो॥ याविधिअश्वपृथ्वीकीप्रदक्षणा
करिआवै॥ तातेंअश्वमेधहोय॥ अरुहरा
जातेंसहायश्रीकृष्ण॥ भीमअर्जुनादिक
है॥ तातेंयहयज्ञतोसहीवणे॥ ऐसेंसुणि
राजायुधिष्ठिरसकलयज्ञसामग्रीसिद्धि
कराय॥ सुनदिनसुभमुहूर्तमें॥ ब्राह्मण
नकेसाथ अश्वकोपूजनकरि॥ अश्व
केलिलाटमेंसुवर्णकोपत्रबांधि॥ अरु
वाकीरक्षाकंवीरनकूलारदेय॥ अश्व
छोड्योसोवहअश्वगमनकरतराजा

अश्व० १२२

यौवनाश्वकीपुरीमें गयो ॥ सो देख्यो तो एक
सेनाको स्वामी राजा यौवनाश्व ॥ वा अश्व
पकरियत्न सुं पालनाकरी ॥ तबपहुंचबे
राजायुधिष्ठिरसुं भीमसेनने आज्ञा
ई ॥ तबभीम बोल्यो मैंवा अश्वकुं ल्याऊंगो
अरु यौवनाश्वकुं जीतूंगो ॥ अरु जो नर
वासुदेवको चिंतनकरिकर्मकरे है सो
सिद्धिहोतहै ॥ यामें संदेह नहीं ॥ अरु जोम
नुष्य वासुदेवकेध्यानकहीनकर्मकरे सो
निष्फलहोतहै ॥ तातें मेंही अश्वकुं ल्याव
गो ॥ अरु जो नहीं ल्यावूंगो तो घोर दुर्गति
कुं प्राप्तिहूं ॥ ऐसें भीमकी प्रतिज्ञा सुणियु
धिष्ठिरबोल्यो ॥ हे भीम ईकलो तूं नहीं व
तीपुरीकों कैसे जायगो ॥ अरु यौवनाश्व
हू महाबली है ॥ ताके सेवकहू तेसेहीहैं
तिनकुं जीतिवो ना अश्वकुं कैसें ल्यावेगो
यसे सुणिवेदव्यासबोले ॥ हे राजन् वासुदे
वके वचनतें सर्वकार्यहोयगो ॥ ऐसें क
हि व्यासतोगये ॥ अरु युधिष्ठिर श्रीकृष्ण
सुं बोल्यो ॥ हे कृष्ण मेंगोत्र हत्यारो पापसमु
द्रमें मग्नहूं ताते मेरो उद्धारकरो तबश्री

कृष्णबोले॥ हे राजन तेरो कायिक वाचिक
मानस॥ पातक है। सो सकल करि मेरे हृद
मैं धरि मैं वाको नास करूंगो॥ तुम शुद्ध होवो
गे ऐसे सुणि राजा युधिष्ठिर बोले॥ हे श्री
कृष्ण तुमारे हस्त में कछु स्वल्प हू दे है सो अ
त्यय होत है ता तें मैं अश्वमेध यज्ञ करिवा
को फल दियो चाहूं हूं॥ ता तें अश्व आवे तो
अश्वमेध यज्ञ संपूर्ण होय ऐसें सुणि श्री
कृष्ण भीम कों अश्व ल्यायवे की आज्ञा दीनी
तब वृषकेतु मेघवर्ण। भीमसेन ये तीनों
श्रीकृष्ण की आज्ञा पायवे यौवनाश्व की न
गरी भद्रावती कों गये॥ तहां नगरी के बा
हर पर्वत पें बैठे॥ जब भीमसेन बोल्यो॥
आपुन तीन्यो पास रोवर में जब लों यौवना
श्व को अश्व जलपान करिवे कों आवे त
बलों या सि पर्वत पे रहें॥ ऐसें निश्चय करि
तीनों ही पर्वत के सिखर पे रहे॥ ता ही स
मै मैं अनेक वार न सो रचित अश्व जल पा
न करिवे कों न हो आयो॥ ता को देखि मेघ
वर्ण बोल्यो॥ हे भीम मैं माया करि या अश्व
कों हर ल्याऊं हूं॥ तुम मेरा तमासा देखो
ऐसें कहि मेघवर्ण माया ...

अध्या०
३३

रकरि । अश्वकौं पकरि पर्वतपै ल्यायो । अ
वा अश्वकार स्तोकरि बेतालेबीरनकौं
हसुणि । वृषकेतनौं भसेन युद्धकौं आ
जबतिनकौं देखि कितनेकतौ युद्धकौं आं
रभये । कितनेक भाजियौवनाश्व पै आय
ले हरा जेर्कौ ऊबार ग्रंथकारकरि अ
श्वकौं पर्वतपै लेगयो और दाय अपूर्व पाछ
युद्धकौं आये है । ऐसे सेनाके वीरनकौं
बचनसुणि यौवनाश्व सेनासहित युद्ध
रिबानिश्चकरि युद्धकौं आयो । ताकौं
वृषकेतसन्मुख आयबोल्यो हे राजन तु
द्ध है ताते बृथाप्राणमतिकौं है । यामानसहि
तनगरकौं जा । ऐसे सुणि राजा नमानी
तबवृषकेतबाणनतेबाधतनयो । जबरा
जाहू वृषकेतपे सेनासहित मिलिबाणन
की वर्षाकरी । तबवृषकेतनेहतिनबाणनकौं
काटि और अनेक बाणनकरि राजाके र
थअश्वगजसहितबीरनकौं मारतभयो
थरु वृषकेतनभयतेसर्वसेनाहीनयो व
नाश्वबोल्यो हे वृषकेततधन्य है पहले
तुमोपेप्रहारकरि । मैं त्वल बालकहै तो
तैमें पहलेप्रहारकरोनही । तबवृषकेत

कहीराजा तू वृद्ध है मेरो प्रहार सहेगो नहीं
तातें न प्रहार करि । तब राजा वृषकेतु के
हृदय में दस बाण मारे । तब वृषकेतु हूं ति
न बाणन को बीचिही में काटि । राजा के हृ
दय में दस बाण मारत भयो । ते बाण राजा
के हृदय को बीदीर्ण करि पाताल में गये ।
तापाछें अर्धचंद्र बाण सों राजा को धनुष
काट्यो । तब राजा और धनुष ले वृषकेतु
के साठि बाण मारे । ते बाण वाके सरीर को
बेधि रुधिर पान करत भये । तब वृषके
तु क्रोध करि एक बाण राजा के हृदय में
मार्यो । तातें मूर्छित भये । तहां राजा को पु
त्र सुवेग अरु नीमध्वज दोऊ गदा युद्ध कर
ते । तिन के गदा प्रहारन को सब्द सुनि
राजा मूर्छा छोड़ि उठ्यो । जब राजा वृषके
तु सों बोल्यो । हे वृषकेतु तू मेरो प्राणदाता
है । तातें मेरो पहरा अतुलै । तेमो मूर्छि
त पे प्रहार कर्यो नहीं । तातें पहरा अनेरो है
है । अरु तेरे अनुग्रह तें मैं श्रीकृष्ण को
देखूंगो । अब ना मन को ताप है अरी दिषा
व । ऐसें कहि दोऊ चले । तहां जाय रहे ।

मि० तौसुवेग अरु भीमयेसो ऊगदाकेपरस्परप्र
हारनतैमूर्छितहै ॥ तबही भीमसमकौछोडि
उठ्यो ॥ जबराजातोकौप्रणामकरिबोल्यो ॥
हे भीमसेन यहमेरो राजतेरोही है ॥ तातैतु
मसेपूवर्णवृषकेतसहितमेरीपुरीमैप्रवे
सकरो ॥ ओसैंकहि राजा तिनसहितपुरी
मैंआय ॥ परमसतकारकरि ॥ कितनेकदिन
राषि ॥ पाछै पुत्रसेनासहित तिनकेसंग
यौवनाश्व हस्तनापुर आयौ ॥ जबराजा
युधिष्ठिर भ्रात्रसहित तिनकौ आयेसुणि
सेनासमेतसन्मुख आप यौवनाश्वकौस
तकारकरि पुरीमैंप्रवेसकियो ॥ तहांयौ
वनाश्वश्रीकृष्णकौदर्सनकरिपरमहर्ष
सहितयुधिष्ठिरसौबोल्यौ ॥ हे युधिष्ठि
र हम तेरे सेवक हैं ॥ ओसैं कहि तहांर
है ॥ इतिश्रीभारतसारवृत्तिकायां अश्वमे
धपर्वणि प्रश्नमो अध्यायः ॥ वैसंपायनउवाच ॥
तापीछै श्रीकृष्ण युधिष्ठिरसौबोल्यौ हे
राजेंद्र चैत्रीपौर्णमासीगई ॥ अबयज्ञकौस
मयआयोरहै ॥ तातैमैद्वारिकाजाऊं
हूं ॥ तुमयौवनाश्वसहितअश्वकारक्षा

अरुयज्ञसामग्रीसंचयकरो॥ तुम्हारे
निमंत्रणतैंयज्ञकेआरंभसमयमेंआवो
ऐसेसुणिश्रीकृस्नकोराजाआगपाईनी
जबश्रीकृस्नद्विराहोपरथ्यपेस्वारभयेता
समयमेंउत्तराअश्वत्थामाकेब्रह्मास्त्रकी
ज्वालानतैंदग्धभई॥ बिलापकरतआईत
बताकेगर्भमेंश्रीकृस्नप्रवेसकरिब्रह्मास्त्र
कीज्वालाशांतकरी॥ जबबालककोजन्म
भयो॥ ताकोंमृतकदेषिकुंतीसुभद्राबिला
पकरयो॥ जबतिनकीकरुणातैंश्रीकृस्नअ
मृतदृष्टिकरिबालकजिवायो॥ जैसेमृत
ष्टितैनककोंजिवावे॥ अरुक्षीणकुरुवंस
लियो॥ तातेंश्रीकृस्नयाकोपरीक्ष
रिकाकोगयो॥ जबहर्षयुक्त
धिष्ठिरवाकोजन्मोत्सवकियो॥ अ
गयातें॥ यज्ञसामग्रीअधा
॥ तहांसुवर्णमयकुंड॥
चनाकरी॥ औरसर्वसामग्री
व्याससुधिष्ठिरसोंबोले
अबश्रीकृस्नकोंबुलावो॥ ये
धिष्ठिरभीमसोंबोले॥ हेभीम

४४० लावो सो सु[illegible]भीमहारि का गयो तब भी
२५ को आयो सुणि श्रीकृष्ण भोजन न करत है
हां भोजन करत नही भीम को बुलाय अनेक
विधिके कौतुक कर तबा को हूं भोजन करा
यो ता पीछे तांबूल देय आसन पै बैठाय
मल पूछी तैब भीम कृष्ण सरल निवेदन कर
बोल्यो हे श्रीकृष्ण युधिष्टिर के यज्ञ में आ
प परिवार सहित चलो असै सुणि श्रीकृ
ष्ण बसुदेव बलदेव को द्वारिका कौ रखा को
राषि आप हूं दुंदुभी बजवाय सकल पुरवा
सीन को हस्तिनापुर चलिबे की आग्याय
ज्ञ प्रस्थान करवायो अरु आप हू सोल
ह हजार एक सो आठ पटराणी सहित औ
र पुत्र बांधव सेना सहित तहां ते चलत
चलत गंगा तीर आय डेरा किये अरु राजा
युधिष्टिर कों खबरि कराई जब सुणत ही
राजा सर्व बीर मंडली सहित अस्व को
आगे करि सन्मुख मिलिबे कों आयो तहां
यादव पांडव सबही यथा जोग प मिले तब
सत्यभामा देवकी सहित उत्साह ते २ रु
क्मिणी सो बोली या यग्य के अस्व को हम सब
स्त्रीजन पूजेंगी सो सत्यभामा को बचन

श्रीकृष्णयुधिष्टिरसौं कह्यो॥ जब युधिष्टि
र बोले हे सर्बबारहो तुम तयार हो पन्नश्व
के चौतरफ रहो॥ यादवनको ह्यां अश्वको
पूजन करेंगे॥ अरु धौम्यमुनि पूजा करावें
गे तब राजाकी आग्याते सर्बबारतें सहाय
ताकरत भये॥ तहां सत्यभामाको आदिदै
सर्बस्त्रीजन अश्वको पूजन करत भई॥
तापीछे उच्चस्थानमें बैठि नृत्यकरते अश्व
वको सिंगारदेषत हैं॥ ताही समयमें अनु
साल्व पाछिले बैरकों यादिकरि॥ मायाम
य अंधकारकरि अश्वको हरि लैगयो त
बश्रीकृष्ण पांडवनको चिंतातुर देषि युधि
ष्टिरसौं बोले हे धर्मराज या अनुसाल्व
कों मारिं तुम्हारे अश्वको ल्यावेगो वि
नासिको ऐसे कहि श्रीकृष्ण हस्तमें ता
बूलले के बोले हे बीरहो तुम में जो कोई
अनुसालकों मारि अश्वको ल्यावे सोय
ह ताबूल ल्यो तब ऐसे सुनि प्रद्युम्न उठि
श्रीकृष्णके हस्ततें ताबूल लेय बोल्यो हे
महाराज मैं अनुसाल्वको मारि अश्व
को ल्यावेंगो मेरी प्रतिज्ञा देषो फेरि

५० श्रीकृष्णतांबूलहाथमेंलेबोले अबजोको
ऊप्रद्युम्नकीसहायकरिवेकोंसमर्थहोय
सोयहतांबूलल्यो ऐसेसुणिवृषकेतश्रीकृ
ष्णकेहाथतेंतांबूललेयबोलो हेश्रीकृष्ण
जोमेंअनुसाल्वकोपकडिनहीलावोंतोम
हुब्रह्मणीगवनकरिजागतिकोपावेतागति
तिकोमेंपावो ऐसेकहिवृषकेतप्रद्युम्न
केसाथयुद्धकरिवेकोंअनुसाल्वकीसेना
मेंप्रवेसकियो जबअनुसाल्वप्रद्युम्नको
देषिबोल्यो हेप्रद्युम्न तपस्वीनमें जिते
न्द्रीपुरषनमें पतिव्रतास्त्रीनमें तेरोपुरुषा
र्थचलेनही अरुअविवेकीपुरषनमेंते
रोपुरुषार्थचलेहै ऐसेसुणिप्रद्युम्नपांच
बाणचलाये तबअनुसाल्वतिनबाणनको
छेदि अपनेएकबाणतेंप्रद्युम्नकोहृदयवि
दीर्णकियो जबप्रद्युम्नबाणवेगतेंश्रम
तश्रीकृष्णकेसमीपपडिमूर्छितभयो ता
कोपड्योदेषिश्रीकृष्णलज्जितभयो तब
श्रीकृष्णप्रद्युम्नकोचरणतेंताडनाक
रिबोले रे दुष्ट उठियहद्वारिकापुरीनही
है यहमहादारुणसंग्रामहै यामेंनिशंक

रणी जोपनहीं॥ असेंसु एंगं प्रद्युम्न चेतनयुक्त
भयो॥ जब भीमसेन प्रद्युम्नसहित अनुसा
ल्वसों युद्ध करिबेकों गयो॥ तहां भीमसेन
गदाप्रहारनतें अनुसाल्वकी सेनाकों मारि
रणमें गर्जना करत भयो॥ तब अनुसाल्व ए
क बाणप्रहारतें भीमकों श्रीकृष्णके पास प
टकत भयो॥ जब श्रीकृष्ण भीमके पडबेतें
क्रोधयुक्त होय युद्धकों गये॥ तहां जायतीन
न बाण अनुसाल्व पे चलाये॥ तब अनुसा
ल्व तीनों बाणकूं दि हसिके श्रीकृष्णसों
बोल्यो॥ हे कृष्ण मेरो एक बाण हूकूं दि
बाकी तेरी सामर्थ नहीं॥ अरु जो सेरहतो
मेरो एक ही प्रहार सहि॥ असें कहि एक ही
बाणप्रहारतें श्रीकृष्णकों मूर्छित किये
जब दारुक सारथी श्रीकृष्णकों रथपें डा
रि युधिष्ठिर पास लेगयो॥ तब श्रीकृष्ण
कों मूर्छित देखि पांडवनकी सेना हाहाका
र करिबे लगी॥ अरु रुक्मणीकों
आदि दे स्त्री बिलाप करत नई जब सत्य
भामा क्रोधतें श्रीकृष्णसों बोली॥ हे नाथ
तुम प्रद्युम्नके चरणप्रहारतें॥ अनुसाल्वके

प्रहारतैंके सैंन्याकुलभये ॥ अरजुनकोंगै
सैंदेषिसबबीरनजैंहें ॥ तातैंमैं चंडीहाय
अनुसाल्वकेमारिबेकोंजातहौं ॥ इतिश्री
भारतसारचंद्रिकापांअश्वमेधपर्वणिद्वि
तीयोध्यायः ॥ २ ॥ वैसंपायनउवाच ॥ ऐसें
सत्यभामाकेबचनसुणिश्रीकृष्णमूर्छि
कोंदिक्रोधकरि अनुसाल्वसोंयुद्धकरि
बेकोंफेरिगये ॥ तबवृषकेतअनेकप्र
कारकों युद्धकरिकेंसपकोंडिअनुसाल्व
कोंश्रीकृष्णकेचरणनमेंपटक्यो ॥ जबश्री
कृष्णप्रसन्नहोयवृषकेतसोंबोलेहे
कर्णपुत्रतूधन्यहै ॥ तोबिनाअनुसाल्व
कोंऐसेकोणल्यावे ॥ ऐसेंकहिश्रीकृ
ष्णभगवान अनुसाल्वकोंअभयदा
नदेय पांडवनकोसेवककहाय गीतवा
दित्रधुनिसहित हस्तिनापुरमेंप्र सकि
यो तापाछें पंत्रमास यामिद्दीषिचैत्र
पौर्णमासि निकटआणिराजाननकोंयथा
जोग्यअधिकारदियो ॥ अरुयुधिष्ठिरद्रौ
पदीसहितपोर्णमासीकेदिनयज्ञ दी
क्षालीनी ॥ तापीछेंयुधिष्ठिरद्रोपदीस

हितकेर्ण[illegible] [illegible]

धारि॥ब्राह्मणनकोव[illegible] [illegible]

हिनवेदव्यासको ग्रामम[illegible] [illegible]

लेकतकरि राजावोले॥ श्री[illegible] [illegible]

हतें यात्रा निर्विघ्न हो॥ हेअर्जुन[illegible] [illegible]

नबालकनको॥ब्रह्मनको रोग[illegible] [illegible]

कोंनहीमारणो॥ ऐसेंसुनि[illegible] [illegible]

सकोपुत्रयुधिष्टिरादिक[illegible] [illegible]

करिचले॥जबवह अश्व[illegible] [illegible]

रिपालित ऐसो माहिष्मतीपुरी [illegible]

होनर्मदामें जलपान करते [illegible]

ध्वजपकर्‍यो॥ तबअर्जुननानाप्रकारके यु

द्धकरिपुत्रपौत्रसहितनीलध्वजको अश्व

लेजामातासहितासहितको जीतो॥ तब

ऐसें सुनिजनमेजयबोलो॥ हेमुनि नील ध्व

जकेजामात कौन भई॥ सुनऋषिकुंभजापा

तालमें जनमेजयपायनबोले॥ हेराजन

नीलध्वजके नाना नाम माणी में स्वाहानाम

कन्याभई ताकोनीलध्वजपूछोहे पुत्री

तोको कौनवरूचेहें तबकन्याबोली॥ हे

तात मोको अग्नि हीस्वामी रूचेहे ऐसेंक

१० हेकन्याअग्निस्वामीप्राप्तिनिमित्ततपकरत
नई॥ तबअग्निसंतुष्टहोयविप्ररूपधारिनी
लध्वजपैंआयो॥ तबताकोंपूछे॥नीलध्वज
पूछी॥ हेविप्रतकोणकामनां॥निमित्तआयो
जबविप्रबोल्यो॥ हेराजामेंशांडिलगोत्रको
ब्राह्मणकन्यायाचीहों॥तातेंतेरसुंदरीकन्या
हेसोमोकोंद्यो॥ तबराजाबोल्यो॥ हेविप्र
यहकन्याअग्निकोंवरवेलीहे॥ जबविप्र
बोल्यो॥ हेराजनतमोकों॥ विप्रवेषधा
अग्निहीजांणो॥ तबमंत्रीबोले॥ यहकन्या
केलोभमतेंब्राह्मणआपकोंअग्निकहेहे
अैसेसुणितहीब्राह्मणकेमुखतेंज्वाला
निकसी॥ सोमंत्रिनकोंदग्धकरे तहां
तनेकनागिबचे॥ कितनेकमूर्छितभये
अैसेंतासमयमेंमहाविनोदभयो॥ ज
कन्याकीसीराजासोंबोली॥ हेमहार
जयाब्राह्मणकोंकन्यानहींदेणी॥ यु
कोईब्राह्मणकोवेषधारेंइहांआलीहे
बराजाबोल्यो॥ हेकल्याणीयाब्राह्मण
तूतेरेघरलेजायतहांयाकीपरिक्षाक
तबब्राह्मणकोंमगाले आपकेघरग

ब्राह्मण सो बोली॥ हे ब्राह्मण तुम्हारी
तामो को दिषावो॥ जब अग्नि क्रोध करि
दिग्ध यो॥ अहुता
ज्यासौक
।
॥जब
अ
ही॥ हिंदीनी॥ र
राजा नैहीनीलध्वजराजाकी
प्र ॥अहुनादिन
सहायकरतनयो॥ येसें नीलध्वज को सेनाप
सहायकर्ता अग्नि सहित अर्जुन जी सों॥ ता
पीछे नीलध्वज की नारी ज्वाला नाम है॥ सो
अर्जुन पै क्रोध करि गया तीर जापद रथ्युहो
या॥ बाण को रूप धारि बभ्रूबाहन के तर्क
समेर ही॥ सो ही ज्वाला गंगा के शाप तें अर्जु
न के नास को कारण भई॥ इति श्री नारद
सार संहिकायां अश्वमेधे हरिद्वारिका खो
पा॥ वैशंपायन उवाच॥ ता पाछें नीलध्व
ज के पुर तें अश्व आगे चलता॥ एक जो अ
न आँगण महा सिलादेखि॥ तासों स्पर्श को
घर्षण करतेनयो॥ तो सिलाका सपर्स ते
वह अश्व जड़ीभूत नयो॥
रवौ

अर्जुनसोंवह वृत्तांतकह्यो ॥ सोसुणिअर्जुननि
ताकरतनयो ॥ ताथाकें अर्जुन सोंवह वृत्तांत
कह्यो ॥ सोसुणिअर्जुनचिंताकरतनयो ॥ ता
थाकें अर्जुनन्यारोंतरफदेषत ॥ एकआश्र
ममेंविराजमान ॥ सोनरिमुनिकोंदेषितें
पासआय प्रणामकरि ॥ अपुनकोंजडीभू
होवेकोकारण पूछ्यो ॥ तबसोनरिमुनि
बोलें हेअर्जुनउद्दालिमुनिकेचंद्रनाम
पीनरे ॥ सोवाकोंपतिआगपाकरतो ॥
कोंतोंविपरीतिचलती ॥
मुनिकेपित्राकोश्राद्धहो ॥ तादिनहीं
जात्राकरतेंहुवेकोंडिन्यनामामुनि
नसहितअतिथिआये ॥ तबउद्दा
उनकोंपूजनकरिवाआपकीस्त्री
वृत्तांतकह्यो ॥ जबकों
लसोंकानमेंकही ॥ हेमुनितुमकों
मकरणोहोयसोयास्त्रीकोंबुरी
जतुम्हारेसकलकामसिद्धिहो
कमेंगौतममुनि ॥ सोमिलिप्रभा
रपासआऊंगो ॥ ऐसेंकहिकों
गये जबउद्दालकमुनिचंद्रीसों

१ आइसामग्री सिद्धकराई आप
करिप्रसन्न नये। तापाछें कोंडिन्यमुनि
लिनार्पासों बोले। हे चंडी इनपिंड
नकों गंगामें प्रवेस करावो। तबचंडी उनपि
उनकोंमलमूत्रस्थानमें नाषे। जबउद्दालि
कक्रोधकरि चंडीसों बोले। हेदुष्टचंडी तें सि
लाहो। अरु अर्जुन आयस्पर्सैं करैंगो तब ते
री मुक्ति होयगी। तातें हेअर्जुन यतं याको
स्पर्सकरिये हचंडी तो उद्दालकके सापतें मु
क्ति होयगी। अरुतेरो अश्वचलेगो। असैं
सुणि अर्जुन वा सिलाको उद्धार कियो। तब
अश्व उहातें चलि हंसध्वजकी चंपकपुरी
मेंगयो। तहां राजा हंसध्वजके। सुरथ सु
बल सुमति सुदर्शी सुधन्वा ये पांचपुत्र
तिनसहितराजा अश्वकों पकरि जुद्धको
तयारभयो। अरु एककडाहकों तेलसों भ
रि। ताकों अग्नितें तप्तकरि राजापहले
गपाकरी। जो जुद्धमें बिलंब करि आवेगा
ताकों यामें नाषेंगे। असैं सुणि सबवीर
ग्रहआये। तिनमें सुधन्वा विलंबकरि आ
यो। ताकों जुद्धमें चलते वाकी माय इन

हपतिमें तिस्नाना हो । तातें मो कों रितुदानें
केजावो । अरु जो रितुदान बिना जावे तौ गते ब्र
सहत्या को पाप होय गो । ऐसें सुणि रितुदा
न देय के गुरु को आयो । तब हंसध्वज बिल
बकरि आय पुत्र को बुलाय संष लिषित पे
दो रू धर्मसास्त्री है तिनको बुलाय राजा ब्रत
न करयो । तब वेदोक्त सुधन्वा को तमकड़ा
हमें नाषिबे को लेगये । जब सुमतिनाम मंत्री
राजपुत्र सों बोल्यो । हे राजपुत्र मेरे राजा की आ
ग्या के आधीन हो । तातें मेरो दोस है नहीं
ऐसें सुणि सुधन्वा स्नान करि दिव्य वस्त्र
धारण करि तुलसी दल की माला पहरि ह
रिनाम सकीर्तन करते को । वा कड़ाहमें नाष्या
जब वह तेल वा के पड़त ही सीतल भयो सो
सुणि राजा हंसध्वज आपु पुत्र कों हरिनाम
संकीर्त्तन करते कड़ाहमें तिरत देषि संष
सास्त्री को बुलाय कही यह कहा है । तब सं
ष बोल्यो । हे राजन यह तेल ऐसें तिन मनही
नयो । अपवा तेरे पुत्र पै मानि मंत्र मोषाष
है । तातें तेल अग्नि सीतल है के पामें नारलेना
षो । ऐसें सुणि ना राजन कड़ाहमें नाष्या । त

बवाके दोय टूक भये। सो येक टूक तो संष
मात्राके लिलाटमें लग्यो। अरु दुतिय टूक लि
षितमात्राके लिलाटमें लग्यो। तातें दोऊ
हीमूर्छित होय पृथ्वीमें पडे। इति श्रीलाल
सारचंद्रिकायां अश्वमेधपर्वणि चतुर्थोध्याय ४
लेशपापनब्राच्च॥ तापीछे सुधन्वा सनानक
रिजुद्धमें आयो। अर्जुनकी सेना बाणननें वि
दीर्णकरी। जबदोऊ सेनाके घोरयुद्ध भयो
तबअर्जुन सुधन्वाकी बहुत सेना मारि
धनुषमें सो बाण संधान करे। तिन्हें सुध
न्वा हे सत हीकाटि अर्जुनके हृदयमें दस
बाणमारे। अरु सत सहस्र। अयुत। प्रयुत
१००० १०००० १०००००
बाणवर्षा करि। अर्जुनको आछादनकर्यो
तब अर्जुन क्रोधकरि आग्नेय अस्त्र चलायो
तासुधन्वामें घाल्या करि सांतकर्यो। फेरि अ
र्जुन पवनास्त्र चलायो। ताको सुधन्वानें
पर्वतास्त्रसो निवारण कियो। तब अर्जुन
ब्रह्मास्त्र चलायो। जब सुधन्वानें ताको तीन बा
णनसों छेदन कर्यो। तब ता संकटमें अर्जु
नश्रीकृष्णको स्मरण कियो। जब श्रीकिस हो
रथमें आयस्थित भये। तब सुधन्वा बोल्यो

हे अर्जुन श्री कृष्ण के आगे प्रतिज्ञा करि
सो सुन्यो अर्जुन बोल्यो हे सुधन्वा तो
नै तेरे मन कों नहीं पट
कै मैं पड्यो अहंत ह्र प्रतिज्ञा क
न्यो बोल्यो हे अर्जुन तेरे तीन बाणन कों
न काटों तो घोर गति कों पाऊं जब श्री कृष्ण
बोले हे अर्जुन नैं बीर सुधन्वा को पुर्णार्य देषे
बिन प्रतिज्ञा मतकरें है करी अरु तीन ही
बाणन नैं यह के मर ग्यो तातें पहलां ह मही
किये ऐसें सुनि अर्जुन धनुष पे कालाग्नि
न्य बाण धर्यो ताकौं देषि श्री कृष्ण निजपु
न्य बाण में धरन बोले गोवर्द्धन धरण तैं मैं
गायन कौं रक्षा करी ताए जोतैं यह बाण अ
र्जुन को मनोरथ सिद्ध करे अरु तिन को
पुन्य देषिवे कों आकाश में देवता आये
ता समय में अर्जुन धनुष कों पैंचि बाण च
लायो सो [illegible] ताहि सुधन्वा एक बाण ही
करि काट्यो तब दूसरो बाण चलायो सो
ह काट्यो ताहि देषि अर्जुन की सेना में हाहा
कार होत भयो तब अर्जुन तीसरो बाण सा
ध्यो ता बाण के पाछिले भाग में ब्रह्मा अरु

प्रयागमैं रुद्रकौं स्थापन कर्यो ॥ तब
बाणमैं रामावतारमैं जो पूर्व
॥ तब ताबाणकौं बांधतो ही
बोल्यो ॥ हे शिव तेरे चरणप्रा
अर्जुनके जन्ममें सम्पतानतें
करौ ॥ ऐसे कहि ऋषि रूपं ब्रह्माणतें
तासरो हूं बाणबाद्यो ॥ ताकौ मि
थिमर्व राजा अर्जुन श्रीकृष्ण हूं हस्योकारले
रत भयो ॥ तब ता क्रिल हूं अर्जुनके बाणनें दु
मनुष्यकौ सिर काट्यो ॥ तब वह सिर उडत हूं
अर्जुनके हृदयमें प्रहार करि श्रीकृष्णके चर
णनमें पर्यो ॥ तब श्रीकृष्ण हूं ता सिरकों हस्त
तें आपगरुडकों दियो ॥ अरु गरुड हूं ता
सिरकों प्रयागमें डारिवेकों ले चल्यो ॥ तब
पथमार्गमैं आपु गरुड सौं बोल्यो ॥ यह शि
रकौं ले जाय है ॥ तब गरुड बोल्यो ॥ हे शि
व तुम्हारे भक्त शिरकों प्रयागमें डारिवेकों
ले जात हूं सो सुनि शिव मस्तक हूं ले वेगग
रुडकौं बपुपादानी ॥ जब मार्गमें गरुडसौं
यो शिवकौ गापान सौ
नामेश्वरजिनकौं रपि. मंदो

४० रसोंगरुड़कोंउड़ायो। तबउड़तहू गरुड़
२ प्रयागकोंपहुंचेतो। शिरकोंतहांतोछांज
बपड़तो। सिरकोंतहांगरुड़ग्रहणकरि। शिव
कोंआपसमर्पणकर्यो। तबतोकोंशिवहू
मुंडमालामेंमथनांयककर्यो। ऐसेंवो
ऊपुत्रनकोंयुद्धमेंमरेजाणि। क्रोधतें
युद्धकरिबेकोंहंसध्वजआयो। तबश्री
कृष्णराजापेंजायबोले। हेहंसध्वजजोभ
वतमहोसोतयो। तातेंअवअस्वदेकेंअजु
नसोंमित्रताकरो। ऐसेंसुणि कृष्णके। का
तेहंसध्वजअस्वकोंअर्जुनकेनिवेदनक
रि। तापीछेंअर्जुनकोंपांचदिननिजनग
रमेंराषि अस्वकोंआगेंकरिबेकोंआपहू
तिनकेसंगचल्यो। ऐसेंअस्वअनेकबि
चरतएकसरोवरमेंजलपानकरिबेकों
गयो। जहांजलपानकरतहीघोड़ीभयो। त
हांतेंदुतियतड़ागमेंस्नानकरतही व्याघ्र
तेअस्वहीनयो। ऐसेंअनेकआश्रमनमेंग
यो। तहांप्रमीलानामस्त्रीलक्षनारीसहि
तअर्जुनसोंयुद्धकरिबेकोंआई। तहांघो
रयुद्धभयो। जबअर्जुनकोसबबाणनईहेअ

र्जुनयुद्धमेंस्वाहतातूपसाहसमवि[illegible]
रूजोजीवनकीइछाहैतोयाकोब[illegible]
सुणिअर्जुनतासौविवाहकरि[illegible]
तवाकोहस्तिनापुरपठाई॥तहाते[illegible]
नमेंभ्रमतभीषणनामराक्षसक[illegible]
तहांघोरयुद्धकरिराक्षसनकोजीति[illegible]
अश्वायन रथ्या॥लेकेचलतप्रागज्यो[illegible]
पुरकोगयो॥तबतहांकूकेराजादत्त[illegible]
नानदिनमेंजीत्यो॥तहांतेअश्वसिंधुदे
समेंगयो॥जहांदुःशलामरपुत्रकी[illegible]
वाकेबालककोलेकेआपअर्जुनसौ[illegible]
हेभ्राता मेरापुत्रतेरोनामसुणतहीं[illegible]
यहतेरे भाणजेकोपुत्रहै॥तातेअवपा[illegible]
राजस्थापनकरि॥तबअर्जुनदुःशलाकौ
सुषतेभाणजेकोमरपासुणिआपवि[illegible]
करि॥वाबालककोराज्यदेपदुःशलाके
समाधानकरि॥मणिपूरनगरपहुंचे॥त
हांबभ्रुबाहनराजकरतहो॥जहांसर्व
जनसमेवादी॥स्त्रीपतिव्रता॥अत्यजा
अकलसनकी॥ऐसामणिपूरनगरहोति
यवेकुंठसमदेषिअर्जुनहर्षअधूनसौ

पूछी हे राजा पहनगर कोणको है सो कहो त
व हैसध्वज बोल्यो हे अर्जुन पह नगर को रा
जा बभ्रूवाहन है ताको मैं सुबर्णरत्न नकन
रे ऐसे है जो सब कष्टमति बसंकरयो है आ
सब गुण पुत्र पहराजा नारायण तुल्य है ओ
रु सुमति नामा धर्मात्मा मंत्री है ता तैपासै
दुष्ट कारि जातिबो कठिन है ऐसे बात कर
त है अर्जुन के किरीट पर मत्स्य सूचक गाथ
आय बैठ्यो ताको देषि सब है त्रास पायो
अरु ताही अवकास में बभ्रूवाहन के सेव
क गए अश्व को पकडि लेगए तहा जाय सनामें
सिंघासन पै बैठे बभ्रूवाहन को दिषायो त
ब बभ्रूवाहन वा अश्व के पत्र को बांचि युधि
ष्ठिर के अश्वमेध को अश्व अर्जुन जो कीर
त्तिक जाणि सुमति मंत्री सों पूछ्यो हे सुम
ति मेरी माता अपने पिता के मंदिर में नृत्य
करत ही तब ताल में चूकी जाणि पा को श्रा
प दियो हे पुत्री तू जलमें मकरी होय रहेगी
अरु जब अर्जुन को चरणस्पर्स होयगो त
ब तू निज रूप पावेगी अरु अर्जुन ही तेरो भ
र्त्ता होयगो सो ऋतालनते सो ही भयो तो मैं अर्जुन

तैमैंपुत्रभयो॥जबअर्जुनमोकौंअरुमेरीमाता
कौंछोरि॥युधिष्टरकैपासगयो॥तापीछैमेंमे
रमातामहकौराज्यपायो॥येपुत्रअर्जुन
कौहै॥सोअबयहसुमतिमेरापिताकौअश्वपे
जोहैबिनाबिचारेंहील्यायो॥तातेंअबकहाकि
येकुसलहोयसोकहो॥जबसुमतिबोल्यो॥हेरा
जनयहकोईबिनाबिचारेंहीनयो॥तातेंअ
बबहुबित्तराजसहितअश्वकौंअर्जुनकौं
अर्पणकरिप्रसन्नकरो॥अरुजैसेंअर्जुनर
क्षाकरेंहो॥तैसेंहीवर्षपर्यंततुमकौंयाअश्वकी
रक्षाकरिबोजोग्यहै॥इतिश्रीभारतेनआरचैद्रि
कायांअश्वमेधपर्वणिहिंदीभाषा॥५॥बेषा
ध्यायनउला॥ऐसेंसुमतिकेवचनसुणिब
भ्रुवाहनसेनासहितअश्वकौंआगेकरि
अनेकप्रकारकीअद्भुतसामग्रीलेयअर्जु
नपैजाय॥प्रणामकरिसन्मुषठाडोहोयहा
थजोडिबोल्यो॥हेतातमेंतुम्हारापुत्रहौं
चित्रांगदामेरीजननीहै॥अरुउलूपीनेमो
कौपाल्योहै॥बभ्रुवाहनमेरोनामहै॥अरु
मेरोआपकौपहचाणिबिनामैंपरया
धीनेंअश्वकौग्रहणकियो॥तातेंआपपा

पु० अश्वकौ ग्रहण करौ ॥ अरु यह राज्य अ
४ रु हरि मोकौं आग्या करिये ॥ ऐसे सुणि प्रद्यु
म्न कौं आदि दे सब ही बीर अर्जुन सौं बोले ॥
पार्थ व यह प्रणाम करत है तिहारी पुत्र कौं
हृदय सौं लगाय के मिलौ ॥ यह अति तेजस्वी
बुद्धिमान है ॥ ऐसे सुणि वचन बभ्रुवाहन ताकै वस
होय ॥ अर्जुन ताके सिर मैं लात मारि क्रोध तें
बोल्यौ ॥ हे मूढ ऐसो नय नाहि तू मेरौ पुत्र न
हीं ॥ चित्रांगदा मैं वेस्या तैं तू नपौ है ॥ अरु प
उब बीर्य तू नहीं ॥ प्रथम अश्व कौं न बल तैं
ग्रहण कियौ ॥ अब मेरे बाण प्रहार लागे बि
ना ही यह कायरता कैसे आई ॥ अरु देषि पु
त्र मेरो अभिमन्यु है ॥ जो जुद्ध मैं द्रोणादिक बी
रन कौं बिमुष करि चक्रव्यूह मैं दियौ युधिष्टिर कौं
रक्षा करी ॥ अरु तेरे बाण प्रहार हृदय मैं लागे बि
ना ही है दुर्बुद्धि नय भीत कैसे भयौ ॥ अरु गंध
र्व राज की पुत्री तेरी जननी घर घर नृत्य करै
ताकै संग तू गान करि ॥ ऐसे सुणि बभ्रुवाह
न क्रोध तैं भ्रकुटी चढाय ॥ ल्याई वस्तु मात्र स
ब पाछी पठाय ॥ जुद्ध करिबे कौं रथ पै सवार
होय पिता सौं बोल्यौ ॥ हे तात युद्ध कौं न पारै

बाणनतेंतुमकोंमारोंगो॥तेरोकोएरत्तकहै
ऐसैंकहियुद्धमेंआयेसजोअनुसाल्वताको
बाणप्रहारनतेंमूर्छितकरिपृथ्वीमेंपटक्यो
ताकोंमूर्छितदेषिप्रद्युम्नयुद्धकरिबेकोंआ
यो॥तबताहूकोंएकबाणतेंमूर्छितकियो
तापीछेंवृषकेतुनीलध्वजअरुपुत्रसहित
यौवनाश्वसपुत्रहंसध्वज॥इनहूकोंएक
एकबाणतेंमूर्छितकियो॥औरअनेकबी
रनकोंबाणनतेंछिन्नभिन्नकरिनजायो॥त
हांकोऊबीरनाजनैंकहूंवेगजकेसरीरमें
प्रबेसकियो॥तबह्मताकोंकोईपिसाचआ
मवैचिबाकीआंखिनिकोंसिंदूरपमत्तणकि
यो॥अरुकाहूबीरकोकट्योसिरनेत्रनसों
आपकेकबंधकोंनाचतेंदेषतभयो॥ऐसें
बभ्रुबाहनअर्जुनकीसेनाकोंछिन्नभिन्न
करि॥रथ॥हाथी॥अश्व॥धन॥रत्न॥दासी
दास॥येसबआपकेनगरमेंपठुचाये॥इति
श्रीभारतसारचंद्रिकायांअश्वमेधपर्वणिविंश
तोध्याय॥६॥वैशंपायनउवाच॥बभ्रुबाहन
केअरुअर्जुनकेऐसोयुद्धभयो॥जैसोराम
चंद्रकेअरुकुसकेभयो॥जबरननमेंजय

यज्ञकौ ग्रहण करौ ॥ अरु यह राज्य अंगीका
र करिबे कौ आग्या करिये ॥ ऐसे सुणि प्रद्यु
म्न कौ आदि दै सब ही बीर अर्जुन सो बोले हे
पार्थ यह प्रणाम करत है तिन कारी पुत्र कौ
हृदय सो लगाय कै मिलौ ॥ यह अति तेजस्वी
बुद्धिमान है ॥ ऐसे सुणि नवरत बचन ताके बस
होय अर्जुन ताके सिर मै लात मारि क्रोध तै
बोल्यो हे मूढ अरे नयनीन तू मेरो पुत्र न
ही चित्रांगदा मै बेस्या तै तू नपौ है ॥ अरु पा
उ बाधत नही ॥ यज्ञ मेरे अश्व कौ न बल तै
ग्रहण कियो ॥ अ मेरे बाण प्रहार लागे बि
नाही यह कायर ताके सं ॥ अरु देषि पु
न मेरो अभिमन्यु हो जो युद्ध मै द्रोणादिक बी
रन कौ बिमुष करि चक्रव्यूह नै दि युधिष्ठिर कौ
रक्षा करी ॥ अरु तेरे बाण प्रहार हृदय मै लागो बि
नाही है दुर्बुद्धि नपभी त कैसे नयो ॥ अरु गंध
र्वराज की पुत्री तेरी जननी धरि धरन स्य करे
ताके संगत गानक हि ॥ ऐसे सुणि बभ्रुवाह
न क्रोध तै भ्रकुटी चढाय ॥ ल्याई बल मात्र से
ब पाछौ पठाय ॥ युद्ध करिबे कौ दृढ चपे सवार
होय पिता सो बोल्यो हे तात युद्ध कौ न पारे हो

ऐसेकहियुद्धमेंआयेसजोअनुसाल्वताकौ
बाणप्रहारननतेंमूर्छितकरिपृथ्वीमेंपटक्यो
ताकोंमूर्छितदेषिप्रद्युम्नयुद्धकरिवेकोंआ
यो॥तबताहूकोंएकबाणतेंमूर्छितकियो
तापीछेवृषकेतु॥नीलध्वज॥अरुपुत्रसहित
यौवनाश्व॥सपुत्रहंसध्वज॥इनहूकोंएक
एकबाणतेंमूर्छितकियो॥औरअनेकवी
रनकोंबाणननतेंछिन्नभिन्नकरिजबपौत
हाकोऊबारनाजनकदेहवेगजकेसरीरमें
प्रवेसकियो॥तबहीताकोंकोईपिसाचआ
मषैचिवाकोंआभिनिकोंसिद्धदयनलगणकि
यो॥अरुकाहूबीरकोकण्ठ॥सिरनेत्रनसों
आपकेकबंधकोंनाचतदेषतभयो॥ऐसे
बभ्रुवाहनअर्जुनकीसेनाकोंछिन्नभिन्न
करि॥रथ॥हाथी॥अश्व॥धन॥रत्न॥दासी
दास॥येसबआपकेनगरमेंपठवाये॥इति
श्रीभारतसारचंद्रिकायांअश्वमेधपर्वणिछ
ष्ठोध्याय॥६॥वैशंपायनउवाच॥बभ्रुवाहन
कोंअरुअर्जुनकोऐसोयुद्धभयो॥जैसोराम
चंद्रकेअरुकुसकेभयो॥जबअर्जुनमेंजय

पु०
४

अश्वकोग्रहणकरो॥ अरुयहराजअंगीका
रकरिमोकोंआग्याकरिये॥ ऐसेसुणिप्रद्यु
म्नकोंआदिदेसबहीवीरअर्जुनसोंबोलेहे
पार्थवपहप्रणामकरतहितकाराजपुत्रकों
हृदयसोंलगायकेमिलो॥ यहअतितेजस्व
बुद्धिमानहे॥ ऐसेसुणिमधुरबचनाकेबस
होय॥ अर्जुनताकेसिरमैलातनमारिक्रोधते
बोल्यो॥ हेमूढऐसेनयनीतिनमेरोपुत्रन
ही॥ चित्रांगदामेंबेस्यातेतनयोहे॥ अरुप
उववायतुनहीं॥ यज्ञकेअश्वकोनबलते
ग्रहणकियो॥ अबमेरेबाणप्रहारलागेबि
नाहीयहकायरताकेसैंआइ॥ अरुदेखिपु
त्रमेरोअभिमन्युहो॥ जोयुद्धमेंद्रोणादिकवी
रनकोविमुषकरिचक्रव्यूहमेंयुधिष्ठिरको
रक्षाकरी॥ अरुतेरेबाणप्रहारहृदयमेंलागेबि
नाहीहद्बुद्धिभयभीतकैसेभयो॥ अरुगंध
र्वराजकीपुत्रीतेरीजननीघरघरनत्यकरे
ताकेसंगतगानकरि॥ ऐसेसुणिबभ्रुवाह
नक्रोधतेभ्रकुटीचढायक्रोधायबनमात्रस
बपाछौपठाय॥ युद्धकरिबेकोंउद्यतसवार
होयपितासोंबोल्यो॥ हेतातयुद्धकोनपारहे

बाणनतैंतुमकोंमारोंगो॥नराकोणरितकहि
ऐसेकहियुद्धमेंआयेसजो॥अनुसाल्वताको
बाणप्रहारननतेंमूर्छितकरिपृथ्वीमेपटको
ताकोंमूर्छितदेषिप्रद्युम्नपुरुकरिबिकोंआ
यो॥तबताहूकोंएकबाणतेंमूर्छितकियो
तापीछेंबृषकेतु॥नीलध्वज॥अरुपुत्रसहित
योवनाश्व॥सपुत्रहंसध्वज॥इनहूकोंएक
एकबाणतेंमूर्छितकियो॥औरअनेकबी
रनकोंबाणननतेंछिन्नभिन्नकरिनजापेंत
हाकोऊबीरनाजातेंकदेहूवेगजकेसरीरमें
प्रवेसकियो॥तबहलताकोकोईपिसाचआ
मषेचिवाकीआंषिनिकासिकरूपनकूपाकि
यो॥अरुकाहूबीरकोकटोंसिरनेत्रनसों
आपकेकबंधकोंनाचतेदेषतभयो॥ऐसें
बभ्रुबाहनअर्जुनकीसेनाकोंछिन्नभिन्न
करिरणमेंजीतिसुरक्षाकरिगोपनरहेजो
दास॥येसबआपकेनगरमेंपहुचाये॥इति
श्रीभारतसारचंद्रिकायांअश्वमेधपर्वणि
षष्ठोध्याय॥६॥वैशंपायनउवाच॥बभ्रुबाहन
के॥अरुअर्जुनकेऐसोयुद्धभयो॥जैसेराम
चंद्रकेअरुकुसकेभयो॥जेवज्रन्मनप

१० बोले॥ हेमुनि॥ रामचंद्रके लवकुसकेकोण
कारण तैके सें उत्पन्नभयो सो कहो॥ तब वैश
पायनबोले॥ हे राजन रामचंद्र रावणकुं न
करणा इंद्रजीतलका बासीरा तमनकोमा
रि॥ सीतासहित अजोध्यामेराजकरतहे॥ त
हा सीताको गर्भवती देषबोले॥ हे सीता तु
म्हारी वांछा कहाहे॥ तबसीता बोली॥ हे ना
थ मेरे वांछा यहहे॥ वनमें जाय मुनिनकी से
नको बल लंकार रयतनकी सेवाकरो
यह सुनि रामचंद्र तयारु कहि वाहि आप
नहाइतवके सुपवैरजककी करी सीताकी
निंदा सुणिके बोले॥ हे लक्ष्मण सीताको
वालमीकके आश्रम निकट छोडो॥ जबल
क्ष्मण रथमें बैठाय सीताको बाल्मीकके
आश्रम निकट छोडि रामचंद्र पै आये॥ त
हा रुदन करती सीताको देषि बाल्मीकजि
न आश्रममें लेगये॥ जहां सीताके दोय पु
त्र भये जिनको जातिकर्म नामकर्ण बाल्मी
कजीकी कुस लव दोऊनके नाम धरे॥ ता
के रामचंद्र अस्वमेध तोके तपले॥ अश्व
मेध यज्ञकोआरंभकियो॥ ता यज्ञके अश्व

पात्राकरतबाल्मीकमुनिकेआश्रमगयाजो
अश्वकोलवकुसबांधि।रामचंद्रकीसेनाको
मारिभजाई।तबरामचंद्रसेनासहितआये
तिनहूकोंकुसक्षिणमात्रहीमेंजीते तैसेही
हेराजाजनमेजयबभ्रुबाहनहूअर्जुनकोजी
त्यो।यबओरहूबभ्रुबाहनकोपराक्रमसु
णो॥तापीछेयुद्धकरतेहैंसधजकेपुत्रसु
वेगकोएकबाणप्रहारतेंमूर्छितकरिऔ
रबीरनकेसिरपंकुफललोंप्रथ्वीमेंनाषेत
सनामेंकर्णकोपुत्रवृषकेतुअर्जुनपैदोयहीबी
चरहे।औरसबबीरनकोउलूपीआसाधि
बलतेराषतभई।जबअर्जुनवृषकेतुतेंबो
ल्यो।हेवृषकेतुतुमेरेपासरहेगोतोमरेगो
तातेभीमकेपासजायमेरोमरणकहो।औ
रयपरीक्षितयुधिष्टिरयगमसमाभनहो(?)
ल्यो।सोमरेहियमेंसालहै।तबवृषकेतु
बोल्यो।हेअर्जुनमेंमातिकेनयतेंतोकोछो
ड़िजाऊंनहीं।अरुजोजाऊंतोमेरोपितामे
हसूर्यलज्जितहोय।ऐसेबोलिपांचबाण
बभ्रुबाहनकेदिये।तबबभ्रुबाहनवृषके
तकोसिरकाटिअर्जुनकेपांवनमेंपटक्यो।

जबभगवन्नामकीर्तनकरत ऐसोवृषके
कोसिरअर्जुनउठामहलमेलेबिलापकरत
भयो हेपुत्रमैंतोबिनायुधिष्ठिरपैजायक
हाकहोंगो मैंतेरेपिताकोमारिअबलोको
ह्वराम्पलो नतेमरायो ऐसेकहिकेसुर
सोरुदनकरतभयो हेश्रीकृष्णतुमकहा
गये पापकर्ममेरो [illegible]लोगकेलोकियो ऐ
सेंबोलिवृषकेतकोपिरहृदयमेधरिमूर्छि
तहोयपड्यो जबबभ्रुवाहनअर्जुनकेहृदय
मेधनुषकोटिकोप्रहारकरिबोल्यो हेपा
र्थहमबभ्रुवाहनसोतोको अरुवृषकेतकोता
लिबेको अबयह [illegible] अधिकहोयसोदे
खे ऐसेसुणिअर्जुनवृषकेतकोसिरभूमि
मेधरिधनुषधारिबोल्यो तेंमेरेसबबीर
मारे तातेअबपर्वतनदीमेरबाणकोप्रह
रसहो ऐसेबोलिबाणप्रहारकियो तबब
भ्रुवाहनता[illegible]बाणकोकाटिअर्जुनकोमू
र्छितकरिबोल्यो हेपार्थ द्रोणाचार्यतेपा
ईधनुषविद्यातकेसीभल्यो अरुपनिहता
मेराजननीकोवृथाहीतकरतनाकेपातक
सोनिवाहन्तल्यो अरुतेरेस्मरणतेश्राद्ध

सहस्रायेनहो॥ ऐसैंसुणिअर्जुनउठिएक
बाणबभ्रुवाहनकेऊरपमैंमारयो॥ जब
बभ्रुवाहनज्वालारूपअर्धचंद्रकारबा
णतैं॥ अर्जुनकौसिरछेदनकियो॥ तबसब
वीरहाहाकारकरतेभये॥ तहांचित्रांगदा
आयपुत्रकेमारेपतिकौमस्योदेषिविलाप
करतभई॥ हाकांतइहां आयसेवकजन
मोसैंनासुणबिना॥ पुत्रकेआतिथ्यतैंसु
षितहोयसोवहकहा॥ ऐसैंबिलापकरि
सपत्नीउलूपीसैंआलिंगनकरि॥ पृथ्वीमैं
लुठतभई॥ जबबभ्रुवाहनमाताकौंयहदसा
देषिदुःषतैंमरिबेकौंतयारभयो॥ तबउल
पीसंजीवणिमणिकौस्मरणकियो॥ जबपाता
ललोकसैंमणिआई॥ तामणिकौंलेयसिरक
बंधसैंलगायो॥ अर्जुनकेऊरपमैंमणिधरि
जिवायो॥ औरहमरेबीरनकौंअमृततैंजिवाये
जबअर्जुनलज्जितहोयपृथ्वीकौदेषतभ
यो॥ तबउलूपीहाथजोडिबोली॥ हेनाथतु
मधन्यहो॥ पुत्रतैंपराजयपुन्यपुरषहीपा
वैहै॥ जबतुमभीष्मकौंमारे॥ तबबसुन
कौशापभयोहो॥ भीष्मकौंमारिबेवालोनि

१० जब भगवन्नामकीर्तनकरत। ऐसो वृषके
कौ सिर अर्जुन उठाय हृदय मैं लै। विलाप करत
भयो। हे पुत्र मैं तो बिना युधिष्ठिर के आप के
हाक हौंगो। मैं तेरे पिता को मारि अरु तो को
हरायलो मैंने मरायो। ऐसे कहि ऊंचे सुर
सों रुदन करत भयो। हे श्रीकृष्ण तुम कहा
गये। या कष्ट में मेरा परित्याग कैसे कियो। ऐ
से बोलि वृषकेतु को शिर हृदय मे धारि मूर्छि
होय पड्यो। तब बभ्रुवाहन अर्जुन के हृदय
मे धनुष की टेको प्रहार करिबो भयो। हे पा
र्थ तुम ब्रूप है सो ता को अरु वृषकेतु को ता
लिबेको आयो है। जो मन अधिक होय सो मार
यो ऐसे सुणि अर्जुन वृषकेतु को सिर भूमि
मे धारि धनुष धारि बोल्यो। तैंने सर्व वीर
मारे तातें अब पर्वत भेदी मेरे बाण को प्रह
र सहो। ऐसे बोलि बाणप्रहार कियो। तब ब
भ्रुवाहन ता बाण को काटि अर्जुन को मू
र्छित करि बोल्यो। हे पार्थ द्रोणाचार्य ते पा
ई धनुषविद्या तन कैसे भूल्यो। अरु पाछे छता
मेरी जननी को व्यथा दीनी तकर नाकु पातक
सो किया है भूल्यो। अरु तेरे मरण ते श्राद्ध २४

सहसायेनहीं॥ ऐसेंसुणि अर्जुनउठिके
बाणे बभ्रुवाहनके उरपमें मार्‍यो॥ तब
बभ्रुवाहनज्वालारूप अर्धचंद्रकारबा
णतें अर्जुनकोसिर छेदनकियो॥ तबसब
वीरहाहाकारकरतेभये॥ तहांचित्रांगदा
आपपुत्रकेमारेपतिकोंमर्‍यो देषिविलाप
करतभई॥ हाकांतहा आयसेवकजन॥
सोंतेनासुणविना॥ पुत्रके आलिंगनतेंसु
षितहोयसोवहकह्यो॥ ऐसैंविलापकरि
सपत्नीउलूपीसों आलिंगनकरि॥ पृथ्वीमें
लुठतभई॥ जबबभ्रुवाहनमाताकोंयहदसा
देषिहृदयमेंमरिवेकोंतयारभयो॥ तबउल
पीनेंसंजीवणीमणिकोस्मरणकियो॥ जबवानैं
त्रैलोक्यमेंमणिआई॥ तामणिकोंलेयसिरके
बंधसोंलगायो॥ अर्जुनकेहृदयमेंमणिधरि
जिवायो॥ औरहूमरेवीरनकोंमणितेंजिवाये॥
जब अर्जुनलज्जितहोय पृथ्वीकोंदेषतन
भयो तबउलूपीहाथजोडिबोली॥ हेनाथतु
म...हैं॥ पू...नेंपराजयपुत्रपुरषहभया
वैहैं॥ अबतुमभीष्मकोंमार्‍यो॥ अबवसुन
कोंशापनयो॥ भीष्मकोंमारिवेवालोचि

जपुत्रतैंमरैगो॥ अरुतैसैंही गंगाकोह
भयोहो॥ तातैंपहदसाभई॥ औरअन्यपोहस
इबिजई तौकोकोणजीतै॥ अरुमेरोपितामेरी
प्रार्थनातैं तुम्हारीकरुणाकरिसंजीवकमणि
पठाई॥ तातैंतुमसहित सर्ववीरजिये॥ ऐसैसु
णि अर्जुनदोऊनापीसैंपुत्रसोंमिलि प्रसन्न
होय पुत्रकोसंगलेय अश्वसहित॥ आगेंचलि
वेमैंसकितहोयश्रीकृष्णकोस्मरणकियो॥
तहांश्रीकृष्णसहितभीमआयो॥ जबश्रीकृष्ण
अनेक इतिहासकरि॥ अर्जुनकोसमा
धानकरयो॥ तबबभ्रुवाहनश्रीकृष्णकेभीम
केचरणनमैंप्रणामकरि॥ अनेकरत्नमणि
माणिक्यभेटकरे॥ जबश्रीकृष्णकीआग्यातैं
भीमसेन चित्रांगदाउलूपीको धन॥ अद्भुतगज
अश्वरत्नादिसामग्रीसहित हस्तिनापुरप
हुंचाय॥ युधिष्ठिरपासजाय सर्ववृत्तांतक
ह्यो॥ अरुकुंतीहू आपकेचरणनमेंप्रणामक
रती॥ चित्रांगदाउलूपीकोआशीर्वाददेय
निजभवनमैंराषी॥ इतिश्रीभारतेआश्वमेधि
कापर्वणि [illegible] ७३ [illegible]
तापीछेंश्रीकृष्णसहित अर्जुनबभ्रुवाह २९

नकैंसंगलेयआगेचले॥तहांमार्गमेंताम्र
ध्वजपितामयूरध्वजकेअश्वमेधकेअश्वकी
रक्षाकरतमार्गमेंअर्जुनकेअश्वकोआपकेअ
श्वतेंमिलतदेषिबहुलध्वजमंत्रीसोंबोल्यो।
यहअश्वकोणकोहै।जबमंत्रीपत्रबांचिनि
वेदनकर्‌यो॥तबताम्रध्वजअश्वकोयहण
कर्‌योपुहकौतयारहोयबोल्यो।हेबहुलध्वज
महाराजमयूरध्वजसप्तमअश्वमेधकरे
हैं।सोयाअश्वतेंअष्टमअश्वमेधहूहायगे
गो।असेंबोलिअश्वकोंरत्नपुरपठायो।
तापीछैआपआयअर्जुनकेसर्ववीरन
कोमूर्छितकरे।तबअर्जुनश्रीकृष्णसों
बोल्यो।हेश्रीकृष्णयहकोणराजाहैजाके
पुत्रनेंसर्वसेनाजीती॥जबश्रीकृष्णबोले
हेअर्जुनयहरत्नपुरपतिमयूरध्वजताको
पुत्रताम्रध्वजहै।अबयाकोसाहसमें
ताकोंदिषाऊंगो॥तातेंमेंतोवृद्धब्राह्मण
बणोहौं।अरुतूबालकबणिमेरेसंगच
लि।असेंकहिश्रीकृष्णअर्जुनसहितयज्ञ
मंडपमेंआए।तहांब्राह्मणदेषतहीमयूरराजा
सोंबोले।हेराजेंद्रतेरेघरलिखो।मैंशिष्य

४०
५

पत्रकोवैसेंहीघोमि चंद्रहासकेरूपपैध
रिपरआई ॥ जबचंद्रहासजागिमदनपेजा
यपत्रसोंपायो ॥ तबमदनपत्रमेंविषयाको
प्रदातव्या ऐसेंबांचि ॥ प्रसन्नहोयब्राह्मण
कोंबुलायविषया चंद्रहासकेबिबाहको
लग्नपूछो ॥ जबब्राह्मणबोले अबहीसुभ
लग्नहै ॥ तबमदनपरमउत्सवतेंमहामंग
लबिवाहकियो ॥ अरुकन्यादानकेसमय
मेंचंद्रहाससोंगोत्रपूछ्यो ॥ तबचंद्रहासक
ही ॥ मेरोहरिगोत्र ॥ हरिपिता ॥ हरिपितामह
हरिहीप्रपितामहहै ॥ ऐसेंसुणिमदनहूह
रिप्रीतिपूर्वकन्यादानकरि ॥ अग्निमेंहोमकरि
समपदीकरवाय ॥ तापीछे रूपद ॥ पोता
मेंधन ॥ गज ॥ अश्व ॥ रथ ॥ ग्राम ॥ उष्ट्र ॥ म
हिषी ॥ दास ॥ दासी ॥ रत्न ॥ माणिक्य ॥ मौक्ति
कहार ॥ औरअनेकआभरण ॥ वस्त्र ॥ येसब
बिषयासहितचंद्रहासकोंदेयकेबोल्यो ॥
हेचंद्रहासमेरो ॥ सरपर्यंतसर्वस्वतेरोही
है ऐसेंबोलिफेरिजाचकनहूकोंबहुत
दानदियो ॥ इतिश्रीभारतसारेजैमिनीया
श्वमेधेपर्वणीचंद्रहासोपाख्यानं ॥ १० ॥ नारदउवाच

तापीछें धष्टबुद्धि चंदनावती पुरी मेंजाय कें कु
लिंदकों निगड बंधन करि अजानकों बहुत
पीडा करी। अरु कुलिंद कों अनेक प्रकार
ताडना करिबो ल्यो। हे कुलिंद तेरो पुत्र दी
नां पुन्याज लेयात मदनें देवमंदिर आ
दिक व्याह मेरो बहोत धन नास कर्यो। ऐ
सें करि कुलिंद कों दृढबंधन तें बांधि उहां तें कुं
तलपुर कों आयो। तहां मार्ग में जीर्ण सर्प आ
य बोल्यो। हे धष्टबुद्धि तेरे पिता के कोस में
में बहोत काल वास कर्यो। अरु तेंहू बापना
नाकों अधिक ह्वै बधायो। तातें मैं आजि लों
तो बहुत प्रसन्न रह्यो। अब तेरो पुत्र सर्व को
स चंद्रहास कों देयगो सुनकें मैं कों निकास्यो
जब [redacted] के धष्टबुद्धि ऐसें सर्प
के बाक्य सुणि क्रोध करि निजमंदिर आयो
तब मदन पिता कों क्रोधवंत जाणि बचन बो
ल्यो। हे पिता मैं आपके निषमाणि कें बिषया
को व्याह करि धन रत्न गज अश्व आदि
सर्वस्व देय कछू हराय्यो नहीं। ऐसें सुणि
प्रथम गायक बालिको धष्टबुद्धि बहुत दुखी
भयो। अरु तापीछें चंद्रहास कों कपटसों

स्व० समाधांनकरि ॥ आप अैसें चिंताकरतभये
४६ जो यह चंद्रहास जीवतरहैगो तो मेरे कुल
को नास करैगो ॥ मैं या के पिताकों पीडाकरी
प्रजाकों दंड दे यनगरकौ लूटि धन लीयो
सो यह वृत्तांत सुणि चंद्रहास मोसों वैर लो
लियो चाहैगो । या कारण तें चंद्रहासकोंमा
रणो ॥ कन्याविधवाहोयतो नलैहैं ॥ अरु
मोकें मुनीनको बचन हू मिथ्या करणो है
अैसें बिचारि चांडालन कों एकांतमे बुला
यउनसों बोल्यो ॥ हे चांडाल हो तुम कों पहलै
मैं वा बालक के मारिबेकों कह्यो हो ॥ सो तुम
मोसों बंचकताईकरी ॥ वह बालक अब
तरुण होय ॥ मसबधको बसकरी ॥ ता तें अै
सो हूं अपराध तुम्हारो क्षमाकरि मैं कहूं
हूं सोकरो ॥ नगर के बाहर चंडिका के मंदि
र मैं आयुध धारि सावधान रहो ॥ उहां रा
त्रमें जो नर आवै ता कों मारो ॥ अैसें धृष्टबु
द्धि के बचन सुणि चांडाल स्याम बस्त्र धार
ण करि अपणा माथिक चंडिका के मंदिर मैं
रहे ॥ ता पीछें धृष्टबुद्धि चंद्रहास सों बोल्यो
हे चंद्रहास हमारी कुलदेवी चंडिका बन मैं

हो तहां तुमरा त्रिमें इक लेही जाय पूजनक
रि आवो तहां वाही दिन कुंतलपुर राजे गाल
व पुरोहित कों बुलाय आपके सरीर की
चेष्टा कही हे गुर में सकल पृथ्वी को रा
ज्य करो हो तो हमों को सुष न ही अरु मेरे
सरीर की छाया सिर हीन दीसै है सो या उ
तपात को फल कहो जब गालव बोले
हे राजा ऐसें सरीर की छाया सिरहीन दी
से तो सीघ्र ही मृत्यु होय ऐसें सुणि राजा
निकट बैठ्यो मंत्री को पुत्र मदन तासों बो
ल्यो हे मदन तूं घर जाय चंद्रहास कों सी
घ्र ल्यावो मैं वाकों कन्या देय राज्य द्योंगो
ऐसें सुणि मदन प्रसन्न तासों घर आवत
तो ताकों मार्ग में चंद्रहास पूजा साम
ग्री लियें चंडिका के मंदिर जात मिल्यो ता
सों मदन बोल्यो हे चंद्रहास तुम कों राजा
बुलावै है तहां तुम जावो अरु में तुम्हा
रा पलज देवी का पूजन करोंगो ऐसें क
हि हाथतें पूजन की सामग्री लेय मदन तो
चंडिका के मंदिर गयो तहां जात ही चांडा
लवा को सिर काट्यो तब मरते समय मर

स्व० नम्रऐसैंबोल्यो॥यहमेरोमित्रचंद्र
१७ ह्रास॥जबमैंसत्यव्रतकाहोऊंगो॥
कोपूजासामग्रीदेयचंद्रहासराजापा
योहै॥ताकोराजाकन्यारानदेयरा
लिककरिआपवनमैंगयो॥जबपुरवा
सायधष्टबुद्धिसोंकह्यो॥हेमंत्रीतुम्हारो
जामाताचंद्रहास॥राज्यपायराजपुत्री
सहितगजराजपैचढ्यो॥आवैहै॥ताको
तुमदेषो॥ऐसैंसुणिमंत्रीक्रोधतैंबोल्यो
हेपापिष्ट॥तुममिथ्याबोलो॥तातैंतुम्हा
रीजिह्वाकौकाटौंगो॥ऐसैंकहिव्याकुल
भयो॥तापीछैंनगरकेमध्यगजराजपैच
ढ्यो॥अनेकदीपकानकेप्रकाससहित
आवता॥अरगीतवादित्रछत्रचामरआ
रू दिराजचिन्हकरियुक्तचंद्रहासकोदेषिअर
चंडिकाकेमंदिरपुत्रकोगयोजाणिव्या
कुलहोय॥आपहूअर्धरात्रसमैंचंडिका
केमंदिरगयो॥तहांमंदिरकेनिकटपुत्र
कोमल्योदेषिविलापकरि॥आपहूसत्व
तेंउदरविदारिकरिमरयो॥तापीछैंप्रभा
तहीचंद्रहासमदनवाधष्टबुद्धिकोमरयो

चंडिकाकेमंदिरआयकुंडरचिहोमले
निजसरीरलेमासकाटिहोमि।तापीछे
रकाटिबेलग्यो।तबचंडिकाप्रसन्नहो
बोली।हेराजाचंद्रहासतमोतेमनबां
छितबरमांगि।तबचंद्रहासबोल्यो।हे
मातातप्रसन्नहैतोयदेकजीवो।अरु
मोकोराज्यसुषअषंडअचलहरिलिकिहा
मेंतुमकोनमस्कारकरोंहों।तबदेवीन
थासुकहिअंतरध्याननई।तापीछेमद
नसषबुद्धिमंत्रीबहोपदुष्टबुद्धिपापच
द्रहाससहितनगरमेंआये।जबधष्टबु
द्धिकुलिंदकेंबधनकटायकुंतलपुरमेंबु
लापसबैहर्षितहोयबसतभये।तापीछे
चंद्रहासप्रतिदिनपूरबालिनसहितलहार
सेवापरायण।तीनसैवर्षपर्यंतराज्यकर
तभयो।ताचंद्रहासकेविषयास्त्रीमेंमकर
ध्वजनामपुत्रभयो।अरुराजपुत्रीचंपक
मालिनीकेंपद्माक्षनामपुत्रभयो।यहअ
तापसबचंद्रहासकोसालिग्रामसेवनतें
भयो।अरुसबसंकटदूरहोताहातेंकछे।अरु
जोयहकथप्रतिदिनपा

अश्व
५८

वचक्रकृ जनतें सर्व सिद्धि पावै ॥ ना
कलिकाल मैं शालिग्राम मेस
हे ॥ श्री मैं कहि नारद मुनि गये ॥ इति श्री म
हाभारथे चोडिकायां अश्वमेध पर्वणि चंद्रहा
स उपाख्यान एकादसमो ध्याय ११ ॥ जनमे
जय उवाच ॥ हे मुनि नगर मैं गये जे दोऊ अ
श्व अर्जुन के तिन कों चंद्र
करे कै लहीं ॥ जब वैशंपायन बोले
जन्मेजय ॥ चंद्रहास अश्व ग्रहण करे
तब अर्जुन सहित श्री कृष्ण कों आये
देषि चरनन मैं प्रणाम करि मिल्यो ॥
छै चंद्रहास पुत्र कौ राज दे पत्नीन
श्री कृष्ण को सनमान पूर्वक राषि
आप हू सेना निमित्त संग भेयो ॥ जिन
न है सन मैं अश्व गये ॥ तिन तिन रे
राजान प्रभीत होय यहां ये धन अर्पण करि
करि संग भये ॥ ऐसे चलत
उत्तर समुद्र पहुंचि अश्व गा
स करत भये ॥ तब अर्जुन श्री कृष्णसों
बोले ॥ हे श्री कृष्ण पे जल मैं गये अश्व
अब कैसे मिलेंगे ॥ जब श्री कृष्ण बोले

अर्जुनमेरे तेरे हंसध्वजको मयूरध्वजके
बभ्रुवाहनके अश्वनकी सरबेरेगति
है। तातें जलमें चलो। ऐसें सुणिपंच
महारथी जलमें प्रवेस कियो। तहां दीपस
आसिर पे बटपत्र धारें तपकरता जीर्ण
सुस्कसरीर। नेत्र मींचे। ऐसें बकदाल्भ्य
मुनिकों देषपांचों ही स्तुति करतभये। त
बमुनिनेत्र षोलि श्रीकृष्ण आरिषां चों
कों देषिबोले। हे श्रीकृष्ण तुम मेरी स्तुति
मति करो। तुम्हारी स्तुति तें मोकों गर्व
होय है। मैं आगे गर्व करयो है। तब याको
यें देष्यो। पांडु अंडमें। चतुर्मुष। अष्टमु
ष। षोडसमुष। द्वात्रंसतमुष। चतुःष
ष्टमुष। २४। आदिलें ब्रह्मा देषे। तापीछे
सहस्त्रमुषके ब्रह्मा आयमो कों इहां बसा
पो। अरु मेरे आगे बीस ब्रह्मा तो चले गये
तातें मैं आपुण्यकों अल्प जांणि। सिरपे
बटपत्र ही राष्यो है। अरु केस जांणि घा
मगृहहू नहीं करयो। कुटंबपोसणार्थ
कार्यहू करे। तातें धर्म नष्ट होय। पापहोय
तातें नर्क होय। बिचार ही षसकें नहीं। बि
चारबिना मोसतरायनहीं। तब आबधे। ता

तैमैं ग्रसैजा पिंड एसालाहू नहीं कहा
ग्रैसैं सुणि सकल ग्रार पैछु कनथौ
तब अर्जुन बहुत विनती सौं प्रार्थना करी। शिव
कामै बैठाय अश्वन कौ संग लेय अन
कैं सनके राजानकौं जीति जीति सौ
लैय हस्तनापुर आये जब श्रीकृस्ने
ना कै काम बाहर कराय बोले हे अ
र्जुन मैं युधिष्ठिर सौं सकल वृत्तांत करि
बे कौ पहली जाऊं हूं ऐसे कहि युधिष्ठि
र पै जाय सर्व वृत्तांत कह्यो तब राजा यु
धिष्ठिर अति प्रसन्न होय पश्चात आप पु
निन कौं राजानकौं संग लेय सेना सहि
त अर्जुन कै लिवे कौं आये महाराज
प्रथम वंदन करि आप मुनि कौं प्रणाम करि
ता पीछै सबन सौं जथा जोग्य मिलि सब
कौं संग लेय अर्जुन सहित नगर में प्रवेस
कर्यौ ता पीछै राजा द्रौपदी सहित दीक्षा
सु [illegible] णाय देवता न्हैव नारे
व इन सबन कौं पूजन पाठ कराय ब्राह्म
णन सौं विधिवत होम करा व तिनपै त
हां देव मूर्तिन सब ब्रह्मरिषि व्यास वाम

देवा।वसिष्ट।गौतम।अत्रि।परासर।भरद्वा
ज।परसुराम।कहोड।नागुरि।रैभ्य।सुमं
त।कौडिन्य।जातुकर्ण।गालव।इत्यादि
रिषियपायोगपकर्मकरतभये।और देव
रिषिगंधर्वसिद्धकिंनरमंगलगानक
रतभये।तहां अप्सरानाचतभई।अग्नि
तप्रसन्नभयो।।तहां।नारद युधिष्ठिरसब
नकोविधिवतपूजनकरतभये।।अ
पनेसमाजमें।व्यासो समुद्रनके मध्य
कमलनीतुलरच्या।राजायुधिष्ठिरवे
दव्यासकोदक्षणामेंदीनी।।अरु वेदव्यास
केवाकतै कोटिकोटिसुवर्णमुद्रा ब्राह्म
णनकोदीनी।।जबब्राह्मण धनलैले महाप्र
अनेक आशीर्वाद देतभये।चतुःषष्टि दं
दपतिगंगाजललेवेकोजावो।।बनमेंमुख
रतने।अनुसूयासहितअत्रि।अरुंधती
सहितवसिष्ट।रुक्मिणीसहितश्रीकृष्ण
सुभद्रासहितअर्जुन।मायावतीसहितप्र
अनिरुद्ध।हिडंबासहि
सत्यवती

अश्व० इनदसनकौंआदिलैचौसठिसपली
२६७ कसुबर्णकुंभनमेंगंगाजललया
युधिष्ठिरकौंअभिषेककरावो
द्वयासकौंआग्यासुएसुबर्णकुंभन
गंगाजललया । राजायुधिष्ठिरकौं
षेककरावतभये । तहांवेदव्यास
ध्वनि । सकलराजासेवामैंठाढे
षिश्रीकृष्णविचारकिये ।
कैभार्वनहोय । तातेंअभिषेकज
लएकनकुलकोंदेपायो । तबताम
लकोंदेषिराजायुधिष्ठिरबोल्यो ।
सयानकुलकोंदेषो । अर्द्धयाकोए
र्द्धसुबर्णबर्णकैसेभयो । जबयहसु
श्रीकृष्णनकुलसोंपूछतभये
लबोल्यो । हेश्रीकृष्ण कुरुक्षेत्र
वृत्तिसकुलमध्यनामाब्राह्मणभयो । सो
कसाहितब्राह्मणपालिकैहूतकारपारणो
करिवेलग्यो । तासमयमेंएकअति
थी । ताकोंदेषिब्राह्मणप्रसन्नहोयआप
कोभागभोजनकोंदियो । तासोंतृप्तन
तबवधूआपकोहूभागदियो । जबस्त्री

नागसोंहूं वहतसनभयो॥ जबपुत्रब
हूंआपकोनागसमर्पणकियो॥ तबति
नेसबनकेअन्नकोअतिथभो
तप्रहोयबोल्यो॥ हेब्रास्नणतु
मिद्धनयो॥ अबमैप्रसन्नहूं।
कितोसिद्धहोवो॥ ऐसेकहिवहन्न
रूपीधर्मआपकेनिजरूपदिषायअंत
र्धानभयो॥ तबवहसक्तुप्रस्थब्राह्मण
सदेहसपरिवारबिमानमें
यो॥ तहावाअतिथकेहस्तप्रक्षालन
जलमैममेरोअंगप्रक्षालनकस्यो॥ बा
नकेप्रभावतेमेरोदेहअर्धसुवर्णको॥
भयो॥ तातेयहपक्षसु
होवेकोयुधिष्ठिरकेपासआयोहूं।
अनेकब्राह्मणनकेहस्तप्रक्षालनके
लमेंहूंस्नानकियो॥ औरयुधिष्ठिरकेअ
पकजेलहूंमेंस्नानकस्यो॥ तोहूंमेरोएक
रोमहूंसुवर्णकोनभयो॥ ताते यहपक्षस
क्तुप्रस्थब्राह्मणकेपुन्यतुल्यनहीं॥ ऐसे
बोलिनकुलगयो॥
पक्षनिरासुनिराजायुधिष्ठिरव्याकुलभ

यु०

जब बेदब्यास बोले हे राजा युधिष्ठिर तै
यज्ञ सब यज्ञन में मुख्य है मुख्य असुरन
सब ह्याकी स्तुति करै है अरु यह न
कुल ऐसे बोल्यो आप को तो ताको है हो अ
रु आगे यह क्रोध है सो जमदग्नि मुनि
के क्रोध पूर्ण की परीक्षा करिबे को जन
के श्राद्ध में धर्यो पितरन अर्थ पात्र में धर्यो
दूध को स्वान होय जिकातें चाटत भयो
ताको देखि मुनि बिचार कियो यह क्रोध भ
न को धर्म है यह रोष रक्त को है याकै
श्राप न दियो जब मुनि के पितरन कह्यो है
मारे दूध को स्वान बनि उच्छिष्ट कियो
तासौं यह नकुल होय एक ब्याम भयो ऐ
से श्राप दे तो भयो अरु यह जब युधिष्ठिर
के यज्ञ की निंदा करैगो तब मुक्त होयगो है
सो अब यह ह कियो यह क्रोध नकुल ब
तै यज्ञ की निंदा तै श्राप तै मुक्त भयो
है ऐसे मुनि सब के सभा बिस्मित भई अरु
राजा युधिष्ठिर यज्ञ समर्थ में नर देव म
देवन को सत्कार देय बिदा किये ते
मार्ग मैं यज्ञ की प्रशंसा करत गये तापीछे

जा युधिष्ठिर यज्ञमंडपमें श्री कृष्णसहित
या॥ तापीछे तहां बिबाद करत दोय ब्रा
ण आये॥ तिनकों राजा पूछ्यो तुम कोंण
कारण बिबाद करो हो॥ तब एक ब्राह्मण
बोल्यो॥ हे महाराज मैं याके क्षेत्रमें कर्षण
कर्यो॥ तामें द्रव्य निकस्यो सो मैं द्रव्य या
कौं देत हौं सो लेत नहीं॥ अरु याके क्षेत्रमें
द्रव्य निकस्यो सो मैं है कैसें राखौं॥ तातें
आप निर्धार करि कहौ यह द्रव्य कौंन कौं
है॥ ऐसें उन ब्राह्मणनको बिबाद सुणि
श्रीकृष्ण वा धनकों मगाय॥ राजाकों नि
ज स्थानमें राख्यो॥ जब वे दोऊ ब्राह्मण नि
ज निज स्थानमें गये॥ तब राजा युधिष्ठि
र बोले॥ हे सर्वज्ञ श्रीकृष्ण इनके बिबाद
अब ही निर्धार क्यों न कियो॥ जब श्रीकृ
बोले॥ हे राजा युधिष्ठिर सुणो दीपमास
पीछे कलियुग आवेगो॥ तब यही दोऊ
ब्राह्मण या धनके लेबेकों झगड़ेंगे तब आ
जब इन दोऊनको अई अई कार बो
लो॥ ऐसें कहि श्रीकृष्ण राजाकों संदे
ह्यो॥ जब राजा कहीं कलि
जब श्रीकृष्ण बोले

श्व० रकलियुगमें मनुष्य होयगे । तप सत्यन
१२ ष्टहोयंगे । दृष्यामंदफल । राजाकपटी भ्र
ष्टलोभी । पुरुषस्त्रीबस । स्त्रीपुरुषलो
पुत्रपितासोंद्रोह राषे । साधु दुषी । दुर्जन
सुषीहोयंगे । ऐसैसुणि राजा चकितभयो
तब चित नैक दिनपाछैं श्रीकृष्णराजातें भ
षमांगिद्वारिकागये । तापीछें युधिष्टिर ध
तराष्ट्र गांधारी विदुर इनकोपूजनकरे
अरु निःकंटक राजपाय धर्मतें राजा प्रजा
कोपालन करतभयो । अरु श्रीकृष्णकेप्र
भावतें अश्वमेध हू सर्वांगपूर्ण भयो । इ
अश्वमेधपर्व है नाम्। ता । तस
र राव चांदसिंघ के हुकम बरणाक
वि सुपसार [illegible]
[illegible]
[illegible]

श्रीगणेशायनमः॥नारायणंनमस्कृत्य
नरंचैवनरोत्तमं॥देवींसरस्वतींव्यासंत
तोजयमुदीरयेत्॥अथआश्रमवासपर्व
वचनिकाभाषाभारतसारलिख्यते॥वैश
म्पायनउवाच॥तापाछैराजायुधिष्ठिरध
तराष्ट्रकोंप्रणामकरि॥अधिकारीनकों
राज्ययोग्यसर्वभोगदेतरह्यो॥ऐसेंनिरं
तरसबअधिकारीनकोंआग्यादेयराज
करतभयो॥अरुयुधिष्ठिरकेस्नेहतेंध
तराष्ट्रभार्यासहितराज्यमेंरह्यो॥परंतुम
मिसपनब्रसत्वर्यफलाहारकरतरहै
सोयुधिष्ठिरजानैनहीं॥ऐसेंरहतधतरा
ष्ट्रकोंपंद्रहवर्षवितीतभये॥तबभीमसेन
कौरवनकीअनीतिकहतभयो॥ताको
सुणिधतराष्ट्रक्रोधकरोकिबनबास
कीवांछाकरियुधिष्ठिरसोंबोल्या॥हेपुत्र
कछुकतोमांगो॥जबयुधिष्ठिरहाथजोडि
रह्योअंगीकारकस्यो॥तबधतराष्ट्रकही
वृद्धनकोंयोग्यबनबासहैयहमांग्योदे॥
ऐसेंसुणिअरुयुधिष्ठिरहोयचर्णनमेंप्रणा
मकरिराजाबोल्यो॥हेतातएकाकीमोकें
त्यागकरिबोतुम्हेंयोग्यनहीं॥२

श्लो० ९२ युधिष्ठिर दीन भयो ॥ तब तासैं वेदव्या
स आप बोले हे युधिष्ठिर तू आण तह
मूढ क्यों होय है ॥ सत कृत्य मैं शीघ्रता ही
करिबो योग्य है ॥ यह देह रूपी दीपक है
ताकौ तेल रूपी आयुष्य छिण छिण मैं छी
ण होत है ॥ अरु मृत्यु रूपी दावानल के नि
कट बती देह रूप वृक्ष कौ धर्म रूपी फ
ल लैते धृतराष्ट्र कौ विघ्न क्यों करे है ॥ ऐ
सैं वेदव्यास के वाक्य तैं राजा युधिष्ठिर धृ
तराष्ट्र कौ बन बास अंगीकार कर्यो ॥ तब
धृतराष्ट्र नें भीष्मादिकन कौ श्राद्ध करिबे
कूं लिये अर्थ तदीन तासैं दीन भयो ॥ अरु दु
र्योधनादिकन के श्राद्ध मैं बहुत धन देते
भीम कुपित भयो ॥ तब ताकौ अर्जुन
शांत कर्यो ॥ ता पीछैं धृतराष्ट्र राजा यु
धिष्ठिर सौं वा पुर बासीन सौं आग्या मांगि
कै ता कनिष्ट भ्राता सहित श्री रामचर
लो बन कौं गयो ॥ अरु युधिष्ठिरादि बरजे
तो हू कुंती उनके संग गई ॥ अरु संजय हू
तिन के संग गयो ॥ ऐसैं इन सहित धृतरा
ष्ट्र व्यासाश्रम कौं प्राप्त होय ॥ परवार सहि
त तप करत भयो ॥ ता पीछैं युधिष्ठिर हस्ती

नसहित॥ रथुन पुरसवार होय बनकों गये
तहां धृतराष्ट्र आदि गुरुजननेनकों नमस्कार
कियो॥ अरु तिनकों स्यामसुखकै मुषदेषि यु
धिष्टिर अशुपात करत नयो॥ जब वे हरा
जाकों आसीर्बाद देत नयो॥ तब युधिष्टिर पू
छो॥ तात बिदुर कहां है॥ जब धृतराष्ट्र बोल्यो
ह युधिष्टिर॥ स्वच्छाचारी पवनाहार करत बि
द्रा विचरत है॥ लोक वह हां पैहे कबहू नहीं॥
दीषहे॥ असे बोलत अकस्मात बिदुर आ
पा॥ बनमें मनुष्यनकों समुदाय देषि मग ले
भाजत नयो॥ जब राजा युधिष्टिर हू अशु
के ताके पाछे दौरत नयो॥ तब बिदुर राज
असें रिहरि निजा॥ तैसें अनागीले बन
निजत है॥ जब न जनत न जानत काईक पु
हूतकेनी चैबेठो बिदुरकों देषि बोल्यो
दुरमें युधिष्टिर हों॥ असें कहि प्रणाम
राजाजा॥ बिदुर मोकों कछू कहें
छा करतै नयो॥ तब बिदुर युधिष्टि
कों देषि योगाभ्यासतें रहकों सा
निज रूपकों प्राप्त होत नयो॥ जब
...कोदाह करिबो बि...

आश्र० ४

हकौंदग्धकरैगी। ऐसे राजा के सुणत हीसह
तैं अग्नि अगट होय देह कौं दग्ध कियो। ताप
छैं युधिष्ठिर धृतराष्ट्र पै आय बिदुर कौ सब
वृत्तांत कहि कुंती पास आयो। तहां राजाफ
लाहार भूमि सयन करत एकरात्रि कुंती कै
निकट बसि। प्रभात अनेक द्रव्य दान राजा
करत भयो। तापीछै धृतराष्ट्र पै आय प्रण
म करि बैठत भयो। तब तहां बेदब्यास आ
य बिदुर गति की स्तुति करि धृतराष्ट्र सों
बोले। हे पुत्र तोकौं कोई बाधा तौ नहीं है। ऐ
से सुणि धृतराष्ट्र बोल्यो। दान भोग करत
न्यारो इंद्रियन के सुष भोगे। अरु अब आ
प की कृपा तें बैराग्य पाय यह सिद्ध स्यो तब
न पायो। कुटंब दर्सन नहीं यह दुःष रह्यो। अ
रु पुत्र बंधु अभात ही रुदन करे यह महा दुःष
है। जब ऐसे सुणि बेदब्यास धृतराष्ट्र कौं दि
ब्य द्रिष्टि दीनी। तब जन्मांध धृतराष्ट्र कौं ऐसे ग्या
न दर्सन भयो। जैसे दरिद्री कौं चिंतामणि पायें आन
द होय। अरु युधिष्ठिरादिकन कौं बैन बद्दी
सुषी भयो। तापीछै बेदब्यास धृतराष्ट्र कौं पु
त्र बंधून सों कह्यो। तुम गंगा मैं स्नान करि पितन
कौं जलांजली द्यो। जब ऐसे सुणि गंगा मैं जा

पस्नानकरतहैं। बेदब्यासकीकृपातेप
तिनकोपायनिजनिजपतिकेसंगपरलो
ककोंगई। तबधृतराष्ट्रहरिद्वारगंगामेंबि
हारकरतअग्निमनुष्येधनारिकनको
स्नानसहितरोषिरागद्वेसरहितहोतभ
यो। अरुहरिब्रह्मादिषिनकोध्यानविषयका
गणीजाणि बेदब्याससोंबीनतीकरिप
रितसेंहीं इष्टिरहितहोतभयो। तापीछेंयु
धिष्टिरहएकमासतहांरहि। धृतराष्ट्रको
आगपातेहस्तनापुरआये। तहांधर्मसेंव
नप्रजापालनकरत। जसबिस्तारतभये।
तापीछेंएकसमेंराजापासनारदमुनि
आये। तबराजातिनकोपूजनकरि
बनबासीकुलश्रहनकोवृतांतपूछत
भयो। जबनारदबोले। हेयुधिष्टिर धृतरा
ष्ट्रएकबर्षलोंपवनहारकरत। एकबर्ष
लोंभोजनकरतअसेतपतेंराजरिषिहोय
योगाभ्यासकरत। योगाग्नितेदेहदग्धकि
यो। तबपर्णकुटिकोंजलतदेषिकुंतागांधा
री। अग्निप्रबेसकरतभई। तापीछेंविन
कारसारेंदेषिसंजयहिमाचलपगयो। अैसें
कहिनारदमुनिगये। जबयुधिष्टिरअैसेंसु

गीसो चूसो व्याकुल होय॥ तिनकौं ज
लोजलीरत भयो॥ अरु जिनकी दृष्टिमृग
तिनै मित्रनाम लएनकौं अनेक दानदे
तभयो॥ औरउतपन्न भये सोककौं प्रा
नतैसालंकारि॥ शिवविष्णुपूजनक
रतकालेपन करत भयो॥

॥श्रीगणेशायनमः॥अथमोसलपर्वलि
[illegible]लिख्यते॥नारायणंन
मस्कृत्यनरंचैवनरोत्तमं॥देवींसरस्व
तींव्यासंततोजयमुदीरयेत्॥वैशंपाय
नउवाच॥तापीछेंराजायुधिष्टिरसंसा
रकेसुखअनितजाणि॥धर्मसेवनक
रतपृथ्वीको॥प्रजाचककरी॥ऐसे
प्रजापालनकरतछत्तीसबर्षबितीत
भये॥तासमयमेंकालकेप्रेरे॥दुर्बासा॥
भृगु॥अंगिरादिमुनिऋषि॥द्वारकाकेनि
कटपिंडारकतीर्थमें॥स्नानकरिजप
तपकरतभये॥तबहीतहांयादवनके
बालक॥जांमवतीपुत्रसांबकोंगर्भव
तीस्त्रीभेषकरि॥मुनिनकोंप्रणामक
रवायबालकपूछतभये॥हेमुनेहोय
हगर्भवतीस्त्रीपुत्रकीकामनाकरिहै
मारेमुखहोयपूछैहै॥मैंकहाजणेगी
सोतुमकहो॥जबमुनिक्रोधतेबोले॥हे
बालकहो॥तुम्हारेकुलकोनासकर्ताऐ
सोमूसलजणेगी॥ऐसैसुणिभयभीत
बालकसांबकेवस्त्रखोलिकरतएकलोह
मयमूसलदेख्यो॥तबसभामेंजायउग्रसे

श्ल० नराज्ञासों सकल ब्रतांत कह्यो। जब वा
६६ मुसलकौ देषि सर्व यादव बिचार करि ता
कौ रिताय चूर्ण करि समुद्र मे नाष्यो। अ
वशेस लोह रह्यो ताहकौ तहां हां नाष्यो
सो वह लोह चूर्ण तरंगन ते वहि वहि स
मुद्र के तीर मे ऐरान को बन भयो। अ
वशेष लोह हो तांकौ मत्स निगल गये
ता मत्स कौ धीवर जाल मे पकडि कर
र चाल्यो। जब लोह निकस्यो। ता लोह को
जरा नाम लुब्धक बाण मे नालि करी
यरु श्रीकृष्णहू ता ब्रतांत कों सुनि बि
चार न कछू नाही कियो। त दिन ते द्वारिका
मे अनेक उत्पात मसमच के देषि श्री
कृष्ण मन मे आकुल यादवन सो बोले
हे यादव हो बालकन की कुबुद्धि ने मुनि
साप भयो। जा दिन ते उत्पात अपार होत है
याते सर्व यादव प्रभासतीर्थ चलो। उहां स्ना
न दान नि पूजन करेंगे ताते अरिष्टन
सन को उपाय पह ही है। अरु बालक वृद्ध
यहां रहो। ऐसी श्रीकृष्ण की आज्ञा ते सबै
यादव रथ अश्व गज ना सेना सहित प्रभ
स तीर्थ कों गये। जब एक वार एकांत में श्री व

सैसें बीनती करी॥ हे नाथ मोकों कहा आ
ग्या है॥ तब श्रीकृष्ण हरि आपने उपदेस करि
उद्धव कों॥ बद्रिकाश्रम पठायो॥ ता पीछें
बलदेव सहित श्रीकृष्ण प्रभासतीर्थ में
गये॥ तहां सर्व यादव श्रीकृष्ण की आग्या
तें स्नान दान ब्राह्मण भोजनादि कर्म करि
ता पीछें हर्ष तें उन्मत्त होय मद्यपान कर
त भये॥ ता मद्यपान तें बुद्धि नष्ट होय॥ कित
नेक॥ भारत में सब संग्रामन करि जो गा
भासी भये अथवा कों सिर छेदन करिबेवा
ले सातकी की निंदा करत भये॥ अरु कि
तनेक महाभारत में सेनन कों मारिबेवा
ले कृतबर्मा की निंदा करत भये॥ तहां कित
नेक सातकी के पक्षपाती भये॥ कितनेक
कृतबर्मा के पक्षपाती होय परस्पर जुद्ध
करत भये॥ जहां प्रथम महा जुद्ध करत सब
नकों तीण जानि॥ ऐरानके समूह करि जुद्ध
करत भये॥ जब ऐरा मुसलाकार होय स्प
र्श मात्र तें सबन के प्राण हरत भये॥ तब सब
भूमि मांस रुधिर मई भई॥ अरु
वांव॥ सातकी॥ कृतबर्मा दिबीर

स० ६७

तहाँ ए भए॥ तिनकों गुरु करतें हे॥ बल
देव श्री कृष्ण निवारण करे॥ जब पांडव
न हूँ कों मारिबे आये॥ तब श्री कृष्ण बलदे
व हू अैराले के तिनकों मारत भए॥ अैसे
सर्व यादवनकों संघार करि आप ही मारव
तारत भए॥ तापाछें बलदेव हू समुद्र के
तीर बैठि जोग माया ते देह त्याग करि से
सरूप धारि समुद्र में प्रवेस करत भये॥ ति
न्हें बासुकी कों आदि लें सब नाग आय पा
ताल में लेगए॥ अैसें श्री कृष्ण हू बलदेव
को गवन देखि चतुर्भुज रूप धारि एका
त में पिप्पल वृक्ष के आश्रय लेय दक्षि
ण चर्ण पे बाम चर्ण धरि बैठे॥ तापाछें
जरा नाम लुब्धक सिकार कों आयो हो
सो श्री कृष्ण के चरण कों प्रहार कर्यो॥ त
ब निकट आय चतुर्भुज रूप श्री कृष्ण कों
देखि चरणन में प्रणाम करि बोल्यो हे श्री कृ
ष्ण में बिनजाणे अपराध कर्यो सो क्षमा
करिये॥ मो पापी हू कों मारो॥ जब श्री
कृष्ण बोले॥ हे जरा लुब्धक तू डरै मति तैं
यह बाण मेरी इच्छा सों मारी है ताहीतें हे अ

मृग को मुख जाणि मुसल ग्रूंथे सलो
वार बाण को ॥ २१२

वैठि स्वर्ग गयो
तापीछें दारुक सारथी श्रीकृष्ण कों हेरत
हेरत श्रीकृष्ण पास आयौ देषि नैं उनैं
प्रणाम करत भयो ॥ तब रथ तत्काल अश्व
सहित आकास कों गयो ॥ सो देषि दारुक
विस्मित भयो ॥ तासों श्रीकृष्ण बोले हे दा
रुक द्वारिका में जाय ॥ यदुकुल संहार वल
देव गवन मरी दसा वसुदेवादिकन सों क
हौ ॥ औरयै सैं कहियो ॥ तुम द्वारिका में
मति रहौ ॥ समुद्र द्वारिका कों डुवोवैगो ॥ ता
तें स्त्री बालक वृद्ध अर्जुन सहित वज्रना
भ कों लय इन्द्रप्रस्थ जावो ॥ ऐसे वचन
दारुक कों द्वारिका पठ्यो ॥ तापीछें ब्रह्मा
दिक देव विमानन में वैठि श्रीकृष्णदे
रसन कों आये ॥ तब श्रीकृष्ण नित्य विव
तिरेषौं ॥ सिध गंधर्व अपसरन क्रोडनृ
नैंनमोस्तु पाग गामकरि . निजरूप धा
रि वैकुंठ प्रवेस किया ॥ जे मनुष्य इ
नतें मिलमे जानो वी मुनी रघुनंदन

ग्र० णीजाय तैसेंही श्रीकृष्णकीगति ब्रह्मा
कनहूनहीजाणी तापीछें ब्रह्मादिकहू
निजस्थानगये तब दारु
काआय वसुदेवादिकनकोंसर्ववृत्तांत
कह्यो जबवसुदे [illegible] सुणि
देषतविलापकरतपृथ्वीमेंपड्यो
नहूहाराम हाकृष्ण
को तुममोकों
पकरत अर्जुन
करतभये जहांगीतनतपवादित्र
अषंडहोतहे तहांश्रीकृष्णकेस्त्र
स्त्रीजनकोंविलापसुणि अर्जुनरात्रिवि
तीतकरी अरुप्रभातहीपुत्रकेवियोग
तेंमरे ऐसेवसुदेवकेसंगदेवकीकोंआ
दिदेस्त्रीसहगमनकरतभई अरुरुकि
णीसत्यभामाकोंआदिलेस्त्रीजनदुःषित
होय श्रीकृष्णकोंस्मरणकरिअग्निप्रवेसक
रतभई तापीछें अर्जुनमरेनकोंजलांजलि
दानकरि वज्रनामकोंस्त्रीजनसहितसं
लेकेद्वारिकातेंचल्यो तबहीसमुद्रद्वारिका
कोडबो तहांतेंइंद्रप्रस्थकोंचलतविक

हुकेश्तैधनुषसज्ञकस्यो॥जबबाणत
कोलनष्टभयो॥अरूमत्सचाहुषिचीनही
नबअर्जुनबिचारीयहस्वप्नहै॥अथवा
मेंओरहीभयो॥ऐसेचिंताकरतहीताके
प्रत्यक्षबनचरचोर॥गोपस्त्रीनकोलूट
तभये॥ताहदरीप्पमानस्त्रीजनकोंचो
रनहीहरिसके॥जैसेदरवरीनिसिहअ
पधीकोनागपहीननहीहरिसकें॥तहांअ
र्जुननिजजन्मकोंतुछमानिकहीहै२अ
त्रबिवरदेताभेंप्रबसकरो॥ऐसेबांछा
करतअधोमुषभयो॥तहांस्त्रीनकेवस्त्र
आभरणहरिचोरनकोंगयेपीछेंलोक
बोले॥बिप्रविजईबीरकोंचोरनजीतो
ऐसोविधाताकीरचनाहूकोंधिक्कारहै॥ऐ
सेलोकबचनसुणत॥प्रधानयादवस्त्री
जनबज्रनाभ॥दारुकाइनसहितअर्जुन
इंद्रप्रस्थआय॥तहांकोराज्य
नामकोंदेय॥आपहस्तिना.

तबश्रीकृस्नकोअंतध्यांन॥गोप
व॥यहचिंतवनकरतब्याकुलजात॰
नताकौ॥हस्तिनापुरकेमार्गमेबेदब्या
मिलिबोले॥हेपुत्रकालकहानकरै॰
सर्वदेवजाकेअनुग्रहकोचाहेहे॥
इमाकोप्रकासकछुतेहासर्बकोहरतहै
तैकालपरपतोहररहे॥अरुसंसारकेस
पदार्थपरिणाममेविनास॰नहोयतो
षदाईतपकोकोणकरे॥असेक
२ सअंतध्यांननये॥तापाछेंअर्जुनबेदब्या
केबचनामततेयदुकुलसंहार॥बनचर
नतेनिजपराभव॥ताकेअनंतापकोछो॥
हस्तिनापुरपहुंचो॥इतिश्रीभारत[illegible]
[illegible]

श्रीगणेशायनमः॥ अथमहाप्रस्थानपर्वबच
निकाभाषाभारतसारलिख्यते॥ नारायणंनम
स्कृत्यनरंचैवनरोत्तमं॥ देवींसरस्वतीं
व्यासंततोजयमुदीरयेत्॥ वैशंपायनउवाच
त्रायुधिष्ठिरअर्जुनकेमुषतेयदुकुल
कोसंघारसुणि॥ कालबसतेत्रासपाय
समस्तत्यागबुद्धिधारतभयो॥ तापीछे
धृतराष्ट्रकेपुत्रनकेनागकीन्हिलिनोयु
युत्सकोदीनो॥ अरुआपकोराज्यपरी
क्षितकोदेयतांकोरक्षानिमित्तसुनग्र
नकोदेयसमाधानकरि॥ बांधव
पी॥ मंत्रीनकोसमाधानकरि॥ बांधव
नकोश्राद्धकरि॥ नैष्ठिकीइष्टिकरि॥
अग्निहोत्रकेअग्निकोजलमेंनिसर्जन
करतभयो॥ तापीछेदुखितपुरवासीनको
समाधानकरि॥ भ्रातानसहितयुधिष्ठि
रसर्वसन्यासधारिवल्कलधारिद्रोपदी
सहितचलतभयो॥ तबतिनकेसंगएक
स्वांनहूचल्यो॥ ऐसेंतहांतेंचल
सागरमेंलोहित्यनदके
त्तुल्यदेदीप्यमानअग्निज्वालानकरि
व्याप्तऐसेस्वरूपसोंपावनके

हप्र० अर्जुनतैंपूर्वदिसिधनुषतणारलेतनयो॥
६९ उहातैंदक्षिणपात्राकरी॥पश्चिमया
त्रिकोजलमेबूडीजातीमकुतहोतभयो॥
हांतैंशनैशनैधैर्यधारिपृथ्वीप्रद
रितउत्तरकोआयो॥जहांहिमाचलकौ
लंघनकरि॥बालुकासमुद्रकोउत
पर्वतकोदेषि॥तहांतैंनिरा
सतेभये॥जहांद्रोपदीआचेतहोयपड़ी
वभीमयुधिष्ठिरसोंबोल्यो॥हेतातसर्व
दानिर्मलअर्जुनजाकोतप॥योग ते
सोद्रोपदीयहहालकैसेलेतहे॥
वाकीतरफदेखेविनाहीयुधिष्ठिरबोले॥
मर्द्दपुत्रमेंअधिकपक्षपातहोता
फलभयो॥आगेनकुलकोपतितदेखिफे
रिभीमबोल्यो॥तबराजानेसेंहाफेरि
यहरूपदर्पतेकंदर्पतेंहूआत्माकोअधिक
मान्यो॥ताकोयहफलभयो॥आगेचलत
हसदेवकेपतनमेंभीमफेरिप्रश्नकियो॥ता
तेंराजानेंसेंहीमुषराषिबोल्यो॥
केअभिमानतैंजगतकोजड़
ताकोयहफलभयो॥तहांतेंआगेचलत॥

पतनरेविभीमपूछ्यो॥तबराजाक
॥हेभीमयहअपरणेकेअभिमानतें॥र
भूमिमेंगर्वसहितसियलचलतनयो
ताकोयहफलहै॥फेरिआगेचललभीमक
॥हेमहाराजमेंहूपड्यो॥असेसु
ल्यो॥हेभीमबहुभोजीताकेभुजबल
र्पअधिकहै॥ताकोयहफलभयो॥
बोलिपरलोककोचलत॥धर्मबीर
युधिष्टिर॥पडतेबांधवनकोतरफदेख्यो
है॥अरुवह स्वानहूसंगहैसोरा
पीछैअपडगतिचलतभयो॥ता
केआरथपेचढिइंद्रराजाकेसन्मुखआ
यबोल्यो॥हेमहाराजयुधिष्टिरतुमस
र स्वर्गमेंचलो॥
पितोरहसागकरिस्वर्ग ॥तिनकें
ज मोसुणियुधिष्टिरबोल्यो॥हेइंद्रयास्व
नबिनास्वर्गमेंनहीआऊं॥जोबिपत्तिमें
संगरहेअैसेसतेसेवककोसपतिकाल
मिमेंत्यागकरे ताकोधिक्कारहै॥औरव
नमेंपुरुषनकेसंगमलिन
वेपुरुषहेवनकेसीसचढें ॥से

अर्जुनतेंपूर्वदिपधनुषतणारव्रेत
उहांतेंदक्षिणपात्राकरिपश्चिमया
रिकाजलमेंबूडीजाणिमरेतहोतभयो
हांतेंशनेशनेधैर्यधारिपृथ्वीप्रद
रतउत्तरकोआयेजहांहिमाचलको
लंघनकरिबालुकासमुद्रकोउत्त
पर्वतकोदेषिंतहांतेंनिरा
लतभये जहांद्रौपदीथचेतहांपपरी
बनीमयुधिष्टिरसोबोल्यौहेतातसब
रानिर्मलअद्भुतजाकोतपयोग
सोद्रौपदीपांचालकैसेंलेतहै
वाकीतर्फदेषेंबिनाहींयुधिष्ठिरबोले
मइसपुत्रमेंअधिकपत्तपातहोता
फलभयो आगेनकुलकोपतितदेषिफे
रिभीमबोल्यो तबराजानेसहदेवकेरि
यहरूपदर्पतेंकंदर्पतेंहअत्माकोअधिक
मान्यो ताकोयहफलभयो आगेचलत
हसवकेपतनमेंभीमफेरिप्रश्नकियोता
तेंराजानेसहीमुषराबबोल्यो
केअभिमानतेंजगतकोअड
ताकोयहफलभयो तहांतेंआगेंचलत

कोपतनरेबिभीमपूछ्यो॥तब...
॥हेभीमयहअरपणके अभिमानतेर
भूमिमेंगर्बसहितभिपलचलतनयो
ाकोयहफलहे॥फेरिआगेचललभीमक
ाहेमहाराजमेंहूपड्यो॥असेसुणिराजाबो
न्यो॥हेभीमबहुभोजीताकंभुजबलको
र्पअधिकहो॥ताकोयहफलभयो॥असे
बोलिपरलोककोचलत॥धर्मबीरराजा
युधिष्टिरपडतेबोधवनकोतरफदेख्यो
नहीं॥अरुवहस्वानहसंगहेसोराजाके
पीछेअष्टगतिचलतभयो॥तापीछेपुर
कअररपपेचढिकैराजाकेसन्मुखआ
यबोल्यो॥हेमहाराजयुधिष्टिरतुमसह
देस्वर्गमेंचलो॥अरुतुम्हारेभ्राताद्रोपदी
येतोरेहसागकरिस्वर्गगये॥तिनकोरथ
गि सोसुणियुधिष्टिरबोल्यो॥हे...
नबिनास्वर्गमेंनहीं आऊं॥जोविपतके...
संगरहे असेसतेसेवककोमैं...
भिमैंत्यागकरें ताकोधिक्कार...
नमैंपुस्तनकेसंगमचित...
वेपुस्तकवनकैसीयचढ...

हाप्र० नकोत्यागकरौं ॥ तातैंयाकेत्यागतैंमेरोधर्म
३७० कहा ॥ अरुधर्मबिनास्वर्गकहा ॥ तातैंह
मैंऐसोसिद्धांतैतुम्हारोहू धर्मनष्टहोय
है ॥ ऐसैराजाकोवचनसुणिइंद्रबोले
हेराजनयहपुन्यहीनस्वानतुम्हारेसु
कोजावो ॥ जबराजाबोल्यो ॥ हेइंद्रजोयह
स्वानपुन्यहीनहैतौ ॥ मेरेपुन्यतैंमहस्व
र्गमेंबसो ॥ ऐसैसुणिसर्बदेवराजाकी
सराहकरतभये ॥ ताहीसमैधर्मवहस्वा
नदेहत्यागकरिनिजरूपधारिधर्मपुत्र
सें आलिंगनकरिबोल्यो ॥ हेपुत्रमैस्वान
देहधरितेरेछलदेषिमेंप्रसन्नभयो ॥ अ
बतूरथपैचढि तौकौसनातनस्वर्गहो
ऐसैंपिताकीआग्यातैंराजायुधिष्ठिर
रथपैचढिसदेहस्वर्गकोप्राप्तभयो ॥ तहां
सर्बदेवनसहितनारदबोले ॥ औरराज
अनेकहीस्वर्गगये ॥ परंतुयुधिष्ठिरसब
राजानकीकीर्त्तिकोआछादितकरिक्ष
त्रनमेसर्वतुल्यसोभितहैं ॥ तापीछैराजा
युधिष्ठिरइंद्रसोंबोल्यो ॥ हेइंद्रमेरेभ्राता
पतिनीहैवहांहीमोकौलेचलौ ॥ तबइंद्र

युधिष्ठिर तुम्हारे निज
तिमयो जोरि व्यस्थानला में बसे
ज्ञाता नार्थानमेंन
ली है
तहांही जोऊंगो॥वैशंपायनउवाच॥ऐसे
धिष्ठिर स्वर्गमें दुर्योधनको
पंयुक्त देव्यो॥इंद्रसों बोल्यो॥हे इंद्र
जहांपापी
जगतको मला परदेवालो॥ऐसो दुर्यो
धनमहासें घ्रामनपें वहि॥पूजा पावत
ऐसें विचारहीन स्वर्गसों कहाकाज है॥
तह इंद्रजा स्थानमें ज्ञाता नार्था है
ही को स्वर्ग मानत है॥ऐसें कहि राजा
तब इंद्र देवतनको आगपादी नी॥जबव
तराजाको बाधवनके दिषावो बेकोंलै
दुर्गति॥दुःषं हिंसा॥बैधनो
कटुकहाहाक
हे युधिष्ठिर हमनी मकों आदि देते

...यस्या परीसहित अति पीडित है।
२१ कोप वनतें अति सुषी भये हे।
...मा सांहीं रहो। ऐसे सु
बोल्यो। हे देवरत में वा
सांही रहो गो। अरु यह नर्क हो मेरे स्वर्गस
मान है। और बैतरणी नदी है गंगासमान
है यह दु:ख है सो सुषसमान है। तातें हे
देवरत तो को कुसल हो। अब तें जो अ
स्वर्गबासीन कों वा स्वर्ग कों नमस्कार है। ता
स्वर्ग में श्रजन तो पूजा पावें। अरु सुसी
लदु:खकों वे नहां नहीं जाके। ऐसे सुणि दे
वरत गमन करत भयो। तापीछें राजायु
धिष्ठिर देवतान सहित इंद्र कों सन्मुष दे
ष्यो। अरु नर्कादिक कछु हू नहीं दीषा
रूप विश्रपवन तें सुषी होय विचारन ल
ग्यो यह कहा भयो। जब राजा को चकित दे
षि इंद्र समाधान करन बोल्यो। हे युधिष्ठि
र तू गुरकों मारिबे निमित्त ले समाचार अ
सत्य बोल्यो। ताको यह फल है मैं तो कों दु
र्गति दिषाई। अब तू आनंद समुद्र में बिहार क
रत बांधवन कों अरु स्वर्ग श्री तुल्य द्रोपदी कों

राकनीमेंस्नानकरिके देषो।। तापीछें गा
बाकसुएो।। नि
||

वेंक्टादिदि

नसुनतन
अनेक बाद्य बजावत।। गंधर्वसे
अद्भुत नृत्यको देषत भयो
राजा युधिष्टिरको
अरु दिव्य सेवकनको द
छाकरी।। सो निजह
हामें देषत भयो।। ताको दान ह करतन
ो।। अरु राजस पादि जगपनते जपसिद्ध ग
धर्वनको गान सुनत।। इंद्रके दिषायेमार्ग
हा पदेवसनाको प्राप्त भयो।। तहां अप्सर
नके दिव्यबिना ददेषत।। अग्निजको
करत असे सरीरकी कांति सो सोभित
जसहोदरनको देषत भयो।। अरु इंद्र व
काते कर्णको सूर्यरूप।। अभिमन्युको
मारूप।। श्रीकृष्णको चतुर्भुजरूप।। ग
धतराष्ट्रको गंधर्वराजरूप।। द्रोणके

प्र०
२
स्पतिरूप॥ भीमकौ अरु मन सुरूप भी
मकौ पवनरूप॥ अर्जुनकौ इंद्ररूप नकु
लसहदेवकौ अश्विनीकुमार प्रदेषत
भयौ अरु और सब पृथ्वी
वेकौ आये तिल बीरनकौ देव
भयो॥ अरु आप राजा युधिष्ठिर पु
सगर नगीरथ आदि इनरा मै
वित॥ सुतंत्र स्वर्ग भोग नोगी राजा हरि
श्चंद्र पदवाकौ नोगत भयो॥ ऐसे वेदव्या
भारतसार जनमेजयकौ कहि॥ भारत
२ सावित्री कहत भये॥ श्लोक॥ मातृपितृस
हस्राणि पुत्रदारशतानि च॥ संसारेष्व
नुभूतानि यांति यास्यंति चापरे॥ १॥ हर्ष
स्थान सहस्राणि भय स्थान शतानि च
दिवसे दिवसे मूढमाविशंति न पंडितम्
ऊर्द्ध्वबाहुर्विरौम्येष न च कश्चिच्छृणोति
मे॥ धर्मादर्थश्च कामश्च स किं मर्थ न सेव्य
ते॥ ३॥ न जातु कामान्न भयान्न लोभाद्ध
र्मं जह्याज्जीवितस्यापि हेतोः॥ नित्यो धर्मः
सुखदुःखे त्वनित्ये जीवो नित्यो हेतुरस्य
त्वनित्यः॥ ४॥ इमां भारतसावित्रीं प्रातरु

ाधिं ऽ ऋति॥५॥यथासमुद्रोभगवान्
हिमवान्गिरिः॥ख्यातावुभौर
ननिधीतथाभारतमुच्यते॥६॥इमं
:पठेत्सुसमाहितः॥
सगच्छेत्परमांसिद्धिमितिमेनास्तिसंश
यः॥हेपुत्रयाजीवकेसंसारकहियेजा
मणमरणतामें॥मातापिताहजारानये
हेअरुहोइहें॥औरआगेहूहोयगे॥अरु
तसेंहीस्त्रीपुत्रसैंकडानयेहैंहोयहै॥आ
गहोइंगे॥२॥औरदिनदिनप्रतिसोकोंह
र्षकेस्थानहूहजाराहैं॥अरुभयकेस्थान
हसैकडाहैं॥सोमूढजीवकोंतोव्यापेहै
औरपंडितकोंनहींव्यापेहै॥२॥अरुधर्म
कोंसाधनकोंनहींकरेहै॥जोधर्मसोंअ
सिद्धहोयबातितसिद्धहोयहै॥यहमेंउ
चेहोयकरिकेंचेभुजसोंपुकारिकेंकहे
हों॥सोकोऊहूनहींसुणतहै॥३॥औरका
मभयसोंलोभसोंकदाचितहूधर्मको
त्यागनहींकरें॥अरुधर्मकोत्यागकरें
वजातोहूबचेतोहूधर्मछोडेनहीं॥सो

हा प्र० ६
९३

धर्मतो नित्य है ॥ और सुख दुःख अनित्य
है ॥ औ यह जीव है सो हू नित्य है ॥ अरु
या जीव को कारण माया है सो अनित्य
है ॥ ४ ॥ तातें हे पुत्र जो नर या भारत सा
त्री कों प्रातःकाल उठि पढै है ॥ ताको स
पूर्ण भारत को फल होय है ॥ अरु अंत मैं
मोक्ष कौं जाय है ॥ ६५ ॥ संवत सतर
स अट्ठ वर्ष पचासी ता पर ॥ माधव मास
सु मास सुक्ल तिथि तीज उजागर ॥ लग
न महूरत जोग सु दिन गुर बार जानि ज
य ॥ भारथ भाषा सार चंद्रिका तब प्र
कास किय ॥ सुत संतुराव श्री चांद सिं
घ गोगावत कुल रवि उदित ॥ ताकै क्रम
पाय कवि चैन यह करी बचनिका जग
विदित ॥ ९ ॥ इति श्री गोगावत कुलावतं
स संत राम सिंघात्मज राव चांद सिंघ आज्ञया कवि
चैन राम कृत भारत सार चंद्रिका संपूर्ण
शुभं भूयात ॥